Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

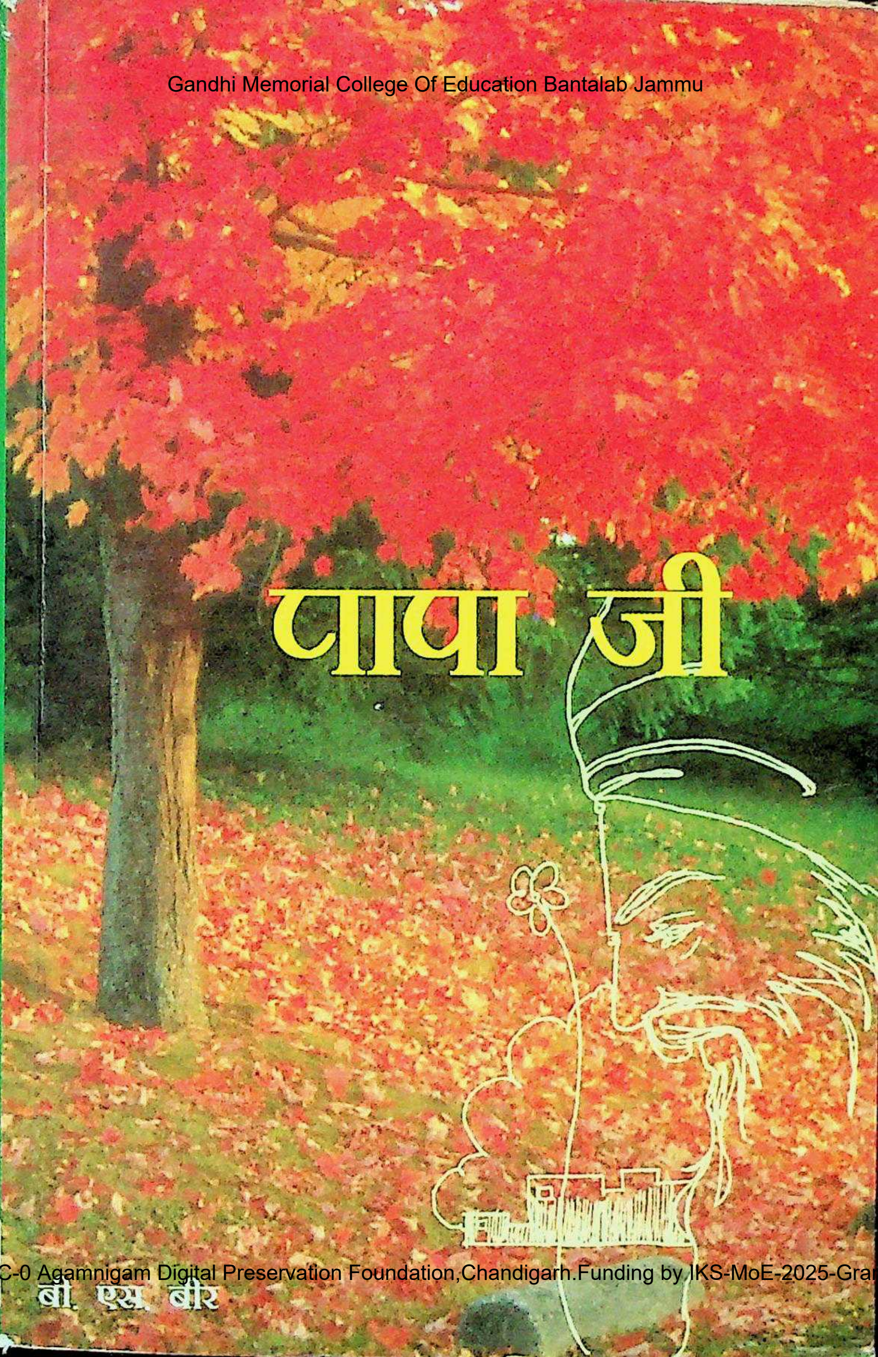

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

) Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पापा जी

(कथा संग्रह)

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 47790
Dated 22-12-2023

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बी.एस.बीर की छप चुकी पुस्तकें

हिन्दी में

कथा-संग्रह : ये जन्म तुम्हारे लेखे

उपन्यास : धुआँ

काव्य-संग्रह : मैं सच्च नहीं बोलूंगा

जीवनी : एक विलक्षण व्यक्तित्व :
प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह (छपने हेतु)

पंजाबी में

कथा-संग्रह : कुदरत बनाम आदमी
पौना आदमी

उपन्यास : धुआँ

काव्य-संग्रह : प्रिज़म के आर-पार
सुरमेल (गीत तथा ग़ज़ल संग्रह)
रौशनियों के पिरामिड (भाषा विभाग पंजाब से पुरस्कृत)

जीवनी : एक विलक्षण शख्सीयत
प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

संपादन : महरम, घर शिंगार (पंजाबी) मासिक,
माडर्न खेती (पंजाबी व हिन्दी) पाक्षिक पत्रिकाएं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पापा जी

(कथा संग्रह)

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

बी.एस.बीर

महरम पब्लिकेशनज़ प्रा. लिम.

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

PAPA JI (Collection of Short-Stories in Hindi)
by
B.S.Bir

MEHRAM PUBLICATIONS PVT. LTD., NABHA

© 2004 B.S. Bir

एडीशन	:	पहला
प्रकाशक	:	महरम पब्लिकेशनज़ प्रा.लिम. नाभा (पटियाला)-147201 फोन : 220595/678/778
प्रिंटर	:	मोडैस्ट ग्राफिक्स, सी-53, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, डी.डी.ए. शैंड, फेज-1, नई दिल्ली 110020
मूल्य	:	50/-

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने सनातनी मित्र

एवं

विद्वान व मार्किटिंग-विशेषज्ञ

स. हरदीप सिंह, कलकत्ता

जी

को

सहर्ष एवं विनम्र

भेंट

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी, संस्कृत व पंजाबी के विद्वान

एवं

महरम पब्लिकेशनज़ के रह चुके घनिष्ठ मित्र

डॉ. जीत सिंह खोखर

को

याद करते हुए

जो

अपनी जीवन-यात्रा

को

समय से पहले

ही

समाप्त

कर चले गए

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथा सूची

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

1. कलाकार का जन्म 9
2. जांबाज़ 19
3. शर्त 31
4. जिन्ना सिंघा-सिंघणीयां ने... 41
5. परमेश्वर 48
6. नपुंसक देवता 56
7. हरामी 63
8. छोरी की शादी के बाद 69
9. पापा जी 74
10. बंटवारा 81
11. अपना-अपना ईमान 93
12. कांटा 101
13. जुहू बीच पर भटकती आत्मा 113
14. वह बहुत खुश है..... 119
15. पापा का बेटा 126
16. मैंने कब चाहा था ? 132
17. पौना आदमी 139
18. फाइव स्टार के बाहर खड़ा संतरी 151
19. चक्क बीबीपुर 158

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलाकार का जन्म

कुछ ही वर्षों में चित्रकारी के क्षेत्र में एस.मनदीप सिंह का नाम अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर गया। भारत के चंद चुन्नींदा चित्रकारों में उसका नाम लिया जाने लगा। सोभा सिंह, एस.जी.सिंह ठाकुर, अमृता शेरगिल की कतार में आलोचक उसे लेने लगे। बदरी नारायण, प्रभाकर बारवे, चौहान, सतीश गुजराल, तैय्यब मेहता, जगदीश, स्वामीनाथन, पारितोष सेन जैसे महान चित्रकार उसे मिलने आते। सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में उसके चित्रों की चर्चा थी। परन्तु वह कम ही बाहर निकलता।

पाऊँटा साहेब में कुछ ज़मीन लेकर प्रकृति की गोद में उसने एक बाग-नुमा कोठी बनाई। वहीं पर अपना अधिकतर समय व्यतीत करता। एक वृद्ध पहाड़िया व उसकी वृद्धा पत्नी, उसके साथ रहते। उसका इकलौता भाई सॉफ्ट वेयर इंजीनियर था जिसे न्यूयार्क की कंपनी ने ले लिया और वह वहीं पर एक पंजाबी लड़की के साथ शादी करवाकर बस गया। बहन शादी-शुदा थी, पहले दिल्ली में रहती थी परन्तु वह भी पति के साथ यू.के. जाकर रहने लगी। माता-पिता इसी गम में बड़ी मुश्किल से साठ वर्ष की आयु को पार कर पाए थे कि मनदीप को अकेला छोड़ गये। अब मनदीप सिंह के पास घर में बनाई आर्ट-गैलरी थी, आर्ट लाइब्रेरी थी, कैनवस, कुछ

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ब्रश या कुछ याद था। ...जब उसका दिल बहुत उदास होता तो वह गुरूद्वारे चला जाता व घंटों तक उस जगह पर बैठा रहता जहां कभी गुरू गोबिन्द सिंह जी अपने बावन कवियों के साथ दरबार सजाया करते थे। ...वहां वह यमुना नदी बहते देखता और साथ वाली पहाड़ियाँ उसके मन को मोह लेतीं। जगजीत और चित्रा सिंह की गाई गुरू तेग बहादुर जी के शब्दों की कैसेट 'मन जीते जग जीत' अकसर उसकी गैलरी में बजती रहती। आज तक उसने दो जगह अपनी पेंटिंग्स की नुमाइश लगाई थी–एक कोलकाता में व दूसरी पैरिस में। इन दोनों नुमाइशों ने उसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दी थी। अनगिनत अखबार, अनेकों चैनल वाले उसे कवर करना चाहते, परन्तु वह फोन पर ही मना कर देता। वैसे टाइम्स आफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, टैलीग्राफ, हिन्दू, टाईम व इंटरनेशनल आर्ट के समीक्षक भी उसकी कला की चर्चा कर चुके थे। डेकन हेराल्ड जैसे अनेकों दैनिक अखबार उसके विषय में लेख छाप चुके थे। वह हँस कर कहता–"हजूर, मैं अदना सा कलाकार हूँ। इंडिया में मुझसे बहुत बड़े–बड़े आर्टिस्ट हैं। पहले उनका ....मेरा नंबर तो बहुत पीछे आता है।" कभी वह स्वास्थ्य ठीक न होने का बहाना करता, तो कभी बाहर जाने का। वह अकसर घनिष्ठ मित्रों व संबंधियों से कहता, 'मेरी छिपे रहण दी चाह, छिपे तुर जाण दी।' पर उसकी चित्रकारी ने कला–क्षेत्र में अपना विलक्षण स्थान बना लिया था। आमतौर पर कलाकार या लेखक प्रसिद्धी के लिए अनेकों पापड़ बेलते हैं, परन्तु मनदीप अलग किस्म की मिट्टी का बना हुआ था। उसे नाम से अधिक लगाव नहीं था। वह चित्र बनाता और चित्र के विषय में पुस्तकें पढ़ता रहता।...

अंत में एक प्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिक की पत्रिका कला समीक्षक उसके पीछे ही पड़ गई। इस प्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिक का अपना प्रसिद्ध चैनल भी था। वह लगभग हर दूसरे–तीसरे दिन फोन करती व बातचीत के लिए समय मांगती। मनदीप छः महीने टाल–मटोल करता रहा। अंत में उस समीक्षक ने कह ही दिया, "सर, क्या आप मुझे इसलिए समय नहीं देते क्योंकि मैं आपकी ही नाम राशि हूँ? यद्यपि मैंने मुंबई के सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस से डिग्री ली है, परन्तु वैसे मेरे संबंध भी पंजाब से हैं।"

अंततः मनदीप को मजबूर होकर उसे समय देना ही पड़ा। समीक्षक के आने से एक दिन पहले बगीचे, आर्ट गैलरी, लाइब्रेरी और कोठी की अच्छी तरह साफ–सफाई की गई। समीक्षक के साथ चार–पांच लोगों की टीम थी। एक फोटोग्राफर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दो-मूवी कैमरे वाले, समीक्षक का सहायक, ड्राइवर इत्यादि।

जैसे ही समीक्षक टीम के साथ कोठी के नजदीक पहुँची तो नेम प्लेट पर मनदीप का नाम नहीं बल्कि लिखा हुआ था संदली आर्ट-केव। समीक्षक को एक प्रश्न मिल गया।

सजीले व्यक्तित्व वाला एस.मनदीप सिंह, बड़ी सजीली सी पगड़ी बाँधकर बैठा था। उसकी दाढ़ी के कुछ सफेद बाल उसकी गंभीरता को बढ़ा रहे थे और साथ ही उसकी आयु बता रहे थे। बंगाली कुर्ता व बंगाली पजामा। जैसे ही नौकर टीम को अंदर लेकर आया तो वह व्हील-चेयर से मेजबानी दिखावे के लिए थोड़ा सा उठा, दोनों हाथ जोड़कर उनका स्वागत किया। कला-समीक्षक मनदीप को देखकर, एक बार तो वह आश्चर्यचकित हुआ, फिर मन ही मन में अपने आपको पगला कहकर डाँटा। कला-समीक्षक लड़की ने जब देखा कि उसकी दोनों टाँगें नहीं हैं तो वह गंभीर हो गई। उसके चेहरे पर हमदर्दी झलकने लगी। नौकर, चाय बिस्किट और सैंडविच ले आया था। समय सुबह के करीब ग्यारह बजे का था। टीम दिल्ली से आई थी। यह सब कुछ नाश्ते के तौर पर पेश किया जा रहा था। कला-समीक्षक मनदीप ने प्रश्न किया ''क्या आपकी टाँगे आर्टीफिशियल (बनावटी) हैं? यह हादसा कैसे हुआ?'' चित्रकार मुस्कुराया व कहने लगा-''इन बातों में क्या रखा है? आप कुछ और पूछें तो बेहतर होगा।''

''आपकी कोठी के बाहर आपका नाम नहीं। संदली आर्ट-केव लिखा हुआ है। इसका तात्पर्य?''

चित्रकार ने मुस्कुराने का प्रयत्न किया व कहा, ''पहले हम कुछ और बातें न कर लें?''

''सर, मैं आपकी कला के विषय में काफी होम-वर्क करके आई हूँ। उसके विषय में तो मुझे बहुत कुछ पूछना है और आज के दिन तो आपको चित्रकारी नहीं करने दूँगी। सॉरी फार डिस्टरबैंस।''

''नॉट-एट ऑल। आज का दिन तुम्हारे नाम।''

''सर, मेरे दो प्रश्न हैं जिनके उत्तर देने में आप आनाकानी कर रहे हैं? परन्तु मैंने खाली हाथ वापिस नहीं जाना।''

एस. मनदीप सिंह भी मुस्कुराने लगा व बोला, ''कोई बात नहीं।...आपको निराश नहीं करूँगा।''

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीसरे प्रश्न पर चित्रकार फिर आनाकानी करने लगा। "आप अपने नाम के साथ एस. मनदीप सिंह क्यों लिखते हो?"

चित्रकार ने मन, दिमाग व शरीर में अजीब सी झनझनाहट महसूस की। परन्तु अपने आपको संभालते हुए बोला, "पहले आप मेरी आर्ट गैलरी, आर्ट लाईब्रेरी, बगीची तो देख लें जिसके लिए आप आई हैं।"

आर्ट-गैलरी की लाल ईंटों की छत्त झोंपड़ी नुमा थी। रोशनी का पूरा ध्यान रखा गया था। बाहर से आई टीम फोटोग्राफी कर रही थी-स्टिल व मूवी दोनों। चित्रकार व्हील-चेयर पर साथ-साथ चल रहा था। समीक्षक एक-एक पेंटिंग को बहुत ध्यान से देख रही थी। अधिकतर पेंटिंग पोरट्रेट थे-कुछ वाटर-कलर में व कुछ ऑयल में। अधिकतर पेंटिंग्ज़ में औरत ही थी-कभी झोंपड़ी के बाहर, कभी बगीचे में, कभी स्नोफाल में, कभी पहाड़ी पर, कभी नदिया किनारे, कभी ताज महल के नजदीक...कभी गुरूद्वारे, कभी अस्पताल में, कभी डाक्टर के रूप में, तो कभी खिल-खिलाकर हँसती, कभी गमगीन, कभी लड़के के साथ... कुछ जगह पति के साथ, तो कई जगह परिवार में, कश्मीर की झील के शिकारे में...। कभी सस्सी, जूलीयट, हीर, लैला, साहिबां...। ...गैलरी के एक कोने में सिक्ख धर्म से जुड़ी सिक्ख-स्त्रियों के चित्र-बहन नानकी भाई नानक का रास्ता देखती हुई, माता खीवी लंगर बनाती हुई, बीबी भानी पिता गुरू अमरदास को नहाने में मदद करती, माता साहब कौर अमृत में पताशे घोलती, माता गुजरी छोटे साहबज़ादों के साथ, माई भागो...इत्यादि अनेकों सिक्ख-स्त्रियों के चित्र।

दूसरी ओर दुनिया की प्रसिद्ध-स्त्रियों उपन्यासकार, कवित्रियों, कलाकार के...। विश्व प्रसिद्ध चित्रकार रेफील की माँ ऐलिजाबैथ ब्राऊनिंग की कमाल की तस्वीर, अमृता शेरगिल, अमृता प्रतीम, प्रभजोत, सरोजिनी नायडू...।

जीवन के हर क्षेत्र में से उन स्त्रियों के चित्र जिन्होंने कुछ आलौकिक कर दिखाया था।

समीक्षक ने प्रश्न किया, 'सर, यदि मैं गुस्ताखी न करूँ इन सैंकड़ों पोरट्रेटस में एक ही चेहरा भिन्न-भिन्न रूपों में झलक रहा है। इस चेहरे का आपके व्यक्तिगत जीवन से कोई सरोकार?'

चित्रकार मनदीप दुविधा में था कि वह क्या उत्तर दे। दुनिया के चित्रकारों के विषय में, भारतीय चित्रकारों के विषय में, चल रही आर्ट-लहरों के संबंध में किए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE:2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रश्नों के उत्तर उसने बहुत ही माकूल दिए। अपनी चित्रकारी में आये सुर-रीयलीज़िम के विषय में भी चित्रकार ने स्पष्टीकरण दिया। समीक्षक मनदीप सब नोट कर रही थी और साथ ही प्रश्न-उत्तर रिकार्ड भी किए जा रहे थे। लाइब्रेरी, आर्ट-गैलरी व बगीचे ने टीम को प्रभावित किया और नजदीकी पहाड़ियों को भी उन्होंने कैमरे में बंद कर लिया था।

पता ही न चला कि कब शाम के चार बज गये। नौकर ने कहा, ''सरदार जी, खाना तैयार है, लगा दूँ।''

चित्रकार ने टीम को पहले खाना खाने के लिए कहा। खाना खाने के उपरान्त फिर कॉफी पीने लगे। एक और प्रश्न किया गया। ''चित्रकारी की प्रेरणा कहां से मिली? ...आपके अन्दर का चित्रकार कब जागा, कब जन्म हुआ? ...क्या आप बचपन या कालेज के समय भी पेंटिंग करते थे?''

चित्रकार ने 'न' में सिर हिलाया।

''...सर, आपने अभी, मेरे पहले पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी देने हैं और इस प्रश्न को भी आप टाल-मटोल करने का प्रयत्न कर रहे हैं? ''...मनदीप ने मुस्कुराते हुए कहा,'' आप मेरी नौकरी से छुट्टी करवाओगे। मैग्ज़ीन के चीफ-एडीटर को मैं क्या उत्तर दूंगी। शायद आपको यह भी मालूम होगा कि यह इंटरव्यू टी.वी. चैनल पर भी प्रसारित की जाएगी।''

चित्रकार कुछ पलों के लिए गंभीर हो गया। उसे समीक्षक में एक अजीब सी आकृति दिखाई पड़ती। परन्तु चाहते हुए भी वह अपने अतीत के विषय में उसे कुछ भी बताने को तैयार न हुआ। उसे एहसास हुआ कि यह दबंग लड़की उसे आसानी से छोड़ने वाली नहीं। चित्रकार ने फिर प्रयत्न किया कि टीम अब लौट जाए। शाम के छः बज गये, सात बज गये, फिर रात्रि का अंधेरा घना होने लगा। ...मनदीप ने कहा, ''सर, अब हम किसी होटल में ठहर जाते हैं। प्रातःकाल दस बजे फिर आ जायेंगे।''

''नहीं बेटे नहीं। रात हो गई है। आप सभी यहीं पर रहें। रहने का इंतज़ाम हो जायेगा।''

चित्रकार मनदीप दुविधा में था कि वह प्रश्नों के उत्तर दे या नहीं।

रात्रि के भोजन के पश्चात् सब सो गये। चित्रकार अपने बेडरूम में जाग रहा था। बुज़ुर्ग नौकर व उसकी पत्नी रसोई में सफाई कर रहे थे। समीक्षक मनदीप
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को भी नींद नहीं आ रही थी। वह अपने कमरे से उठी और चित्रकार के कमरे के पास पहुँच गई। दरवाजा खुला रह गया था। समीक्षक मनदीप ने थोड़ा सा दरवाजा सरकाया और अन्दर आने की इजाजत माँगते हुए कहा, ''यदि आप मेरे प्रश्नों के उत्तर सबके सामने नहीं देना चाहते तो मुझे अकेले में ही बता दीजिए।''

चित्रकार मुस्कुराया और बैठने को कहा। वह बेड पर लेटा हुआ था और फर्श पर पड़ी कृत्रिम टाँगें चित्रकार की कहानी बयान कर रही थीं। समीक्षक कमरे में रखी कुर्सी पर बैठ गई। एकाएक उसकी नजर अंदर लगी एक पेंटिंग पर पड़ी और वह हैरान हो गई, ''सर, यह पेंटिंग आपने कभी छपवाई नहीं और न ही आर्ट-गैलरी में है। आपका इससे क्या संबंध हैं ?''

चित्रकार ने हवा को घूरा और एक गहरी श्वास ली और मुस्कुराने का प्रयत्न किया, ''बेटा, लगता है तुम मुझे छोड़ने वाली नहीं। कभी भी किसी ने मुझे इतना विवश नहीं किया और न ही मैंने ऐसे प्रश्नों के उत्तर दिये हैं। ...परन्तु, अब मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। ...परन्तु कोशिश करना मेरी व्यक्तिगत कहानी की सार्वजनिक चीर-फाड़ न हो। जो दु:ख मेरा है, मुझ पर बीता है, उसे पढ़कर दूसरे दु:खी क्यों हों? तुम्हारे सभी प्रश्नों के उत्तर तुम्हें मेरे अतीत से जुड़ी कहानी में ही मिल जायेंगे। ...मैं कोई जन्म से ही चित्रकार नहीं था...स्कूल या कालेज में कभी भी अपनी कॉपी पर कोई भी चित्र अंकित नहीं किया था। मैं साईंस का विद्यार्थी था। प्री. इंजीनियरिंग के पश्चात् मैंने कंम्पीटीशन पास किया और मुझे थापर इंजीनियरिंग कालेज पटियाला में प्रवेश मिल गया। मैं प्रति वर्ष अपनी कक्षा में प्रथम आता था। अंतिम वर्ष में मुझे बंगलौर की एक अंतर्राष्ट्रीय कंपनी ने चुन लिया और पांच वर्ष का बांड मुझसे भरवा लिया गया। बहुत अच्छी तनख्वाह मुझे ऑफर की गई थी।' ...इसी बीच अमृतसर की एक लड़की मेरी जिंदगी में आई। वाद-विवाद प्रतियोगिता में हम इकट्ठे हुए थे और वह राजिन्द्रा कालेज में एम.बी.बी.एस. के फाइनल इयर में थी। मैं जालन्धर का रहने वाला था। ज्यों ही हम दोनों ने फाइनल की परीक्षाएं दीं, त्यों ही परिवार वालों की रजामंदी से हमारी सगाई हो गई। उसने दो वर्ष इंटर्नशिप अमृतसर में ही करने की सोची। मैंने तो बंगलौर जाना ही था। फोन पर बातें होती रहतीं। मैं उसे संदली कहता था। वैसे उसका नाम था-संदीप कौर। ...और वह मुझे मन्नु कह कर बुलाती। करीब दो वर्ष पश्चात् शादी का प्रोग्राम रखा गया। पंजाब के हालात बिगड़ते जा रहे थे। आतंकवाद उभर रहा था। पंजाब के [illegible] में, [illegible] से बाहर [illegible]

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अफवाहें बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश की जातीं। प्रत्येक पगड़ी वाले और दाढ़ी वाले को दूसरे प्रांतों के लोग आतंकवादी ही समझते। करीब डेढ़ वर्ष मुझे बंगलौर में रहते हो चुका था और संदली की इंटर्नशिप छः माह और शेष रह गई थी। चार दिन की छुट्टियां आ रहीं थीं और एक सप्ताह की अतिरिक्त छुट्टी मैंने ली एवं बंगलौर मेल से दिल्ली के लिए रवाना हुआ। गाजियाबाद स्टेशन के निकट मैं ट्रेन के दरवाजे में से बाहर की ओर देख रहा था, ट्रेन धीमी-धीमी गति से चल रही थी। यकायक मुझे किसी ने जोर से पीछे से धक्का दिया। मैंने अपने आपको संभालने की बहुत कोशिश की। परन्तु मैं नीचे जा गिरा एवं मेरी दोनों टाँगें ट्रेन के नीचे आ गईं। ट्रेन रूक गई, धक्का देने वाला वहां से जा चुका था। कुछ भद्र-पुरूषों ने मुझे उठाया व दिल्ली के ऑल-इंडिया मैडीकल इंस्टीच्यूट में ले गये। मेरी दोनों टाँगें काटनी पड़ीं। मेरे माता-पिता व भाई वहीं पहुँच गये। घर पहुँचने के उपरान्त प्रथम कार्य यह किया कि संदीप के परिवारजनों को फोन करवाया कि वह संदीप की शादी कहीं और कर दें। मैं अब उसके काबिल नहीं रह गया था। उसके साथ खिंचवाई फोटो की एलबम, उसके पत्र सब पार्सल के द्वारा उसे वापस भेज दिए। कुछ पत्रों की फोटोस्टेट कापी रख लीं। स्वयं को खत्म करने के लिए शराब पीने लगा। डैडी....स्वयं पव्वा-अध्धा लाकर देते। ....मेरे साथ हुए हादसे ने उन्हें भी निढ़ाल कर दिया था। ...धीरे-धीरे पत्रों की फोटोस्टेट कॉपी भी मोमबत्ती की लौ के हवाले कर दीं। हादसे के एक वर्ष उपरान्त माता-पिता दोनों चल बसे। बहन जो पहले ही दिल्ली शादी शुदा थी, यू.के. पहुँच गई थी। भाई न्यूयार्क चला गया था। पता चला संदली के पिता की ट्रांसफर मुंबई की हो गई थी। न ही उसके विषय में पता किया और न ही पीछा किया कि वह किधर गुम हो गई। उसने भी शादी करवाई अथवा नहीं। मैंने अपनी ओर से उसे स्वतंत्र कर दिया था। मात्र एक फोटो रख ली थी। ...प्रतिदिन शराब पीने पर भी चैन न आता। ...फिर सोचा क्यों न अपना ध्यान किसी और दिशा में लगाऊँ। मैं कागज़ पर लाइनें खींचता तो उनमें से संदली के चित्र ही उभरते। एक बार मेरे कालेज के प्रोफेसर साहब आये और उनकी नज़र उन चित्रों पर पड़ी। उन्होंने मुझे इस ओर प्रोत्साहित किया और फिर मैंने कभी पीछे मुड़कर न देखा। ...मेरे ख्याल से तुम्हें अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गये होंगे। इसे घटना समझो या फिर दुर्घटना, इसी ने मेरे अंदरूनी कलाकार को जन्म दिया।''

जिनका यह कथा सुनकर काफी हल्का महसूस कर रहा था। परन्तु यह

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्मकथा सुनकर जैसे पत्रकार मनदीप के सिर पर भारी बोझ पड़ गया हो। वह रात्रि को पूरी तरह सो भी न पाई। अगली सुबह अपनी टीम के साथ दिल्ली वापस चली गई।

एक सप्ताह पश्चात् पत्रकार मनदीप ने फिर से आकर घंटी बजाई और नौकर ने बताया कि, "पिछले सप्ताह वाले बीबी जी आये हैं। परन्तु इस बार अकेले हैं, ड्राइवर भी साथ में नहीं है। मालूम होता है गाड़ी स्वयं चलाकर आये हैं।"

चित्रकार हैरान भी था और परेशान भी। उन्हें अंदर बुलाया। नौकर चाय के कप देकर चला गया। मनदीप से चाय नहीं पी जा रही थी। साहसी पत्रकार मनदीप बच्चों की तरह फूट- फूटकर रोने लगी। नौकर भीतर आया परन्तु इशारा पाकर बाहर चला गया। चित्रकार समझ नहीं पा रहा था कि वह क्यों रोए जा रही है।

जब मन का गुबार कुछ कम हुआ तब मनदीप ने बताना शुरू किया, "मैंने...मैंने आपके कमरे में रखी पेंटिंग पहचान ली थी। परन्तु मुझे शक था पूरा विश्वास नहीं था। ...आपकी संदली और कोई नहीं, मेरी...माँ है...मेरी बदकिस्मत माँ।" यह कहकर वह फिर से फूट-फूटकर रोने लगी। चित्रकार की आँखों में से आँसू टपकने लगे। दोनों एक दूसरे को चुप करवाने का प्रयत्न करने लगे। ...परन्तु दोनों के मन व आँखें दोनों रो रहे थे। चित्रकार का मन सिसकियाँ भर रहा था, गला रूंध गया था और संदली की बेटी सिसकियाँ ले रही थी। ...चाय ठंडी हो गई थी। ...पानी पीने से दोनों को कुछ राहत मिली और फिर चित्रकार ने संदली के विषय में पूछा तो संदली की बेटी सिसकियाँ लेते हुए बदकिस्मत संदली की कथा सुनाने लगी।

"अंकल, जब मैं यहाँ से दिल्ली वापस गई तब मम्मी को आपकी फोटो दिखाई व आपके विषय में बताया।" एक पल तो उनका चेहरा कमल के फूल की तरह खिल गया परन्तु दूसरे ही पल मुरझाये हुए कमल जैसा बन गया। आपके द्वारा बनाई गई पेंटिंग्ज के बारे में बताया तो कई घंटो तक वह रोती रही। ...बहुत मुश्किल से चुप करवाया और कहा, 'मम्मी, आप पहले ही बीमार हो...आप रोओ मत। मम्मी ने बताया कि चौरासी के दंगे-फसाद से दो वर्ष पूर्व उनकी शादी दिल्ली के एक डाक्टर तेजवंत सिंह से कर दी गई। ...मम्मी ने पहले ही मेरे डैडी को अपने साथ हुए हादसे के बारे में बता दिया था। जब मेरा जन्म हुआ तब मम्मी ने मेरा नाम भी आपके नाम पर ही रखने को कहा तब पापा ने कोई आपत्ति नहीं। मैं मात्र छः माह की थी और ननिहाल मुंबई आई हुई थी। ...मम्मी बताती हैं कि मेरे पापा, उनके माता-पिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
व मेरे अंकल को दंगा-फसाद करने वालों ने घर में बंद करके जीवित जला दिया, जबकि पड़ोसियों ने उन्हें बचाने के भरपूर प्रयत्न किए। ...बस, इस हादसे के पश्चात् मम्मी वापिस कभी दिल्ली न आये और मैं व मम्मी मुंबई में ही नाना-नानी के पास रहने लगे। मम्मी थोड़ी बहुत प्रैक्टिस करती...परन्तु शीघ्र ही निढ़ाल हो जाती...साँस फूलने लगती। मैंने सर जे.जे. स्कूल आफ आर्टस में प्रवेश लिया। ...मम्मी दिन-प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी। ...नाना जी ने चैंकअप करवाया तो मालूम हुआ कि ब्लड कैंसर है। टाटा कैंसर अस्पताल में काफी समय इलाज चला। ...परन्तु लगता है जैसे अब मम्मी स्वयं ही जीना नहीं चाहती। मेरी नौकरी दिल्ली लग गई। वह मेरे साथ आ तो गयी...परन्तु आना चाहती नहीं थी।''

चित्रकार मनदीप पत्थर बना सुनता जा रहा था और उसकी आँखें मानों गंगा-यमुना बनी हुई थीं। उसे यह भी ध्यान न रहा कि वह नौकर से चाय व कुछ खाने के लिए लाने को कह सके। नौकर डरते-डरते भीतर आया और ट्रे में चाय-बिस्किट रख कर वापस चला गया था। चित्रकार मनदीप ने चाय का कप उठाकर संदली की बेटी के मुँह को लगा दिया, संदली की बेटी मनदीप ने दूसरा कप चित्रकार को पकड़ाते हुए कहा, ''अंकल, आप भी तो लो।'' चित्रकार, मनदीप से बोला, ''बेटा यदि आपको कोई एतराज न हो तो मैं आपके साथ कल दिल्ली चलूँ, आपकी मम्मी का हाल-चाल पूछने ?''

''क्यों नहीं, आपने तो मेरे दिल की बात कह दी। ऐसा करके आप मुझ पर बहुत बड़ा एहसान करोगे। मैं तो स्वयं आपसे कहने वाली थी। शायद इसी तरह से मम्मी कुछ ठीक हो जायें।''

अभी चाय की पहली घूँट भरी ही थी कि बाहर से किसी ने घंटी बजाई। नौकर ने बताया कि, ''एक कार आकर रूकी है। ...कार का ड्राईवर बीबी जी को बुला रहा है।'' चित्रकार मनदीप ने कहा, ''मैं देखता हूँ'' और वह नौकर को साथ लेकर व्हील चेयर पर बैठकर बाहर की ओर चला गया। मनदीप भी चाय का कप रखकर, बाहर आ गई।

तीनों ने देखा एक औरत कार की खिड़की में से बाहर निकलने का प्रयत्न कर रही थी। मनदीप दौड़ी-दौड़ी आई और चिल्लाई, ''मम्मां! आप, मुझे कहते तो मैं आपको साथ ले आती।''

माँ, बेटी के कन्धों का सहारा लेकर कार में से बाहर निकली। कोठी के
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बाहर संदली का मन्नु व्हील चेयर पर बैठा था। मनदीप की मम्मी ने कोठी के बाहर लगी नेम-प्लेट पढ़ी, हल्का सा मुस्कुराई व बोली, ''बिन-बुलाये मेहमान को भीतर आने को नहीं कहोगे?''

चित्रकार की भीगी पलकों में अटके आँसूओं ने संदली का स्वागत किया और फिर उसने नेम-प्लेट की ओर इशारा करते हुए कहा, ''यह सभी कुछ तो आप ही का है,, मैं तो मात्र चौंकीदारी के लिए बैठा हूँ।'' चित्रकार कहना चाहता था, 'संदली, यह सब कुछ तुम्हारी बदौलत ही है। सब कुछ तुम्हारा ही तो है।'

चित्रकार की संदली उस द्वार पर आई थी जहाँ कभी किसी ने उसके सिर से पानी वार कर पीना था। ...वह बेटी के कंधों का सहारा लेते हुए भीतर चली आई। चाय-पीने के पश्चात् सहजता पूर्वक आर्ट-गैलरी देखी, फिर आर्ट-लाइब्रेरी। इसके पश्चात् संदली थकावट महसूस करने लगी। चित्रकार उसे अपने बेडरूम में ले गया था जहाँ संदली की पेंटिंग पड़ी थी। ''क्या मैं बेड पर लेट सकती हूँ?'' चित्रकार को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे पच्चीस वर्ष पूर्व वाली संदली पच्चीस वर्ष पूर्व वाले मन्नु से यह पूछ रही हो।

''मैं उठकर तुम्हारा स्वागत नहीं कर सकता, ...फिर तुम ऐसे प्रश्न क्यों करती हो?''

''नहीं मन्नु'', संदली ने बेड पर लेटते हुए कहा, ''मुझे पता था कि मनदीप आपको लेने के लिए गई है...परन्तु मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं आपके आने तक जीवित नहीं रह पाऊँगी। ...मैं ...मैं इंतजार नहीं कर सकती थी। ...अब मैं, चैन से आंखें मूंद सकूँगी। ...मनदीप को बेटी मानकर...इसकी शादी करना'' ...खाँसते व सिसकियाँ भरते हुए वह कह रही थी। ...पानी का गिलास संदली के होंठों को लगाते हुए चित्रकार ने कहा, ''नहीं, संदली नहीं, यह शुभ शुगन-कार्य तुम्हें स्वयं, अपने हाथों से करना है।''

''नहीं, मुझमें अब इतनी हिम्मत नहीं रही-परन्तु मैं बेटी को आपके सुपुर्द करके, तनाव मुक्त सा महसूस हो रही हूँ। ...आप इसके अंकल, ...इसकी मम्मी, इसके भइया, सभी कुछ, इसके डैडी भी हो...।'' यह अंतिम शब्द संदली के मुँह से निकले और उसका सिर चित्रकार की व्हील-चेयर की ओर लुढ़क गया।❑

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जांबाज़

परसों जब मैं दस दिनों के टूर से घर वापिस आया तो चाय-पानी पीने के पश्चात् पत्नी ने शादी का एक कार्ड मेरे आगे कर दिया व साथ ही ढोडा मिठाई का डिब्बा जिसमें से शुद्ध घी की खुशबू आ रही थी तथा साथ ही एक लाल रंग की मखमली थैली थी जिसमें लगभग एक किलो के करीब बादाम थे। कार्ड पढ़कर मैं व मेरी पत्नी दोनों मुस्कुरा पड़े। दरअसल यह कार्ड हमारे पारिवारिक व निकटतम मित्र मुंशी चंद मुंजाल के परिवार की ओर से था जिनके बेटे की शादी रविवार को थी। ...और मुझे तथा मेरे परिवार को करनाल जाना था जहां पर मैंने व मेरे परिवार ने सत्रह वर्ष व्यतीत किए थे। पत्नी ने बताया कि मुंशी चंद व उनकी पत्नी दोनों स्वयं ही कार में कार्ड व मिठाई देने आए थे तथा यह ताकीद करके गए थे कि हमें कम से कम दो दिन पहले वहां अवश्य पहुंचना है। दूसरे वे दोनों हमारे बड़े बेटे को साथ ले गये थे, सरबाला (दूल्हे का साथी) बनाने के लिए। उनके इसी प्यार व लगाव के कारण मैं, मेरी पत्नी, बेटी तथा दूसरा बेटा शुक्रवार सांयकाल करनाल पहुँच गये। वहां पहुँचने पर हमें जो आदर-सत्कार मिला, वह शायद हमें उम्र-भर कहीं भी न मिल पाये। हम सभी को वी.वी.आई. पी ट्रीटमैंट मिल रहा था। उस शादी के शुभ अवसर पर सभी रिश्तेदार-मित्र मोने थे-मात्र दो परिवार सिक्ख थे-एक हमारा तथा

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरा मुंशी चंद का एक सम्बन्धी परिवार।

मुंशी चंद के बेटे जगदीश चंद की शादी थी जिसके कारण हम सभी करनाल एकत्रित हुए थे। जगदीश, मुंशी की सबसे छोटी संतान थी। सात बेटियों के पश्चात् उसका जन्म हुआ था। सात बहनों का लाडला, दादा-दादी की उम्मीदें जाग उठी थीं, माता-पिता की आँखों का तारा। दादा दाता राम व दादी वीरां वाली जिसका अपना कोई भाई न था, वे छः बहनें ही थीं। दाता राम का परिवार पाकिस्तान से आकर करनाल बस गया था और वहां पर मंडी में तोला बनाकर घर के खाने-पीने का जुगाड़ करने लगे। उन दिनों मशीनी-तराजू नहीं होते थे। जिमींदारों का अनाज तोले ही तोलते। वीरां वाली कई लोगों के घरों में जाकर सफाई और बर्तन साफ करने का काम करती। ...मुंशी चंद ही उनकी इकलौती संतान थी। जब मैंने झुककर दाता राम के चरण स्पर्श किए तो वह मुझे पहचान न पाये व हुक्के की नली मुँह से निकालते हुए बोले, ''भाई, कौन है ?'' उनकी आँखों की रोशनी नाम-मात्र सी रह गई थी। जब उनकी पत्नी वीरां वाली ने बताया, ''अपना बलवीर सिंह, गोदी दा पापा, पटियाले वाला आया है।'' दाता राम ने हुक्के को पीछे किया, अपनी चादर से दोनों हाथ दो-तीन बार अच्छे से साफ किए और मुझे गले से लगा लिया।

''ओए...आ बई बलबीर सिंघा-बहूं खुश कीतोई। हुण तां कंधी उत्ते रुखड़े वांगू हां।...की पता फिर मेले होणा कि न, नदी नाम संजोग मेले...। तुहाडे बिना जग्गू दी शादी फिक्की होवनी हाई...! ...बस तेड़े नाल हिक पेग ज़रुर लासां।'' वह बोलते भी जा रहे थे व साथ ही साथ मेरी पीठ भी थपथपा रहे थे। ...वीरां वाली पगली की भांति मेरी पत्नी को चूमती ही जा रही थी व उसकी आँखों में से खुशी के अश्रु गंगा-यमुना बनकर बह रहे थे। मेरे बच्चों को मुंशी की पत्नी तुलसी इतना प्यार-दुलार दे रही थे कि शायद हमने भी उन्हें उतना कभी दिया हो।

जगदीश ने अपने माता-पिता से कई जन्मों के बदले छोटे होते समय गिन-गिन कर लिए थे। प्यार-दुलार ने उसे बिगाड़ दिया था। परिवार के प्रत्येक सदस्य से वह अपनी बात मनवा कर ही हटता। कभी बड़ी बहनों की चोटियों खींचता तो कभी उनके बाल नोचता। जिस भी वस्तु पर ऊंगली रख देता, उसे हासिल करके ही सांस लेता। यदि कभी पिता मुंशी अथवा उसकी माता किसी बात से इंकार कर देते तो पास में ही बने कुएं में अपनी टाँगें लटका कर बैठ जाता कि मुझे वो चीज़ लेकर दो नहीं तो मैं कुआँ में छलाँग लगा दूंगा। छलाँग तो वो [illegible] परन्तु उसके ऐसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करने पर सभी उसकी मिन्नतें-खुशामद करते अथवा यह कह लीजिए कि नाक से लकीरें खींचने तक को तैयार हो जाते। स्कूल वाली लकड़ी की तख्ती दूसरे ही दिन तोड़ देता व तख्ती से पत्थर के टुकड़ों को उछालता। पड़ोस के बच्चों की मार-पिटाई करके आ जाता व उल्लाहने मुंशी व तुलसी को मिलते। वह पड़ोसियों से हाथ-जोड़ कर क्षमा याचना करते। पांचवीं कक्षा में एक बार फेल हो गया। ...तत्पश्चात् पता नहीं उसके दिल पर क्या चोट आई कि उसके सभी सहपाठी छटी कक्षा में तथा वह चौथी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ पाँचवीं कक्षा में ही बैठा था। फिर कभी उसने पलट कर पीछे न देखा व परिश्रम करके हायर सैकेंडरी नॉन मेडिकल करने के पश्चात् पॉलिटैक्निक से तीन वर्ष का मकैनिकल इंजीनियरिंग का डिप्लोमा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण किया। दो वर्षों में ए.एम.आई. प्राईवेट तथा मात्र तेईस वर्ष की आयु में एक इंटरनेशनल कंपनी में इंजीनियर लग गया। वहीं पर एक पंजाबी बनियों की लड़की से चक्कर चल गया, जो सीनीयर ड्राफ्टसमैन थी। फिर उसी से शादी तय हो गयी थी।

हम शुक्रवार सांयकाल पहुँच गये थे और काफी निकटतम रिश्तेदार दोस्त-मित्र शनिवार को ही पहुँचे। जगदीश सबसे छोटा था तथा उसकी छः बहनों की शादी हो चुकी थी। यह सब मुंशी व तुलसी की हिम्मत का चमत्कार था। बड़ी बेटी देखने में सुन्दर परन्तु सीधी-सादी, आठवीं मुश्किल से उतीर्ण की थी। उसके लिए जो लड़का देखा गया वह छटी कक्षा उतीर्ण तथा सब्जी की दुकान करता था। उससे छोटी शशि नर्स का कोर्स करने के उपरान्त अस्पताल में नौकरी करने लगी तो उसी शहर में उनकी जात-बिरादरी का लड़का मिल गया। वह मांग कर शशि का रिश्ता ले गये। तीसरी बेटी उमा दिल्ली में आर्ट डिज़ाईनिंग का डिप्लोमा कर रही थी। मेरठ का एक जाट लड़का उसके पीछे पड़ गया। वह एम.बी.ए. कर रहा था, उसके पास जमीन भी बहुत थी। राजनीतिक क्षेत्र में उनकी अच्छी पहचान भी थी। वह भी उसे चाहने लगी थी। मुंशी ने थोड़ा आनाकानी की तो लड़के का पिता केन्द्रीय सरकार के डिप्टी मंत्री को लेकर घर आ धमका व पूछने लगा, ''म्हारै में कै कमी सै? हमारा छोरा कै लंगड़ा-लूला सै?''

मुंशी ने साफ-साफ कह दिया था, ''भई में तो स्कूल में एक मास्टर हूँ। मैं फाइव स्टार होटलों में खाना नहीं खिला सकता?''

''कौन हरामज़ादा फाइव स्टार की रोटी माँगै सै? हमारे छोरे नै थारी छोरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पसंद सै। ...बाकी थम अपनी लाडली तै पूछ लियो।''

...और इस तरह बीस-पच्चीस हजार के खर्च में उसकी शादी हो गई और उसकी ओर से ठंडी हवाएं आ रही थीं। चौथी सुशीला अमृतसर डैंटल डाक्टर की डिग्री लेने गई तो वहीं की हो गई। उसने एक अरोड़ा सिक्ख लड़के के साथ आनन्द कारज (फेरे) करवा लिये। यह तो वही बात हुई हींग लगे ना फिटकरी, रंग चौखा। मुंशी को वहां पर भी कोई अधिक खर्च नहीं करना पड़ा। पाँचवीं कालेज में नाटकों में भाग लेती थी। रोहतक में यूथ फैस्टीवल हुए तो मुंबई फिल्मों के एक प्रसिद्ध सिंधी निर्देशक की नजरों पर चढ़ गई। ...पहली फिल्म करने के पश्चात् ही निर्देशक की पत्नी बन बैठी।

छटी कमलेश साधवी बन गई, उसे गृहस्थी से कोई लगाव नहीं था। जानी-मानी साधवी की मुंह बोली चेली। मुंशी को कोई आपत्ति नहीं थी, परन्तु तुलसी अवश्य कुछ दिनों तक बुदबुदाती रही। सातवीं दिशा जहां कंप्यूटर सीखने जाती थी। तीस-पैंतीस कंप्यूटर वाले इंटरनैट सैंटर के मालिक देवी चंद शर्मा के इकलौते कंप्यूटर-इंजीनियर बेटे को पसंद आ गई और वहीं पर शादी। शादी की रिसैप्शन का खर्च आधा-आधा, शेष दहेज की कोई भी मांग नहीं थी। इस प्रकार मुंशी की छः की छः बेटियों की शादी ऐसे हो गई जैसे कि वह जन्म से पूर्व ही अपनी शादी की व्यवस्था स्वयं करके आई थीं। मुंशी मुस्कुराता रहता तथा कहता, ''करे करावे आपे आप, मानस के किछु ना ही हाथ।''

आज जगदीश की शादी पर उसकी छः बेटियों के ससुर आए हुए थे। कोई जाट, कोई पंडित, कोई सिक्ख, कोई खत्री तो कोई अरोड़ा और अब जगदीश को बनियों की बेटी पसंद आ गई थी। सातवीं साधवी बनी बेटी अपनी गुरू माता के साथ आधे घंटे के लिए आई थी तथा आर्शीवाद देकर वापिस लौट गई थी।

जब हम लोग करनाल रहते थे तो उस समय जगदीश को अपने नाम से चिढ़ सी थी। उसे अपना नाम घिसा-पिटा सा प्रतीत होता। एक दिन अपने पिता मुंशी से कहा, ''डैडी, मेरा कोई अच्छा सा नाम रखना था। माना दादा-दादी तो पुराने विचारों के हैं परन्तु आप तो पढ़े-लिखे अध्यापक हो।'' मैं उस समय उनके पास ही बैठा था। उसके दादी-दादा भी मौजूद थे एवं तुलसी भी। मुंशी ने बहुत शालीनता और सहज रहते हुए उत्तर दिया, ''बेटे, मैंने अपने लाला और भाभी (पिता और माता) से भी मशवरा लिया था। सभी ने कहा था कि जगदीश नाम बढ़िया है। ...दूसरी बात,

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सभी का तुमसे बहुत लगाव है। मरते समय हमें ईश्वर तो याद होगा नहीं। सभी तुम्हें ही स्मरण करेंगे। ...जगदीश...जगदीश....पुकारेंगे। यमदूत जगदीश का नाम सुनकर लौट जायेंगे तथा कृष्ण-मुरारी भगवान हम सभी को स्वयं लेने आएंगे।'' यह सुनकर सभी हंस पड़े थे व जगदीश ने उस दिन के पश्चात् अपने नाम के पुराने होने के विषय में कोई झगड़ा नहीं किया था।

मुंशी कठिन से कठिन समय में भी सहजता से सभी काम करता। चार बेटियों के पश्चात् एक बेटा पहले भी हुआ था। शगुन किए गए व खुशियां मनाई गईं थीं। ...परन्तु उसे एक बार ऐसा पीलिया हुआ कि वह ठीक न हो सका। मुंशी पहले चपड़ासी था, फिर क्लर्क लग गया था। परन्तु बी.ए. उसने वाया बठिंडा उत्तीर्ण की अर्थात् प्रभाकर करके दो वर्षों में प्राईवेट बी.ए. उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् वह बी.एड कर रहा था। पहले बेटे की मृत्यु पर उसे तार देकर बुलाया गया था। घर पहुंचा, चक्कर खाकर उल्टे मुँह गिर पड़ा था। परन्तु जब उसे पानी पिलाकर होश में लाया गया तो वह दबंग होकर सभी को ढांढस बंधाता रहा। तुलसी को उसने अपने प्यार से सींचा व मुरझाने न दिया। लाला-भाभी (माता-पिता) की जिम्मेदारी व बालिग होती बेटियों ने उसे जाँबाज बना दिया जो हँसते-हँसते ज़िन्दगी की पीड़ा का ज़हर शिव की तरह पी लेता व जिंदगी की जंग भी लड़ता।

जगदीश की शादी थी। भांगड़ा चल रहा था। स्त्रियां ढोलकी के साथ-साथ शगुन के गीत गा रही थीं। कुछ हरियाणवी स्त्रियां-पुरूषों की सी कमीज एवं सलवार पहनकर, दाँतों तले दुपट्टे का किनारा दबाकर, पंजाबी शादी को जांच-परख रही थीं। पुरूष सिरों पर हल्के गुलाबी रंग की पगड़ियां बांधे टिपरी डांस या तांडियां नाच-ढोल की ताल पर नाच रहे थे। कुछ लोग यमुनानगर की लाल परी पी रहे थे व कुछ के पास व्हिस्की थी। अधिकतर मेहमान शराब को छूते भी नहीं थे। दाता राम व उसके बजुर्ग साथी हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। जगदीश के कुछ अपटूडेट-मित्र गुड़गांव से आए हुए थे। बुआ-मौसी, दूर के चाचा-ताऊ, मामे-मामी तथा उन सभी के परिवार पहुँचे हुए थे। निकटतम सनातम् धर्मशाला के सभी कमरे बुक कर लिए गए थे। धर्मशाला में ही हनुमान मंदिर था जहां प्रातःकाल आरती-ओम-जै-जगदीश हरे...गाई जाती, प्रतिदिन हनुमान चालीसा पढ़ा जाता। धर्मशाला के साथ ही एक गुरूद्वारा भी था। मुंशी, तुलसी, वीरां वाली बिन नागा गुरूद्वारे भी जाते तथा मंदिर भी। परन्तु दाता राम को हुक्का गुड़गुड़ाने से ही समय न मिलता। वह कभी-कभार ही मंदिर अथवा

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गुरूद्वारे जाता। परन्तु राम लीला के दिनों में वह हुक्का न पीता। वह राम लीला की रुह था। राम लीला में वह दशरथ, सुग्रीव या विभीषण इत्यादि अनेकों प्रकार के रोल करता। संवाद बोलने का उसे ढंग था तथा कई जगह वह दूसरों को निर्देश भी देता। इन दिनों वह मुँह में सुपारी डाले रखता।

जगदीश चंद विशेष मित्रों को लेकर मेरे पास आया व उनसे पहचान करवाई और कहने लगा, ''अंकल सभी काम आप ही को संभालने हैं।'' मैंने कहा, ''अवश्य'' परन्तु मेरे लायक कोई काम रखा ही नहीं गया था। मुंशी ने अपने लोकल मित्रों, सहयोगियों के साथ मिलकर सभी चीजों का प्रबंध पहले से ही किया हुआ था। जगदीश जब मेरे पास से चला गया तो मुझे उसके बचपन की बातें याद आई। तब वह नवम् कक्षा में पढ़ता था। शायद स्कूल में उसे किसी ने चिढ़ाया कि उनके घर में हॉकी की टीम बनने में तीन की कमी है। वह घर आया, तब मैं भी वहीं था, मुझे वह सभी परिवार का सदस्य ही मानते थे। अपने गुस्से को वह छिपा न सका तथा पिता से कहने लगा, ''ये क्या पलटन इक्ट्ठी कर रखी है ? आपको क्या और कोई काम नहीं था ?''

मुंशी के माथे पर एक बार तो गुस्से की त्योरियां आईं। परन्तु शीघ्र ही उसने अपने आप को सहज किया और बोला था :

''बेटा, इसमें हमारा कसूर कम है व तुम्हारा अधिक।''

''वह कैसे ?'' वह चीखकर बोला था।

''यदि तुम पहले जन्म ले लेते तो हम पलटन इक्ट्ठी न करते।'' यह सुनकर हम सभी हंस पड़े और जगदीश की आँखें ज़मीन पर धँसी की धँसी रह गई थीं। मुंशी ने चंद सैकेंड के पश्चात् कहा, ''बेटा, यह पलटन तुम पर बोझ नहीं बनेगी, यह मेरा वादा रहा। रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाये पर वचन ना जाई।''

मुंशी के पड़ोस में हम सत्रह वर्ष रहे। मैंने कभी भी उसे या उसकी पत्नी को ऊंची आवाज में बात करते नहीं सुना था। उसने लंबा सफर तय किया था। घर में गरीबी होने के कारण, उसने आठवीं पास करके बी.डी.ओ. ऑफिस में चपरासी की नौकरी कर ली थी। दसवीं उसने प्राईवेट पास की थी। अपने अफसर के घर के सभी काम करता। दफ्तर के क्लर्क को भी कभी किसी काम से इंकार न करता। बी.डी.ओ. ने उसके अच्छे व्यवहार के कारण डी.पी.आई. से मिलकर उसे चपरासी से क्लर्क लगवा दिया। फिर उस अफसर ने अपने दूर के रिश्ते से [illegible]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करवाया था। मुंशी को संगीत का भी शौक था। वह हारमोनियम व तबला दोनों बजा लेता था। वह जब मूड में होता तब एक फिल्मी गीत हारमोनियम पर अकेले बैठकर गाता, "हमें तो लूट लिया मिलके हुस्न वालों ने, काले-काले बालों ने, गोरे-गोरे गालों ने।"

शादी के पश्चात् मुंशी ने तुलसी के साथ मिलकर काम किया। तुलसी को उसने पहले दो विलायती गायें ले दीं। धीरे-धीरे वह ग्यारह हो गईं। उसने स्वयं मुर्गीफार्म खोल लिया जिसे तुलसी पसन्द नहीं करती थी और न ही घर के भीतर माँस-मीट अथवा अंडा लाने देती थी। मुंशी दफ्तर का कार्य भी करता व साथ ही साथ दो फार्मों की देख-रेख भी करता। इसके साथ-साथ उसने पत्नी के नाम से ही फीड की एजेन्सी ले ली। मुर्गी फीड व पशु-फीड। उन दिनों यह कार्य लीवर कंपनी के पास था। उसने दो लड़कों को काम पर रखकर यह काम अच्छे ढंग से चलाया। लीवर कंपनी ने उसके काम से खुश होकर उसे दो बार डीलर-मीट में बुलाया-एक बार दिल्ली तथा दूसरी बार मुंबई। मुंबई वह पहली बार हवाई जहाज के द्वारा गया। कंपनी ने फाइव स्टार के खाने, स्कॉच तथा ठहरने की व्यवस्था की हुई थी। इस विषय में मुझे उसी ने बताया। बेशक वह पाँच-सितारा होटलों में खाना खा चुका था व स्कॉच भी पी आया था, परन्तु उसे शराब पीनी नहीं आती थी। उसके गिलास में कोई जितना चाहे पेग डाल देता, वह उसमें थोड़ा सा पानी डालकर गिलास मुँह में तब तक दूर न करता जब तक कि वह गिलास खाली न कर लेता। उसने मुझे बताया कि वह मुंबई में स्कॉच के आठ-नौ के करीब पेग लगा बैठा तो प्रातःकाल दस्त तथा उल्टियां लग गईं। इसके पश्चात् से वह तीन-चार पेग से अधिक कभी भी न लगाता। परन्तु पीने का ढंग उसका वही रहा। आज फरवरी का महीना, दिन शनिवार व ठंड पूरे जोरों पर थी। सांयकाल का समय, खुशी का माहौल। शादी वाले दिन मुंशी ने एक भी पेग न लगाया। मैं आश्चर्यचकित रह गया था। मैंने कहा, "मुंशी जी, दो घूँट आप भी लगा लो। सर्दी उतर जायेगी। खुशी का भी मौका है।"

"अब हम लोग घुद्दे की शादी पर पीएंगे (घुद्दू मेरे बेटे का नाम)। बलबीर जी, अब हमने बहु का ससुर बनना है, कल को दादा। इसके बगैर कौन सा काम नहीं चलता।...यदि मैंने आज पी ली तो मेहमानों की आवभगत कौन करेगा?"

उसने शादी के दौरान एक भी बूँद शराब न पी थी। वह साठ वर्ष का होकर भी ऐसे काम कर रहा था जैसे तीस-पैंतीस का हो। बालों में वह रंग अवश्य लगाता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परन्तु स्वास्थ्य की ओर से वह एकदम चुस्त-दरूस्त रहता। लोगों को समझ में न आता कि वह इतना 'फिट' कैसे है। वह जगदीश का बड़ा भाई लगता। मैंने उससे स्वास्थ्य का रहस्य पूछा तो वह कहने लगा, "सिर्फ आप को बता रहा हूँ। पाँच बातें-चार से पांच लीटर पानी प्रतिदिन। दूसरा सैर व व्यायाम! तीसरा भूख से बीस प्रतिशत कम खाना। ...चौथा...स्वयं को कार्यकर्ता न समझना। ...पाँचवा अपना उसूल है कि अपना कोई उसूल नहीं।"

मैंने उसे पूछा, "पाँचवी बात समझ में नहीं आई।"

पर यह कहकर फिर से वह शादी के कार्यों में व्यस्त हो गया। मेरे दो लगाये गये पेग भी उतरने लगे कि जो पाँचवीं बात उसने बोली है अवश्य उसमें दम होगा, ...परन्तु क्या?

अगले दिन रविवार को जगदीश की शादी थी। दोपहर को लड़की वालों के साथ ही मिलकर रिसैप्शन इकट्ठे रखी गई थी। लड़की वाले बनिये थे। उन्होंने बताया कि वह मांसाहारी भोजन नहीं दे सकते। मुंशी ने कहा, "सत्य वचन, हमें कोई एतराज नहीं।" परन्तु उसके अधिकतर रिश्तेदार व सम्बन्धी पीने पिलाने वाले। मुंशी ने मैरिज-पैलेस के साथ वाले होटल में करीब डेढ सौ लोगों के खाने पीने का प्रबंध अपनी ओर से कर दिया। लड़की वालों की ओर से दस-बीस लोग खाने-पीने वाले थे, मुंशी के कहने पर मैं उन्हें होटल ले आया। मैंने मुंशी के पिता दाता राम के साथ एक पेग लगाया तो वह बहुत प्रसन्न हुए, और बोले, "खुश कीता ई। तू मैकूं याद रखिये।" गिलास खाली कर उसने गिलास उल्टा करके मेज पर रख दिया। स्पष्ट था कि वह दूसरा पेग नहीं लगायेंगे।

शादी की रस्में पूरी हुईं। मेरा बेटा सरबाला बना था जिसे घर पहुँचने पर जगदीश की दुल्हन ने अपनी गोद में बिठाया। छोटे देवर को उसने पर्स में से निकालकर सौ रुपये दिए। मुंशी व तुलसी ने हम सभी के सूट मंगवाकर रखे हुए थे। हमने दूल्हा-दुल्हन को परिवार सहित पटियाला आने का न्यौता दिया। जगदीश व उसकी पत्नी ने चलते समय हम दोनों के चरण स्पर्श किए। मुंशी ने कहा, "जब इसे पॉलिटैक्निक में प्रवेश मिला था तो मैं इसे हरिमंदिर साहिब माथा टिकाने ले गया था। अब शीघ्र ही जब हम सभी हरिमंदिर साहिब माथा टेकने आएंगे तो आपके पास अवश्य आएंगे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0
मुंशी अपनी यह इच्छा पूर्ण न कर सका क्योंकि बेटा व बहू पहले हनीमून

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मनाने गोवा व साऊथ इंडिया चले गये। वापिस आए तो नौकरी पर। फिर जगदीश का ससुराल वालों की ओर झुकाव अधिक था। एक बार कंपनी ने उसे कपूरथला भेजा तो वह अपनी पत्नी सपना को भी अपने साथ ही ले गया व अमृतसर जाकर हरिमंदिर साहिब तथा दुर्ग्याना मंदिर माथा टेक आया। मुंशी व तुलसी ने कहा था जैसे तुम्हें अच्छा लगे।

शादी के पाँच वर्ष पश्चात् मुंशी अपनी पत्नी तुलसी को साथ लेकर हमारे घर आया। उसके माता-पिता जगदीश की शादी से डेढ वर्ष पश्चात् गुजर गये थे। कहने लगा हरिमंदिर साहिब के दर्शनों का मन है। हम साथ चल पड़े। हरिमंदिर साहिब पहुँचकर उसने धीरे से मेरे कान में कहा, ''यहां एक शब्द गायन को दिल चाहता है।''

मैंने कहा, ''यहां हर कोई अपनी मर्ज़ी से शब्द नहीं गा सकता।''

घर वापिस आये। मैं बोला, ''पेग?''

''अवश्य लूँगा।'' दो पेग पीने के पश्चात् हमने खाना खाया और वह फिर कहने लगा, ''शब्द गाने को दिल चाहता है।''

मैंने हारमोनियम मंगवाकर सामने रख दिया। उसने सुरीली आवाज़ में तीन गुरुवाणी के शब्द सुनाये। मैंने तत्पश्चात् कहा, ''यदि आतंकवादियों को पता चला कि आपने शराब पीकर शब्द गाये हैं, तो तुम्हारी आज ख़ैर नहीं।''

मुंशी आतंकवादियों के नाम से इतना न डरा जितना स्वयं से। उसने दोनों कान बच्चों की भांति पकड़े व ऊपर की ओर देखते हुए बोला, ''सच्चे पातशाह, बख्शना पापी नूं।'' ...तत्पश्चात् फिर पहले की भांति सहज हो गया।

हमने पूछा, ''बेटा-बहु का क्या हाल-चाल है?''

''ऐश करते हैं। कभी हम चले जाते हैं। करीब दो माह पश्चात् वह आ जाते हैं। परन्तु पुश्तैनी घर में उनका दिल नहीं लगता। बहू की गोद में बेटा है। ...करीब ढाई-वर्षीय होगा। हमें कहने लगे, ''बच्चे की परवरिश करना अत्यन्त मुश्किल है'' तो मैंने कहावत सुनाई :

''सोने दी ईट गल्ले,
आदम दा बाल पल्ले।''

''हम दोनों ने आठ-आठ, नौ-नौ बच्चों की परवरिश की है व उन दोनों को एक का लालन-पालन करना भी मुश्किल है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी पत्नी के कहने पर उसने उस कहावत का भावार्थ बताया कि सोने जैसा मानव शरीर बच्चे के लालन-पालन में ही ढल जाता है।

मुंशी बता रहा था, "अब जगदीश ने गुड़गांव में ही एक फ्लैट ले लिया है। रसोईघर को रैनोवेट कर रहा है।"

ठीक उसी समय अचानक ही जगदीश का फोन आया व उसने मुझे सत् श्री अकाल बुलाई। फिर मैंने मुंशी के साथ बात करने के लिए टैलीफोन उसे थमा दिया।

मुंशी पूछ रहा था, "क्यों भई ? रसोईघर रैनोवेट करवा रहे हो या ताज महल बनवा रहे हो। ढाई महीने हो गए रसोई अभी पूरी नहीं हुई ?"

हम सभी हँस पड़े, तुलसी भी हँसने लगी। प्रतीत हो रहा था कि जगदीश ने अपने पिता की बात का बुरा नहीं माना था। जगदीश पूछ रहा था कि उन दोनों ने गुड़गाँव कब आना है ? मुंशी ने फिर से एक कहावत कही, "शहर जिना दे रहीये, हाँ जी, हाँ जी कहिये। अब तो तुम्हारे अंकल की मर्जी है। जब धक्के मारेंगे, तुम्हारे पास आ जायेंगे। हमने तो अब समय पास करना है। छोटू मास्टर का क्या हाल है ? स्कूल में अभी प्रवेश मत दिलाना।"

जगदीश बता रहा था कि बड़े शहर में स्कूल में प्रवेश बच्चे के लिए बहुत मुश्किल है। माता-पिता की इंटरव्यू होती है। किसी की सिफारिश से प्रवेश मिला है। आप शीघ्र ही आ जायें।

फोन रखने के पश्चात् मुंशी ने अपनी पत्नी को संबोधित किया, "चल भई, भाग्यवान, तुम्हारी नौकरी लग गई है। तीन वक्त का खाना, पाँच वक्त की झिड़कें।"

तुलसी मुस्कुराती रही व कहने लगी, "अपने खून के लिए सभी कुछ करना पड़ता है। अब मैं अपने अक्कु (पौत्र) के लिए ही जीवित हूँ। उन दोनों को नौकरी पर भी तो जाना होता है।"

मुंशी हमें बता रहा था चार वर्ष तक बच्चे को पूर्ण प्यार-दुलार दो, पांच वर्ष से बारह वर्षीय तक, प्यार भरी डाँट, उसके पश्चात् दोस्ती व प्यार। मैंने जगदीश को पूरी बात समझाई है।

"अधिक समय एक ही जगह टिका रहने से व्यक्ति एक-दूसरे से ऊब जाते हैं। इसलिए हम तीन-चार महीनों के पश्चात् बाहर चक्कर लगा ही आते हैं। इंसान के जाने के पश्चात् ही उसके गुण याद आते हैं। ...जगदीश की कालोनी में हमने उसकी इज्जत में बढ़ोतरी की है, कमी नहीं की। मंदिर जाता हूँ तो भजन सुनाता हूँ,

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुरूद्वारे जाता हूँ तो गुरुवाणी के शब्द। आर्य समाज मंदिर में स्वामी दयानंद के प्रवचन। मुसलमानों ने मुशायरा करवाया तो मैं तैयार-बर-तैयार। पाँच-सात अच्छी उर्दू की गजलें याद हैं। कुछ शेयर, कुछ ग़ज़लें सुनाकर मैंने मुशायरा लूट लिया। अब सभी जगदीश के पीछे पड़े रहते हैं। डैडी को मंदिर भेजो, हमारे जागरण है, डैडी को अवश्य लाना। गुरूद्वारे की संगत व भाई जी हम पर पहले ही निहाल हैं। कई बार बेटियों व दामाद के फोन आते हैं कि हम आयें। दूसरी बात यह भाग्यवान कभी हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठती। हर जगह पर नौकरानी नंबर वन। ...कुछ समय पूर्व जगदीश कहने लगा कि पुश्तैनी घर बेच डालो। मैंने कहा, हमारे जाने के पश्चात् तुम ही बेचना, मैं अपने लाले (पिता) की निशानी नहीं बेचूँगा। दूसरी बात, बलबीर जी, कुछ अपने हाथ में हो, तो सभी सम्मान करते हैं, बेशक बेटा हो, अथवा बेटी। हां, सच्चे पातशाह वाहेगुरू से प्रतिदिन अरदास करता हूँ कि अन्त तक शरीर चलता रहे, किसी पर बोझ ना बनूँ और दूसरी बात पठानों वाली कहावत याद रखता हूँ :

"या मौला, खर्च बढ़ा।"

"यदि इंसान की नीयत मलीन न हो तो वह सभी कुछ स्वयं देता है। हम दोनों के लिए तो पैंशन ही बहुत है। बैंक में से कुछ एफ.डी. का ब्याज भी आ जाता है। दो-दो तनखाहों वाले हमारे सामने हाथ फैलाते हैं। कभी कहते हैं इंदिरा विकास पत्र लेने हैं तो कभी एल.आई.सी. की किस्त। आज तक हमने कभी भी उनके आगे हाथ नहीं फैलाये और न ही भगवान ऐसा दिन लाये।"

मैंने मेज पर पड़ी बोतल उठाई और पूछा, "एक पेग?" "आधा" मुंशी ने कहा। परन्तु मैंने लगभग पूरा ही डाला क्योंकि पहले दो पेग लगाये करीब तीन घंटे हो चुके थे। फिर उसने वैसा ही किया। एक ही बार में सारा पी गया। हारमोनियम उसके सामने पड़ा था। रात्रि का एक बज गया था। मैंने कोई लोक-गीत सुनाने के लिए कहा तो पहले उसने एक हरियाणवी रागिनी सुनाई और फिर, "चन्न किथां गुजारी आई रात वे, मेरा जी दलीलां दे वात वे।"

मेरी पत्नी की फरमाईश पर फिल्मी गीत, "दाना पानी खिच्च के लियांदा, कौन किसे दा खांदा है?" फिर उसने अपनी पसन्द का गीत, "कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता, कहीं ज़िमीं तो कहीं आसमाँ नहीं मिलता।"

अन्त में मुंशी कहने लगा कि आपने तो प्रातःकाल काम पर भी जाना है तथा एक शेयर के साथ ही उसने महफिल खत्म की, "उम्रे दराज़ माँगकर लाये थे चार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दिन, दो आरज़ू में कट गये, दो इंतज़ार में।"

वे गैस्ट-रूम में चले गये व हम अपने बेडरूम में। प्रात.काल नौ बजे वह जाने लगे तो मैंने पूछा, "अब कब चक्कर लगाओगे?"

वह फिर हँसता हुआ बोला, "जब हरियाणा से धक्के मिले तो पंजाब ने ही संभालना है हमें।' ...परन्तु आप लोग कभी करनाल का प्रोग्राम बनाओ। हमें बताना, हम दो-चार दिन पहले ही वहां पहुँच जायेंगे। जगदीश तथा उसकी पत्नी भी चाहते हैं कि आप एक बार गुड़गांव अवश्य आयें।"

"अवश्य" मैंने कहा, "बतायेंगे।" वह दोनों चले गये। हमें लगभग एक सप्ताह तक उनकी गैर-मौजूदगी खटकती रही। उस हरफन मौला व्यक्तित्व की अमिट छाप हमारे दिलो-दिमाग पर पड़ सी गई है। प्रत्येक पाँच-छः महीने के पश्चात् हमें दौरा सा उठता है, उस हरफन मौला व्यक्ति से मिलने का। हर बार नई बातें, नये तजुर्बे, जीवन की कठोर सच्चाई, वह संग लेकर आता है। जीवन के जांचे परखे हुए नुस्खों के संग। बेशक, उस पर यह लोक-कहावत भी बिल्कुल ठीक बैठती है, "गंगा गए तो गंगा राम, जमुना गए तो जमुना दास।"❑

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शर्त

मुझे गोराया से आए हुए दो सप्ताह ही हुए थे कि मेरे बचपन के मित्र जगदेव औलख का शिकागो से फोन आया कि वह एक माह के लिए इंडिया आ रहा है तथा वह करीब दो दिनों के लिए मेरे पास भी ठहरेगा। मैंने उसे सुस्वागत्म कहा और अपने घर का पता लिखा दिया। फिर उसका फोन आया कि वह पहले अपने गाँव चला गया था व मेरे पास वह शनिवार सांयकाल पहुँच जायेगा। मैंने सोचा, बहुत बढ़िया, क्योंकि शनिवार को हमारा बैंक दो बजे बंद हो जाता है। मैं आराम से सांय चार बजे घर पहुँच गया और जगदेव की प्रतीक्षा करने लगा।

जगदेव और मैं इकट्ठे आठ वर्ष तक पुणे में पढ़े थे। उसके पिता जी आर्मी में मेजर थे व मेरे पिता जी ट्रांसपोर्टर। जगदेव ने नवीं कक्षा में अपने बाल कटवा लिए थे। उसकी माँ ने तो थोड़ा-बहुत एतराज किया था लेकिन उसके पिता ने 'अनग्रेटफुल बास्टर्ड' कह कर मुँह फेर लिया था। हम बी-कॉम तक इकट्ठे पढ़े। ...इसके पश्चात् उसकी मौसी उसे अमेरिका ले गई। वहां उसने पहले पहल तो गैस-स्टेशनों, डिपार्टमैंटल स्टोर पर काम किया व साथ-साथ पढ़ता भी रहा था। फिर उसे शिकागो की एक लिमिटेड कंपनी में अकाउंटस अफसर की नौकरी मिल गई थी...वहां यह नौकरी किसी भारतीय के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि समझी जाती है। मैंने बी.कॉम

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करके बैंक भर्ती बोर्ड के कंपीटिशन के द्वारा प्रोबिशनरी अफसर बनकर पंजाब नेशनल बैंक में नौकरी कर ली थी। जगदेव के बाल कटवाने के पश्चात् मेरा भी दिल चाहता कि मैं भी बाल कटवाकर, फिल्मी हीरो के जैसा बन जाऊँ। परन्तु मैं अपने दादा व पिता जी से डरते हुए ऐसा न कर पाया। चौरासी के सिक्ख विरोधी दंगे-फसादों के समय मैं बी.काम फाईनल-ईयर कर रहा था व अपने मित्रों के साथ मुंबई गया हुआ था, जगदेव भी साथ में ही था। हालात सिक्खों के लिए कुछ खुशगवार नहीं थे, मैंने इसका लाभ उठाया व मुंबई में ही बाल कटवा लिए व घरवालों को फोन कर दिया कि कुछ मजबूरियों के कारणवश बाल कटवाने पड़े हैं। वैसे बाल कटवाकर मुझे बहुत अजीबो-गरीब सा लगता। परन्तु मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि अब मुझे बाल नहीं रखने व न ही पगड़ी बाँधनी है। दादा जी इसी गम में चल बसे। पिता जी ने शर्त रखी थी और मेरी मां से कहा था, "इसे कहो कि मेरे समक्ष बाल बढ़ाने के पश्चात् ही आए।" परन्तु मैंने निश्चय कर लिया था कि अब दोबारा बाल नहीं रखने। मुझे बालों के विषय में, पगड़ी के बारे में, सिक्ख धर्म के बारे में, बचपन में कुछ भी बताया नहीं गया था और बाल, पगड़ी इत्यादि को मैं अनावश्यक ही समझता। गुरूद्वारे जाता, न मुझे कीर्तन समझ में आता, न ही गुरुद्वारे के भाई जी गुरु ग्रंथ साहब के शब्द का अर्थ समझाते। मुझे यह सब मात्र खाना-पूर्ति सा लगता। हम सग्गू रामगढ़िया सिक्ख थे व हमारे अधिकतर रिश्तेदार, सगे-संबंधी सिक्खी स्वरूप वाले थे। जगदेव औलख जट्ट था व जट्ट लोगों में बाल संबंधी कोई विशेष अड़चनें नहीं की जाती थीं। वे बाल कटवाकर भी स्वयं को सिक्ख ही समझते हैं। जगदेव कहता-सिक्खी मात्र बालों से ही नहीं झलकती, बल्कि मन में भी होनी चाहिए। मेरे बाल कटवाने पर मेरे घरवालों को हमारे रिश्तेदारों में बहुत नाराज़गी का सामना करना पड़ा था। पिता जी घर तभी आते जब मैं बाहर होता अथवा अपने कमरे में। माँ ने मुझे समझाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु मुझ पर इसका कोई असर न हुआ। एक बात और भी थी कि मैं ट्रांसपोर्टर के धंधे को अच्छा नहीं समझता था और मेरा छोटा भाई पढ़ाई अधूरी छोड़ पिता जी के साथ काम में हाथ बंटाने लगा था। मैं कंपीटिशन परीक्षा उत्तीर्ण करके बैंक में अफसर लग गया था। अब मैं पिता जी की निगाहों से दूर था। जब मैं पुणे से पंजाब के लिए चला तो मात्र माँ ही मुझे स्टेशन पर छोड़ने आई थी।

मैं आज घर में अकेला था और जगदेव की प्रतीक्षा कर रहा था परन्तु मैंने
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सोडा, व्हिस्की, अंडे, नमकीन तथा सलाद इत्यादि का इंतजाम कर लिया था क्योंकि मेरा जिगरी यार जगदेव आ रहा था। वैसे मुझे शराब पीने का कोई शौक नहीं था और न ही मैं आदी हूँ। परन्तु किसी समारोह में अपने मित्रों के साथ एक-दो पेग ले लेता हूँ। डोर-बैल बजी तो मैं बाहर आया। जगदेव बाहर खड़ा था तथा वह स्वयं ही गाड़ी ड्राइव करके आया था। मैंने कार के भीतर देखा तो वह मंद-मंद मुस्कुराया और हमने एक दूसरे को बाहों में भर लिया व ड्राईंग रूम में पहुँचे। उसकी निगाहें किसी को ढूँढ रही थीं। मैंने उसे बताया कि मैडम को कल ही मायके जाना पड़ा। उसकी मम्मी की तबीयत ठीक नहीं थी। जाना तो मुझे भी था परन्तु तुम्हारी प्रतीक्षा के कारण रूकना पड़ा। जगदेव ने बताया कि उसकी पत्नी व बेटा भी अपने ननिहाल रूक गये, तथा ननिहाल वालों ने उन्हें आने नहीं दिया। मैं तो उन्हें साथ ही लाना चाहता था। मैं चाय के दो कप बनाकर ले आया था और जगदेव मुझे देखकर कुछ आश्चर्यचकित सा हो रहा था। मुझे देखकर वह कम हैरान था, परन्तु मेरे सिर पर बंधी पगड़ी व बाल-दाढ़ी को देखकर वह बहुत हैरान हो रहा था। मैंने जब मुंबई में बाल कटवाये थे तो वह मेरे साथ ही था। जगदेव का चेहरा अंग्रेजों की भाँति एकदम सफाचट्ट था। उसकी निगाहें, हाव-भाव प्रश्न करते प्रतीत हो रहे थे कि मैंने यह सिक्खी स्वरूप दोबारा से कैसे धारण कर लिया है।

चाय पीने के पश्चात् मैंने पूछा कि मटन-फिश-चिकन, फ्राइड, रोस्टिड जो भी पसंद हो, बताओ मंगवा लें। जगदेव कहने लगा, "जग्गी, यह सारी चीज़ें तो वहां पर भी बहुत मिल जाती हैं। ....यहां तो कुछ सादा सा...सलाद, शाकाहारी, ...धुली मूंग-मसर की दाल हरे-हरे धनीये वाली। ...तेरी मम्मी बनाते थे। नॉन-वैंज नहीं खाना।"

"व्हिस्की कौन सी पसंद करोगे?"

फिर पता नहीं उसे क्या याद आया और वह बाहर जाकर कार में से दो लीटर का जॉनी वॉकर ब्लैक स्कॉच का जार उठाकर ले आया और साथ ही कहने लगा, "इसे संभालकर रख दो। तेरे साथ तो इंडियन व्हिस्की ही पीनी है।"

"मेरे पास तो आर.सी. हाजिर है। ...चलेगी?"

"...चलेगी नहीं, दौड़ेगी।"

"परन्तु जग्गी, मुझे तो पहले फ्रैश होना है।"

मैं उसे बाथरूम दिखाने, उसके साथ गया। मैंने आकर फ्रिज के अन्दर झाँक
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर देखा। उसमें आलू-गोभी तथा धनीये वाली दाल के कटोरे भरे पड़े थे। मैं मन ह मन मुस्कुराया, 'चलो, जगदेव के मन की इच्छा तो पूर्ण हुई।' उसके फ्रेश होने त मैंने छः अंडों की भुर्जी बना ली थी। जब वह बाथरूम से बाहर आया तो मैं फ्रैश हो के लिए चला गया। जब बाहर आया तो वह हमारे परिवार की एलबम देख रह था।''

मेरे सिर पर केसरी रंग की दस्तार बँधी देखकर वह मुस्कुराया, ''कहीं सं जी के दर्शन तो नहीं कर लिए?'' उसका इशारा संत भिंडरा वालों की ओर था। मैं कहा, ''संत जी के समय तो हम पुणे हुआ करते थे।'' मैंने बोतल, नमकीन, पोटे चिप्स, दो गिलास, सोडा, आईस क्यूब का पॉट इत्यादि छोटा-मोटा सामान टेबल प जचा दिया। गिलासों में पहला पेग डालकर हम सिप करने लगे। जगदेव फिर हँस ''यदि आतंकवादियों ने तुम्हें केसरी पगड़ी में व्हिस्की पीते देख लिया तो तुम्हारी खै नहीं।''

''...यदि वे आ गये तो उन्होंने तुम्हारा भी अरदासा सोध देना (जान से म देना) है। उन्होंने कहना है कि सिक्ख होने के बावजूद बाल कटवाकर घूमते हो। मैंने भी हँसने-हँसाने का प्रयत्न किया।

पंजाब में उस समय हालात ही कुछ ऐसे थे। बार तथा अहातों में जैसे उल्ल बोलते। पीने-पिलाने वाले सभी डरे-सहमे रहते। पंजाब के विषय में, बिगड़ हालात के बारे, ब्लू-स्टार-ऑपरेशन के बारे, गिराए गए अकाल तख्त, आतंकवादियों नकली आतंकवादियों, पंजाब-पुलिस के अन्याय के बारे में, तथा काले कच्छों वाल के विषय में बातें चलीं। फिर अमेरिका, कैनेडा, प्रवासी भारतीयों के बारे में चर्च होती रहती। पुणे के बारे में बचपन, जवानी के दिनों, कालेज में साथ पढ़ती सिंध गुजराती व पारसी लड़कियों के विषय में भी बातें चलीं।

जगदेव ने तीन-चार पेग लगा लिए थे और मैं अभी दूसरा पेग लेकर ही बैठ था। जगदेव ने चौथा पेग गटक लिया और मुझे भी गिलास खाली करने के लिए कह और दो बड़े से पेग बना दिए। गिलास लंबे थे। मैंने आधा सोडा व आधा पानी डाल और उसने मात्र सोडा। उसने सिर को थोड़ा सा झटका व कहने लगा, ''छोड़ इ कुत्ती राजनीती को...कोई रोमांटिक सी बात सुना।''

''पहले तू सुना,'' मैंने कहा।

''माहौल में तो कुछ भी रोमांटिक नहीं लगता। जहाँ दिल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ल लो, गले मिलो, चुम्मा ले लो। चुम्मा लेते जाओ, किस करते रहो, कोई देखता नहीं। पुणे वाली दारूवाला पारसण कभी मिली ?''

''वह तो तुम्हारी दोस्त थी। मुझे कैसे मिलती ? ...हाँ, एक बार किसी रेस्तरां मिली व पूछने लगी, ' अब तुम्हारा मित्र वापिस नहीं आएगा ? ...फिर उसका कोई भाए-फ्रैंड आया तथा वह उसके मोटर साईकिल के पीछे बैठकर चली गई।''

जगदेव ने एक बड़ा सा सिप लिया और हवा की ओर घूर कर देखा; फिर क लंबी साँस ली, ''यार जग्गी, पुणे को छोड़, पंजाब की कोई बात सुना। ...कोई जा...ताजा...रोमांटिक सी बात।''

मैंने एक छोटा सा सिप़ लिया व मुँह में ही रख लिया और एक-एक बूंद गले नीचे उतारने लगा। जगदेव मुझे गौर से देख रहा था, बोला, ''जग्गी, यार शराब तो ई तुमसे पीनी सीखे। ...यहां पंजाबियों को तो शराब पीनी ही नहीं आती। ऐसा ाता है कि वे शराब नहीं पीते अपितु शराब उन्हें पीती है। होड़ सी लगी होती है। ने पीते हैं जैसे आज ही पीनी है, फिर कभी मिलनी ही नहीं। छोड़ यार, इन बातों , कोई रोमांटिक सी बात सुना।''

''...पहले भोजन का प्रबंध तो कर लें। दाल-आलू-गोभी तो तेरी भाभी द्वारा ी हुई पड़ी है। और क्या मँगवाना है ?''

''...बस, मेरे लिए दो चपातियां, तुम अपने लिए देख ले!...परन्तु पहले कुछ ना... ।''

जगदेव ने इतनी शराब नहीं पी थी कि वह बहक जाता। परन्तु वह जज़्बाती वश्य हो रहा था। कारण था कि कई वर्षों पश्चात् पंजाब आना व दूसरी बात बचपन मित्र का साथ।

कई बार व्यक्ति के लिए शराब मात्र एक बहाना होती है स्वयं को भुलाने का, पने वर्तमान को भुलाने का तथा कभी-कभार अपने बीते कल को स्मरण करके हराने का।

जगदेव अमेरिका को भूलना चाहता था व पंजाब, इंडिया तथा अपने कालेज जिंदगी को याद करके, दोहराना चाहता था। जब वह पीछे ही पड़ गया तो मैं नाब में अपने साथ घटी एक घटना सुनाने लगा। अब वह सिप कर रहा था और मैंने क बड़ा सा सिप लेते हुए बात शुरू की।

''जगदेव तू स्टेट्स चला गया और मैंने बैंक बोर्ड परीक्षा देकर बैंक में

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रोबेशनरी अधिकारी की नौकरी कर ली। पंजाब नेशनल बैंक, खन्ना में मेरी पह पोस्टिंग थी, मुझे लोन विभाग में लगाया गया। फील्ड में भी जाना पड़ता। नये लं के केस करने पड़ते व लोन की रिकवरी हेतु गाँवों में व कई स्थानों पर चक्कर लगाने पड़ते। मेरी सहायक एक लड़की थी। कद साढ़े पाँच फुट, छरहरा पत शरीर, गेहुँआ रंग, सागर सी गहराई आकर्षक आँखें। पहली नज़र में ही जैसे उसका हो गया। मुझे लगा जैसे वह मेरे लिए ही बनी थी, सिर्फ मेरे लिए। ...तुम तो नहीं हो रहे?''

''कैरी ऑन, केरी ऑन, चाइल्ड,'' जगदेव मुँह के भीतर ही सिप लिए था और अब एक-एक बूंद उसके गले से नीचे उतर रही थी।

''परन्तु वह लड़की अपने काम से मतलब रखती। न ही किसी और खुलकर बात करती व न ही मुझसे। यस सर, ओ.के. सर, मैं अभी करती हूँ। ...त वह घंटों के काम मिनटों में पूर्ण करके आ जाती, फिर अपनी सीट पर। ...मैं चाह था कि वह मेरे साथ कुछ बोले, कुछ अपने विषय में...कुछ परिवार के विषय ....दिन-रात उसी के ख्यालों में डूबा रहता। मैनेजर की बुजुर्ग निगाहों ने मुझे लिया था। एक दिन खाली समय में उसने मुझे बुलाया और उस लड़की से संबं सारी कहानी सुना दी। बताया कि डेढ़ वर्ष पूर्व उसकी शादी हुई थी व उसका लुधियाना में बैंक नौकरी करता था। शादी के तीसरे महीने जीप में मित्रों के साथ था व शादी की पार्टियां चल रही थीं कि यकायक ब्रेक लगे तथा वह नीचे गिर और दूसरी ओर से आता एक ट्रक उसे कुचल कर चला गया। ...यह लड़की गर्भव थी। मायके वालों ने गर्भ गिराने की बात कही। परन्तु वह जिद्दी थी कहने ल ''...नहीं, मैं किसी की हत्या क्यों करूं व करवाऊँ?'' बैंक के सी.एम.डी. के प केस पहुँचने पर इसे दूसरे महीने ही नौकरी दे दी गई। उसके माता-पिता खन्ना रहते हैं। वह हमारे बैंक में आ गई। इसके ससुराल वाले लालची निकले। वह तो म लड़के के प्रोवीडैंट फंड व एल.आई.सी. कलेम की ही बातें करते। इस दबंग लड़ ने मरहूम पति का प्रोवीडैंट फंड तथा एल.आई.सी. कलेम की तमाम राशि उन्हें दे उनसे सदा के लिए नाता तोड़ लिया। ...करीब चार माह पहले इसके लड़का हुआ है बस उसी में व्यस्त रहती है। इसके माता-पिता देवगन हैं और इसकी विर्दी के स शादी हुई थी।''

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घंटे तक सोचता रहा। दो दिन तक बैंक न गया। अंतिम निर्णय लिया कि शादी करूंगा तो इसी के साथ, नहीं तो कुंवारा ही रहूँगा। ...परन्तु उससे बात कैसे करता। वह तो अपने समीप ही नहीं आने देती थी तथा न ही चाहती थी कि कोई उससे सहानुभूति रखे। वह अबला अथवा बेचारी बनकर नहीं जीना चाहती थी। ...वह उससे भी सख्त नफरत करती जो उस पर तरस करता।

...एक दिन दफ्तर में हड़ताल थी। मैनेजर, मुझे व उसे आना पड़ा। हम दोनों प्रोबेशन के दौर में थे व मैनेजर हड़ताल पर नहीं जा सकता था। काम से निवृत्त होकर मैंने उसकी सीट के सामने पड़ी कुर्सी के पास खड़े होकर पूछा, ''क्या मैं यहां बैठ सकता हूँ?'' वह एक बार आश्चर्यचकित रह गई और खड़ी होकर कहने लगी, ''क्यों नहीं सर?'' मैनेजर किसी काम से पहले ही बाहर गया हुआ था।

मैं बैठ गया व पानी का गिलास मँगवा कर एक ही साँस में सारा पानी पी लिया। तत्पश्चात् कहा, ''गुरजगजीत, बुरा मत मानना, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और इसके लिए मैं सभी कुछ करने को तत्पर हूँ,'' मैंने बात को पूर्ण एवं संक्षिप्त करने हेतु कहा।

एक बार उसने ज़मीन की ओर देखा फिर छत्त की ओर तत्पश्चात् मेरी ओर नज़रें टिकाते हुए कहा, ''कीकर (बबूल) के फूलों को कोई भी सीने से नहीं लगाना चाहता। मैं रोही (रेगिस्तान) का कीकर हूँ।''

''मुझे सब कुछ पता है। ...मैं विश्वास दिलाता हूँ, मेरा प्यार, तुम्हें महकता अंबी (आम) का पौधा बना देगा।''

''मुझे सोचने के लिए समय चाहिए व आपको भी किसी फैसले पर पहुँचने से पहले गंभीरता से विचार करना चाहिए।''

''कितने जन्म इंतजार करूँ?'' मेरे यह शब्द सुनकर, उसकी आँखें नम हो गईं। परन्तु उसने नमीं को छुपाने का असफल प्रयत्न किया।

''तुम्हें नींद तो नहीं आ रही?''...हम दोनों के गिलास ज्यों के त्यों पड़े थे। उसने कहा, ''अब गिलास को तब तक मुँह नहीं लगाऊँगा जब तक तुम कहानी पूरी नहीं सुना लेते।''

मैंने बात जारी रखी, ''एक महीना मैंने कुछ भी न कहा व महीना भर वह रोबोट के माफिक दफ्तर आती व रोबोट की तरह काम करके वापिस चली जाती। [illegible] तत्पश्चात् वह एक दिन एक स्लिप चुपके से मेरी मेज पर रखकर चली

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गई, लिखा था, ''कल रविवार है। साढ़े ग्यारह बजे डस्क रेस्तरां के अन्तिम बैंच
तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी।'' मैं नियमित समय पर पहुँच गया। दिन के समय भी रेस्
में धुंध ही धुंध छाई हुई सी लगती थी। रेस्तरां बनाया ही इस तरह से गया था कि हा
में बैठे लोग एक-दूसरे को पहचान ही न पायें। मैं पहले से ही वहां बैठा था। वह
सामने वाली सीट पर बैठ गई। पानी के गिलास पीकर, कॉफी के दो कप मंगवाये
कुछ खाने के लिए। परन्तु खाना किसने था?

पानी पीने के पश्चात् कॉफी की एक घूँट भरते हुए वह बोली, ''क्या आ
मुझे प्यार करते हो?''

मैंने पूछा, ''कोई शक?''

''...मात्र तसल्ली के लिए। परन्तु मैं तुम्हें प्यार नहीं करती।''

मेरा अंतर्मन तक काँप उठा। उसने कॉफी की दूसरी घूँट भरते हुए क
''हां, मैं समझौता करने को तैयार हूँ। मेरी पहली मैरिज भी अरेंजड मैरिज थ
...परन्तु उसके लिए कुछ शर्तें हैं।''

''मुझे तुम्हारी प्रत्येक शर्त मंजूर है,'' मेरी साँस में साँस आई। मैं किसी
कीमत पर उसे गँवाना नहीं चाहता था।

''नहीं मेरी कुठ शर्तें हैं जो आपको सुननी ही पड़ेंगी। इसके पश्चात् ही 'हं
अथवा 'नहीं' में सोच-विचार कर उत्तर देना।''

मुझे लगा जैसे वह मेरी मोहताज न होकर मेरी अफसर हो। परन्तु मु
उसका दबंग होना भी अच्छा लग रहा था।

गुरजगजीत ने कहना आरम्भ किया, ''बेटा मेरे साथ रहेगा। हालांकि मे
माता-पिता ज़ोर दे रहे थे कि मैं बेटा उन्हीं के पास छोड़ दूं। मेरा कोई भाई नहीं है
तथा वह उसे गोद लेने के लिए भी तैयार हैं। परन्तु मुझे यह मंजूर नहीं।''

''दूसरी शर्त, आप और आपके माता-पिता इसके विषय में कभी भी तानाक
नहीं करेंगे। मैं एक खुली किताब हूँ तथा रहना चाहूँगी। तीसरी बात, मेरा आधा वेत
मेरे बेटे के नाम पर जमा होगा। चौथी बात, आप मुझसे शादी करोगे, परन्तु इसमें तर
जैसी कोई भावना नहीं होनी चाहिए। मैं उनसे सख्त नफरत करती हूँ जो मुझ पर तर
करते हैं। अन्तिम शर्त, मेरे माता-पिता की जायदाद की ओर आप कभी भी नहीं
देखोगे। हम दो बहनें हैं, वह जायदाद का फैसला, जैसे चाहें वैसे करें।''

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C
''...बस, कुछ और...कोई और शर्त? मैं अपने माता-पिता को अपना फैसला

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बता चुका हूँ। पहले तो वह टाल-मटोल करते रहे...परन्तु मेरे अट्टल फैसले के समक्ष वह झुक गये। ...हाँ मेरी भी एक छोटी सी शर्त है।'' मैंने कहा, तो बिना डरे वह बोली, ''बहुत अच्छी बात है। कुछ लुक्का-छिपी नहीं होनी चाहिए।''

''मैं...यदि आपके बेटे को अपना नाम दे दूँ तो आपको अथवा आपके माता-पिता को एतराज नहीं होना चाहिए?''

''मेरे इन शब्दों ने उसके अंदरूनी पत्थर को पिघला दिया और वह उठकर खड़ी हो गई। आँखों से अश्रुओं की धारा बह चली। मैं भी उठकर खड़ा हो गया। ...वह निकट आकर पूरी की पूरी अमरबेल की भांति मुझसे लिपट गई। समझौता, प्यार में बदल चुका था।''

यह कह कर मैं चुप हो गया तथा सामने पड़ा गिलास खाली कर दिया। जगदेव ने गिलास को हाथ नहीं लगाया था। वह बोला, ''वह लड़की अब कहाँ है?''

''उस लड़की ने शादी करवा ली...,'' मैंने गंभीर होने का नाटक किया।

वह चीखा,''किसके साथ?''

''तुम्हारे जग्गी के साथ।.......

''......वह लड़की अब तुम्हारी भाभी बनी हुई है। हमारे दो बच्चे हैं। एक बेटा व एक बेटी। छः वर्षीय बेटा व चार वर्षीय बेटी।''

जगदेव ने गिलास मुँह से लगाकर एक ही बार में खाली कर दिया था। ...तथा उसने उठकर मेरे साथ हाथ मिलाकर मुझे गले से लगा लिया था, ''ग्रेट...। रीयली, यू आर ग्रेट।.....

''......परन्तु मुझे भाभी से मिले बगैर स्टेट्स नहीं जाना।

''उन्होंने, वापिस कब आना है? मैं तुम्हारी भाभी व अपनी भाभी को आपस में मिलवाना चाहूँगा।''

जगदेव व मैं खाना खा रहे थे कि उसे कोई बात याद आ गई, ''सच, तूने एक और शर्त के विषय में तो बताया ही नहीं कि बाल रखने के लिए उसने रखी होगी।''

मैं मुस्कुराया व बोला, ''नहीं, इस विषय में उसकी ओर से कोई शर्त नहीं रखी गई थी। अपितु मुझे शादी से पूर्व सिक्ख इतिहास व सिक्ख धर्म के बारे में [illegible] पुस्तकें उसने अवश्य गिफ्ट की थीं। इन पुस्तकों को पढ़कर मैंने महसूस

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया कि मुझे बाल नहीं कटवाने चाहिए थे व सिक्खी स्वरूप का भी त्याग नहीं करना चाहिए था। फिर सबसे बड़ी बात, मैं बाल रखकर अपने माता-पिता और अपने ससुराल वालों की खुशियां भी प्राप्त कर सकता था।''

जगदेव ने मुझसे अपने परिवार का राज़ बताते हुए कहा, ''मेरे बेटे ने भी बाल रखे हुए हैं और वह भी दस्तार (पटका) बांधता है। शिकागो के गुरूद्वारे में एक सिक्ख विद्वान प्रचारक ने सैंकड़ों सिक्ख बच्चों को सिक्खी इतिहास से परिचित करवा कर सिक्खी स्वरूप में उन्हें दृढ़ करवाया है।''❑

) Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिन्ना सिंघा-सिंघणीयां ने...

चौरासी के सिक्ख-विरोधी दंगों से प्रभावित होकर कुछ परिवार हरियाणा, यू.पी. व भारत के अन्य हिस्सों से उजड़ कर पंजाब में हमारे शहर आये थे। उस समय पंजाब में एक दबा-सा डर था, एक दबा सा सहम, एक दबा-सा गुस्सा था। ब्लू स्टार त्रासदी के पश्चात् चौरासी के दंगों ने प्रत्येक सिक्ख को जज़्बाती बना दिया था व प्रत्येक सिक्ख आत्मा स्वयं को ज़ख्मी महसूस कर रही थी। इन दो अहम घटनाओं ने दुनिया के हर एक सिक्ख की आत्मा पर फफोले से डाल दिये थे अथवा यह कहना भी उचित होगा कि प्रत्येक सिक्ख आत्मा ज़ख्मी की गई थी। सिक्खों के साथ सहानुभूति रखने वाले भी ज़ख्मी महसूस कर रहे थे। कुछ दूर दृष्टि वाले व हर प्रान्त के इंसाफ पसंद भारतीय महसूस करते थे कि सिक्खों के साथ नाइंसाफी हुई है। परन्तु चंद लोग ऐसे भी थे जो यह समझते थे कि सिक्खों को सबक सिखाने के लिए ऐसा करना भी ज़रूरी था। कुछ भारतीय हर एक सिक्ख के खालिस्तानी होने का भ्रम अपने मन में पाल रहे थे। भारत के दक्षिणी प्रान्तों में अधिकतर लोग सिक्खों के साथ सहानुभूति रखते थे। ऐसा माहौल बनाने में उत्तर-भारतीय प्रैस के बड़े भाग ने पक्षपात पूर्ण रोल अदा किया था। पंजाब की घटनाओं को काफी बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता और यही कारण था कि कुछ नासमझ लोग ब्लू स्टार त्रासदी का समर्थन करते।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परन्तु चौरासी के दंगे-फसादों के विषय में या तो कुछ लोग चुप्पी साध लेते अथवा अधिकतर इस की निन्दा करते।

हर एक सिक्ख को पंजाब से बाहर खालिस्तानी समझा जाता था, भले ही वह कट्टर कांग्रेस अधिकारी हो, मार्क्सवादी कामरेड अथवा बेशक गोल दस्तार वाला नामधारी। कई प्रदेशों में तो पंजाबी हिन्दुओं को भी मोने सिक्ख समझकर, उनकी जायदाद को नुकसान पहुँचाया गया था क्योंकि उनकी बाजू में कड़ा जो पहना होता था।

चौरासी के दंगे-फसादों से हजारों सिक्ख प्रभावित हुए थे और अब वे पंजाब से बाहर अपने जान-माल को सुरक्षित नहीं समझते थे। इसलिए उनमें से सैंकड़ों परिवार भारत के विभिन्न प्रांतों में से पंजाब के उन भिन्न-भिन्न शहरों में पहुँच गये थे जहाँ उनका कोई करीबी रिश्तेदार या नजदीकी दोस्त-मित्र रहता था। इन उजड़कर आये सिक्ख परिवारों के साथ पंजाब के सिक्खों को जहां सहानुभूति थी, वहीं इन के आगमन से पंजाब के अधिकतर हिन्दू स्वयं को असुरक्षित व डरे हुए महसूस करने लग गये थे। कुछ समय पश्चात् पंजाब में आये सैंकड़ों परिवार वापिस भी चले गये क्योंकि उनका काम-धन्धा पंजाब में अच्छे से नहीं चल सका था। ठीक इसी प्रकार पंजाब में से पलायन कर गये हुए हिन्दू परिवार भी पंजाब वापिस आ गये थे क्योंकि उनकी जड़ें जो पंजाब में थीं। पनीरी तो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाई जा सकती है परन्तु वृक्ष एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे लगाये जा सकते हैं? अब लोग यह बात महसूस करने लगे थे।

हमारे इलाके के पराजित अकाली एम.एल.ए. ने अपनी तंग राजनीति को अपनाने की ठानी। उसने स्वयं अपने बलबूते पर लाखों रुपये, सैंकड़ों कंबल इत्यादि एकत्रित किए ताकि उन पीड़ित परिवारों की सहायता की जा सके जो पंजाब में उजड़ कर आये थे। वह पूर्व अकाली एम.एल.ए. ऐसा करके कुछ राजनीतिक लाभ की प्राप्ति भी चाहता था। चंद लोग तो ऐसा कहते भी सुने गये थे कि अकाली प्रधान ने इन पीड़ित परिवारों के नाम पर पन्द्रह-बीस लाख की धन-राशि एकत्रित कर ली व पाँच-सात लाख रुपए खर्च करके, शेष भविष्य में अपना चुनाव प्रचार के लिए रिज़र्व रख लिए थे। यही एक सुलझे हुए राजनीतिज्ञ की पहचान होती है कि वह कहीं भी अपना राजनीतिक लाभ लेने से नहीं चूकता। वह श्मशान की गर्म राख़ पर भी अपनी रोटियां सेकता है। दूसरी बात कि राजनीतिक प्रधानों की एक ही जाति होती है, एक

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जैसे ही सोच-शक्ति, चाहे पंजाब हो अथवा महाराष्ट्र या फिर कोई अन्य देश।

शहर के सबसे बड़े गुरूद्वारे में बहुत से लोग एकत्रित किए गए या एकत्रित हुए। सरकार ने अपने गुप्तचर भी भेज दिये ताकि हालात खराब न हो जायें। डेढ़ सौ के करीब पीड़ित परिवारों की सहायता की जाने वाली थी। प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक कंबल व प्रत्येक परिवार का पाँच हजार रुपये और जिन परिवारों के सदस्य का कत्ल हुआ था, उन्हें इक्कीस हजार रुपये। शहर की सिक्ख संगत भी वहां पर मौजूद थी। चंद खुले विचारों वाले हिन्दू भी अफसोस प्रगट करने के लिए वहां उपस्थित थे। स्टेज सैक्रेटरी ने उन लोगों का धन्यवाद किया जिन्होंने उजड़कर आये बहन-भाइयों का हाल-चाल पूछा था। फिर उसने अपने इलाके के पूर्व अकाली एम.एल.ए. को संबोधन करने के लिए माईक दिया। अकाली सदस्य कोई खास भड़कीला भाषण नहीं दे रहा था। वह उसे एक अभागी घटना बता रहा था और इस सभी के लिए केन्द्र व कांग्रेस पर दोष मड़ रहा था। पंजाब के हिन्दुओं की उसने तारीफ की कि जिन्होंने सब्र-संतोष के जरिये हर हालात में पंजाब में शान्ति बरकरार रखी। अकाली सदस्य की सोच व दृष्टि आने वाले चुनाव से जुड़ी हुई थी। उसने उजड़े हुए परिवारों को आश्वासन दिया कि वह संगत के द्वारा यह तुच्छ सी की गई सहायता को कबूल करेंगे तथा इलाके के हिन्दू-सिक्ख इन उजड़कर आये हुए सिक्ख परिवारों की वित्तीय, नैतिक तथा सामाजिक सहायता करते रहेंगे।

इन उजड़े हुए परिवारों में से चार-पाँच परिवार तो ऐसे थे जिनके घर के एक अथवा दो सदस्य लोगों के गुस्से का शिकार हुए थे। कुछ लोगों को यहां बाल कटवाकर आना पड़ा था परन्तु अधिकतर सिक्ख अपने सिक्खी स्वरूप को बचाकर ही पंजाब आने में सफल हुए थे।

जब अकाली सदस्यों ने कंबल तथा पैसे बाँटने आरम्भ किए तो कुछ व्यक्तियों ने अपने परिवार के सदस्य की संख्या बढ़ा-चढ़ा कर बताई। किसी ने चार कंबल अधिक ले लिए तो किसी ने दो। उनमें से चन्द ईमानदार व्यक्तियों को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने उठकर कहा कि यह फलां-फलां व्यक्ति अधिक कंबल लेने वाले दंगे-फसादों के पश्चात् सुख-सुविधा से आये हैं व सारा सामान ठीक-ठीक अवस्था में लेकर पहुँचे हैं। इनमें से उजड़े हुए परिवारों में से एक व्यक्ति ने झूठ बोलकर जब इक्कीस हजार रुपये हड़पने चाहे तो दूसरे परिवार ने पोल खोल दी। वे एक दूसरे की पोल खोलने लगे। प्रबंधकों ने उनको शान्त करने का प्रयत्न

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किया।

यकायक लोकल संगत में से एक सतावन-अठावन वर्षीय बजुर्ग उठा। उसकी आँखें मानों अँगारों की भांति दहक रही थीं और उसने कहना आरम्भ किया, "अरे, आप कैसे गुरू के सिक्ख हो जो शहीदी का मोल लगवा रहे हो। तुच्छ से कंबलों की खातिर गुरु ग्रन्थ साहब के समक्ष झूठ बोल रहे हो। अरे, कुछ तो शर्म करो। आप से तो आपकी बच्चियां बहादुर हैं जिन्होंने तीन-मंजिली इमारत से छलाँग लगाकर जान दे दी परन्तु अपनी इज्जत पर धब्बा नहीं लगने दिया। एक आप हो जो गुरू की मोहर पर धब्बा लगवा कर आये हो...तुम्हें तो अपनी जानें प्यारी थीं...पैसे-जायदाद प्यारी थी...धर्म. नहीं। अरे धनवंत सिंह (एक उजड़े हुए परिवार के मुखिया का नाम) इस धन-दौलत ने तुम्हारे साथ नहीं जाना-तौबा-तौबा-तौबा, गुरू ग्रन्थ साहब के समक्ष झूठ, मक्कारी।"

उस व्यक्ति को चार-पाँच व्यक्ति चुप करवाने वाले थे परन्तु वह किसी की पकड़ में नहीं आ रहा था और उसका चेहरा गुस्से से सुर्ख लाल हो गया था। आँखों में से खून उतर रहा था। परन्तु वह बोलता ही जा रहा था। फिर उसके दो मित्रों ने उसकी बाजू पकड़ी व उसे संगत से खींचकर बाहर ले गये। परन्तु वह अभी भी बोलने से नहीं रूक रहा था।

मुझे समझ में न आया कि वह व्यक्ति इतना गुस्से में क्यों आ गया था।

अगले दिन उसका एक मित्र मुझे मिला और मेरी उस व्यक्ति के विषय में जानने की इच्छा थी जिसने कल गंभीर समारोह में खलल डालने का प्रयत्न किया था। उसका मित्र मुझे एक भोग (अंतिम शोक सभा) पर ले गया जहां शहर के अनेकों लोग एकत्रित हुए थे। एक नौजवान को आतंकवादी बनाकर पुलिस मुठभेड़ में मार दिया गया था तथा उसके भोग पर शहर के हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम अरदास में शामिल होने के लिए एकत्रित हुए थे। उसने मुझे इशारा किया कि वह मुझे अरदास के पश्चात् सारी बात बतायेगा।

श्री आनन्द साहब का पाठ हुआ। तत्पश्चात् भाई साहब ने अरदास आरम्भ की। जब भाई साहब ने यह शब्द, "जिन्नां सिंघा सिंघणियां ने...." उच्चारण किए तो वह कल वाला व्यक्ति उँची ऊँची "बोलो जी वाहेगुरू", "बोलो जी वाहेगुरू" कहने लगा तथा उसने एक जयकारा भी लगाया "जो बोले सो निहाल।" जयकारा लगाकर वह शान्त सा हो गया लगता था। उसकी आँखें मूंदी हुई थीं और चेहरा फिर

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाल सूरख हो गया था।

अरदास के पश्चात् प्रसाद बाँटा गया। कुछ लोगों ने दबे सुर में श्रद्धांजलि भेंट की।

मैं उस व्यक्ति के मित्र को एक ओर ले गया व उस व्यक्ति के विषय में जानना चाहा जो आज भी अरदास के समय अपनी अलग पहचान बनाये हुए था।

उसके मित्र ने मुझे बताया कि उस विशेष व्यक्ति का नाम है धर्म सिंह। वह भी उसी के इलाके पोठोहार का है। पाकिस्तान से उजड़कर वे इकट्ठे ही भारत आये थे। धर्म सिंह के दोस्त ने मुझे बताना आरम्भ किया कि वह प्रत्येक अरदास के समय क्यों भावुक हो जाता है, क्यों उसकी आँखें अंगारों की भांति दहकती है, क्यों उसका चेहरा तांबे की भांति तपने लग जाता है। धर्म सिंह के दोस्त ने पाकिस्तान बनने के पूर्व की आप-बीती कहानी सुनाई।

''हम पोठोहार के इलाके के एक छोटे से कस्बे में रहते थे। वहां मुस्लिमों की संख्या हिन्दू तथा सिक्खों से तीन गुणा अधिक थी। परन्तु सभी में भाईचारा था व सभी एक-दूसरे से प्यार से मिलकर रहते थे। जब यह पता चला कि इस इलाके के हिन्दू तथा सिक्खों को लाहौर से दूसरी पार जाना पड़ेगा, तथा उधर वाले मुसलमानों को इधर आना पड़ेगा, तो वातावरण में विष सा घुल जायेगा। हमारे कस्बे के अधिकतर मुस्लिम हमारे साथ सहानुभूति रखने वाले थे। परन्तु चंद गर्म स्वभाव के नौजवान अल्लाह-हू-अकबर के नारे लगाने वाले बन गये और इलाके के लूट-मार करने वाले दल से जा मिले। वह स्वयं को मुजाहिद बताते। हमारे कस्बे का मौलवी पाक-पवित्र दिल वाला इंसान था। उसने हमें एकत्रित किया व कस्बे के पचास के करीब परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया। हम शेष दस-बारह परिवार थे। उसने अपने एक अन्य नेक-शरीफ मुस्लिम मित्र की बड़ी हवेली में हमें शरण दिलवा दी। परन्तु हम फसादियों के बीच घिर गये। फसादियों ने मौलवी व उस मुस्लिम से कहा कि वे हमें बाहर निकालें। मौलवी तथा वह नेक-दिल मुस्लिम फसादियों को समझाने का प्रयत्न करते रहे। उनकी एक ही दलील थी कि जब हमारे भाई-बहनों को उधर कत्ल किया जा रहा है तो हम इन काफिरों को क्यों छोड़ें ? भारत के इलाके में लूट-पाट करने वाले भी यही दलील दे रहे थे कि पाकिस्तान में उनके हिन्दू-सिक्ख भाई-बहनों पर जुल्म किए जा रहे हैं तो हम इन मुल्लों को क्यों बख्शें ?''

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौलवी तथा उस अल्लाह की रहमत के नूर से भरपूर मुस्लिम ने उनसे एक घंटे का समय माँगा तो वह लहू के अश्रु बहाते हुए आये। परिवारों में दस-बारह नौजवान लड़कियां थीं व शेष हमारी माँ अथवा माँ की हम उम्र व अन्य हमारी दादी की उम्र की। हमने म्यान में से तलवारें निकाल लीं और फसादियों से दो-दो हाथ करने का मन बनाया। मौलवी तथा उसका मित्र एक बार फिर फसादियों को समझाने हेतु गये। फसादियों ने तब दोनों को मार गिराया जब उन्हें पता चला कि इन्होंने लगभग पचास हिन्दू-सिक्ख परिवारों को पहले भी बचाया है। हमारी बहनें कहने लगीं कि शहीदी का बाटा (लोहे का बर्त्तन) आप अकेले ही पी लोगे तो पीछे हमारा क्या बनेगा? आप पन्द्रह-बीस हो, बीस-पच्चीस को मारकर आप तो शहीद हो जाओगे। वे सैंकड़ों हैं। हमारी इज्जत सरे-बाज़ार बिकेगी व हमें ज़लील किया जाएगा। इससे पहले कि वह यहां आएं, आप हमारी गर्दनें अपनी तलवारों से उतार दो। हम सभी स्तब्ध रह गये। अपनी बहनों की गर्दनें कैसे उतारते। परन्तु जब फसादियों का शोर-शराबा सुना तो धर्म सिंह की बहनों ने तलवार उसके हाथ में थमा दी और अपनी गर्दनें अलग करने के लिये याचना करने लगीं। सबसे पहले धर्म सिंह ने धर्म निभाया और उसने बहनों के कहने पर अपनी दो नौजवान बहनों के सिर तलवार से कलम कर दिये और ऊँचे सुर में जयकारा लगाया, जो बोले सो निहाल-सत् श्री अकाल। शेष व्यक्तियों की बहनें भी अपने भाइयों का ऐसा करने की प्रेरणा दे रही थीं।

"मैं व मेरे जैसे अन्य धर्म सिंह के द्वारा बताये गये रास्ते पर चलने के लिए तैयार होने लगे। हम में से कुछ दुविधा में भी थे।

"यकायक गोलियां चलनी शुरू हुई व पता चला कि फसाद करने वाले वहां से भाग गये थे। कुछ नेक-दिल मुस्लिम दौड़े-दौड़े हमारे पास आये कि भारतीय सिक्ख फौज आपके बचाव हेतु आ गई है। शेष स्त्रियां तथा बहनें बच गई थी। परन्तु धर्म सिंह अपनी खून से लथपथ तलवार लेकर आश्चर्यचकित हो रहा था। उसने स्वयं पर वार करना चाहा कि हम सभी ने उसे पकड़ लिया व उसकी तलवार छीन ली।

"हम सभी हिन्दुस्तान आ गये। धर्म सिंह तथा उसकी बहनें अपना धर्म निभा गये थे। हम सभी धर्म सिंह का दिन-रात ध्यान रखते कि कहीं वह स्वयं के साथ कोई अप्रिय घटना न कर बैठे। कुछ वर्षों के पश्चात् हम सभी ने मिलकर

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उसकी शादी कर दी। उसकी पत्नी ने उसे दो बेटियां दी और वह अपनी बहनों की सूरत अपनी बेटियों में देखने लगा। धीरे-धीरे धर्म सिंह इस दुर्घटना को भुलाने का प्रयत्न करने लगा। वह कुछ-कुछ अपने परिवार व कुछ अपने व्यवसाय में व्यस्त हो गया। पर जब भी वह गुरूद्वारे जाता तो अरदास होती। ग्रंथी जी के यह शब्द ''जिनां सिंघा सिंघणियां ने...'' उसे पाकिस्तान में अपने साथ घटी उस दुर्घटना को फिर से सजीव कर देते। वह आँखें मूँद कर 'बोलो जी वाहेगुरू', 'बोलो जी वाहेगुरू' अनेकों बार ऊँचे-ऊँचे सुर में बोलता रहता। गुरू अर्जुन देव जी तथा गुरू तेग बहादुर जी के शहीदी गुरूपर्व के समय शहीदी सवारी में बढ़-चढ़कर भाग लेता। गुरूओं के द्वारा की गई शहीदी के द्वारा बताता कि धर्म के लिए शहीद होना हमारे गुरूओं ने बताया है। परन्तु कभी-कभार उसके मन में यह विचार आता कि यदि वह दो मिनट और सब्र कर लेता तो शायद यह हादसा नहीं होता व उसकी बहनें बच जातीं। करीब दस वर्ष के पश्चात् उसकी पत्नी परलोक सिधार गई। हाल ही में उसने दोनों बेटियों की शादी कर दी थी। बेशक, उनकी ओर से सुखद समाचार आते हैं, परन्तु धर्म सिंह तब भावुक हो जाता था जब अरदास में यह शब्द सुनता है अथवा स्वयं अरदास करता है, ''जिन्नां सिंघा सिंघणियां ने...'' पत्नी की मृत्यु तथा दोनों बेटियों की शादी के पश्चात् धर्म सिंह फिर से अकेला हो गया है। प्रात:काल तीन घंटे पाठ करता है तथा सांयकाल दो घंटे। गुरूवाणी द्वारा वह अपने मन को समझाने की लाख कोशिशें करता है परन्तु अरदास के शब्द ''जिन्नां सिंघा सिंघणियां ने...'' उसे भावुक कर देते हैं व चालीस वर्ष से भी अधिक समय पहले घटित घटना उसकी आँखों के सामने घूम जाती है।

धर्म सिंह का मित्र जब यह कहानी सुना चुका था तो धर्म सिंह भी वहां पर आ गया था और मेरा मस्तक तथा मैं स्वयं उसके समक्ष झुक गया था।❑

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परमेश्वर

उसका नाम था परमेश्वर, सरदारनी परमेश्वर कौर। वह अपने नाम के पीछे अपना या अपने पति का कोई गोत्र नहीं लगाती थी। जब मुझे उसकी इंटरव्यू लेने के लिए भेजा गया, तब वह पंजाब सीनीयर सैकेंडरी स्कूल की डायरैक्टर थी और उसकी रिटायरमैंट में तीन माह ही शेष थे। वह सिद्धान्तों वाली, सहज परन्तु प्रभावशाली स्त्री थी। मंत्री व एम.एल.ए. भी उससे भयभीत हो जाते। वह तबादलों के विषय में बहुत निष्ठुर थी। बड़ी से बड़ी सिफारिश ठुकरा देती। एक बार उसे मुख्यमंत्री ने कार्यालय में बुलाया और कहा, ''बहन जी, कुछ हमारा भी ख्याल रख लिया करो। यदि हमारे काम नहीं करोगे तो अगले चुनाव के समय हम क्या मुँह दिखायेंगे।'' उसने बहुत सहजता व नम्रता से कहा था, ''सर, यदि आप तबादला नियमों के खिलाफ फैसला करने के लिए कहोगे तो मैं तो कर दूँगी। परन्तु इससे सरकार व पार्टी की छवि बनने की जगह बिगड़ जायेगी। एक को खुश करोगे तो दो नाराज़ होंगे व पाँच को आपकी नाजायज़ नुक्ताचीनी करने का अवसर मिल जायेगा। ...सर, मेरी बात का बुरा मत मानना। एक नाजायज़ काम से दस और नाजायज़ काम हो जाते हैं। आपके कहने पर एक नाजायज़ काम करूँगी और चार नाजायज़ काम अपने लिए निकाल लूँगी। कुछ [illegible] व कुछ ऊँचे पदाधिकारी मुझसे करते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लेंगे। आप मुझे पॉलिसी बता दें, मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि एक भी केस में हेरा फेरी नहीं होगी। मैं सरकार व देश का नमक खाती हूँ, नमक-हराम कैसे हो सकती हूँ ?''

कहते हैं मुख्यमंत्री भी उसकी समझदारी, दूर-दृष्टि व ईमानदारी का फैन हो गया और कहा था, ''बहन जी, यदि आप जैसे सभी अधिकारी हमें मिल जायें तो प्रांत व देश का कल्याण हो जाये। अधिकतर अधिकारी तो इसी अवसर की तलाश में रहते हैं कि हम नाजायज़ काम करें, हेराफेरी करने के ढंग भी बताते हैं। कैरी-ऑन...मैं और मेरा स्टाफ आपको कोई भी हेराफेरी करने के लिए विवश नहीं करेंगे। पारदर्शी मुख्यमंत्री ने उसे उसकी नौकरी में एक वर्ष की बढ़ोत्तरी दे दी। स्टाफ, कुछ मंत्री व कुछ एम.एल.ए. मन ही मन उबलते रह गये।

मैं यह इंटरव्यू अंग्रेजी की एक महिला-पत्रिका के लिए लेने गया था। जब मैंने इस इंटरव्यू का प्रस्ताव उनके सम्मुख रखा तो उन्होंने कहा-इंटरव्यू के लिए शाम पाँच बजे के बाद का समय मिल सकता है क्योंकि वह सुबह नौ बजे से शाम पाँच बजे तक की ड्यूटी में कोई भी अनुशासनहीनता करने के लिए तैयार नहीं थी। मैं दिये हुए समय के अनुसार सवा पाँच बजे पहुँच गया व कार्ड भेजा। मेरे साथ मेरा फोटोग्राफर व मेरी एक सहायक लड़की थी-जो मेरी स्टैनो भी थी।

मैंने उनसे प्रश्न किया कि वह इस मुकाम पर कैसे व किसकी प्रेरणा से पहुँची। वैसे मैंने कई बातें उसके व उसके परिवार के विषय में पहले ही पता करवा ली थीं। परन्तु मैं उनके मुँह से सुनकर उनकी पुष्टि करवाना चाहता था।

इससे पहले कि वह उत्तर देती, सेवादार चाय व बिस्किट की प्लेट ले आया था। हमें चाय के कप पेश किए। उसने चाय का कप लिया, छत्त की ओर देखा, फिर हवा में देख, वह कुछ याद करने की कोशिश करने लगी। उन्होंने अपनी आंखों से नज़र वाला चश्मा उतारा, आंखें साफ की और फिर से चश्मा पहन लिया। आंखों में नमी थी, सैलाब था, एक सफर की कहानी थी।

सरदारनी परमेश्वर कौर ने कहा कि वह कुछ भी छुपाकर नहीं रखेगी और अपने जीवन की कहानी बहुत स्पष्टता व ईमानदारी से बतायेगी।

उसने बताना शुरू किया, ''मैं अपने परिवार के साथ पाकिस्तान से आई। मेरे पिता जी का नाम श्री जगत राम था और माता का नाम राज कौर। उस समय मेरी आयु करीब पाँच वर्ष रही होगी और मेरे बड़ी बहन प्रीतम कौर करीब आठ वर्ष की। मेरा
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बचपन का नाम था परमेश्वरी देवी। मेरे पिता जी मोने-सिक्ख (सहजधारी सिक्ख) थे। मेरे मामा जी सरदूल सिंह पूर्ण अमृतधारी गुरु सिक्ख। वह अपने परिवार सहित दोराहे जा बसे और हम शाहाबाद मारकंडा। सिर छुपाने और दो वक्त की रोटी उनके लिए बड़ी समस्या थी जो पाकिस्तान से उजड़कर उन दिनों आये थे। पिता जी को कुछ कलेम मिल गया और उन्होंने पहले सब्जी की रेहड़ी लगाई और फिर छोटी सी दुकान ले ली। माता जी घर पर कपड़े सिला करते थे। जब मैंने दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की तब बहन जी ने प्राइवेट बी.ए. उत्तीर्ण कर ली व उनकी सगाई एक वर्ष पूर्व लुधियाना कर दी गई थी। मेरे दसवीं कक्षा करने के उपरान्त मेरे माता-पिता बस द्वारा रोहतक किसी के मातम पर गये। वापिस आते हुए उस बस की एक ट्रक के साथ भयंकर टक्कर हो गई। उस बस के अधिकतर यात्री जख्मी हो गये और आठ की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। मेरे माता-पिता पानीपत के सरकारी हस्पताल में दम तोड़ गये। हमारे ऊपर कुदरत का कहर वरसा। दोनों बहनें, ना कोई भाई, ना कोई नजदीकी सहारा। हम दोनों को तो अन्धकार ही अन्धकार नज़र आने लगा। दोराहा से मामा जी, मामी जी पहुँच गये। अन्य दूर-नजदीक के रिश्तेदार भी पहुँच गये। संस्कार के पश्चात् दसवें दिन 'भोग' होना था। बहन जी के ससुराल वाले भी पहुँच गये थे। अन्य रिश्तेदार भी बड़ी संख्या में पहुँचे थे। आस-पड़ोस और रिश्तेदारों ने कुछ नकद राशि से हमारी मदद करनी चाही, परन्तु मामा जी ने हाथ जोड़ कर ना-मंजूर कर दिए। बहन जी के ससुराल वाले भी बहुत नेक और शरीफ थे। उन्होंने कहा कि वह 'भोग' के दो सप्ताह पश्चात् चुनरी ओढ़ा कर बहन जी को विवाह कर ले जायेंगे। फिर एक सप्ताह पश्चात् मेरे माता-पिता की आत्मिक शांति के लिए 'भोग' डाल दिया गया जो कि अकसर एक वर्ष पश्चात् डालना होता है। मेरे मामा जी के सांढू सरदार जोध सिंह भी 'भोग' पर आये हुए थे व उनका भानजा प्रोफैसर गुरुतेग सिंह भी साथ में था। उनके भानजे की आयु थी करीब चौबीस-पच्चीस वर्ष। वह खालसा कालेज फगवाड़ा में अंग्रेजी के प्रोफैसर लगे हुए थे। पता नहीं प्रोफैसर साहब हमारे दुःख को देख कर पसीज गये या फिर मैं उनको पसन्द आ गई। उन्होंने यह सन्देश अपने मामा जी के द्वारा मेरे मामा जी को 'भोग' के समय ही भिजवा दिया कि, ''वह मेरा रिश्ता लेने के लिए तैयार हैं, यदि हमें कोई एतराज न हो।'' हमारे मामा जी एक बार तो सारा दुख भूल गये। उनकी आंखों से खुशी और धन्यवाद के आँसू टपकने लगे और अपने सांढू सरदार जोध सिंह को गले लगाकर बच्चों की तरह

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सिसकियां भरने लगे। नौजवान प्रोफेसर साहब बहुत गंभीर दिखाई दे रहे थे, परन्तु उनके चेहरे पर मलाल था। मामा जी मेरे जवाब की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या कहूँ! न तो मेरे मुँह से हाँ निकले और न ही ना। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे प्रोफैसर साहब आसमान से उतरे फरिश्ते के समान हैं और वह मुझे इस पृथ्वी के बाशिंदे कम ही लगे। मैं मामी जी के गले लगकर फूट-फूटकर रोती रही और सबके चुप करवाने पर भी मेरे आँसू न थमे। प्रोफैसर साहब कुछ घबरा गये और कहने लगे, ''यह कोई जबरदस्ती नहीं है। यदि इन्हें मैं पसंद नहीं तो कोई बात नहीं ?'' उनके यह शब्द कहने की देरी थी कि मैं एकदम से चुप हो गई परन्तु कुछ हिचकियां जरूर लेती रही। मामा जी ने दुपट्टे से मेरा मुँह साफ किया और जेब में से चाँदी का सिक्का निकालकर प्रोफैसर साहब की हथेली पर रख दिया। फिर प्रोफैसर साहब ने एक बार मेरी ओर देखा, हल्का सा मुस्कुराये और मेरे मामा जी के पाँव छू लिए। फिर उन्होंने अपने मामा जी के पाँव छूए। मैंने सिसकियाँ भरते हुए उनके मामा जी के पाँव छूए, जैसा मुझे समझाया गया था। मेरे दिल ने चाहा कि मैं उस देवता के चरणों में अपना सिर रख दूँ जिसने एक अनाथ और बेसहारा को सहारा दिया है। परन्तु मैंने अपनी भावनाओं को काबू में रखा।

बहन जी को जिस दिन चुनरी ओढ़ाने (साधारण विवाह की रस्म) आना था, उसी दिन प्रोफैसर साहब, उनके माता-पिता, भइया-भाभी, बहन-बहनोई, मामा-मामी और अन्य नज़दीकी रिश्तेदार भी पहुँचे व मुझे भी चुनरी ओढ़ाकर जालंधर ले गये जबकि बहन जी लुधियाना पहुँच गये। पिता जी के एक जिगरी दोस्त सरदार जगजीत सिंह ने कन्यादान की रस्में निभाईं। उन्होंने हमारे घर और दुकान के मूल्य की करीब डेढ़ गुणा राशि हम दोनों बहनों में बराबर-बराबर बाँट दी और कहा, ''यह तुम्हारे माता-पिता जी की ओर से आर्शीवाद है। मैं कोई रजिस्ट्री नहीं करवाऊँगा। तुम्हारा जब दिल चाहे हमारे पास यहां आकर रह सकते हो। यदि तुम यह सब कुछ अपने पास रखना चाहो तब भी मुझे कोई एतराज नहीं बल्कि खुशी होगी।'' मामा जी ने हामी भरी और सरदार जगजीत सिंह का शुक्रिया अदा किया।

प्रोफैसर गुरूतेग सिंह जी मुझसे करीब नौ वर्ष बड़े थे। परन्तु मेरी कद-काठी और छरहरी काया के कारण, मैं सोलह वर्ष की न होकर, अठारह-बीस वर्षीय लगती थी। मेरी ससुराल में मेरा बहुत बढ़िया स्वागत किया गया। परन्तु मैं दिल ही दिल में स्वयं को प्रोफैसर साहब के मुकाबले बहुत छोटी समझ रही थी। उनके द्वारा
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मुझ पर किए गए उपकार के कारण मेरे मन में उनके प्रति प्यार से अधिक श्रद्धा थी। पहली मिलन की रात्रि को वह बहुत स्वाभाविक रहे व कहने लगे, ''पहली बात आज से आप परमेश्वरी से परमेश्वर कौर बन गये। सभी आपको परमेश्वर अथवा परमेश्वर कौर कह कर बुलाएंगे। दूसरी बात आपकी मंजिल आपको बुला रही है। आप में बहुत कुछ बनने का सामर्थ्य है। आप ढाई वर्ष में बी.ए. कर सकते हो। फिर उसके बाद बी.एड और फिर एम.ए.। मुझे विश्वास है कि आप अपने अंदर की शक्ति और सामर्थ्य को साकार कर दिखाओगे। मुझे विश्वास है कि आप दुनिया को अपने पैरों पर खड़े होकर दिखाओगे। इसी में हम सब की भलाई है। कल पहले हम सभी हरिमन्दिर साहब माथा टेकने चलेंगे। वहां पर अरदास करेंगे और फिर गृहस्थ जीवन की शुरूआत करेंगे। यदि आप चाहो तो मैं इसके लिए दो-ढाई वर्ष तक इंतजार भी कर सकता हूँ। अगली सुबह हमारा सारा परिवार अमृतसर में श्री हरिमन्दिर साहब पहुँचा। उन्होंने मुझे कहा कि मैं अपने मन में स्वयं ही अरदास करूँ। वाहेगुरू समक्ष है और वह उनके साथ सदैव रहता है जो आत्मिक तौर पर शक्तिशाली होते हैं। मैंने अरदास की व साढ़े तीन वर्षों में बी.ए. और बी.एड पूरी कर ली। जालंधर के ही एक सीनीयर सैकंडरी स्कूल में सोशल स्ट्डी की अध्यापिका लग गई। प्रोफैसर साहब इस समय के दौरान काफी सहज रहे और अध्यापिका लगने के पश्चात् ही हमारे यहाँ पहला बच्चा, बिटिया हुई। दूसरा बच्चा, बेटा एम.ए. करने के पश्चात्। फिर मैं सरकारी सीनीयर सैकेंडरी स्कूल में लैक्चरार लग गई, फिर तीसरा बच्चा अर्थात् दूसरा बेटा हुआ।

''प्रोफैसर साहब ने कदम-कदम पर मेरी सहायता की और सरपरस्ती भी। कभी कभी निराशावादी होने लगती तो वह मेरे प्रेरणा स्रोत बन जाते। मेरी पढ़ाई व्यर्थ न हो जाये, इसलिए वे कई बार छोटे बच्चों के लंगोट भी बदल देते। बच्चों को नहला-धुला भी देते। दाल-सब्जी बना देते और मैं फुलके बना लेती। शादी के पहले वर्ष उन्होंने मुझे कुल्लू-मनाली, शिमला, श्रीनगर की सैर भी करवाई। उनके माता-पिता अन्त तक हमारे साथ ही रहे। वह मेरी हर जरूरत और ख्वाहिश का भी पूरा ध्यान रखते। मुझे सदैव कहते आर्थिक आत्म-निर्भरता औरत के लिए अति आवश्यक है। परिवार और बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मेरा बैंक अकाऊँट अलग भी खुलवाया और एक इकट्ठा भी। कभी भी मुझ से खर्च का हिसाब-किताब न माँगते। वह अक्सर परिवार व बच्चों की बेहतरी के प्रति सुचेत रहते। कोई उन्हें और

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का गुलाम कहता तब भी वह बुरा न मनाते बल्कि हँस देते। कई कुलोग उन पर व्यंग्य कसते:

"कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त, कोई रन दे गोडे नाल मस्त।"

परन्तु वह मुस्कुराते हुए कहते कि मैं अपने हाल में, अपने आप में मस्त हूँ। मेरा किरदार दोहरा नहीं। कई लोग तो बाहर बहुत डींगें हाँकते हैं, परन्तु घर पहुँचते ही घरवाली के सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं। वह बताते कि मैं स्त्री को पाँव की जूती नहीं समझता और न ही नौकरानी, मैं पत्नी को जीवन-संगिनी समझता हूँ।

"परन्तु इसका अर्थ ये न समझना कि वह सदैव मुझ में या फिर मेरी उन्नति तक ही केंद्रित रहते। उन्होंने अंग्रेजी में पाँच पुस्तकें लिखीं। पी.एच.डी. उन्होंने भारत में रचित अंग्रेजी साहित्य पर की और कॉलेज के प्रिंसीपल बने। जपुजी साहब का अंग्रेजी कविता में अनुवाद किया। प्रोफैसर पूर्ण सिंह की पंजाबी कविता को अंग्रेजी में रूपांतरित किया। मुझे भी लिखने की प्रेरणा उन्होंने ही दी और मैंने घर-परिवार, स्त्री-पुरूष संबंधों और बच्चों के मनोविज्ञान पर पंजाबी में सात पुस्तकें लिखीं।

"प्रोफैसर साहब, मेरा पहला और अन्तिम प्यार, मेरी प्रेरणा, मेरे पथ-प्रदर्शक, मेरे महरम, मेरे हमदर्द, सभी कुछ थे। मेरा नाम परमेश्वर तो ऐसे ही है। वास्तव में वह मेरे परमेश्वर थे। यदि ईश्वर मुझे दोबारा मनुष्य का जन्म दें तो मैं अगले जन्म में भी उनकी ही जीवन-संगिनी बनना चाहूँगी।"

सरदारनी परमेश्वर कौर को जैसे कुछ याद आ गया वह मंद-मंद मुस्कुराने लगी और पुरानी यादें दोहराईं। "प्रोफैसर साहब की एक दिन तबीयत नासाज़ थी और बच्चे बाहर गये हुए थे। मुझे कहने लगे, "मुझे लगता है, अगले जन्म में तुम पति और मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगा।"

मैं भी मुस्कुरा पड़ी और कहा, "अच्छा जी, मूलधन के साथ-साथ चक्रवृद्धि ब्याज भी वसूल करना चाहते हो, अगले जन्म में।"

"हमारे तीन बच्चे हैं। बड़ी बेटी कैनेडा के शहर टोरांटो में डैंटल सर्जन है और उसका पति भी। मेरा एक नवासा और एक नवासी है। एक बेटा विप्रो में जनरल मैनेजर मार्कीटिंग है और दूसरा बेटा मोहाली में ही रैनबैकसी में रिसर्च ज्वाईंट डायरैक्टर, मैं उसके साथ ही रहती हूँ। बड़ी बहूरानी के पास बेटा है एवं छोटी बहूरानी के पास बेटी। जीवन में सब कुछ मिला, वाहेगुरू की अपार कृपा है।"

जब प्रोफैसर साहब के बारे में पूछा तो वह कुछ गंभीर हो गयी और कहने

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगी, ''प्रोफैसर साहिब हमें दगा दे गये। उन्होंने पूरी वफा नहीं निभाई। दो वर्ष पूर्व पीलिया हो गया था। वैसे उम्र भर स्वस्थ रहे थे। डाक्टरों ने जोंडिस का इलाज न किया व कोई और बीमारी समझ कर ट्रीटमैंट करते रहे। ...दो माह हम भटकते रहे और अन्त में उन्होंने पी.जी.आई. में अन्तिम श्वास लिए।''

यह कहकर सरदारनी परमेश्वर कौर ने दोनों हाथ जोड़कर ऊपर की ओर देखा और चंद पलों के लिए मौन और विहव्ल हो गये। लगता था डायरैक्टर परमेश्वर कौर अन्तरध्यान होकर अपने परमेश्वर को याद करने लग गयी थी। अपने पति की यादों में गुम हो गये थे।

फिर एकदम अपने आपको संभाला और मुझे संबोधित करते हुए बोले, ''बेटे, उम्मीद है तुम्हें तुम्हारे सभी सवालों के जवाब मिल गये होंगे।''

मैंने कहा, ''मैडम, क्या कभी उनके साथ किसी बात पर कोई तकरार या तू तू, मैं मैं या फिर अंह कभी दीवार बना?''

मैडम डायरैक्टर ने उत्तर दिया, ''बेटा जी, आप बहुत भोले-भाले हो। तकरार और तू तू, मैं मैं का उन्होंने कभी अवसर ही न दिया। यदि वह किसी कारणवश गुस्से में होते तो मैं चुप हो जाती और यदि कभी मैं गुस्से में होती तो वह चुप्पी साध लेते। फिर भला क्या कोई अपने परमेश्वर से तकरार करता है? वह तो सचमुच में ही मेरे परमेश्वर थे। मेरी शक्ति के स्रोत। जब... दो माह बीमार रहे तो बहुत सरलता से कहने लगे, ''परमेश्वर, यदि वाहेगुरू ने मुझे बुला लिया तब तुम घबराना नहीं, धीरज रखना। तुम विलाप भी न करना। स्वयं भी रोना-धोना नहीं और न ही बच्चों को रोने देना। बस मेरे जाने के पश्चात् कीर्तन सोहिला (गुरुवाणी का एक हिस्सा) का पाठ करते रहना। मेरे संस्कार तक कीर्तन सोहिला का अखंड पाठ करना। न ही व्यर्थ के श्रद्धांजलि वाला दिखावटी समागम करना। मेरी इच्छा है कि मेरे 'भोग' पर मात्र एक कीर्तन दरबार हो न कोई व्याख्यान और न ही कोई श्रद्धांजलि के लैकचर। हाँ, भगत पूर्ण सिंह के पिंगलवाड़े में जाकर स्वयं अपने हाथों से सेवा करके आना, जितनी तुम्हारी समर्था हो, उसी के अनुरूप। दिखावा नहीं, प्रदर्शनी बिल्कुल नहीं।''

उस समय मैं रो पड़ी। उनके समक्ष बहुत रोई और कहा, ''आप मुझे यह कहकर कमज़ोर बना रहे हो।'' वह बोले-''तुम स्वयं शक्तिशाली हो, तुम में उत्साह है, तभी तो तुम यहां तक पहुँची हो। तुम्हें अभी और बहुत कुछ करना है। उनके लिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं, कुछ अन्यों के लिए, स्वार्थ से ऊपर उठकर। कुछ आलौकिक कर गुजरने की शक्ति तुम में है।''

''इसके पश्चात् मैंने कभी भी कमज़ोरी ज़ाहिर न की। उनके स्वर्गवास होने पर न मैं स्वयं रोई न ही बच्चों को रोने दिया। हाँ, कभी-कभार उस परमेश्वर की याद को समर्पित, यह आँखें अश्रुओं से जरूर भर आती हैं।''

मैंने देखा कि डायरैक्टर साहिबा की नमी भरी आँखों में एक सैलाब था जिसमें समर्था थी, शक्ति थी, विश्वास था, कोटि कोटि धन्यवाद की जगमगाती ज्योति अपने परमेश्वर के लिए थी।❑

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नपुंसक देवता

दिन की व्यापारिक व्यस्तता की थकावट से राहत पाने के लिए हम प्राय: दिल्ली के कनॉट-प्लेस के वैलकम होटल में एकत्रित होते। हम में से तीन प्लास्टिक मोल्डिंग के काम से जुड़े हुए थे, एक दिल्ली पुलिस में कप्तान और पाँचवा आयात-निर्यात के काम में था। दो अन्य रेडीमेड गारमैंटस के कारोबार से, जो अकसर ब्रांड कंपनियों के डुप्लीकेट लेबल लगाकर डुप्लीकेट माल बनाते। करीब नौ बजे हम वहां पहुंचते और साढ़े नौ बजे हमारी पार्टी आरम्भ हो जाती। कोई बीयर लेता तो कोई व्हिस्की अथवा रम। हँसी मजाक होता रहता। कभी बिजनैस की बात होती तो कभी राजनीति की। जो बात अकसर चलती वह होती कॉल-गर्ल्ज़ के विषय में अथवा इर्द-गिर्द मिलती चालू स्त्रियों के विषय में। हम सभी स्वयं को सुपर-मर्द होने की शेख़ी बघारते। कोई बताता कि उसके एक बैंक अधिकारी की स्त्री के साथ संबंध हैं जो प्रात:काल दस बजे से लेकर सांयकाल छ: बजे तक, जब बुलाओ पहुँच जाती है। इसी प्रकार कोई दूसरा अपने संबंध पड़ोस में रहती स्त्री से बताता, जिसका पति कई-कई दिन टूर पर रहता है। पुलिस कप्तान ने तो एक रखेल पहाड़गंज में रखी हुई थी और उसे एक घर भी खरीदकर दिया हुआ था, उसका सारा खर्च वह स्वयं ही करता यद्यपि वह स्वयं भी नौकरी करती थी। प्रतिदिन दो घंटे वह वहां पर उपस्थिति

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लगवाकर रात्रि करीब बारह बजे अपने घर पहुँचता। पत्नी व बड़े हो रहे बच्चों को इस विषय में अभी कुछ खास मालूम नहीं था। हम में से छः तो अपनी-अपनी मर्दाना ताकत की शेखी बघारते परन्तु एक जो व्हिस्की कभी नहीं पीता था और कभी-कभार मात्र बीयर ही पीता, हमारी बातों पर मुस्कुराता रहता। एक दिन कहने लगा, "हम सभी घर में से प्रातःकाल दस बजे निकलते हैं और रात्रि ग्यारह-बारह बजे तक घर पहुँचते हैं। हम तो यूनानी मर्चेंट की तरह अपनी-अपनी पत्नियों को लोहे के अंडरवीयर पहना, ताले लगाकर, चाबी अपने साथ ले आते होंगे?" उसका नाम था गौतम।

उसकी इस बात पर हम सभी कुछ परेशान हो जाते और हम में से एक कहने लगा, "मुझे बाकी लोगों का तो मालूम नहीं परन्तु मेरी पत्नी तो भोली-भाली सती-सावित्री है। बेशक रात्रि दो बजे भी जाऊँ, मेरे बगैर खाना नहीं खाती।"

"यह दिल्ली है...यहां लोग नाटक करते हैं। छोड़ो इन बातों को। कोई और बात करते हैं," मैंने कहा। मुझे उसकी पत्नी के घर में बच्चों को पढ़ाने वाले ट्यूटर से सम्बन्धों का पता था क्योंकि वह ट् यूटर मेरे मामा का बेटा था।

हम में से एक बोला,"दोस्तो, क्यों न हम सभी बैंकॉक का टूर बनायें। सैर की सैर और कुछ ऐश-वेश भी हो जायेगी...वहां पर पताया बीच पर माल बढ़िया मिलता है।"

"बढ़िया है...एडज़ की भी बहुत बढ़िया मार्किट है", गौतम ने कहा।

"छोड़ो यार! तुम्हें तो हर बात पर भांजी मारने की आदत है। कुछ अच्छी बात बोला करो, शुभ शुभ बोला करो। यदि मौज-मस्ती करनी है तो कुछ रिस्क तो लेना ही पड़ेगा!" शाम बोला।

शाम का मित्र कृष्ण बोला-"तीन वर्ष पूर्व जो फूल-पौधे लगाकर आये थे, उनका हाल-चाल भी पूछ आयेंगे व पानी शानी भी दे आएंगे।"

इस तरह हम सातों ने बैंकॉक जाने की योजना बनाई। ट्रैवल ऐजेन्ट से बात करने की ड्यूटी कृष्ण की लगाई गई। सात दिन पश्चात् कृष्ण ने बताया कि ग्रुप कन्सैशन मिल जायेगा। परन्तु हम में से एक का प्रोग्राम कैंसिल हो गया क्योंकि उसकी पत्नी का डिलीवरी टाईम निकट ही था।

इस प्रकार हम छः तैयार हो गये और कृष्ण को बीस बीस हजार रुपये दे दिये ताकि वह टिकटों और वीज़े का प्रबंध कर सके। सभी ने अपने-अपने पासपोर्ट भी
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे दे दिए। शुक्रवार को हम सिंगापुर एयर-लाईनज़ के विमान द्वारा बैंकॉक पहुँच गये व वहां इंदिरा मार्किट के निकट होटल में कमरे ले लिये। तीन कमरे किराये पर लिए। सांयकाल तक हम बैंकॉक घूमते रहे व शॉपिंग की। बैंकॉक पहुंचने से पहले हमने दो-दो हजार के अमरीकन डॉलर ले लिए थे, यद्यपि वहां पर बाठ सिक्का चलता है। अमेरीकन डॉलर अथवा इंग्लैंड का पौंड लेकर आप आराम से किसी भी देश में घूम फिर सकते हो और इसके बदले वहां की करंसी आपको आराम से मिल जाती है। कुछ डॉलर हमने ब्लैक में भी लिए थे।

शनिवार को हमने बैंकॉक के सभी दर्शनीय स्थल देखे जिनमें से एक बोटल पैलेस था। इसमें एक कलाकार ने विभिन्न बोतलों में विश्व के प्रसिद्ध व ऐतिहासिक स्थानों, इमारतों व वस्तुओं को तीलियों से बनाकर बोतल को बिना तोड़े उनमें अदभुत ढंग से पेश किया था। कई बड़े-बड़े डिपार्टमैंटल स्टोर देखे व शॉपिंग की। वहां की सरकार ने एकमात्र प्रसिद्ध गुरूद्वारे को बैंकॉक का दर्शनीय स्थल मान कर इसे अपनी ट्रैवल बुक में शामिल किया हुआ है। एक बहुत अच्छी बात थी कि वहां के सिक्ख समुदाए के लोग अपने परिवार के जन्म दिवस, शादी की सालगिरह, समारोह इत्यादि अकसर गुरूद्वारे में ही मनाते हैं। उस दिन सारी संगत के लिए लंगर का प्रबन्ध होता है। लंगर में सात-आठ तरह का भोजन परोसा जाता व गुरूद्वारे आने वाले सैंकडों लोग टेबलों पर बैठकर लंगर का आनन्द ले रहे होते हैं। लंगर में दो सब्जियां, एक दाल, रायता, खीर, चावल, तवे पर बनी चपातियां, जलेबी, सलाद इत्यादि बाँटा जाता है। लस्सी और पानी बैठे बिठाये ही दिया जाता है। परन्तु बाकी बर्तन स्वयं जाकर लाने पड़ते है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश एक अन्य हाल में ऊँचे तख्तपोश पर विराजमान है। दीवारों के साथ-साथ बुजुर्गों व अंगहीनों के लिए कुर्सियां लगी हुई हैं। वहां पर रागी जत्था स्थाई भी है और वहां पर रागियों के जत्थे शब्द गायन करने वाले भारत से भी आते रहते हैं। कीर्तन व लंगर को कैमरों के द्वारा चारों मंजिलों पर दिखाया जाता है। सफाई व प्रबंध देखते ही बनता है। हमने पूछा तो वे कहने लगे कि बैंकॉक में चालीस से पचास हजार के करीब सिक्खों की जनसंख्या है, परन्तु दूसरा गुरूद्वारा इसलिए नहीं बनाते क्योंकि वह चाहते हैं कि बैंकॉक में सिक्खों का विभाजन न हो। परन्तु दुःख की बात है, कि सिंगापुर में विभिन्न पंथों के नाम पर गुरूद्वारे हैं जैसे जाट लोगों का गुरूद्वारा, दुआबा वालों का गुरूद्वारा व रामगढ़ियों का गुरूद्वारा और एक बड़ा गुरूद्वारा इत्यादि।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बैंकॉक का गुरूद्वारा इंदिरा मार्किट क्षेत्र में है जहाँ हमें भारतीयों की पसंद का भोजन, वस्त्र, वस्तुएं व आभूषण साधारणत: मिल जाते हैं।

इसके पश्चात् हम ए.सी. डीलक्स बस द्वारा पताया पहुँच गये। यहां हमें एक सिक्ख मालिक का होटल मिल गया। वह सिक्ख व्यवसाय से डॉक्टर था और कुछ समय वहां मेडिकल प्रैक्टिस भी करता था। बैंकॉक और पताया में कोई भी कैमिस्ट कोई भी दवा डाक्टर की पर्ची के बिना नहीं बेचता, यही हमें वहां देखने को मिला।

होटल में सामान रखकर, चाय पीने के पश्चात् हम पताया बीच देखने चले गये। यह विश्व की खुबसूरत व स्वच्छ बीचों में से एक है। सांयकाल करीब सात बजे अंधकार छाने लगा। हमने देखा वहां होटलों व रेहड़ियों पर ढेरों सी-फूड बेचा जा रहा था जिसमें समुद्री साँप, बिच्छु रोस्ट करके बेचे जा रहे थे। कई किस्म की मछली भी भुनी-तली कई ढंगों में मिल रही थी।

परन्तु हम सभी नाईट-क्लब देखने के लिए व्याकुल थे। हम होटल लौट आये। हमने एयर-पोर्ट से ही जॉनी वॉकर ब्लैक स्कॉच के पौने दो लीटर के दो जार खरीद लिये थे। आईस, सोडा, सलाद व चिकन भी मंगवा लिया गया। करीब दो पेग जैसे ही अंदर गये तो हम में से एक ने वेटर से पूछा कि, ''यहां 'माल' अर्थात् लड़की लाने पर कोई कानूनी बंदिश तो नहीं।'' वह बोला, ''हम इसका कोई प्रबंध नहीं करते। हां, आप लोग जाकर मार्किट से अपना माल ला सकते हैं।'' हम अश्चर्यचकित थे कि मार्किट में लड़कियां आसानी से कैसे मिल जाती हैं? उसने हमें सारी बातें समझाईं। हमारे कमरे का द्वार खुला था। एकाएक हमारी नज़र बाहर की ओर गई। चार भारतीय एक गोल-मटोल थाई लड़की के साथ अपने कमरे में घुसे। थाई लड़की हँसती-खिलखिलाती उनके साथ अंदर चली गई। हम उन्हें देखकर बेचैन हो गये। शाम बोला, ''पेग लगाओ व माल लेने चलें।''

परन्तु गौतम ने दलील पेश की, ''मेरा पहला मश्वरा तो है, कि इस काम में मत पड़ो व दूसरा कि जल्दबाजी मत करो। वेट एंड वॉच।''

परन्तु हम तीसरा पेग लगाकर बाहर की ओर चल पड़े। रात्रि की रोशनी से पताया बीच जगमगा रहा था। पहले लोग लड़कियों का न्यूड डॉस देखने आते। हम भी एक क्लब में टिकटें लेकर अन्दर चले गये। दिल्ली व मुंबई के नाईट क्लब तो उनके समक्ष कुछ भी नहीं थे। डिस्को फास्ट संगीत पर लड़कियों की भद्दी हँसी। वह अपने शरीर पर से कपड़े इस प्रकार उतार रही थीं जैसे अनावश्यक हों। उनकी अदाएं

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पुरूषों को उत्तेजित कर रही थीं। स्टेज पर लड़कियां अपना कमाल दिखातीं व नीचे बैठे दर्शक उन्हें नीचे बुलाकर सौदेबाजी करते।

हम पांचों वहां बैठे इसका आनन्द ले रहे थे। परन्तु गौतम को जैसे अफसोस हो रहा था। कहने लगा, ''पापी पेट के लिए सरमायेदारी क्या-क्या करवा रही है?'' शाम ने साथ वाले को उठाया और स्टेज की ओर जहां खरीदो फरोख्त हो रही थी, वहां ले गया। हमें पूछने लगा कि कितनी लेकर आएँ? गौतम ने फिर समझाने का प्रयत्न किया परन्तु शाम व उसके दो मित्र अड़े हुए थे। गौतम के समझाने व दलील पेश करने पर मैंने व सतीश ने इस सौदेबाजी में भाग न लेने का फैसला किया। परन्तु हम भी अन्दर ही अन्दर जल-भुन रहे थे। गौतम के साथ भाग न लेने का एक मुख्य कारण यह भी था कि वह हमारा फैमिली-फ्रेंड था व उसके परिवार का हमारे यहां आना-जाना भी था। हमें यह भी डर था कि कहीं दिल्ली पहुँचकर, हमारे परिवार वालों को इसके बारे में बता ही न दे। शाम एक थाई लड़की को ले आया। बाद में हम में से एक अन्य दोस्त उसका साथ छोड़ गया और वह दोनों लड़की को लेकर होटल वापिस आ गये। हम चारों ने एक अन्य क्लब देखा फिर बीच पर घूमते रहे।

गौतम दार्शनिक बना प्रतीत हो रहा था व उसकी पी हुई स्कॉच उसे गंभीर बना रही थी। ...वह बोला, ''यदि हम बेवफ़ा हो जायें व दिल्ली में बैठी हमारी पत्नियां भी ऐसा कुछ करने लगे तो हमारे समाज का क्या बनेगा। यदि हमें यही कार्य करना था यहां आने की आवश्यकता ही क्या थी। ऐसी गंदगी तो दिल्ली में भी बहुत है जो पैसों की खातिर आपको अपना शरीर सौंप देता है, वह आपके साथ वफा नहीं कर सकता और ऐसा करना खतरनाक भी सिद्ध हो सकता है। ...मात्र शरीर के खेल का खिलवाड़ हानिकारक है। यह शरीर और मन दोनों को जलाती है। परन्तु हां, यदि दोनों के मन मस्तिष्क व तन एक-दूसरे के लिए व्याकुल हैं तो मिलन में कोई गलत बात भी नहीं है।''

परन्तु हमें गौतम का भाषण अनावश्यक सा प्रतीत हो रहा था। स्कॉच हमारे सिर पर चढ़ गई थी। जब गौतम टॉयलट गया तो हम सें से एक बोला, ''सा...ला, नपुंसक, न तो इससे स्वयं से कुछ होता है, न ही हमें कुछ करने देता है। हमारी सोच को भी इसने नपुंसक बनाकर रख छोड़ा है।''

रात्रि के करीब बारह बजे हम होटल वापिस पहुँचे। शाम, उसका मित्र व थाई लड़की तीनों एक ही कमरे में थे।
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दरअसल मसाज करने के नाम पर वह लड़कियां होटल में आतीं व फिर मसाज के नाम पर जिस्मों का खेल खेलतीं या उनके जिस्म के साथ जिस्मानी खेल खेला जाता।

हम चारों कुछ समय के लिए इकट्ठे बैठे, स्कॉच के एक-दो पेग और लिए फिर अपने-अपने कमरों में जाकर सो गये। सोने से पूर्व हमारे दिल भी मचलते रहे; कभी-कभी दिल चाहता कि हम भी एक लड़की ले ही आयें। गौतम हमारा क्या कर लेगा? फिर यह सोच कर सो गये कि अब लड़की मिलेगी कहां से, कल को देखेंगे।

प्रातःकाल उठकर गौतम व मैं बीच पर सैर करने चले गये। अगले दिन रविवार था। मैराथन (लम्बी दौड़) चल रही थी। सरकार इस खेल की व्यवस्था करती है व जगह-जगह पर ठंडे पानी का प्रबंध करती है। इस रेस में जवान, बच्चे, बुजुर्ग, स्त्रियां, लड़कियां व हजारों की तादाद में व्यक्ति भाग ले रहे थे। सड़क के दोनों ओर हजारों की संख्या में लोग उनकी हौसला अफ़ज़ाई के लिए खड़े थे। उस समय हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई जब तीन-चार पंजाबियों और दो सिक्खों को भाग लेते हमने देखा। हम नारियल पानी पीकर वापिस आ गये।

नौ बजे हम वापिस होटल पहुँचे तो शाम के कमरे का किवाड़ अभी भी बंद था। एक घंटे के पश्चात् उसके कमरे का किवाड़ खुला तो वह थाई लड़की अपना पर्स लेकर बाहर निकली। परन्तु उसके चेहरे पर थकान के कोई चिन्ह नहीं थे। शायद रात्रि में मिले डॉलरों ने उसकी सारी थकान उतार दी थी।

शाम व उसका मित्र उस दिन दोपहर एक बजे तक सोते रहे।

जब दो बजे हमने लंच किया तो वह दोनों स्वयं को विजयी सा दर्शा रहे थे और हमें हारे हुए का अहसास दिला रहे थे। उन्होंने बताया कि अगली रात्रि के लिए उस थाई लड़की से उन्होंने अपने साथ एक और लड़की लाने के लिए कहा है। शाम व उसके मित्र ने लंच के पश्चात् एक-एक कैप्सूल लिया। शायद वह अगली रात्रि के लिए स्वयं को तैयार कर रहे थे।

दूसरी रात्रि शाम व उसका मित्र बाहर न गये। हम चारों ने पताया के अन्य दार्शनिक स्थल देखे व रात्रि को एक-दो क्लबों में अन्य डाँस देखे।

तीसरे दिन शाम का मित्र उसका साथ छोड़कर हमारे साथ मिल गया। परन्तु शाम ने तीसरी रात्रि भी व्यर्थ न जाने दी। वह एक इंजैक्शन इंडिया से अपने साथ लाया था व उस रात भी पूर्व रात्रि वाली लड़कियों में से एक नयी व एक पुरानी थी।
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शाम उस रात्रि दीनी के साथ अकेली ही रहा।

लगभग पांच दिनों के पश्चात् हम इंडिया वापिस लौट आये। गौतम के चेहरे पर पश्चाताप का कोई भाव न था, परन्तु हम तीनों अंदर ही अंदर उसे कोस रहे थे।

शाम व उसका मित्र कह रहे थे, ''बैंकॉक आने का आनन्द आ गया।''

शाम तो यहां तक कह रहा था कि वह एक बार फिर से बैंकॉक आयेगा, परन्तु गौतम के साथ नहीं।

दिल्ली जाकर हम सभी अपने-अपने व्यवसायों में व्यस्त हो गये। करीब दो माह गुज़र गये। शाम हमें फिर से बैंकॉक का टूर बनाने के लिए उकसाता रहा। एकाएक हमें पता चला कि दस दिनों से शाम का बुखार ही नहीं उतर रहा। कई डाक्टरों से चैक करवाया। पन्द्रह दिनों के पश्चात् भी उसका बुखार नहीं उतरा। डाक्टर ने उसे जाँच करवाने के लिए टैस्ट लिखकर दिए। उस पर व उसके परिवार पर तब कहर बरसा जब उसके रक्त में से एच.आई.वी. के सबूत मिले। किसी अन्य लैब में से टैस्ट करवाने पर वही पहले वाला परिणाम मिला।

तीसरी लैब में से टैस्ट करवाने के पश्चात् भी जब रिपोर्ट पहली रिपोर्ट जैसी ही आई तब हम सभी उदास हो गये। एडज़ के चिन्ह! उसका साथी भी घबरा गया। परन्तु जाँच के पश्चात् उसका टैस्ट बिल्कुल ठीक था। बैकॉक में तीसरी रात्रि जब शाम अकेला था व तीसरी थाई लड़की से उसने संबंध बनाये तो उस समय वह एडज़ का शिकार हो गया। उसने स्वयं ही यह कबूल भी किया कि उस रात्रि उसने कंडोम का प्रयोग नहीं किया था व शराब और इंजैक्शनों के नशे में ही धुत्त रहा।

शाम व हम पांचों को गौतम की बहुत याद आई जो बार-बार हमें मना करता रहा था। हम सभी पहले उसे नपुंसक कहते रहे थे। परन्तु अब हमें यह एहसास हो रहा था कि उसने देवता बनकर हमें इसे ना-मुराद बीमारी से बचा लिया था। हमारा परिवार व हम सभी दिल ही दिल में उसकी अच्छी राय के कारण दिल से उसे धन्यवाद दे रहे थे। वह शाम के घर गया व उसे ढाँढस बंधाया कि एडज़ जैसी ना-मुराद बीमारी का जल्द ही पता चल गया है व इसकी रोकथाम अभी कुछ हद तक मुमकिन है। अब शाम व हम सभी महसूस कर रहे थे कि गौतम जैसों की नसीहत को क्यों हम अनसुना कर देते हैं?❑

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरामी

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने की ओर काफी लंबे-चौड़े इलाके का नाम पहाड़गंज है। यदि आप नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उतरें तो देखेंगे कि बायीं ओर वाली सड़क कनॉट प्लेस की तरफ चली जाती है और दायीं ओर वाली सड़क पहाड़गंज के सामने से गुजरती हुई सदर बाजार की ओर चली जाती है। बीच वाली सड़क पहाड़गंज को दो भागों में बांटती है-एक तरफ चूना मंडी है और दूसरी तरफ मुल्तानी ढांडा। इन दोनों स्थानों की गलियां तंग हैं व इन तंग गलियों में जहां कुछ रिहायशी घर हैं : वहीं छोटी-छोटी फैक्ट्रियां, फाऊंडरियां, छपाई की प्रैसें, डाईमेकर, चाबियों के छल्ले, एडर्वटाइजमैंट के बोर्ड, सलाइडें बनाने वाले इत्यादि लोग रहते हैं। आपको यहां मोजे बनाने वाली मशीनें भी मिल जायेंगी। छोटे-छोटे चौबारों में कई स्थानों पर रेडीमेड गारमैंटस का काम करते हुए दर्जी भी आपको मिल जायेंगे। विद्युत् के डुप्लीकेट, पंखें, मोटरों आदि का काम-धन्धा भी चलता है। होटलों के लिए चपातियां भी यहीं से बनकर जाती है। जैकेट, बैल्टें, बैग इत्यादि पता नहीं क्या कुछ बनता है। चंद गलियों में प्लास्टिक मोलडिंग की मशीनें भी लगी हुई हैं जहां कॉस्मैटिकस के लिए प्लास्टिक के डिब्बे प्रतिदिन लाखों की संख्या में बनते हैं। इन तंग गलियों में से जहां आपको रिक्शा, आटो, रेहड़ियां इत्यादि गुजरते मिलेंगे वहीं सांयकाल को बच्चे प्लास्टिक की गेंद से क्रिकेट खेलते भी आपको दिखाई पड़ेंगे। पड़ोस में कोई झगड़ा हो जाये तो साथ वाले पड़ोसी के सिर पर जूँ तक नहीं रेंगती।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बच्चों के झगड़े में कई बार स्त्रियां आपस में झगड़ने लग जाती। स्त्रियों में मन-मुटाव कई बार महीनों तक खत्म नहीं होता परन्तु जिन बच्चों की वजह से झगड़ा होता, वह अकसर सांयकाल इकट्ठे खेलते हुए मिल जाते हैं।

इन छोटी-छोटी फैक्ट्रियों के मालिक सारा दिन इधर-उधर भागते रहते हैं अथवा टैलीफोन करते या सुनते रहते हैं। सामान मंगवाते या फिर भेजते रहते हैं। दिन के समय यदि वह एक-दूसरे को मिल भी जायें तो मशीनों की तरह विश करके अपने-अपने काम में फिर जुट जाते हैं। परन्तु जब रात्रि के आठ बजते हैं तब फैक्टरियों के मालिक, दलाल, दुकानदार, चार-चार, पाँच-पाँच की संख्या में एकत्रित होकर शराब मंगवाकर दिन-भर की थकावट व टैंशन को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। कुछ बीयर पीते हैं तो कुछ व्हिस्की। कई लोग नवरात्रों में मदिरा नहीं पीते। इस इलाके में कुछ सिक्ख परिवार भी रहते हैं। कुछ नियमबद्ध प्रातःकाल उठकर बंगला साहिब अवश्य जाते हैं और फिर सांयकाल शराब की बोतल भी इनकी फैक्टरी में आती है। यदि कभी कोई दुःख-तकलीफ या मुसीबत आ जाये तो यह बंगला साहब जाकर सौगंध उठाते हैं कि ग्यारह दिन या इक्कीस या चालिस दिन शराब नहीं पीयेंगे। वह समय पूरा होते ही पिछली सारी कमी पूरी कर लेते हैं। जब यह महफिल में बैठते हैं तो एक दूसरे के व्यक्तिगत जीवन पर भी नोंक-झोंक करते हैं। पत्नी को तो यह लोग स्टीपनी ही समझते हैं और हर रईस व्यक्ति किसी न किसी बाहर वाली से आंख मटका करता दिखाई पड़ेगा। यही इनका स्टेटस सिंबल है। शहरी जीवन के इस चलन को देखकर, यहां स्त्रियां व लड़कियां शादी से पूर्व ही शारीरिक संबंध बना लेती हैं और शादी के पश्चात् भी कुछ शादीशुदा स्त्रियां पर-पुरूषों के साथ संवंध रखने को अवैध नहीं मानती। परन्तु यह सब लुक-छिप कर ही होता है।

इन्हीं गलियों में एक अठ्तीस-उन्नतालीस वर्षीय साधु सिंह रहता था। जिसकी पत्नी कांता इन्हीं गलियों में चर्चा का विषय बनी हुई थी। वह थी तो चौंतीस-पैंतीस वर्षीय परन्तु अपने शरीर को उसने बहुत संभाल कर रखा था। यद्यपि उसके दो बच्चे थे-बेटी करीब पांच वर्ष व बेटा करीब तीन वर्ष का था, परन्तु वह पच्चीस वर्ष से अधिक की नहीं लगती थी। चर्चा के विषय का मुद्दा उसके पति की कमजोरी थी। साधु सिंह की कमजोरी थी शराब। वह स्वयं बहुत पैसा कमा लेता था। उसका धंधा था ट्रकों में भर-भरकर रद्दी कागज लाना और फिर वह फैक्टरी वालों को बेचना। इसी से उसे काफी अच्छी आमदनी जाती थी। लगभग तीस-पैंतीस हजार

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रुपये महीने भर में कमा लेता था। सप्ताह में तीन-चार दिन वह बाहर रहता था, उसे शराब की बहुत बुरी लत थी। दिन के समय भी वह पिए रहता और रात्रि को तो उसे और भी अधिक तलब जाग जाती। शराब के साथ-साथ वह किसी का साथ भी ढूंढता। कभी कभी वह नशा करके वेश्याओं के कोठे पर पहुंच जाता। अकसर लोग उससे कन्नी काटते। वह अकसर किसी के पास पहुंच जाता व तब तक शराब पीता रहता जब तक जमीन पर रेंगने न लग जाता। फिर साथ बैठे व्यक्ति को ही उसे उठाकर उसके घर छोड़कर आना पड़ता। कभी-कभार कोई व्यक्ति शराब के बहाने या फिर पत्ते खेलने के बहाने उसके घर आ जाना। वह साधु सिंह को अधिक शराब पिलाता स्वयं कम ही पीता। लोग कहते कि इसी कारण वह कांता से घुल मिल लेते क्योंकि साधु शराब के नशे में धुत्त बेसुध होकर सो जाता। घर में साधु की बुजुर्ग माँ थी जो रतौंधी की शिकार थी। रात में उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। दिन के उजाले में भी उसे बहुत कम दिखाई पड़ता था। साधु माँ को भी गालियां देता रहता व पत्नी को भी। बच्चों की पिटाई करता। कई बार वह शराब के नशे में कांता पर दोष लगाता, ''कंजरी, तूं कहां-कहां का जूठन खाती है और तूने मेरे बहनोई को भी नहीं छोड़ा।' लोग जब यह बातें सुनते तो जोर-जोर से हँसते। उस गली में रहने वाले अनेकों मर्द अपना सीना तानकर अपनी मर्दानगी की कहानियां सुनाते कि फलां स्थान पर कांता उसके साथ गई व उसने कांता के साथ ऐसा किया। परन्तु रंगे हाथों कांता को अभी तक किसी ने न पकड़ा था। कांता जब गली में से गुजरती तो कोई भी उसके सामने छींटाकशी की हिम्मत न करता। जब वह आगे निकल जाती तो लोग तरह-तरह की बातें करते। सभी उसे भाभी कहते थे। पचास वर्षीय टांगा चलाने वाला नत्थू भी उसे भाभी कहता व चार बेटियों का पिता प्रेमा भी उसे भाभी कहकर गर्व से अपना सीना चौड़ा करता। यदि किसी फैक्टरी वाले को बर्फ की आवश्यकता होती तो वह अपने नौकर को भेजकर वहां से बर्फ मंगवा लेता, ''जा, जाकर भाभी के घर से बर्फ ले आ।'' एक बार एक व्यक्ति ऐसी बातें सुनकर किसी बहाने से कांता के घर चला गया। उस समय साधु घर पर नहीं था तो कांता ने चप्पल उतार कर उसकी अच्छी तरह पिटाई की।

करीब एक वर्ष पूर्व दिल्ली के नारायणा विहार से आकर जगतार सिंह नाम के एक व्यक्ति ने उस गली में जगह ली। उसने वहां मशीनें लगाईं। वह डाई बनाने का काम करता था। अधिकतर कार्य तो उसे उसी इलाके में से मिलने लगा; कुछ
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम दिल्ल[illegible] इलाकों से ही [illegible] जगतार सिंह चालीस वर्षीय सुडौल सरदार था। उसका कद पौने छः फुट था और उसका परिवार गोराया (पंजाब) का था। गोराया में तो उसका काम नहीं चल पाया था परन्तु दिल्ली आकर उसने काफी अच्छा पैसा कमाया था। उसने अपना घर ले लिया था और फिर धीरे-धीरे अपनी छोटी सी फैक्टरी भी बना ली थी। उसके तीन बच्चे थे और शुरू में उसे कांता व साधु के विषय में कुछ भी पता नहीं था। साधु उसके पास आकर बैठ जाता। हालांकि जगतार सिंह तो एक-दो घूँट ही लेता परन्तु उसने साधु को कभी भी शराब नहीं पिलाई थी। साधु ने उसे कई बार अपने घर बुलाया था परन्तु वह एक-दो बार ही उनके घर गया परन्तु उसने वहां शराब नहीं पी। एक बार साधु गली में शराब पीकर गिर पड़ा था तो वह उसे उठाकर घर छोड़ने गया। कांता तो कई वर्षों से दुःखी थी। कांता व जगतार ने मिलकर उसे चौबारे में लिटाया। जब जगतार नीचे उतरने लगा तो कांता बोली, ''बैठो, चाय बनाती हूँ।'' जगतार सिंह 'ना' न कह सका। कांता ने उसका धन्यवाद किया व बताया कि साधु का यह हाल पिछले कई वर्षों से चलता आ रहा है। शुरू में तो इतनी शराब नहीं पीता था। कांता ने चाय का गिलास जब जगतार सिंह को पकड़ाया तो दोनों की ऊँगलियां छू गईं और कांता के मूंह से ठंडा श्वास निकला। जगतार ने यह सब कुछ भांप लिया था। उसने कांता को आश्वासन दिया और कन्धा थपथपाते हुए कहा, ''चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। अब मैं यहां पर आ ही गया हूँ।'' कांता का चेहरा खिल उठा था।

अगले दिन लोगों ने कांता को जगतार सिंह की फैक्टरी में बैठे देखा। वह जगतार सिंह को लेने आई थी क्योंकि साधु बहुत बीमार था। जगतार डाक्टर को लेकर वहां गया था व डाक्टर दवा और इंजैक्शन देकर चला गया था। कुछ दिनों के पश्चात् साधु स्वस्थ होकर अपने काम से बाहर चला गया। कांता को जगतार सिंह अच्छा लगने लगा था। जब कांता के बच्चे स्कूल जा रहे होते तो वह उनको चाकलेट लेकर देता और बच्चे भी अंकल-अंकल कहकर उसकी तारीफ करते। जब धुंधली सी रोशनी होती और रात्रि होने वाली होती तो कई बार कांता का बेटा जगतार सिंह को कह जाता, ''मम्मी कह रही थी, घर जाने से पहले हमारे घर होकर जाना।'' जगतार सिंह पहले तो फैक्टरी आठ बजे ही बंद कर देता था, फिर वह दस बजे तक काम करने लगा। साधारणतयः फौंडरियों व फैक्टरियों वाले नौ बजे घर को चले जाते। जब साधु बाहर गया होता तो कांता अवसर पाकर जगतार की फैक्टरी में ही

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चली आती। जब कांता ने आना होता, जगतार अपने वर्करों को सात बजे छुट्टी कर देता था। कभी जगतार दस बजे कांता के घर पहुँच जाता। बच्चे तब तक सो चुके होते और बुजुर्ग सास को किसी के आने जाने का खास पता न चलता या वह जानकर भी अनजान बन जाती। जगतार के आने-जाने से कांता के चेहरे पर रौनक आनी शुरू हो गयी। वह मुरझाया हुआ फूल था जो अब खिलने लगा। एक दिन कांता ने जगतार सिंह को साफ शब्दों में बता दिया था, "बेटा होने के पश्चात् साधु ना-मर्द सा हो गया, अधिक शराब पीने के कारण।" कांता व जगतार का मिलना काफी अधिक बढ़ गया था। कांता ने अपने घर व अंदरूनी छोटी से छोटी बात भी उसे बता दी थी। उसने यह भी बता दिया कि वह अब साधु को अपने पास फटकने भी नहीं देती और न ही उसमें मर्दों वाली कोई बात बची है। तीन वर्षों से यही चल रहा था। यदि कभी जगतार की पत्नी उससे देर से आने का कारण पूछती तो वह कहता, "क्या करूं काम ही बहुत है।" कांता ने जगतार की पत्नी से दोस्ती करने का प्रयत्न भी किया था। वह जगतार की पत्नी के समक्ष जगतार को 'भा जी' ही कहती। कई बार जगतार सिंह प्रात:काल उठकर कांता को स्कूटर पर बिठाकर बंगला साहब गुरूद्वारा भी ले जाता। कई बार दोनों को इकट्ठे सिनेमा में फिल्म देखते भी देखा गया। दोनों में बहुत निकटता आ चुकी थी। जगतार का संदेश मिलते ही कांता वहां पहुंच जाती जहां उसे बुलाया जाता।

एक बार जगतार ने किसी अजीब व सुनसान स्थान पर कांता को बुलाया। कांता उस जगह भी पहुँच गई थी, बेशक वो जगह दूर थी। जगतार व उसका मित्र वहां बैठे शराब पी रहे थे। कांता पहले तो थोड़ा झिझकी लेकिन बाद में जगतार सिंह को वहां बैठा देखकर कुछ हौंसला मिला। जगतार बोला, "यह मेरा परम मित्र है। तुम यहां बैठो, मैं अभी आया।" कांता सब कुछ भांप गई थी। उसने जगतार को बाहर आने का इशारा किया व बाहर आने पर उसे बोली, "मैं तेरी हूँ, जी.बी. रोड की तवायफ नहीं।" यह कहकर उसने आटो लिया व घर पहुंचकर ही साँस ली। एक सप्ताह तक जगतार हाथ-पाँव जोड़ता रहा मिन्नतें करता रहा तब कहीं जाकर कांता ने उसे क्षमा किया। इस घटना के पश्चात् जगतार के दिल में कांता के प्रति प्यार व इज्जत दोनों बढ़ गये थे।

जगतार की अपनी पत्नी व बच्चों में रूचि कम होती जा रही थी। एक बार कांता ने दृढ़ता दिखाई व बोली, "अब मुझसे ऐसे नहीं रहा जाता। तुम जहां कहो मैं

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आने को तैयार हूं, रहने के लिए तैयार हूं। मुझे इस नरक में से अब निकालो। परन्तु हां, बच्चे मेरे साथ ही रहेंगे।" जगतार सिंह इस विषय में गंभीरता से विचार करने लगा। उसे जो कशिश कांता से मिलती थी, अपनी पत्नी में देखने को नहीं मिलती थी। एक दिन उसने सोचा कि वह अपनी पत्नी से स्पष्ट शब्दों में कह देगा कि वह कांता को अपने घर में लाने वाला है, साथ ही उसके बच्चों को भी। परन्तु वह ऐसा कह न सका। कुछ तो वह अपने तेज़ तर्रार सालों से डरता था और कुछ होने वाले घरेलू झगड़े से। इसी कारण वह दुविधा में था। कई बार सोचता कि वह कांता को लेकर किसी ओर निकल जाये अथवा चुपचाप कांता को कोई घर किसी और जगह लेकर दे दे। दिल्ली बहुत बड़ी है, वह सोचता।

एक दिन इसी दुविधा में वह दो पैग अधिक पी गया। साधु बाहर गया हुआ था। उसने कांता का द्वार खटखटाया। कांता ने द्वार खोला व देखा कि जगतार का मन अत्यधिक बेचैन व उदास था। शराब जगतार सिंह के सिर पर चढ़ी प्रतीत हो रही थी। उसने द्वार बंद किए व कांता को अपनी आगोश में ले लिया और वो कुछ करने के लिए मचलने लगा जिसके लिए कांता ने उसे कभी भी रोका नहीं था। परन्तु उस दिन कांता ने कहा, "प्लीज, आज नहीं, काका (बेटा) बहुत बीमार हैं व बुखार में ही बड़बड़ा रहा है।"

जगतार कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। कांता की कलाई ज़ोर से पकड़कर उसे वह नीचे वाले कमरे में ले गया जहां वे अकसर मिलते थे। फिर जबरदस्ती से डबलबेड पर धकेलते हुए उसने कहा, "छोड़ उसे, हरामी को कुछ नहीं होने वाला।"

यह शब्द सुनते ही झटक कर कांता ने अपना हाथ जगतार से, छुड़ाया और घायल शेरनी की भांति खड़ी हो गई और जगतार बिस्तर पर जा गिरा। उसकी पगड़ी ढीली हो गई थी। कांता चीखी, "चुपचाप बाहर चला जा, यदि अपनी इज्जत प्यारी है तो। इस ओर दुबारा नज़र घुमाकर भी मत देखना। यदि इस ओर कभी देखा भी तो खुसरों की टोली में शामिल करवा दूंगी।" उसने चिटकनी खोलकर बाहर वाला द्वार खोल दिया था। जगतार पगड़ी संभालता हुआ बाहर निकल गया था। कांता ने दुबारा चिटकनी लगाई व ऊपर जाकर अपने तीन वर्षीय बेटे को अपने सीने से लगाकर बोली, "बेटे, मैं तेरी हूँ। हरामी अपने-आप को समझता क्या है?" यह कहकर उसने तेल के साथ पके डस्टबिन में थूक दिया था। □

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोरी की शादी के बाद

मुंबई में जिस होटल में मैं अकसर ठहरता हूँ उसका नाम है मनोरा। इसमें करीब पचास कमरे हैं। यह होटल अकसर ग्राहकों से भरा ही रहता है। यही कारण है कि इस होटल के बाहर तीन-चार टैक्सियों वाले विशेष तौर पर लंगर डाले रहते हैं। इन टैक्सी वालों में से दो टैक्सी वाले मेरे नज़दीकी जान-पहचान वाले हैं क्योंकि मैं जब भी मुंबई आता हूँ तो पूरे दिन के लिए इनमें से एक की टैक्सी किराये पर ले लेता हूँ। एक पचास-पचपन वर्षीय है व दूसरा तीस वर्षीय। यह दोनों यू.पी. गोरखपुर ज़िले के रहने वाले हैं, परन्तु दोनों के गांव अलग-अलग हैं। दोनों यू.पी. के प्रसिद्ध यादव नेता के समर्थक हैं। इसी से आप ने अनुमान लगा लिया होगा कि ये दोनों यादव हैं परन्तु ये बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री लालू प्रसाद यादव के पक्ष में नहीं हैं। यह दोनों स्वयं में कहानियां हैं और इनके परिवार एवं सदस्य उन कहानियों के सह-पात्र हैं। बड़े यादव की कहानी मैं किसी और समय सुनाऊँगा। मेरी इस कहानी का नायक धर्म चंद यादव है।

वह पिछले पांच वर्षों से मुंबई में मेरा साथ देता आ रहा है। उसके कितने भाई हैं, कितने चाचा, उसके भतीजे-भतीजियों, भांजे-भांजियों के बारे में मुझे सब मालूम है। उसके पिता अध्यापक हैं, उसका एक भाई साईंस का अध्यापक व दूसरा

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भाई ब्लॉक समिति का सचिव है। उसकी दोनों बुआ शादी-शुदा हैं जो उनके गांव से काफी दूर रहती हैं। उसका चाचा व ताऊ उसके पिता के साथ एक ही परिवार में रहते हैं। चाचा के बच्चे हैं, परन्तु उसके ताऊ शादी-शुदा नहीं हैं। उसका चाचा आजकल गांव की पंचायत का सदस्य है। परिवार की जिम्मेदारी उसी पर है। यह सब कुछ धर्म चंद मुझे मेरे सफर के दौरान फुर्सत के पलों में बताता रहा है।

धर्म चंद ने मुझे बताया कि वह सातवीं कक्षा में फेल हो गया था। पढ़ाई में रूचि नहीं थी। वह उस समय मात्र पंद्रह वर्ष का था जब मुंबई घरवालों को बिन बताये भाग आया था। वह एक सहपाठी के साथ मुंबई आया था जो फिल्मों में एक्टिंग करना चाहता था। परन्तु आजकल उसका वह सहपाठी किसी साधारण से होटल में वेटर का काम कर रहा है। धर्म चंद बताता है कि मुंबई में हजारों लड़के उसके दोस्त जैसे हैं जो फिल्मों में अपनी तकदीर आजमाने आते हैं, परन्तु अधिकतर होटलों में, कुछ टैक्सियों में व कुछ गलत व्यक्तियों के जाल में फंस जाते हैं। मैंने उससे पूछा गर्द किसे कहते हैं तो उसने मुस्कुराकर सड़क के बायीं ओर इशारा किया जहां पांच व्यक्ति, चार नवयुवक व एक स्त्री अपने आपको एक पतले कपड़े से ढाँपकर सिगरेट के सामने कुछ रखकर सुलगा रहे थे। धर्म चंद ने बताया कि ये नशा करने वाले नशा करने के पश्चात् छः छः आठ-आठ घंटे फुटपाथ पर ही पड़े रहते हैं। कुछ माँगकर, कुछ चोरी करके व कुछ हेरा-फेरी करके नशे के लिए पैसा इकट्ठा करते हैं।

धर्म चंद ने बताया कि मुंबई आकर शुरू में उसने एक होटल में बर्तन साफ करने का काम शुरू किया। फिर उसकी तरक्की हुई और वह वेटर बन गया। एक दिन किसी सेठ से मुलाकात हुई, जिसकी स्टेशनरी की दुकान थी। वह उसकी दुकान पर नौकर लग गया और सारा दिन वह साईकिल पर दफ्तरों में स्टेशनरी पहुँचाता था। वह जो भी काम करता, दृढ़ता, मेहनत व ईमानदारी से करता। वह जब शाम को फुर्सत में होता तो अपने इलाके के व्यक्तियों के पास जा बैठता। उनमें से एक टैक्सी ड्राईवर था जो उससे उम्र में करीब पंद्रह वर्ष बड़ा था। सुबह उठकर वो उसकी टैक्सी धो कर साफ कर देता। उसने उसे टैक्सी चलानी सिखा दी व किसी सेठ की टैक्सी किराए पर ले दी। जब उसका टैक्सी चलाने का लाइसेंस बन गया तो लगभग चार वर्ष पश्चात् उसने पत्र द्वारा अपने माता-पिता को बताया कि मैं मुंबई में फलां स्थान पर रहता हूँ और अब टैक्सी चला रहा हूँ। घर से भागने के पाँच वर्ष बाद वह अपने

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गांव लौटा। वह बताता है कि गांव से भागने के समय वह छोकरा सा था परन्तु जब वह वापस गाँव लौटा तो उसके मुँह पर थोड़ी- थोड़ी मूँछें आ गई थीं। जब वह घर गया तो परिवार के सभी सदस्यों के लिए नए कपड़े लेकर गया। उसकी दादी तो खुशी के मारे सिसकियां भरने लगी। उसके भतीजे-भतीजियां, भांजे-भांजियां, बहनें, बुआ बहुत खुश हुईं और उसके माता- पिता भी। अपने पिता के लिए हाथ वाली घड़ी व माता के लिए वह बनारसी साड़ी ले गया था। उसने मेहनत करके सात हजार रुपये बचाये थे जो उसने अपने चाचा की हथेली पर रखे क्योंकि चाचा सारे परिवार का मुखिया था। धर्म चंद ने बताया कि मेरे बारे में चंद ही दिनों में आस- पड़ोस के गाँवों में धूम मच गई कि बदरी नाथ यादव का लौंडा मुंबई से बहुत से पैसे कमाकर लाया है और सुंदर सजीला नौजवान बन उभरा है।

मेरे चाचा और पिता ने मुझे पूछा कि 'आगे का क्या प्रोग्राम है' तो मैंने बताया कि 'एक महीने के पश्चात् वापिस मुंबई जाऊँगा।' धर्म चंद ने दोनों को बताया कि वो अपनी टैक्सी लेना चाहता है क्योंकि ढाई सौ रुपये किराया प्रतिदिन सेठ को देना पड़ता है। मेरे चाचा, ताऊ व पिता ने आपस में सलाह की व मुझे सात हजार वापस कर दिये और आठ हजार रुपये और साथ में दे दिये। मैंने उन्हें बताया कि मैं डेढ़ वर्ष में तुम्हारे यह पैसे दोगुने करके वापस कर दूँगा और टैक्सी भी मेरी अपनी हो जायेगी। दरअसल उसने पंद्रह हजार रुपये मुंबई के एक बैंक में जमा कराकर रखे थे जो उसने उन्हें बता दिये। एक महीने के बाद धर्म चंद वापस आ गया और उसने अपने सेठ से चालीस हजार रुपये में वो टैक्सी खरीद ली। दस हजार रुपये बकाया उसने तीन महीनों में वापस कर दिए। पाँच हजार रुपये उसने टैक्सी पर खर्च कर टैक्सी और बढ़िया बना ली। एक वर्ष पश्चात् जब धर्म चंद वापस गांव गया तो उसके लिए रिश्ता आया हुआ था। लड़की आठवीं कक्षा पास थी। लड़की के दो भाई दिल्ली में अच्छी नौकरी पर लगे हुए थे व एक भाई दुबई में रहता था। धर्म चंद से जब उसके चाचा ने पूछा कि उसकी क्या राय है, तब उसने कहा था, "काका, ये तुम जानो या तुम्हारा काम।" लड़की को सिर्फ धर्म चंद की भाभी ने देखा था और हाँ कर दी गई। धर्म चंद अपने वायदे के मुताबिक तीस हजार रुपये लेकर आया हुआ था। परिवार वालों ने दस हजार का इंतजाम और करके धर्म चंद की शादी धूमधाम से कर दी। उसकी पत्नी का नाम था लीला। धर्म चंद बताता है कि 'वह बहुत ही नेक व शांत स्वभाव की लड़की थी। मैंने उसे अपनी सारी कहानी बताई और कहा कि मैंने

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी बहुत मेहनत करनी है, तब उसने बड़ी दृढ़ता से कहा था, ''मैं थारे साथ हूँ।'' शादी से डेढ़ माह पश्चात् लीला को मायके छोड़कर वो मुंबई आ गया। वह सोलह-सोलह घंटे टैक्सी चलाता। परन्तु उसका ध्यान लीला की ओर ही रहता। छः माह पश्चात् वह फिर गाँव गया और दो माह गाँव में बिताकर वापस मुंबई आ गया। उस समय लीला गर्भवती थी। अगली बार वो तब गाँव गया जब उसे बताया गया कि वह एक कन्या का पिता बन गया है। कन्या के जन्म के एक माह बाद वह गाँव गया और परिवार की रजामंदी से गाँव में मिठाई बाँटी गई। धर्म चंद बताता है कि वह हर छः माह पश्चात् एक माह के लिए गाँव जाता है और फिर मुंबई वापिस आ जाता है। डेढ माह होली के समय व पंद्रह दिन दीपावली के निकट। धर्म चंद ने बेटी के जन्म के बाद से ढाई सौ रुपये का मासिक खाता डाकखाने में लड़की के नाम से खुलवा दिया। तीन वर्ष पश्चात् उसकी दूसरी बेटी हो गई। अब वह कुछ उदास हो गया परन्तु मैंने उसे हौंसला दिया—'ईश्वर जो कर रहा है, उसी में भलाई है।' फिर उसने एक दिन खुशी-खुशी मुझे बताया कि वह अपनी पत्नी को मुंबई ला रहा है। बारह सौ रुपये प्रति माह किराये पर उसने एक कमरा, रसोई किराये पर लिये हैं। इन दिनों वो बहुत जोशीला दिखाई पड़ता। परन्तु इसी के साथ-साथ कुछ जिम्मेदारियों का बोझ भी महसूस करने लग गया। तीसरा बच्चा मुंबई में ही हुआ, वह भी लड़की। उसके काले बालों में कुछ कुछ सफेद बाल आने लगे। अब उसकी मूँछें पहले की भाँति खड़ी नहीं रहती थी। पत्नी बीमार रहने लग पड़ी। कई कारण थे। मुंबई में यू.पी. के खेतों जैसी खुली हवा व स्वच्छ जल नहीं मिलता था। दूसरा कारण पहली बेटी की जुदाई जिसे वह बार-बार याद करती। तीसरा कारण, साथ की साथ उसकी तीसरी बेटी जन्म के दो माह पश्चात् गुजर गई। उसकी लीला और भी बीमार हो गई। बड़ी बेटी वह ननिहाल छोड़कर आये थे जो इस समय दूसरी कक्षा में पढ़ती थी। लीला को पहले ही बड़ी बेटी की बहुत याद सताती थी। परन्तु सबसे छोटी बेटी की मौत के पश्चात् तो वो पहली बेटी को और भी अधिक याद करने लगी। धर्म चंद ने अपनी पत्नी की बीमारी पर दस हजार से अधिक रुपये लगा दिये। वह ठीक तो हो गई परन्तु बड़ी बेटी को याद करके हमेशा बेचैन सी रहती।

धर्म चंद ने एक दिन मुझे बताया कि उन्होंने फैसला किया है कि उसकी घरवाली अब गाँव में उसके संयुक्त परिवार में ही रहेगी। वह अपनी घरवाली को गाँव छोड़ आया। बड़ी बेटी को ननिहाल से बुलवाकर उसे अपने गाँव में ही दाखिला

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दिलवा दिया। धर्म चंद ने मुझे अपने घर की व्यक्तिगत बात बताई कि उन दोनों ने फैसला किया है कि लीला सबसे बड़ी बेटी ब्याहने के बाद ही अब मुंबई आएगी। मैंने उससे पूछा कि, ''कितने वर्ष बाद पहली बेटी की शादी होगी'' तो उसने बताया, ''बस, बारह तेरह वर्ष की ही तो बात है।''

मैं चंद पलों के लिए चुप हो गया व सोचने लगा कि धर्म चंद और लीला जैसे हजारों ही युवा दम्पति अपनी जवानी के सुनहरे दिन रोज़ी-रोटी और सामाजिक जिम्मेदारियों के लिए कुर्बान कर देते हैं। पूरा वर्ष वो होली-दीवाली की प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब ये पर्व आये और वे अपने मन की बात, अपने जीवन साथी को बता सकें और अपने जीवन साथी के मन की बात सुन सकें। जीवन साथी की गैर-मौजूदगी में उनके लिए बहारें भी पतझड़ होती हैं और वह पतझड़ में भी हँसते-मुस्कुराते उन पलों की प्रतीक्षा करते हैं जब उनका जीवन साथी उनके लिए बहारें लेकर आयेगा।

मुझे कुछ समय चुप देखकर धर्म चंद ने खुश होकर एक खुशखबरी सुनाई कि अब उन दोनों को कोई चिन्ता नहीं क्योंकि दो सप्ताह पहले उनके बेटा हुआ है और वह एक सप्ताह गाँव रह कर भी आया है। अब उसकी लीला उसे कह रही थी, ''अब कोई फिक्र नहीं, थारा बेटा मेरे पास है। इसकी शक्ल-सूरत पूरी थारे पै गई है! इसनै पढ़ा-लिखा कै अफसर बनावेंगे और फिर मौज मस्ती करैंगे।''

जब धर्म चंद अपनी पत्नी के यह शब्द बोल रहा था तो उसके चेहरे पर खुशी थी, उसकी आँखों में भविष्य के सुनहरी सपनों की झलक और आवाज़ में जोश व उभार दोनों थे और आशा का सूर्य उसके चेहरे पर चमक रहा था।■

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पापा जी

करीब बीस वर्ष पूर्व की बात है, मैं कंपनी के कार्यों के सिलसिले में भारत के कई बड़े शहरों में जाता था तथा उनमें से बंगलौर एक था। बंगलौर के विषय में कहा जाता है कि यह भारत के सबसे सुंदर और योजनाबद्ध शहरों में से एक है। कुछ लोग चंडीगढ़ को प्रथम स्थान देते हैं और कुछ लोग बंगलौर को। बंगलौर का मौसम अप्रैल-मई को छोड़कर पूरे वर्ष एक समान ही रहता है। तात्पर्य है कि सहन करने योग्य ठंडा। दिन में तापमान पच्चीस डिग्री से तीस के बीच में रहता है और रात को इससे भी कम रह जाता है। वहां पर बहुत कम लोग ए.सी. का प्रयोग करते हैं या समझो कि ए.सी. की वहां कोई विशेष आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

पहली बार बंगलौर, मैं मुंबई से बस द्वारा गया। वैसे तो साधारण सफर उन दिनों पच्चीस-छब्बीस घंटों का था पर बस में खराबी आ जाने के कारण मुझे बत्तीस घंटे लग गये थे। दूसरी बार बंगलौर मैं एक वर्ष बाद गया तो कम्पनी की तरफ से बंगलौर के लिये ए.बी. सुब्रामण्यम को प्रतिनिधी बनाया। सुब्रामण्यम एक तजुर्बेकार और ईमानदार व्यक्ति था जो तामिलनाडू के साथ सम्बन्ध रखता था, परन्तु रोज़ी-रोटी कमाने के लिये पहले वह मुंबई कुछ देर तक रहा और आजकल बंगलौर। उसने कई कम्पनियों के साथ मेरी जान-पहचान करवायी और एडवरटाइज़िंग एजेंसियों

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बड़े-बड़े अफसरों के साथ मुझे मिलवाया। दो दिन बाद जब हम होटल में बैठे थे वह एकदम बोला कि एक कंपनी 'बेल' से तो मुलाकात रह ही गई है और वहां व्यापार लगभग निश्चित है। मैंने अगले दिन बंगलौर में ठहरने का मन बनाया। अगली सुबह हम समय लेकर 'बेल' कम्पनी जा पहुँचे।

संबंधित अफसर से रिसैप्शनिस्ट ने फोन पर बात की तो उसने बाहर आकर हमारा स्वागत किया। उसे पहली बार मिलने से मैं कोई खास प्रभावित नहीं हुआ था। चेहरा सांवला, कद पाँच फुट चार ईंच, साधारण पैंट कमीज और वह कुछ लंगड़ा कर चल रहा था। उसकी आयु बावन वर्ष के करीब थी। मेरी जान-पहचान सुब्रामण्यम ने करवायी। मैंने उसे अपना विज़टिंग कार्ड दिया और उसने मुझे अपना। उसके नाम से पता लगता था कि वह ईसाई था, तमिल भाषा बोलता था जो उसकी मातृ-भाषा थी। उसको न हिन्दी बोलनी आती थी और न ही वह हिन्दी समझता था। वह सुब्रामण्यम के साथ कभी तामिल में बात करता और कभी कन्नड़ में, परन्तु मेरे साथ अंग्रेजी में ही बात करता था। उसने मुझे पूछा, चाय या कॉफी, तब मैंने जवाब दिया जो आप पियोगे, मैं पी लूँगा। चाय पीने के पश्चात् मैंने अपनी कम्पनी के प्रकाशनों की जानकारी करवायी-प्रसार संख्या, उसके सबूत और मूल्य कार्ड दिये। वह देखता रहा, जैसे उसने पहले ही मन बनाया हुआ था। घंटी बजाई और उसकी स्टैनो आ गई। उसके दाँत मोतियों जैसे सफेद लगे क्योंकि उसका रंग काफी सांवला था और जब वह मुस्कुराता तो उसकी बत्तीसी बाहर आ जाती और दोनों आँखों के पास छोटी-छोटी लकीरें उभर आतीं। उसकी आँखों में से ही उसकी अफसरी, उसका प्यार और क्रोध झलकता। स्टैनो को उसने अपनी बात आधी कन्नड़ और आधी अंग्रेज़ी में समझायी। पन्द्रह मिनट में स्टैनो मैगज़ीन के लिये विज्ञापन वाला मैटीरीयल साथ लेकर आई। बीस हजार रुपए में पूरा रंगीन पन्ना छापना था। उन दिनों के बीस हजार रुपए तो आजकल के पचास हजार के बराबर हैं। मैं देखकर हैरान हो गया और सुब्रामण्यम भी हैरान और खुश भी था क्योंकि सुब्रामण्यम को इसमें से दस प्रतिशत कमीशन मिलना था। मुझे पेपर दिखाकर उसने लिफाफा अपने पास ही रख लिया और घड़ी देखने लग गया। जब एक बज गया तो उसने हमें दोपहर का भोजन एक साथ करने की पेशकश की। वह हमें पंजाबी होटल में ले गया। मैं बहुत खुश था कि वह खाने-पीने वाला व्यक्ति लग रहा है और आगे से काम करवाना और भी आसान हो जाएगा। जब खाना खा चुके तो तीन व्यक्तियों का बिल तीन सौ पैंतीस रुपये था। मैं
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब बिल का भुगतान करने लगा तो उसने बिल उठा लिया तथा अपना क्रेडिट कार्ड बैरे को दिया और बीस रुपये नकद दिये टिप के तौर पर थे। मैं बहुत हैरान हुआ। मैं और सुब्रामण्यम दोनों ने उसका धन्यवाद किया तथा उसने लिफाफा सुब्रामण्यम के हाथ में पकड़ाया और बड़े अदब के साथ हमें विदा किया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा प्यार और शिष्टाचार वह कैसे और क्यों दिखा रहा था। अकसर इस लाईन में लोग खाने वाले मिलते हैं, लेने वाले मिलते हैं, खिलाने या देने वाले नहीं। दफ्तर में उसने हमें कम्पनी के दो शानदार पैन तथा दो पेपरवेट भी दिये।

रास्ते में मैंने सुब्रामण्यम के साथ उसके विषय में बात की। वह यह बता रहा था कि यह उसूलों वाला व्यक्ति है तथा किसी से जल्दी- जल्दी चाय भी नहीं पीता और न ही कोई उपहार स्वीकार करता है। लेकिन सुब्रामण्यम भी इस बात से हैरान था कि उसने साढ़े तीन सौ रुपये दोपहर के भोजन पर क्यों खर्च किये। बंगलौर में व्यापार की शुरूआत उसने ही की थी।

छः महीने बाद मुझे फिर बंगलौर जाना पड़ा। ब्रुक बाण्ड, लिप्टन, एच.एम.टी., टाईटन, ब्रिटेनिया, माईको, टी.टी.के., मैक्डोवेल, बी.पी.एल. टी.वी.एस. आदि कम्पनियों के मार्कीटिंग (अधिकारियों) प्रमुखों को मिलने का मौका मिला। जब हमने उस कैथोलिक दोस्त को फोन किया तब उसने दोपहर को आने के लिये कहा और हमने जान-बूझकर शाम के समय की माँग की। हम शाम को साढ़े चार बजे पहुँचे। उसने फिर गर्मजोशी के साथ हमारा स्वागत किया। कॉफी के साथ वड़ा और शीरा भी शामिल थे। मुझे कहने लगा कि हमारा शीरा तुम्हारे कड़ाह प्रसाद जैसा है। शीरा सूजी का बना हुआ हलवा था जिसमें केसर डाला हुआ था। वड़ा पकौड़ों की किस्म का था जो दक्षिण भारत में काफी पसन्द किया जाता है। आधे घंटे में हमें नए आर्डर से सम्बन्धित कागज़ मिल गये। मैंने उसे अपने होटल में शाम को आने की प्रार्थना की तो वह कहने लगा कि आज मुश्किल है। मेरी बेटी का जन्मदिन है। अगली बार जब आओगे तो जरूर बैठेंगे। मैंने झिझकते-झिझकते तथा सहमते हुए उनसे प्रार्थना की कि मैं अपनी भतीजी के लिये एक छोटा सा उपहार दे सकता हूँ जो मैं उसके लिये सोचकर नहीं लाया था। यह उपहार पंजाबी के प्रसिद्ध लेखकों की कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद था तथा एक कीमती पैन। उसने एक मिनट रूकने के लिये कहा तथा घर पर फोन मिलाया और अपनी बेटी से बातचीत की, "हेअर इज़ अमंकर पापा जी कमिंग फ्रॉम पंजाब। ही लाइकस टू विश यू बर्थडे" तथा फोन

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने मुझे पकड़ा दिया और उसकी बेटी मेरे साथ अंग्रेजी में इस तरह बात कर रही थी जैसे वह मुझे कई वर्षों से जानती हो। मैंने उसे जन्मदिन मुबारक कहा और कहा छोटा सा उपहार भेज रहा हूँ तथा अगले वर्ष तुम्हारे अगले जन्मदिन पर तुम्हारे घर अवश्य आऊँगा। आईजाक ने लिफाफा मेरे से लिया और खोल कर देखा। मैंने बड़ी होशियारी से सौ रुपये के पांच नोट किताब में रख दिये थे। उसने पांचों नोट वापिस कर दिये और कहा, ''सिंह साहिब यह पहला तोहफा मैंने स्वीकार किया है। मुझे मेरे जमीर से न गिराओ।'' वह नोट वापिस लेकर मैंने क्षमा याचना की तथा मुझे लगा कि मैं स्वयं ही अपनी नजरों में गिर गया हूँ क्योंकि मैं सचमुच उसकी आत्मा को पहचानने में असमर्थ रहा था। मैं नजरें झुकाये वापिस होटल लौट आया। अगले दो वर्ष पश्चात् मैं बंगलौर गया लेकिन उसके दफ्तर नहीं। हर छः मास पश्चात् वह मुझे नया आर्डर और विज्ञापन भेज देता और मैं फोन द्वारा उसका धन्यवाद करता था। करीब दो वर्ष पश्चात् मैंने सुब्रामण्यम से कहा हमें आईजाक को अवश्य मिलना है तथा याद आया कि आज उसकी बेटी का जन्मदिन भी है। हमने फोन किया तो पता लगा कि वह छुट्टी पर है। हमने घर फोन किया। वह घर पर ही था तथा अपनी बेटी का जन्मदिन मनाने की तैयारियां कर रहा था। मैंने जन्मदिन की बधाई दी तो उसने कहा, यहां आकर दो।

मैंने बाजार से चाकलेट का डिब्बा, कुछ फल और कुछ पेस्टरियाँ, केक, बहुमूल्य उपहार साथ ले लिये। सुब्रामण्यम मुझे उसके घर छोड़कर चला गया क्योंकि उसे कोई और जरूरी काम हेतु जाना था। आईजाक के कई रिश्तेदार तथा दोस्त मित्र आये हुये थे जो तमिल में बातें कर रहे थे। कोई भी मेहमान आता तो उसे 'वड़क्कम' कहा जाता, भाव स्वागत है। उसकी पत्नी ने मुझे अन्ना पापा कहा अर्थात् वीर (भाई) पापा। तमिल में बहन को अक्का कहते हैं। मैंने भी जब अक्का सिस्टर कहा तो सभी हँस पड़े क्योंकि अक्का का अर्थ ही सिस्टर होता है। उसका सारा परिवार तथा दोस्त मित्र बड़े चाव के साथ मुझे मिले। उसकी बेटी और पति-पत्नी दोनों ने मुझे बीच में खड़ा करके तस्वीर खिंचवाई। मैंने साऊथ इण्डियन पकवानों का लुत्फ उठाया। उनमें से पोंगल, उत्तपम बहुत पसन्द आए। आईजाक और उसकी पत्नी ने फल, पेस्ट्री और चॉकलेट का डिब्बा स्वीकार किया और कीमती उपहार मुझे वापिस कर दिया। आईजाक ने मुझे अगले दिन ग्यारह बजे बुलाया। इस बार वह गंभीर और उदास नजर आ रहा था। उसने बताया कि पहले उसका डायरैक्टर साऊथ

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंडियन था जो उसकी बात नहीं टालता था। पर अब एक पंजाबी आया है मिस्टर अरोड़ा। उसने यह भी स्वीकार किया कि अरोड़ा अब मेरा काम नहीं करेगा क्योंकि उसे पंजाबी समाचार पत्रों और पंजाबी मैगजीनों से चिढ़ सी है। वह बताने लगा कि दस हजार तक मैं फैसला ले सकता हूँ तथा इससे ऊपर का काम अरोड़ा के पास जाता है। मैंने उसके पास से दस हजार की एड मंजूर की। नहीं से तो यही अच्छा था। मैंने उससे फिर प्रार्थना की कि आज की शाम कुछ समय मेरे लिये जरूर निकाले। उसने कहा कि वह एक घंटे के लिये आएगा, अर्थात् साढे छः से साढे सात, रात का खाना नहीं लेगा। मैंने इसके लिये उसका धन्यवाद किया।

ठीक साढ़े छः बजे वह मेरे होटल के कमरे में था। मैंने पूछा कि कॉफी लोगे या ड्रिंक। उसने बिना झिझक के कहा कि वह ब्राण्डी लेगा और मैंने अपने लिये व्हिस्की का पेग लिया। वह धीमे-धीमे, एक-एक बूंद करके सिप कर रहा था। उसने एक पेग आधे घंटे में समाप्त किया और मैंने उस आधे घंटे में दो पेग समाप्त किये। मैंने उसके लिये दूसरा ब्राण्डी का पेग मँगवाया, अपने लिये व्हिस्की। मैंने उससे पूछ लिया कि आपने मुझमें क्या देखा है कि मुझे इतना प्यार दे रहे हो। वह कुछ देर खामोश रहा और फिर छत्त की ओर देखते हुये कुछ याद करके हल्का-हल्का मुस्कुराने लगा। उसने आप बीती सुनानी शुरू की। आईज़ाक बता रहा था कि बचपन में पता नहीं क्यों उसके दिमाग में भर दिया था कि सिक्ख अर्थात् पापा जी अच्छे इन्सान नहीं होते। वह कठोर, बेरहम और हिंसक प्रवृत्ति वाले होते हैं। स्कूल तथा कालिज के दिनों में भी मेरी यही धारणा बनी रही। जब मैं नौकरी पर लगा तब भी मैंने यही धारणा बनाये रखी। कोई भी सिक्ख मेरे पास आता तो मैं उसका जायज़ काम भी नहीं करता था। मुझे स्वयं को बुरा तो लगता कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये। परन्तु सिक्ख और पगड़ी देखते ही मेरे अन्दर नफरत सी भर जाती।

करीब आठ वर्ष पहले की बात है मुझे दिल्ली ट्रेनिंग पर भेजा गया। वहां मुझे एक माह रहना था। हमारी कम्पनी का अपनां गैस्ट हाऊस कनॉट प्लेस में है। स्वभाव अनुसार साढ़े चार बजे शौच जाने के पश्चात् पांच मिनट तक ईसा मसीह को याद करता तथा फिर दो गिलास पानी पीकर बाहर घूमने के लिये निकल जाता। राह में रकाबगंज तथा बंगला साहिब गुरूद्वारे आते परन्तु मैं उनकी ओर कम ही ध्यान होता। अठारह जनवरी की बात है कि मैं सुबह घूमने के लिये निकला। अभी करीब दो किलोमीटर गया था कि एक ट्रक मुझे पीछे से धक्का मारकर चला गया। मेरी

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दायीं टाँग और दायीं बाजू बुरी तरह घायल हो गयी तथा सिर पर चोट आई। बेहोशी मुझे घेर रही थी लेकिन मुझे किसी ने न उठाया। सर्दी का समय और घना अन्धकार। मुझे लगा कि मेरा अंत नज़दीक है और फिर मैं बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तब मैंने देखा कि मैं एक प्राईवेट हस्पताल में था, मेरे बिस्तर के साथ बाईं ओर करीब साठ-बासठ वर्ष की एक बुजुर्ग स्त्री सलवार-कमीज़ तथा सिर पर दुपट्टा लिये बैठी थी। दूसरी ओर सफेद पगड़ी में उसका पति आँखें बन्द कर हाथ जोड़ कर बैठा था, लगता था-दोनों कोई प्रार्थना कर रहे हैं। उन्हें पहले पता न लगा कि मैं होश में आ गया हूँ। नर्स ने उन्हें झंझोड़ा कि मरीज़ ने आंखें खोल ली हैं और वह ठीक होता लग रहा है। दोनों खुशी से हड़बड़ाकर उठे और उनके चेहरे आत्मिक खुशी से खिल उठे। मैं भी दर्द में मुस्कुराया। उन्होंने पूछा बेटा अब कैसे हो, मैंने कहा-ठीक हूँ। नर्स ने मुझे बताया कि दोनों गुरूद्वारे जा रहे थे तथा आपको कार में डालकर लाए। उस दिन से वे गुरूद्वारे माथा टेकने भी नहीं गये। मेरी आँखों से धन्यवाद के आंसू बहने लगे। बुजुर्ग स्त्री ने अपने दुपट्टे से उन्हें पोंछा और मुझे हौंसला दिया। तीन दिन तक वे दोनों उस जगह से न हिले जब तक मैं उठकर बैठने न लग गया। मेरी दायीं टाँग पर पलस्तर लग गया था। दफ्तर वालों को सूचित कर दिया। उस बुजुर्ग पापा तथा उसकी पत्नी ने दफ्तर वालों को चिन्ता न करने के लिये कहा और कहने लगे यह हमारे बेटे जैसा है। यह सेवा हमें वाहेगुरू ने सौंपी है। नहीं तो हम कौन होते हैं किसी को बचाने वाले। मुझे लगा कि वह पापा जी साक्षात् यीशू थे। उनकी पत्नी में मैं मदर टैरेसा को देखने लगा। करीब बीस दिन उन्होंने मुझे अपने घर रखा, मेरे परिवार को पापा जी ने अंग्रेजी में हौंसला दिया कि मैं ठीक-ठाक हूँ। डाक्टरों की सलाह से मेरा पलस्तर खोला, जो ज़ख्म एक माह में ठीक होना था, वह बीस दिनों में ठीक हो गया था। जितनी सेवा उन दोनों ने मेरी की, मेरा अपना परिवार तथा मेरे माता-पिता भी शायद नहीं कर पाते। वे दोनों मुझे हवाई-अड्डे तक छोड़कर गये। उन्होंने बताया कि उनका एक बेटा कैनेडा में है तथा एक बेटी यू.के. में। उनका दूसरा बेटा हैदराबाद एक दुर्घटना के दौरान चल बसा था।

आईजाक बता रहा था इस दुर्घटना के पश्चात् मुझे एक धार्मिक तुक याद आई कि, ''असल सेवा वह है जिसके बदले आपको कुछ वापसी की उम्मीद न हो। ऐसी सेवा करनी ही यीशू ने अपने शिष्यों को बताई थी।'' बचपन की बीमार धारणा से मैंने मुक्ति पाई। अब जो भी कोई सिक्ख आता है, मैं उसमें पापा जी के दर्शन

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करता हूँ। हर सिक्ख मुझे पापा जी या उसका भाई या उसका बेटा लगता है। हमारे पेग समाप्त होने लगे तो मैंने अन्तिम प्रश्न किया कि यदि कोई बुरी सोच वाला सिक्ख आ जाये तो आप क्या कहोगे। उसका जवाब था–मैं तो उसको पापा जी का रूप समझ कर ही उसकी सेवा करूंगा।

मेरी प्रार्थना पर उसने एक चपाती खाई और मुस्कुराता हुआ चला गया। उसकी आप बीती ने मेरे ऐसे रौंगटे खड़े कर दिये थे कि मुझे और व्हिस्की लेने की तलब ही न हुई।❑

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बंटवारा

नाम था उसका हुक्म चंद परन्तु स्वभाव उसका बिल्कुल विपरीत था। स्वभाव के अनुसार उसका नाम गुलाम चंद रखा जाना चाहिए था। घर में पहले अपनी पत्नी का गुलाम रहा, फिर बच्चों का व दफ्तर में अपने अधिकारियों एवं क्लर्कों का। वह 'भगत जी' के नाम से ही पहचाना जाता। हरियाणा-पंजाब के सेल्ज़ टैक्स विभाग में उसने पैंतीस वर्ष कार्य किया था, नौकरी थी चपरासी की। कई दुकानदारों, उद्योगपतियों को नोटिस देने जाता। शेष समय वह दफ्तर में फाईलें इधर से उधर देता रहता व पेशी पर आने वालों को आवाज़ भी लगाता। अधिकारियों, क्लर्कों व उनके मेहमानों, अतिथियों की चाय-पानी इत्यादि की सेवा भी वही करता। 'न' लफ़्ज़ तो उसने कभी बोला ही नहीं था व न ही कभी उसके होंठों पर आया था, बेशक घर हो या दफ्तर। 'जी मैडम जी,' जैसे नये शब्द ही उसने सीखे व बोले। यदि दफ्तर में उसे कोई कुछ दे भी जाता तब भी ठीक, यदि न देकर जाता तब भी ठीक, वह बुड़बुड़ न करता और न ही बुदबुदाता। हाँ, क्लर्क उसे घूर कर देखते व कहते, "भगत जी, तुम्हें अक्ल नहीं आई। ...क्यों छोड़ देते हो इन्हें।....इन्हें दस-बीस से कोई खास फर्क नहीं पड़ने वाला। बिन रोये तो माँ भी दूध नहीं देती।" फिर भी पुराने उनके समय में उसे करीब सौ-डेढ सौ रूपये प्रतिदिन ऊपर से बन जाते व रिटायरमैंट

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
से कुछ साल पहले तो दो–ढाई सौ रुपये तक हर रोज़ ऊपर की कमाई होती थी।

वेतन हो या बख्शीश, एक–एक पैसा वह अपनी पत्नी शीलवंती को लाकर देता जो कभी भी संतुष्ट व शांत नहीं रहती थी। उसे कहती, "आपकी नौकरी वाले, अपने परिवार को ऐश करवाते हैं, हजार–हजार रुपये हर रोज़ लेकर घर पहुँचते हैं। एक तुम हो जो दो–ढाई सौ से अधिक कभी लाते ही नहीं।" वह अकसर भगत जी को डांटती–फटकारती रहती। परन्तु वह शांत रहता व कहता, 'शील जी, जो हमारे भाग्य में होगा, वही हमें मिल जायेगा।' महाराज जी (राधा–स्वामी डेरे वाले) कहते हैं :

"समय से पहले, भाग्य से अधिक,
न किसी को मिला है, न मिलेगा।"

शीलवंती नाक–भौंह सिकोड़ती।

हुक्म चंद ने कभी जेब खर्ची भी नहीं रखी थी। जो उसकी पत्नी उसे दे देती वह जेब में रख लेता। शराब, माँस, अंडा, बीड़ी, सिगरेट से सदैव कोसों दूर रहा था। कभी–कभार भुने चने, सर्दी में मूँगफली, गर्मी में कुल्फी का स्वाद वह अवश्य चखता। लगभग बीस वर्ष पूर्व उसने राधा–स्वामी ब्यास डेरे से गुरुमंत्र ले लिया था। पत्नी मंदिर जाती, वह हनुमान जी की भगत थी, परन्तु उसमें तृष्णा कभी भी कम न होती। दो बेटे व दो बेटियां थीं। बस बेटों को प्यार उसने अत्यधिक दिया और उनकी किसी भी बात के लिए मना न किया। एक का नाम था सोहन लाल व दूसरे का मदन लाल।

दोनों लड़कियां लड़कों से बड़ी थीं। एक का नाम था कमला व दूसरी थी विमला। शील ने दोनों को मुश्किल से दसवीं कक्षा पास करवाई थी। वैसे वह दोनों आगे भी पढ़ने की इच्छा रखती थीं, परन्तु शीघ्र ही उनकी शादी कर दी गई। सुन्दर–सुशील, घर के हर कार्य में निपुण। यद्यपि शील ने उन्हें कोई अच्छा आहार नहीं दिया था, परन्तु फिर भी स्वास्थ्य अच्छा था। दूध, मक्खन, फ्रूट, मिठाई इत्यादि पहले बेटों को। बेटों से कुछ शेष बचता तो बेटियों को। वह कहा करती थी :

साग मथे दा भाग,
देवो पुत्तरां नूँ।
दाल कुने दी साड़,
देवो धीयां नूँ।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(भाव : साग किस्मत का वरदान बेटों को देना चाहिये और हांडी के तले से लगी जली हुई दाल बेटियों को।)

परन्तु बेटियाँ बची हुई दालें, सब्जियां व माँ की गालियां खाकर अच्छी निखरती गईं। वह दोनों अपने पिता पर गई थीं। पिता की तरह ही लम्बी, गोरी व नैन-नक्श भी आकर्षित करने वाले। मदन और सोहन अपनी माँ पर गये थे। माँ जैसा ही ठिगना कद व गेहुँआ, कुछ-कुछ सांवला रंग।

बेटियों को यदि प्यार मिलता था तो हुक्म चंद से। वह अपनी जेब-खर्ची में से कभी-कभार बेटियों को कुछ-न-कुछ लाकर दे देता परन्तु वह भी अपनी पत्नी शील से छिपाकर। खाने-पहनने व पढ़ाई के लिए भी। वह प्रातःकाल उठकर जपुजी साहिब का पाठ करता और कभी-कभार गुरूद्वारे भी जाता। हर सप्ताह राधा-स्वामी का सत्संग, वह कभी भी न छोड़ता। प्रातःकाल उठता तो ऊँचे सुर में गाता :

जिवें मावां नू पुत्तर प्यारे
भगत प्यारे रब नूं।

(जैसे माँ को बेटे प्यारे होते हैं तैसे भगत लोग भगवान् को प्रिय होते हैं।)

पत्नी अंतर मन से इस श्लोक से खुश होती परन्तु फिर कहती, "बच्चों को सोने भी दे दिया करो, थोड़ा धीमे बोला करो।"

बच्चों से उसका भाव बेटे ही होते। बेटियां तो प्रातःकाल पांच बजे ही उठ जातीं व घर के सभी कार्य झाड़ू-पोछा, रसोई में बर्तन साफ करने, घर की डस्टिंग इत्यादि कर दोनों बहनें फिर पढ़ने बैठतीं। शील साढ़े छः बजे व बेटे साढ़े सात बजे, जब स्कूल जाना होता, तब उठते। नहीं तो दोनों बेटे नौ बजे तक बिस्तर में ही जम्हाईयां लेते रहते। शील उन्हें बड़े प्यार-दुलार से उठाती, "सोनू बेटा, मद्दी बेटा उठो। स्कूल नहीं जाना क्या...चाय बनाऊं...या फिर दूध पीओगे?"

दोनों बेटियों के पश्चात् बेटे होने के कारण भी माँ ने मदन व सोहन को अत्यधिक प्यार दिया। सोहन ने बी.एस.सी. कृषि-हिसार से तीसरे दर्जे में उत्तीर्ण की थी व उसने करनाल में कीटनाशक दवाओं की दुकान खोल ली थी। मदन ने बहुत मुश्किल से बी.ए. पास की परन्तु उसने सोनीपत में हीरो, एटलस व ए-वन इत्यादि साईकिलों की ऐजंसी लेकर एक बहुत बड़ी दुकान खोल रखी थी। नौकरी के लिए उन्होंने कभी प्रयत्न ही नहीं किया था। वैसे दोनों पढ़ाई में सदैव तीसरा दर्जा ही लेते रहे थे। हुक्म चंद की अर्जित की हुई धन-राशि उन्हीं दोनों को रास आई थी।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शीलवंती ने भी हर ओर से कंजूसी कर-कर के बेटों के बिज़नैस के लिए रास्ता साफ किया हुआ था।

विमला व कमला की शादी बिल्कुल सीधे-सादे ढंग से की गई थी और व उसने दोनों बेटियों के ससुराल वालों से यही कहा था कि, ''बेटे तो अभी छोटे हैं। इनकी (हुक्म चंद) वेतन से मुश्किल से ही घर का निर्वाह होता है। हमसे अधिक आशाएं मत रखना।''

विमला की शादी सोनीपत के ही कपड़ों के थोक विक्रेता के घर हुई थी क्योंकि उनके बेटे को विमला पसंद आ गई थी। कमला की शादी दिल्ली कर दी गयी थी, वह विमला के पति के रिश्ते में मौसी का बेटा था। दिल्ली में करोल बाग में कमला के ससुराल वालों की रेडीमेड गारमैंटस की बहुत बड़ी दुकान थी। दोनों बेटियों की खुशकिस्मती थी कि उन्हें सुयोग्य वर व अच्छे खाते-पीते परिवार मिल गये थे। हुक्म चंद बहुत खुश था परन्तु शीलवंती को सदैव बेटों की ही चिंता रहती। दामाद घर आते तब भी वह उनके मान-आदर और अतिथि सम्मान में भी कंजूसी से खर्च करती। बेटियां भी अपने अन्दर ही अन्दर क्रोध उगलतीं कि न तो उन्हें अच्छा दहेज दिया गया और अब माँ ससुराल वालों का व उनके पति का आवश्यक आदर-मान भी अच्छे ढंग से नहीं करती। हुक्म चंद में इतनी हिम्मत न थी कि वह शीलवंती से कुछ कह पाता। वह प्रातःकाल उठता और जब दूध लेने के लिए जाता तब गलियों में लोक गीत गुनगुनाता :

डाची वालिया मोड़ मुहार वे
सानू वी लै चल नाल वे।
तैड़ी डाची दे गल विच टलियां
वे मैं तां पीर मनावण चली आं
मैं तां काहन मनावण चली आं।
तैड़ी डाची दे गल विच नालै
सानू अपणे कोल बुला ले।

हुक्म चंद कई लाईनें अपनी ओर से भी जोड़ लेता। उसकी आवाज में वैराग्य होता। वह कभी-कभार कबीर के व कभी फरीद के श्लोक भी ऊँचे स्वर में सुनाता। कबीर का एक श्लोक तो वह कई जगह सुनाता।

कबीरा तेरी झोंपड़ी,

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गल कटीयन के पास।
जो करेंगे, सो भरेंगे,
तूँ क्यों भयो उदास।

हुक्म चंद का ध्यान, सदैव ईश्वर में रहता। वह जब बेटियों के घर जाता तब अपनी हैसीयत से अधिक फल व कपड़े इत्यादि लेकर जाता। उसकी सबसे अच्छी बात जो उसकी बेटियों के ससुराल वालों को पसंद थी, वह थी उसकी नम्रता व सहनशीलता। वह हाथ जोड़ कर उनके समक्ष खड़ा हो जाता व कहता, ''आप बहुत ऊँचे हो। हमारी बेटी से यदि कोई गलती हो जाये तो अपनी बेटी समझकर माफ कर देना। हम आपका एहसान कभी नहीं उतार सकते।''

हुक्म चंद को विमला व कमला के ससुराल वाले भी 'भगत जी' ही कहते थे। विमला का ससुर भी ईश्वर में विश्वास रखने वाला इंसान था। वह हुक्म चंद को गले लगाकर कहता, ''भगत जी, आप दिल छोटा क्यों करते हो। जिन्होंने अपनी बेटी दे दी, समझो उन्होंने सभी कुछ दे दिया। हमारी पुत्र-वधु के आगमन से हमारी तो किस्मत ही खुल गई है। हमारा व्यापार दुगुना हो गया है। यह हमारी बहुत सेवा करती है। हमारे कोई अच्छे कर्म किए हुए हैं पिछले जन्म में, ईश्वर ऐसी बेटियां तो सभी को दे।''

यदि हुक्म चंद हाथ जोड़ कर गले में पल्लू डालकर विमला की सास से कहता, ''देखिए बहन जी, हम तो नाली की ईंट के समान हैं व आप ठहरे चौबारे वाले। हमारी बेटी को आपने अपने चौबारे की शोभा बनाया है, हमारे धन्य भाग! हमारी बेटी के भी धन्य भाग। यदि विमला से कोई भूल-चूक हो जाये तो उसे घूरना, मारना परन्तु दुत्कारना मत। बच्ची है....। इंसान गलतियों का पुतला है...। यदि उससे कभी कोई गल्ती हो जाये तो मैं आपसे क्षमा याचना चाहूँगा। मैं आपके चरणों पर सिर रखकर, क्षमा माँगूंगा।''

हुक्म चंद के शब्द सभी को पिघला देते। विमला की सास विमला को छाती से लगाकर कहती, ''भगत जी, यह अब आपकी बेटी कम व हमारी अधिक है। ...इसके आगमन से तो हमारे घर को चार चाँद लग गये हैं...घर में खुशियां आ गई हैं। दोनों देवर मेरी इतनी इज्जत नहीं करते जितनी इसकी करते हैं। ननद बिन पूछे पानी तक नहीं पीती। कृष्ण मुरारी, ऐसी बेटी सबको दे। विमला तो गुणों का भंडार है।''

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विमला व कमला दोनों के शादी के पश्चात् बेटे हुए। हुक्म चंद बहुत खुश था। दोनों के घरों में बेटों की छटी मनाई गई। उनकी माँ शील ने फिर कंजूसी दिखाई और वह बेटियों का जितना आदर-मान करा सकती थी, उसने उतना नहीं करवाया। वह हुक्म चंद के साथ भी इस विषय में कम ही सलाह-मश्वरा करती। यदि मश्वरा करती तो मात्र मदन व सोहन के साथ ही। मदन और सोहन को और क्या चाहिए था? उन्हें तो इस बात की खुशी थी कि उनकी माँ उनसे पूछे बिना पानी तक नहीं पीती। उसने दोनों बेटों को बताया कि उसने अपनी दोनों पुत्र-वधुओं के लिए इक्कीस-इक्कीस तोले सोने के गहनों का प्रबंध कर रख रखा है। वैसे दोनों बेटियों को उसने मात्र पाँच-पाँच तोले सोना ही डाला था। यह बात अलग है कि उन्हें ससुराल वालों की ओर से इक्यावन-इक्यावन तोले सोने के गहने डाले गये थे, डायमंड सैट अलग से। बेटियों को उनके ससुराल वालों से किसी को भी कोई शिकवा-शिकायत नहीं थी। परन्तु वे स्वयं को छोटा महसूस करतीं। एक बार कमला ने विमला के साथ सलाह-मश्वरा किया कि वह अपनी जेब खर्ची से मायके वालों के नाम पर खर्च कर दिया करें। विमला बोली, ''झूठ के पांव नहीं होते। यदि कल को पता चल गया व वास्तविकता सामने आ गई तो उल्टा बुरा प्रभाव पड़ेगा। अपना मन छोटा न करो व हम झूठ और दिखावे का सहारा बिल्कुल नहीं लेंगे।'' कमला, विमला की बात मान गई। परन्तु दोनों बहनें मन का गुब्बार एक-दूसरी से फोन पर ही निकालतीं व कहती कि माँ उन्हें सौतेली बेटियों की तरह क्यों रखती है। अभी तो बहुएं आई नहीं पहले ही उनका गुणगान करती थकती नहीं हैं।''

शीलवंती की परवरिश ही ऐसे परिवार में हुई थी जहां बेटे को ही मान-सम्मान मिलता व बेटियों को भार समझा जाता। शीलवंती स्वयं छः बहनें थीं व एक भाई।

जब बेटियों की शादी हो गई और उनके बच्चे हो गये तब शीलवंती ने पैसा निकाला व दोनों बेटों को बिज़नैस के लिए अच्छा-खासा धन दे दिया। जब एक वर्ष में ही, सोहन व मदन का व्यापर चल पड़ा तो फिर उसने दोनों की शादी के लिए लड़कियां ढूंढनी शुरू कर दीं। सोहन का रिश्ता करनाल ही हो गया था। शहर के कृषि अधिकारी ने अपनी बी.ए., बी.एड बेटी के रिश्ते की बात उससे की तो उसने तुरंत ही माता-पिता की आज्ञा के बिना ही हाँ कर दी। लड़की मान्यता प्राप्त प्राईवेट स्कूल में नौकरी करती थी। सोहन ने स्वयं 'हाँ' करने के पश्चात् ही माँ को बताया था। पिता तो [illegible] परन्तु माँ को [illegible] कुछ चुभ सी गई थी। फिर भी वह

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सोहन से कुछ कह न सकी क्योंकि अनेकों बार सोहन ने उसका निरादर किया था। शीलवंती ने सोचा चलो शादी के बाद अक्ल आ जायेगी। परन्तु शादी के पश्चात् तो सोहन की वाणी और भी गलत व कठोर होती गई।

बारात जरूर सोनीपत से आई थी परन्तु लड़की वाले हर एक बात सोहन से ही पूछते। न ही उसके पिता से सलाह करते व न ही उसकी माँ से। माँ फिर भी बेटे की शादी में बहुत खुशी से घूमती-फिरती। जब माता-पिता की ही कोई इज्जत न थी तो भला बहनों व बहनोई को किसने पूछना था। दोनों बहनें और बहनोई नाराज़ होकर वापस चले गये। परन्तु इसे हुक्म चंद ने ज़रूर महसूस किया। सोहन कोई छोटी-मोटी सलाह मदन से जरूर कर लेता। बहनों को वह कुछ न समझता, परन्तु दोनों बहनोईयों की दिखावे के लिए थोड़ी बहुत इज्जत करता। दोनों भाई बहनोईयों को इस तरह से एहसास करवाते कि जैसे उनकी शादी बहनों से करवा कर, उन पर उनके परिवार पर कोई बहुत बड़ा एहसान किया है। सोहन के ससुराल वालों ने भी सोहन की बहनों व बहनोईयों की कोई खास आवभगत न की। शीलवंती बेटे की शादी करके स्वयं को धन्य समझने लगी थी।

उसके ख्यालों में उसके पौत्र खेलते अथवा वह मदन की शादी के विषय में ही सोचती रहती। एक-दो बार वह बेटियों के ससुराल वालों से भी मिल आई थी। नवासे होने पर उसने खुशियां मनाई थीं। अपने निकट के रिश्तेदानों में उसने लड्डु ज़रुर बाँटे थे। परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे उसने मात्र खाना ही पूर्ति की हो। वह मन ही मन सोचती कि नवासे होने से तो उनका वंश आगे बढ़ेगा न कि मेरा....।

सोहन की शादी के पश्चात् शील को मदन की शादी की चिन्ता होने लगी। वह सोहन की पत्नी से कहती, "वीणा पुत्तर, तू कोई लड़की देख मद्दी के लिए।" वीणा मुस्कुराने लगती। वीणा का स्वप्न था कि उसका हमसफर कोई अच्छा अफसर अथवा अच्छा नौकरीशुदा लड़का होता। परन्तु उसके पिता ने अनेकों वर व घर देखे, लेकिन अंत में उन्हें सोहन ही भाया, वीणा को समझौता करना पड़ा। वीणा सोचती, 'मैं तो फंसी ही हूँ, किसी और को क्यों फंसाऊँ?'

अंत में मद्दी का रिश्ता एक दिन हीरो साईकिल के रीज़नल मैनेजर ढींगरा लेकर आये। मदन ने सोहन और अपनी भाभी को बुलाया। अधिकतर सलाह-मश्वरा उन्हीं से किया व थोड़ा बहुत माँ से भी। जब चारों लड़की पसंद कर आये तो शगुन के समय पर भगत जी को बुला लिया गया। लड़की ढींगरा की भतीजी ही थी व

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लड़की के पिता खन्ना मंडी में सब्ज़ी के आढ़ती थे।

शील पहले ही भगत जी का बहुत कम ध्यान रखती थी परन्तु दोनों बेटों की शादी के पश्चात् तो वह भगत जी की ओर से बिल्कुल ही लापरवाह हो गई थी। भगत जी रिटायरमैंट के पश्चात् भक्ति, पूजा-पाठ में ही अधिकतर समय व्यतीत करते। शील को यह न भाता। वह बेटों का गुस्सा भगत जी पर निकाल देती व बुड़बुड़ाती रहती। मदन मात्र एक बार फेरे के समय अपने भइया-भाभी, माता-पिता को अपनी ससुराल ले गया था, परन्तु उसके पश्चात् कभी न पूछा।

मदन व सोहन अपनी-अपनी पत्नियों के सामने ही अपनी माँ का निरादर कर देते और कहते, ''माँ तुझे सारी उम्र अक्ल नहीं आनी।''

शील मुस्कुराने लग जाती। जब मदन की पत्नी उर्मिला व सोहन की पत्नी वीणा को गर्भ ठहरा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह कभी करनाल होती तो कभी सोनीपत। दोनों बहुएं चाहतीं कि सास-नौकरानी, 'उसकी सेवा ही करे।' उर्मिला को बच्चा पहले होना था व वीणा को बाद में। शील उर्मिला का अधिक ख्याल रखने लगी। बेचारे भगत जी की अपनी कोई मर्जी थी नहीं। जहां का हुक्म होता वह अपनी संदूकची उठाकर वहीं चले जाते। कभी करनाल तो कभी सोनीपत। जहां रिश्तेदारी में सोहन व मदन न जाना चाहते, वहां हुक्म चंद को जाने का हुक्म दे देते। अब हुक्म चंद व शील कभी भी किसी भी उत्सव पर इकट्ठे नहीं जा सकते थे। क्योंकि दोनों बेटों व बहुओं का ही हुक्म घर में चलता था। दोनों पति-पत्नी अब तो नौकर-नौकरानी मात्र ही बनकर रह गये थे। पहले मदन के घर कन्या ने जन्म लिया। फिर दो माह पश्चात् सोहन के घर भी कन्या ने जन्म लिया। शील उदास हो गई। वह तो सोचती थी कि दोनों में से एक के घर तो बेटा अवश्य होगा।

अब शील कुछ-कुछ महसूस कर रही थी कि उसने दोनों बेटों को अत्यधिक सिर पे चढ़ा लिया है। भगत जी की उम्र भर की कमाई उसने सोहन व मदन की शादी और बिज़नैस पर लगा दी थी। करीब सत्रह लाख रुपये खर्च किए थे। जिनमें से तीन लाख उसने दोनों बेटियों की शादी पर और शेष दोनों बेटों की शादी और बिजनैस पर लगा दिये थे। मात्र एक लाख रुपये शेष बचे थे। जो उसने सभी से छिपाकर रखे हुए थे। पचास हजार तो उसने ब्याज पर दे रखा था और बाकी का पचास हज़ार अपने कपड़ों में छुपा कर रख छोड़ा था। भगत जी की पैंशन अठारह सौ रुपये महीना थी।

एक दिन दोनों भाई इनके [illegible] हुए। दोनों ने आपस में कुछ राए बनाई। सोनीपत
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाला घर हुक्म चंद के नाम पर था। मदन ने सात लाख रुपये सोहन को घर के हिस्से में से दे दिए। क्योंकि सोहन करनाल में कोठी बनाना चाहता था। दोनों बेटों ने मिलकर जोर-जबरदस्ती से हुक्म चंद से घर मदन के नाम पर लिखवा लिया। दोनों भाइयों ने घर का मूल्य चौदह लाख रुपये डाला था। शील बेटों के समक्ष भीगी बिल्ली बनकर खड़ी रही। एक बार उसने कहा, ''हमारे जीते जी तुमने हमें मार डाला है।''

मदन चीखा, ''तुमने कल भी देना है और आज भी, तुम्हें क्या फर्क पड़ता है।''

हुक्म चंद ने 'सत्य वचन' कह कर हस्ताक्षर कर दिए। हुक्म चंद को प्रोवीडैंट फंड के चार लाख रुपये मिले। दोनों बेटों ने वो भी आधे-आधे बाँट लिए।

एक बार पैंशन में बढ़ोत्तरी हुई। पैंशन अठ्ठारह सौ से दो तीन सौ रुपये महीना और बढ़ गई। पिछले पाँच वर्षों का इकट्ठा पैसा मिला, चौदह हजार रुपये दोनों ने सात-सात हजार रुपये डकार लिए।

हुक्म चंद व शील दोनों एकदम से खाली हो गये। हुक्म चंद के पास साठ हजार रुपये एक सेविंग की कॉपी में थे, इसके विषय में किसी को कुछ भी न पता न था। उसने शील को बिना बताये वह पैसे निकाल लिये। दस हजार धार्मिक स्थल पर व पच्चीस-पच्चीस हजार बेटियों को देते हुए कहा, ''बेटा, तुम्हें मेरी सौगन्ध है, इस विषय में किसी को भी न बताना। ना भाई भाभी को न ही अपनी माँ को।''

हुक्म चंद ने घर व प्रोवीडैंट फंड की कहानी दोनों बेटियों को सुनाई। बेटियों की आँखें नम हो गईं। कमला बोली, ''पिता जी, इसमें सारी गलती हमारी माँ की है। पहले तो बेटों को सिर पे चढ़ा लिया, अब भुगते। हमारे लिए तो आपका प्यार व आर्शीवाद ही सबसे बड़ी दौलत है।

''....यह पैसे भी आप अपने पास ही रखो। मुश्किल समय में आपके काम आएंगे।''

विमला का ससुर बोला, ''भगत जी, आपके बेटों ने आपकी जायदाद व पैसे में हिस्सा बंटवाया है। पगलों ने आपके प्यार व आर्शीवाद में से हिस्सा नहीं लिया। यह तो बस आपकी बेटियों को नसीब हुआ है। ये दोनों खुशकिस्मत हैं। जो पैसे जायदाद के पीछे पड़ते हैं, उन्हें माता-पिता का प्यार और आर्शीवाद नहीं मिलता। इन्हें आपका प्यार व आर्शीवाद मिल गया, इनको सभी कुछ मिल गया। यदि कभी

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई मुश्किल पड़े तो अवश्य बताना।''

भगत जी घर पहुँचे। उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे बेटियों को पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये देकर वह अपने सिर से बहुत बड़ा बोझ उतार आये हैं।

एक बार जब मदन व उसकी पत्नी खन्ना गये हुए थे तो शील फूट-फूटकर रोने लगी, ''भगत जी, मुझसे बहुत गल्तियां हो गई हैं। मुझे क्षमा कर देना। इन दोनों ने तो हमें कहीं का नहीं छोड़ा। मदन एक दिन फोन पर सोहन से कह रहा था, अब यह दोनों हम पर मोहताज हैं।''

शील बहुत रोई। भगत जी ने उसे चुप करवाते हुए कहा, ''अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत।....चलो.....नेकी कर दरिया में डाल। हमारे पास दो हजार रुपये महीना की पैंशन हैं, हमारे लिए काफी है।''

''परन्तु यदि इन्होंने घर से निकाल दिया तो हम सिर कहां छुपाएंगे?''

''ईश्वर जो करेगा, अच्छा ही करेगा और इन्हें सुबुद्धि देगा।''

शील के दिमाग पर अधिक बोझ था कि उसने बेटियों के साथ इंसाफ नहीं किया, परन्तु फिर भी दोनों बेटियां और दामाद उसे बेटों व बहुओं से अधिक आदर-मान देते थे। मदन और उसकी पत्नी, मदन के साले की शादी पर गये तो उन्होंने एक बार भी माता-पिता को साथ चलने के लिए नहीं कहा। मदन बोला, ''भरा-पूरा घर अकेला छोड़ना ठीक न होगा, सो आप पीछे से यहीं रहो। घर का ध्यान रखना।'' मदन व बहू ने छः-सात दिनों के बाद वापस आना था।

अगले ही दिन सोहन का फोन आ गया, ''वीणा की तबीयत ठीक नहीं है। नौकरानी भी जवाब दे गई है। मां, तुम शीघ्र ही यहां आ जाओ।''

जब शील ने कहा कि घर अकेला है और मदन व उर्मिला खन्ना शादी पर गये हुए हैं व वह उनके आने के पश्चात् आ जाएगी, तो इस बात पर सोहन फोन पर ही बरस पड़ा।

''ठीक है अब आप छोटे का ही ख्याल रखें। .....आप पर हमारा कोई अधिकार नहीं है और न ही आपको हमसे प्यार है।''

अन्त में माँ ने कहा, ''भगत जी की तबीयत आज ठीक नहीं है। कल-परसों तक उनके ठीक होने के पश्चात् मैं आ जाऊँगी।''

दरअसल शील ने झूठ कहा था। उसने कमला व विमला को फोन करके बुलवाया हुआ था और उन्होंने अगले दिन आना था।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगली सुबह दोनों बेटियां आ गईं, नवासे व दामाद भी साथ में ही थे। दोनों नवासों को चूम-चूमकर शील तो पगली सी हुई जा रही थी। शील ने दोनों नवासों के गले में एक-एक तोले की सोने की चैन डाली। दोनों दामादों को जबरदस्ती से दस-दस हजार रुपये दिये व बेटियों को दो-दो कंगन। दरअसल उसने जो पचास हजार रुपये बेटों से छिपाकर रखे हुए थे वह उसने बाँट दिये और पश्चात्ताप करने का प्रयत्न कर रही थी। कहने लगी, ''वैसे तो यह भगत जी की ही कमाई है लेकिन तुम अपने भाइयों-भाभियों से कुछ भी न बताना।'' ऐसा करके उसे अपनी आत्मा का बोझ हल्का प्रतीत हुआ।

भगत जी ने भी बेटियों को इशारे से समझा दिया कि पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये के विषय में बताने की भी कोई आवश्यकता नहीं है।

दोपहर को बेटियों ने स्वयं ही खाना तैयार किया व सभी इकट्ठे बैठ कर खाने ही लगे थे कि बाहर सोहन की मोटर साईकिल रूकने की आवाज़ आई। वह दोनों बहनों व बहनोईयों को देखकर स्तब्ध रह गया व अन्दर ही अन्दर कुछ परेशान सा भी हुआ। फिर भी अपने मन की बात छिपाते हुए सभी से हँसकर बोला व पूछने लगा, ''क्या हुआ पिता जी को?''

''बस कल कुछ बुखार हुआ था, अब ठीक हैं। प्रातःकाल बुखार उतर गया,'' शील बोली।

सोहन ने दिल में सोचा, ''हाँ, बेटियों और दामाद को इकट्ठे करने का बहाना, हमारी बुराईयां करने के लिए।''

सभी ने इकट्ठे बैठकर खाना खाया। सोहन ने महसूस किया कि ऐसा खाना उसकी माँ व बहनें ही बना सकती हैं, वीणा नहीं बना सकती। वह सोचने लगा, 'क्यों न माँ को अपने ही पास रखा जाए। साथ में खाने-पीने की मौज-मस्ती, पोत्री को भी खिलाएगी और खाली समय में साफ-सफाई भी करेगी। नौकरानी को पाँच सौ रुपये महीना भी नहीं देने पड़ेंगे।'

सोहन ने भानजों अथवा बहनों को कुछ भी न दिया और माँ को ताकीद करके चलता बना, ''माँ तुम कल अवश्य पहुंच जाना।''

अगले दिन दोनों बेटियां अपने-अपने घर चली गईं व माँ को करनाल जाना पड़ा।

[illegible] से वापिस आया तो आग-बबूला हो गया और बोला,

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तुम्हें अकेले छोड़कर करनाल कैसे चली गई?" दरअसल उसे पिता की कोई फिक्र न थी, चिंता तो सिर्फ इसी बात की थी कि अब घर में खाना कौन बनाएगा। उर्मिला तो घर का कार्य करके खुश ही नहीं थी। यदि वह घर के काम-काज करेगी तो टी.वी. सीरीयल कौन देखेगा?

फिर एक दिन मदन ने सोहन को फोन करके सोनीपत अपने घर बुलवाया। दोनों बैठ कर बहस करते रहे और उन्होंने विचार विर्मश किया। अन्त में उन्होंने यह फैसला अपने माता-पिता को सुनाया।

"छः महीने एक के पास पिता जी रहेंगे व दूसरे के पास माँ। अगले छः माह उनका तबादला। अर्थात् पहले वाले के पास माँ व दूसरे के पास पिता जी। हम दोनों को भी आपकी सेवा करने का अवसर प्राप्त हो।" उसने एहसान सा जताते हुए कहा, "पिता जी की आधी पैंशन माँ लेगी और आधी पिता जी अपने पास रखेंगे।"

इससे स्पष्ट था कि माता-पिता से हर महीने एक हज़ार रुपये का हिसाब-किताब दोनों बेटे ले सकेंगे।

शील व हुक्म चंद ने महसूस किया कि फैसला सेवा करने नहीं अपितु सेवा करवाने का था। एक से नौकरानी का काम लिया जाना था व दूसरे से चौकीदार व मुंडू का।

हुक्म चंद तो हुक्म का गुलाम था। वह क्या बोलता। शील ने स्वयं ही अपने पंख अपने बेटों से कटवा लिये थे। उसमें भी साहस न था कि वह बेटों की बात टाल सके।

दोनों बेटों ने माता-पिता का भी बंटवारा कर लिया था। और तो और हुक्म चंद की पैंशन का भी बंटवारा हो चुका था।

हुक्म चंद तो भगत था। उसने आसमान की ओर देखा और बोला, "तेरा भाणा मीठा लागै।" परन्तु शील ऐसा महसूस कर रही थी कि, 'दोनों बेटों ने मौत से पहले हम दोनों को अलग-अलग करके अच्छा नहीं किया।'

बिछुड़ते समय दोनों एक-दूसरे को नम-पलकों से देख रहे थे और दोनों सोच रहे थे, 'पता नहीं अब मिलन होगा कि नहीं?' ❑

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपना–अपना ईमान

सूबेदार दलीप सिंह यादव यू.पी. के गोरखपुर ज़िले का रहने वाला था। आयु होगी–लगभग पचपन वर्ष। मुंबई शहर के होटल शिप यार्ड में लगभग सोलह वर्षों से सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर रहा था और होटल भी लगभग इतना ही पुराना था। यदि हम उसे उस होटल की दाई कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उसे होटल के सभी चौंतीस के चौंतीस कमरों की जानकारी थी–कौन सा बड़ा है, कौन बेहतर? किस कमरे में ए.सी. है व किस कमरे में नहीं है? किस का बाथरूम बढ़िया व सुंदर है। जितनी जानकारी उसे थी, उतनी तो शायद होटल के मैनेजर, रिसैप्शन–स्टाफ व मालिकों को भी नहीं होगी। सभी उसे सूबेदार ही कहते। उसे दलीप सिंह यादव के नाम से बहुत कम लोग जानते थे। उसने उन्नीस वर्ष फौज में नौकरी की थी। वह चुस्त, चालाक व चालू भी था। वेतन तो उसका मुश्किल से तीन हज़ार प्रति माह था परन्तु ऊपर की आमदन वह हर महीने पन्द्रह–सोलह हजार बना लेता था। होटल के सभी नियमित ग्राहक उसे जानते थे और जाते समय उसे दस–बीस रुपये बख्शीश देते क्योंकि ग्राहक के पहुंचने पर वह उनका सामान टैक्सी में से निकालता अथवा निकलवाता और जाते समय सामान टैक्सी में रखवाता। गहरे रंग की ड्रैस, सिर पर हैट, एक हाथ में बेन्त व सीटी उसके कंधे पर लटकती

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहती। सीटी वह तब बजाती जब उसने किसी ग्राहक के लिए टैक्सी मंगवानी होती अथवा किसी टैक्सी को होटल के सामने से दूर करना होता। लगभग सभी टैक्सी वाले उससे बना कर रखते। इसका कारण ग्राहक वही टैक्सी लेना पसंद करता जो वह बताता। टैक्सी वाले से बीस रुपये से पचास रुपये प्रति ग्राहक के हिसाब से वह वसूलता। वह प्रात:काल नौ बजे से रात्रि दस बजे तक ड्यूटी करता। रात्रि की ड्यूटी पर उसने जो भी गार्ड लगवाया, वह उसकी जी हज़ूरी करता। सूबेदार ने उसे भी सारे गुर सिखा दिए।

ड्यूटी के समय चुस्ती व पूरी मेहनत से काम करता। छुट्टी कम से कम लेता, वर्ष में मात्र बीस दिन। वह भी होली के समय। प्रति माह पत्नी को दस हजार रुपये का ड्राफ्ट भेजता और वह पाँच हजार के साथ बढ़िया घर चलाती और पाँच हजार की बचत करती रहती। एक बेटे को उसने मुंबई में ही अपनी जैसी नौकरी पर अन्य होटल में लगवा दिया था। दूसरा बेटा गांव में खेती करता था। जमीन कम थी—मात्र आठ बीघे। वैसे पुश्तैनी जमीन उसे मात्र तीन बीघे ही मिली थी। एक बेटी व बेटे की शादी वह कर चुका था, अविवाहित था तो बस मुंबई वाला बेटा।

सूबेदार के उसूल थे। सप्ताह में छ: दिन वह शराब को छूता भी नहीं था। ड्यूटी के दौरान वह सिगरेट, शराब न पीता। बस भोजन के पश्चात् एक पान। सप्ताह में एक दिन, जिस दिन वह छुट्टी करता उस दिन अंग्रेजी शराब का पऊआ, दो-तीन सिगरेट अपने हम उम्र दोस्तों के साथ बैठकर पीता। उसी दिन चिकन-मछली, शेष दिन शुद्ध शाकाहारी। कबूतरों को प्रतिदिन आधा किलो ज्वार के दाने होटल की छत्त पर डालता। मंगलवार को हनुमान जी के मंदिर जाता और इक्यावन रुपये के लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाता। बृहस्पतिवार को वह पचास किलो हरा चारा खरीद कर गायों को अपने हाथ से खिलाता। प्रात:काल स्नान करके आता व ड्यूटी खत्म होने पर गुनगुने पानी से स्नान करके खाना खाकर सो जाता। प्रात:काल उठकर चार गिलास पानी, रात्रि के भोजन के पश्चात् गर्म दूध पीकर लेट जाता। पूर्ण शक्ति कठोरता सहित ड्यूटी, आराम से भोजन करना एवं सोते समय सभी चिंताओं से मुक्त हो, सात घंटे की लगातार गहरी नींद सोता। वह बताता कि रात्रि को वह एक बार भी नहीं उठता और नींद में उसे स्वप्न भी कम ही आते हैं।

सूबेदार को मुंबई के करीब सभी इलाकों का ज्ञान था। गोरेगांव वहां से कितनी दूर है, बांद्रा कितनी दूर। गेट वे ऑफ इंडिया कितने किलोमीटर व हैंगिंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गार्डन कितनी दूर। बच्चों के लिए एस्सेल वर्ल्ड जाने के लिए टैक्सी के द्वारा कितना समय लगता है व जुहू बीच में कितना, एयर-पोर्ट डोमेस्टिक कितने किलोमीटर है व इंटरनेशनल कितने? उसे मुंबई के लगभग सभी देखने योग्य स्थलों का ज्ञान था। एस्पलेनेड एलिफेन्ट केव्ज के विषय में वह भरपूर जानकारी देता। वेश्याओं के इलाकों का भी उसे ज्ञान था। परन्तु इसके विषय में जब भी कोई बात करता तो ऐसा लगता, जैसे उसका जी मितलाने लगा हो। उसे चेहरा देखकर उसी समय पहचान हो जाती जब कोई ग्राहक अपने साथ कॉल-गर्ल लेकर आता। परन्तु वह बताता कि वह क्या करे, उसे अपनी आँखें मूंदनी पड़ती हैं। जब मालिक को ही कोई एतराज नहीं, तब वह भी क्या कर सकता था। वह बताता कि उसने यह अनैतिक काम मुंबई आकर तो क्या जिंदगी में कभी नहीं किया। एक बार मेरे समक्ष उसने अपनी जिंदगी का भेद ज़रूर खोला था कि उसका उसकी साली के साथ एक वर्ष तक चक्कर जरूर चलता रहा जब तक कि उसकी शादी नहीं हो गई। साली की शादी के पश्चात् उसने कभी भी उसे बुरी नज़र से नहीं देखा, वैसे उसकी साली को कोई एतराज नहीं था। वह बताता, "सिंह साहब, गांठ में पैसा हो, मन व शरीर में पूरा ज़ोर, फिर तो औरत जात गुड़ पे मक्खी के माफिक आती है।" सूबेदार कॉल-गर्ल अथवा वेश्या को साथ लाने वालों से बख्शीश लेने से भी कतराता। यदि कोई जबरदस्ती से दे भी जाता तो वह उनकी ओर से दी गई बख्शीश को अलग जेब में रखता व किसी अपाहिज अथवा भिखमंगे को दे देता। घर के कार्यों में वह बख्शीश कभी खर्च न करता। सोमवार को अकसर वह छुट्टी करता।

मैं जब भी मुंबई में होता तो अकसर प्रातःकाल ही निकल जाता व सांयकाल अथवा रात्रि को ही होटल में वापिस आता। मेरे लिए टैक्सी का प्रबंध अकसर सूबेदार ही करता। साधारणतः मेरे साथ रामधन ठाकुर टैक्सी वाला ही होता।...व रामधन की अनुपस्थिति में कभी कभार धनी राम। धनी राम भी यू.पी. का ठाकुर था। न तो मैं धनी राम को साथ ले जाकर खुश होता व न ही धनी राम मेरे साथ चलकर।

एक सोमवार मुंबई में छुट्टी हो गई। कारण था महाराष्ट्र के लोकप्रिय भूतपूर्व मुख्यमंत्री का स्वर्गवास रविवार रात्रि को हो गया था। पूरा मुंबई शहर व पूरा महाराष्ट्र बंद था। जब अंतिम संस्कार हो चुका था तब कहीं जाकर होटल, चाय, बेकरी व सब्जी इत्यादि की दुकानें खुलीं। इस बार मुझे रामधन टैक्सी वाला नहीं मिला था धनी राम को ही मेरे संग चलना था। मुंबई में रामधन ही मेरा मनपसंद टैक्सी वाला
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था। धनी राम सोमवार प्रातःकाल होटल आया व रिसेप्शन से मुझे फोन किया और उस दिन के मेरे प्रोग्राम के विषय में पूछा। मैंने मना कर दिया चूंकि सारा शहर तो उस दिन बंद था।

दोपहर तक मैं होटल के अपने कमरे में ही समाचार-पत्र पढ़ता रहा। जब थक गया, तब लेट गया। जब लेटे-लेटे भी ऊब गया तो पायजामा-कमीज़ पहनकर, सिर पे दस्तार (छोटी पगड़ी) बांधकर होटल से बाहर निकला। दिन के दो बजे हुए थे। मैंने सोचा कुछ चहल-कदमी हो जाएगी व साथ में लंच भी ले आऊँगा। कुछ दूर पहुँचने पर देखा तो वहां एक साधारण सा होटल खुला हुआ था-यादव ढाबा। जब अंदर पहुँचा तो देखा वहां सूबेदार बैठा था। उसने खड़े होकर मेरा स्वागत किया व होटल के मालिक से कहा, ''साहब को ऊपर बिठा दो, जहां कूलर लगा है। साहब के लिए खाना बढ़िया होना चाहिए, मिस्त्री से बोल दो।'' वहां कुक को मिस्त्री कहते हैं।

मैंने सूबेदार से कहा कि वह भी मेरे साथ चले। खाना हम इकट्ठे खाएंगे। वह एक बार तो शर्माया व फिर मेरे आग्रह करने पर ऊपर चल पड़ा। आज वह ड्यूटी वाली ड्रैस में न था। बल्कि हल्के नीले रंग की जीन व सफेद रंग की टी-शर्ट पहने था। वह इस ड्रैस में बहुत आकर्षक लग रहा था। शेव की हुई व सिर और मूछों के बालों को ब्रिलक्रीम लगाई हुई थी। आज वह पचपन नहीं अपितु पैंतीस वर्ष का नवयुवक लग रहा था।

कुछ समय मैं उससे गुज़र चुके नेता की बातें करता रहा, फिर मुंबई के विषय में। फिर उसके परिवार के विषय में। एकाएक उसे रामधन की याद आई जो मेरे इस टूर के दौरान उसे मेरे साथ दिखाई न पड़ा।

रामधन का जिक्र आया तो वह कुछ गंभीर हो गया व एक हल्की सी चीस उसके मुँह से निकली। सूबेदार ने बताया कि अब रामधन दोबारा मुझे नहीं मिल पाएगा क्योंकि वह सदा के लिए मुंबई छोड़ गया है। मैंने उससे कारण पूछा तो उसने सारी कथा सुना डाली।

सूबेदार बता रहा था कि रामधन गोरखपुर जिले के ज़मीरपुर गांव का ठाकुर था। सूबेदार ही उसे मुंबई लेकर आया था यद्यपि वह गरीब था परन्तु फिर भी उसके अपने असूल थे व उसने अपनी जिंदगी के असूलों का कभी भी त्याग नहीं किया। पहले पहल तो रामधन मुंबई में एक दुकान पर नौकरी करने लगा जहां दुकान की
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सफाई व ग्राहक को सामान उठाकर दिखाना उसकी ड्यूटी थी। वहां पर उसे लगभग दो हजार रुपये प्रति माह मिलते जो किराये व खाने इत्यादि पर खर्च हो जाते थे। हेरा-फेरी की उसे आदत न थी। यदि गुजराती सेठ उसे चाय का कप दे देता तो पी लेता अन्यथा पानी पीकर ही गुजारा कर लेता। अकसर सेठ उसे दोपहर का खाना खिला देता क्योंकि सेठ के घर से आया खाना ज़रूरत से अधिक होता। फिर धीरे-धीरे उसने टैक्सी चलानी सीखनी शुरू की। जब ड्राइविंग में महारत हासिल कर ली तब सूबेदार ने उसे किराए पर टैक्सी लेकर दी। ढाई सौ रुपये प्रतिदिन। गैस उसे स्वयं ही डलवाना पड़ता। प्रातःकाल आठ बजे से लेकर रात्रि आठ बजे तक। जब उसका भाड़ा पाँच-छः सौ रुपये तक इकट्ठा हो जाता तब उसे दो-अढाई सौ रुपये बच जाते। पर कई बार तो टैक्सी का किराया भी बहुत मुश्किल से इकट्ठा हो पाता। सूबेदार बता रहा था कि वह कभी भी दो नंबर का काम न करता। जब भी उसे पता चल जाता कि उसकी गाड़ी में बैठने वाला ग्राहक दो नंबर का काम करता है तो उसके साथ कभी न चलता, बेशक वह मीटर से भी ज्यादा पैसे देने के लिए भी तैयार क्यों न होता। वह तवायफ या कॉल-गर्ल को अपनी टैक्सी में कभी न बिठाता। जाने-अनजाने कोई बैठ गई हो तो बात अलग। टैक्सी प्रातःकाल से लेकर रात के आठ बजे तक। सबसे पहले वह टैक्सी (धोता) धुलवाता, उसके पश्चात् धूप-बत्ती करता। हनुमान व शिरड़ी बाबा की फोटो वह अपनी टैक्सी में बहुत श्रद्धा से सजाकर रखता। मीटर से अधिक किसी से भी किराया न लेता। यदि किसी के पच्चीस पैसे भी शेष बचते तब भी वापिस करता। छोटे से छोटे रास्तों के द्वारा ग्राहक को उसकी बताई गई जगह पर ले जाता। प्रत्येक ग्राहक की इज्जत करता। हाँ, यदि कोई ग्राहक खुशी से उसे बख्शीश देता तो उसे नम्रता पूर्वक स्वीकारता।

रामधन मेरे साथ चलता था तो अपने घर की परिवार की एक-एक बात मेरे साथ सांझी कर लेता था। मैं उसे खाने के लिए पैसे अलग से देता था। वह मेरे साथ जाकर अत्यंत प्रसन्न होता। वह मुझसे कहता, 'पापा जी, सीधी सी बात है। आपके सात सौ में से तीन सौ खर्च हो जाते हैं। चार सौ शेष बच जाते हैं। और मुझे क्या चाहिए-बॉस।' मुझे माह में पन्द्रह दिन आपके जैसी सवारी मिल जावे तो सारे कुनबे का ही कल्याण हो जावे। मैं आप की ही बाट जोहता रहता हूँ।" रामधन मुझे इसलिए अच्छा लगता क्योंकि वह मेरा अधिक से अधिक समय बचाता। मेरे सभी कार्यालयों का उसे ज्ञान था। यदि मुझे किसी के घर कोई भी सामान भेजना होता तो
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह बताई गई जगह पर पहुँचा देता। एक बार मैंने उससे पूछा, ''रामधन तुम मुझ पर ऐसे ही विश्वास कैसे कर लेते हो? यदि इस सामान के अन्दर हशीश, अफीम अथवा टाईम बम्ब हो, तो?'' तो रामधन मुस्कुराता हुआ बोला, ''पापा जी, इंसान का चेहरा ही उसका आईना होता है। उसमें से सब कुछ दिखाई पड़ता है। आप तो देवता समान हो। बाबा गरु नानक की आप पर अपार कृपा है। आप ऐसा घटिया काम क्यों करने लगे?'' रामधन बताता, उसके घर में सब सुखी हैं। एक बुजुर्ग माँ और बुजुर्ग पिता। सुशील पत्नी व दो बच्चे। दो गायें, दो बीघा जमीन, उसमें सब्जियां बीजकर बेचते हैं। कुछ दूध बिक जाता है। अच्छे से निर्वाह हो रहा है। कभी-कभार मैं उसके बच्चों के लिए उसे पैन व डायरी दे देता या हवाई जहाज़ में मिली टाफियों का पैकेट तो वह संभालकर रख लेता और गांव जाकर उन्हें देता और कहता, ''पंजाब वाले पापा जी का प्रसाद।'' मुझे इतना अवश्य पता है कि मैं यदि उसके गांव जाऊं तो उसके बुजुर्ग माता-पिता, उसकी पत्नी व बच्चे मुझे पहचान लेंगे क्योंकि उसने मेरे बारे में अपने घर के प्रत्येक प्राणी को काफी कुछ बता रखा था।

सूबेदार ने मुझे यह बताकर उदास कर दिया था कि रामधन अब मुंबई वापिस नहीं आएगा। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि रामधन के सदा के लिए गांव वापिस जाने के कारण सूबेदार भी कुछ उदास था। सूबेदार बताने लगा कि उसे पता था कि रात्रि में उसकी टैक्सी धनी राम चलाता है। धनी राम भी उसके गांव ज़मीरपुर का ही ठाकुर था। उसे कोई आपत्ति नहीं थी। परन्तु एक बार धनी राम के पक्के ग्राहक ने टैक्सी नंबर पहचान कर, रामधन को दिन में कहीं चलने के लिए कहा। पीछे डिग्गी में सामान रखवा दिया। बताई गई जगह पर पहुंचने के पश्चात् उसने रामधन को मीटर के किराए के अतिरिक्त दो सौ रुपये अधिक दिए। रामधन ने पूछा, ''ये क्या, बाबू जी?'' ग्राहक ने उसे बताया कि, ''पच्चीस लाख का कीमती सामान था।'' ...रामधन ने उसे दो सौ रुपये वापिस कर दिये व सूबेदार को बताया कि धनी राम रात्रि में गलत धंधा करता है, स्मगलरों के साथ उसका वास्ता है। इसलिए वह अब से यह टैक्सी नहीं चलाएगा। यह टैक्सी रात्रि में बदनाम है। सूबेदार ने उसे समझाने की बहुत चेष्टा की। परन्तु उसका फैसला अटल था।

सूबेदार बताता कि उसे पहले से पता था कि धनी राम रात्रि में प्रतिदिन आठ नौ सौ का धंधा करता है। वह प्रतिदिन कालेज की एक लड़की को उसके घरवालों की ही सहमति से होस्टल छोड़कर आती जहाँ वह काल-गर्ल का धन्धा करती।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाँच-छः बजे सवेरे उसे घर छोड़ता था। वहां से उसे प्रतिदिन तीन सौ रुपये मिलते। यद्यपि किराया मात्र डेढ़ सौ रुपये बनता था। धनी राम को तो पैसा चाहिए था बेशक हशीश हो, ब्राऊन शुगर हो, अफीम या फिर गांजा। एक बार चोर पे मोर पड़ गये। बदमाशों ने एक बार उसकी गाड़ी घेर ली व उसमें बैठ गये। छुरा दिखाकर उससे ढ़ाई हजार रुपये छीन लिये। उस दिन के पश्चात् धनी राम जेब में अधिक पैसे न रखता। धनी राम से सुनी एक घटना सूबेदार ने मुझे सुनाई। एक बार एक बड़ी कंपनी का मैनेजर अपने ही स्टाफ की एक लड़की के साथ टैक्सी में ही शराब पीकर गल्त काम करता रहा और धनी राम टैक्सी एक ओर लगाकर बाहर खड़ा हो गया। जब भी कोई टैक्सी अथवा पुलिस की गाड़ी पास से गुजरती तो वह गाड़ी के शीशे पर कपड़ा फेरने लग जाता। मैनेजर ने जब अपना काम खत्म किया तो शराब में धुत्त लड़की को उसके घर छोड़ने के लिए कहा व स्वयं उतर कर दूसरी टैक्सी ले ली। उसने किराए के अतिरिक्त पांच सौ रुपये दिए। शराब के नशे में ही लड़की ने धनी राम को बताया कि सर ने उसे तरक्की का आश्वासन दिया था। लड़की ने बताया कि अब उसका वेतन चार हज़ार से पांच हजार रुपये प्रति माह हो जायेगा।

सूबेदार ने रामधन को दूसरी टैक्सी दिला दी। रामधन थोड़े में ही संतुष्ट रहता व मेहनत व सच्चाई की कमाई करने का ही प्रयत्न करता। सूबेदार ने बताया कि एक रात रामधन टैक्सी सेठ को वापिस देकर, उदास मन से वापस मुड़ा। उसकी बायीं बाजू पर पट्टी बंधी हुई थी। रामधन ने बताया कि शाम के करीब आठ बजे दो नौजवान व एक लड़की टैक्सी में बैठ गए और मुंबई से वाशी चलने को कहा। एक नौजवान उसके साथ वाली सीट पर बैठ गया व दूसरा नौजवान लड़की के साथ पिछली सीट पर। टैक्सी में ही लड़के-लड़की ने कुकर्म करना शुरू कर दिया। लड़की भी उनके साथ मिली हुई थी। रामधन की नज़र आईने पर गई और यह देखकर उसने टैक्सी एक ओर रोकी। अंधेरा व सुनसान रास्ता था। रामधन ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। साथ में बैठे नौजवान ने छुरा निकाल लिया और बोला, "तू अपने भाड़े की बात कर, दो सौ रूपये अधिक मिलेगा। हमको इस काम के लिए किसी और टैक्सी वाले ने तो आज तक नहीं रोका-टोका।" जब रामधन ने नौजवान को अपने वश में करने का प्रयत्न किया तो उस नौजवान ने छुरा हवा में उछाला जो उसकी बाजू में लगा। रामधन डर गया व रामधन के सामने ही उन दोनों ने उस लड़की के साथ टैक्सी में ही कुकर्म किया। भाड़ा व दो सौ रुपये से अधिक देकर

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीनों टैक्सी में से उतर गये। रामधन ने वह पैसे सड़क पर फेंक दिये व सूबेदार को अपना फैसला सुना दिया, ''सूबेदार! अपने से यो दल्लापन न होगा। अपने से ज़मीर ना मारी जायेगी। दो-ढ़ाई बीघा जमीन पर ही रूखी-सूखी खाकर गुजारा कर लेवेंगे। अपने गांव के साथ ही गोरखपुर है। एक रिक्शा ले लूँगा। यहाँ के दो सौ से गोरखपुर के पचास-साठ रुपये भले।''

सूबेदार जब यह बता चुका तब तक खाने के पश्चात् हम चाय के गिलास भी खाली कर चुके थे। सूबेदार ने बिल देना चाहा, परन्तु मैंने उसे मना कर दिया। सूबेदार आज्ञा लेकर चला गया। रामधन गाँव चला गया था। मैं भी धनी राम के साथ समझौता करने को तैयार नहीं था। परन्तु यह सोचता-सोचता होटल वापिस पहुँचा कि इतने बड़े शहर में दूसरा रामधन मिलेगा भी कि नहीं। मुंबई शहर में अनेकों धनी राम मिल जायेंगे। परन्तु रामधन जैसा लाखों में से एक भी ढूंढना आसान न होगा। यह शहरों के ही हालात हैं जो रामधन जैसों को धनी राम बना देते हैं। होटल पहुंचा। मैंने व्हिस्की की बोतल निकाली व पहला पेग रामधन को याद करते हुए पी गया, दूसरा पेग मुझे धनी राम की बेबसी का एहसास दिला रहा था।❑

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कांटा

वह अपने उठने-बैठने वाले सभी मित्रों-परिचितों के सर्कल में एक प्रसिद्ध नाम था। सभी उसे हँसकर मिलते, उसकी दिलचस्प बातें सुनते अथवा सुनना चाहते, परन्तु हर कोई उसे अपने घर बुलाने से झिझकता। क्योंकि उसके विषय में कहा जाता था कि वह जिस थाली में खाता है, उसी में छेद करता है। हाँ, लेकिन उसे क्लब में आने-जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी। जिस क्लब में भी जाता, वहीं कानाफूसी आरम्भ हो जाती। पुरूषों के साथ-साथ वह कई स्त्रियों में भी चर्चा का विषय था। वह सैंचूरी बैटसमैन के नाम से प्रसिद्ध था। वैसे उसका नाम हरदेव सिंह खंगुड़ा था। अच्छी-खासी ज़मीन का मालिक तथा पटियाला के एक व्यापारी का साइलैंट पार्टनर, एक सिनेमाघर में उसका आधा हिस्सा भी था। बी.ए. उतीर्ण था, परन्तु अंग्रेज़ी बोलते समय ऐसे लगता जैसे कोई बैल-गाड़ी कीचड़ में फंसी हो। मलवई, पटियालवी, साहित्यक पंजाबी में बात करने में निपुण। हिन्दी व उर्दू को भी मुँह मार लेता। बीस-पच्चीस उर्दू के शेयर व पन्द्रह-बीस पंजाबी के प्रसिद्ध कवि-जनों की कविताओं की पंक्तियां उसे याद थीं। प्रत्येक अवसर पर वह अपनी मौजूदगी का अहसास शेयर सुनाकर करवाता। वह सदैव मुस्कुराता रहता और कोई न कोई ऐसी बात करता कि उसके

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथी हँसे बिना न रह पाते। उसको मिलकर यूं प्रतीत होता कि वह आपको अभी हँसायेगा। वैसे तो वह पंजाबी जट्ट था परन्तु वह जिस महफिल में भी जाता, वह उसी का प्रतीत होता। जट्ट लोगों में वह शुद्ध मलवई पंजाबी भाषा बोलता तथा कृषि व गांव की समस्याओं की बातों पर टीका-टिप्पणी करता। उसे जट्ट लोगों के पच्चीस से भी अधिक गोत्रों की जानकारी थी। ग्रेवाल के बारे में एक दिन उसने लतीफा सुनाया कि ग्रेवाल तो बनियों व भापा रिफ्यूजी लोगों से भी अधिक तेज़ होते हैं। जट्ट लोगों में महाजन-गोत्र। वह बताता कि यदि कोई ग्रेवाल आपका मित्र बन जाये तो वह यही कहेगा, ''यदि मैं आपके घर आऊँ तो आप मुझे क्या दोगे, यदि आप मेरे घर आओगे तो मेरे लिए क्या लाओगे?''

परन्तु यदि कोई ग्रेवाल उसे मिल जाता तो वह उसकी तारीफों के ऐसे पुल बाँध देता कि वह फटने को जाता, ''ग्रेवाल तो पंजाब व देश की शान है। आप भारत में कहीं भी चले जाओ ग्रेवाल दिखाई देंगे। पूरे पंजाब की शान-चाहे खेती है या व्यापार या अफसरी...जादूगरों ने सुन्दर-सजीली फिल्म अदाकारा सिम्मी को भी पटा कर, उसे भी सिम्मी ग्रेवाल बना लिया।''

...परन्तु यदि वह रामगढ़िये अर्थात् मिस्त्रियों के घर शादी पे जाता तो रामगढ़िया प्रतीत होता। उसे मिस्त्रियों के भी सभी गोत्रों के विषय में ज्ञान था। धीमान व खत्ती तथा आगे धीमान में कौन से गोत्र हैं और खत्ती में कौन कौन से। वह बताता कि ज्ञानी जैल सिंह खत्ती मिस्त्री हमारी रामगढ़िया बिरादरी की शान थे। बाकी बातें छोड़ो, बाबा नानक भी भाई लालो मिस्त्री के घर ठहरे और कोधरा (ज्वार की रोटी) लंगर चखा। यह तो भाई लालो द्वारा की गई सेवा का फल हम मिस्त्री खा रहे हैं। नहीं तो हम किस काम के हैं। ज्ञानी गुरदित्त सिंह मिस्त्री थे जिसने पंजाबी विश्वविद्यालय की जट्टी वाईस चांसलर को पटाया था।

मिस्त्रियों की कई बुजुर्ग स्त्रियां सचमुच उसे मिस्त्री समझ, अपने घर के भेद बता देतीं...व कई जगह वह वहां पर भी हाथ फेर जाता।

बनियों में वह बनियों की सोच की तारीफ करता कि कैसे वे अपने परिवार व भाईचारे का ध्यान रखते हैं। वह बताता सही अर्थों में बनिया वह है जो सातवीं पीढ़ी के पश्चात् आने वाली पीढ़ी के विषय के भी सोचे। वह एक लोक कथा सुनाता और बनियों की वाह-वाह बटोरता। कहते हैं कि एक बार देवी लक्ष्मी भिन्न-भिन्न

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वर्गों के लोगों के पास गई कि माँगो क्या माँगते हो, 'किसी ने तीनों वक्त का भोजन, किसी ने घर, किसी ने कपड़े, किसी ने गहने माँगे, वह सभी को खुश करती आगे चलती चली।'

...तत्पश्चात् वह एक बनिये के घर गई। बनिया बुजुर्ग, चुस्त व दूर-दृष्टि वाला था। लक्ष्मी ने उसे वर माँगने के लिए कहा, तो बनिया बोला, "देवी माँ, जूठे मुँह नहीं माँगते। आप हमारे घर बैठो मैं कुएँ से स्नान कर अभी आया। बनिया कुएँ में छलाँग लगाकर डूब मरा। कहते हैं तभी से लक्ष्मी बनिये के घर पर बैठी, उस बुजुर्ग बनिये की प्रतीक्षा कर रही है। बस तब से लक्ष्मी बनियों की ही बन कर रह गई। वह एक मलवई पंजाबी में लोक कहावत सुनाता जिसमें वह बनियों की तारीफ करता और जट्टों की बुराई, कभी उन्हें जट्ट-बनीये बताता।

कौं करयाड़ कलाल रज्जे,
कबीला पालदा।
जट्ट रज्जे,
कबीला गालदा।

(कौवा, बनिया, कलाल अपना पेट भर कर, अपने कबीले को पालते हैं और जट्ट पेट भरने पर, अपने कबीले को बर्बाद करता है।)

इस प्रकार से वह बनियों का दिल भी जीत लेता तथा एक-दो बनिया-स्त्रियों के दिल भी उसने चुरा लिए थे।

यदि कोई खिलाड़ी अथवा स्त्री खिलाड़ी उसे मिल जाती तो कहता, "ये हैं पंजाब का, देश का मान-सम्मान। कितना परिश्रम, कितनी साधना, कितना तप, कितना त्याग। हॉकी, फुटबाल, कब्बडी का प्रशंसक...परन्तु कभी-कभी क्रिकेट को भी मुँह मार लेता क्योंकि उसे मालूम था कि यदि शहरवासियों में धाक जमानी है तो क्रिकेट का ज्ञान भी आवश्यक है। ...भई, सिद्धू भाई व मुंबई का संधू भी तो हमारी बिरादरी में से हैं। फिर वह बताता कि वह किसी अफसर के घर गया। पति ने पत्नी से कहा कि, "चाय-पानी तथा खाना...कहने लगी आपको चाय व खाने की पड़ी है। देखते नहीं भारत-पाकिस्तान का वन डे मैच चल रहा है।" फिजीकल कालेज में भी उसका आना-जाना लगा रहता। वहां भी अपनी आदतों से बाज़ न आता। एक दो बास्केटबॉल तथा बालीबॉल की खिलाडिनों से मित्रता कर ली। उनका चुनाव टीम में
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करने वालों को पार्टी देकर, किसी विशेष चहेती खिलाड़िन का चुनाव करवा लेता और वह खिलाड़िन उसके इशारे पर पी.टी. करती।

यदि अफसरों में बैठता अथवा उनके घर जाता, तो बड़े अदब से 'प्लीज़', 'थैंक्यू' 'सो नाइस ऑफ यू' 'थैंक्स फॉर कम्पलीमैंट' 'वैरी-वैरी हैप्पी मैमोरेबल स्वीट बर्थ डे' 'हैपी रिटर्न ऑफ दा डे।' वह अफसरों की, उनके परिवार वालों की कमज़ोरियों का लाभ लेता। गिफ्ट देकर, उनसे लाभ लेना भी वो जानता था। एक बार उसने बताया कि एक इन्कम-टैक्स अफसर की सुन्दर-सजीली पत्नी उससे प्रभावित हुई और शाम के समय उसने अकेले में ही उसे हार्ड ड्रिंक पेश की। हम समझ गये, उसका दिल नहीं तोड़ा और वह रात उसके नाम कर दी तथा घर पर फोन कर दिया कि अफसर के काम से दिल्ली जाना पड़ रहा है, प्रात:काल ही वापिस आया जायेगा।''

लेखकों व लेखिकाओं में भी उसकी अच्छी पहचान थी। कई लोग तो उसे लेखक ही समझते। अनेकों साहित्यक-समागमों मे उसे आमंत्रित किया जाता और कई तो उससे समागम की प्रधानगी भी करवाते। लेखकों की रचनाओं की वह इस प्रकार से दाद देता कि कुछ लेखिकाएं अपने घर व अपने घरवाले को भी भुला देतीं। ...वह किसी विशेष लेखिका की रचनाएं सुनने के लिए, होटल का कमरा बुक कर लेता। ...परन्तु जल्दबाजी न दिखाता। जब तक वह लेखिका अपनी पूरी रचनाएं न सुना लेती, बेड से सहारा लगाकर ध्यान से सुनता रहता तथा बीच-बीच में वाह-वाह भी करता रहता और अपने कमैंट भी देता। वह लेखिका धीरे-धीरे स्वयं ही कुर्सी से सोफे पर, फिर सोफे से उठकर उसके साथ बेड पर आकर बैठ जाती। ...फिर पूछती, ''आप क्यों नहीं लिखते?''

''लो, हम आज से ही शुरू कर देते हैं,'' तथा वह दो पेग मंगवाकर एक गिलास उसके हाथ में थमा देता और दूसरा अपने हाथ में ले लेता। उस रात्रि लेखिका कहानी का नया प्लाट अलावा कविता का सूक्ष्म-भाव लेकर उससे विदा होती।

जट्ट लोगों में तो वह हीरो था ही। चंद जट्ट युवतियां उसे वीरा-वीरा कहतीं, उसे वीरा भइया कहना बंद कर देतीं और कहतीं, ''बहुत चालाक निकला तू तो, बहुत भोला बनता था।''

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra
एक बार उसने बताया कि किसी गांव में करीब चालीस वर्षीय स्त्री बहुत

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तेज तर्रार थी। वह कोच-आँटी के नाम से प्रसिद्ध थी। मैं उस समय करीब उन्नीस-बीस वर्ष का था। एक दिन उसने अवसर देखकर मुझे अपने घर बुलाया तथा कहने लगी, "कल को शादी करोगे? कुछ पढ़े-लिखे भी हो?" उसने भोलेपन में न में सिर हिला दिया, बस उसने कोचिंग देनी शुरू की और विदा करते समय बोली, "यह लो सौ रुपये, घी खा लेना। तुम तो पहले ही पढ़े-पढ़ाये हो और मेरे भी उस्ताद निकले। तुम तो मुझसे भी चार कदम आगे हो। आना-जाना करते रहना।"

यदि वह शहर निवासियों के घर में जाता तो वह (भापे) रिफ्यूजी सिक्खों में सुप्रीम भापा बन जाता। उनके समक्ष बाबा नानक की तस्वीर के सामने बार-बार सिर को झुकाता व गुरू ग्रंथ साहब के आगे दंडवत् करता। कीर्तन के समय तो पूरा-पूरा घंटा आँखें ही मूँदे रखता। जब (ग्रन्थी) भाई जी, "तू ठाकुर तुम पै अरदास" कहते तो आँखें खोलकर फिर मूँद लेता। तीर निशाने पर, कोई न कोई शहरी सिक्ख स्त्री उसकी बगुला-भक्ति पर फिदा हो जाती। वह उसकी तारीफों के अनगिनत पुल बाँधता, उसके बच्चे को दुनिया का सबसे सुन्दर व स्वस्थ बच्चा बताता और कहता, "पुरूष के भाग्य में संतान होती है और घर में चहल-पहल, धन-दौलत, मान-सम्मान भाग्यशाली स्त्री के कारण। जो कुछ भी है, यह आपके अच्छे कर्मों का फल है जो आपने अपने पूर्व जन्म में किए होंगे, सरदार जी का तो मात्र नाम ही है, वास्तव में तो क्रैडिट आप ही को मिलना चाहिए।" बस किसी न किसी सुन्दर स्त्री की नस पकड़ में आ जाती और हरदेव सिंह के लिए तो मौज—मस्ती के मौके।

हरदेव सिंह के पास पैसा था, लुभाने वाला व्यक्तित्व, स्वस्थ हट्टा-कट्टा शरीर, जिंदगी के हर क्षेत्र का अनुभव, मार्कीटिंग, साहित्य कला का भी ज्ञान। समाचार-पत्र पर वह प्रतिदिन एक-दो घंटे लगाता। राजनीतिक व सरकारी पैंतरेबाजी भी उससे छुपे नहीं थे। फिल्मों, स्पोर्टस के विषय में भी उसकी जानकारी अप-टू-डेट। बेशक, वह पचास से अधिक की आयु का हो चला था, परन्तु प्रतीत होता जैसा कि वह पैंतीस वर्षीय हो। खाते-पीते समय व ड्रिंक करते समय वह सहज रहता तथा सदैव भूख से कम ही खाता। तली हुई वस्तुएं, मिठाई, मांसाहारी भोजन से अकसर दूर रहता। प्रातःकाल बिना-नागा वह प्रतिदिन अपने खेत को पैदल जाता व इस प्रकार से दो-त़ीन मील तक पैदल ही चलता। कद करीब पाँच फुट आठ इंच व वजन उसका सत्तर से अधिक न था। सप्ताह में एक बार बिना खाये ही सोता। टी.वी. देख

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर वह अधिक खुश न होता। पुस्तकें पढ़ने में रूचि रखता था। समाजिक बंधन तथा रीति-रिवाजों तथा नामकरण समागमों पर गुरूद्वारे, मंदिर जाता, परन्तु वैसे कोई उसके नियम में शामिल न था। बस, मूल-मंत्र का पाठ, वह प्रात: तथा सांयकाल करता। राधा-स्वामी श्रद्धालुओं के साथ वह ब्यास चला जाता। कार सेवा करने वाले बाबों की वह दिल से इज्जत करता। उसकी कार में गुरूवाणी तथा धार्मिक कैसेट सदैव रहती। वह कुछ अच्छे गायकों की कैसेटें भी रखता।

हरदेव सिंह विदेश में सात-आठ स्थानों पर भी घूम आया था। बैंकॉक, हाँगकाँग, दुबई, साऊथ अफ्रीका, पाकिस्तान, सिंगापुर, नेपाल, यू.के. इत्यादि। उसका दिल चाहता कि वह पैरिस, स्टेटस व कैनेडा भी जाये। जिस भी देश में जाता, वह वहां अपना शिकार ढूंढने से बाज न आता। कहते हैं शक्कर-खोरे को शक्कर-खोर मिल ही जाता है, उसे अपने मतलब के लोग मिल ही जाते अथवा वह ढूँढ ही लेता। ...गर्म गोशत ढूंढना ना भूलता।

एक बार वह किसी होटल के रेस्तरां में बैठा था। उसकी पैनी निगाहों ने भाँप लिया कि कोई गश्ती किसी ग्राहक के लिए दाखिल हुई है। होटल का मालिक उस गश्ती को पहली मंजिल के एक कमरे में छोड़ आया। हरदेव सिंह बाथरूम के बहाने, उसके पीछे-पीछे हो लिया। होटल का मालिक उस गश्ती को कमरे में बिठाकर जब चला गया तो हरदेव ने कमरे का दरवाजा थोड़ा सा खटखटाया तो उस गश्ती ने उसे ग्राहक समझकर उसका स्वागत किया। पन्द्रह-बीस मिनट में हाथ साफ करके, जीप स्टार्ट की तथा वहां से नौ दो ग्यारह हो गया। बाद में जब असली ग्राहक आया तो होटल का मालिक व गश्ती दोनों आश्चर्यचकित रह गये। हरदेव ने एक पैसा भी खर्च नहीं किया था। गश्ती होटल वाले से झगड़ने लगी।

कृषि का कार्य उसका बड़ा तथा छोटा भाई संभालते रहते। वह निगरानी तथा ऊपर के फर्ज़ निभाता। अनाज बेचना, बीज लाना, खाद का इंतजाम करना, कौन सी फसल की बिजाई करनी है, यह उसी के विभाग थे। रिश्तेदारी, सामाजिक उत्सव, लेन-देन, बैंकिंग के कार्य वही करता। यह उसी की सूझ-बूझ ही थी कि ज़मीन सत्तर बीघे से दो सौ बीघे हो गई थी। फिर सिनेमा, इंडस्ट्री तथा कई स्थानों पर कुछ व्यक्तियों के साथ व्यापार में भी उसकी सांझेदारी थी। एक आढ़त की दुकान थी जहां उसका बड़ा भाई थोड़ी देर के लिए बैठता, परन्तु शेष कार्य मुनीम संभालते रहते।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करीब बीस लाख रुपये गांवों में ब्याज पर भी दे रखे थे, जिसका अच्छा खासा ब्याज भी आता। वैसे वह कंजूसी से ही खर्च करता। इतना कंजूस कि सिर की जूँ देने के समय भी अनेकों बार विचार करता। बहनों को खुश करने हेतु उसने अपनी दो भानजियों की शादी पर मारूती कारें भी दीं और अपनी भतीजी की शादी पर उसने साठ हार्स पावर का ट्रैक्टर दिया। गांव में एक ही कैंपस में तीन बिल्डिगें इक्ट्ठी बनी हुई थीं, जिनकी चार-दीवारी भी सांझी थी। लॉन, बच्चों के खेलने के लिए झूले, कोठियों के पीछे कुछ फलों के पौधे व एक सांझा स्वीमिंग पूल। चूल्हा-चौका अलग-अलग था परन्तु खेती एवं व्यापार सांझा। तीनों भाई खर्च करने हेतु प्रति माह बीस-तीस हज़ार रुपए निकाल लेते। सब्जियां, फल, दूध, चावल, गेहूँ इत्यादि तो घर के खेतों में से ही आते। तीनों के पास अपनी अपनी कार-एक के पास क्वालिस, दूसरे के पास लांसर तथा तीसरे के पास होंडा सिटी, तीनों का लगभग एक-सा मूल्य। दो ट्रैक्टर, दो ट्रॉली तथा दो कंबाईन सांझे। अपना कार्य करने के पश्चात् वह कंबाईनों द्वारा नजदीकी किसानों की फसलों की कटाई भी करते। इसके लिए एक फोरमैन तथा उसका सहायक भी रखे होते। तीन मज़दूर थे। तीनों पंजाबी। मज़दूर बिहारी भइयों से उन्हें एलर्ज़ी थी। भाइयों में अच्छी पटती आ रही थी। दोनों भाई उसकी बात में अपनी हामी भरते। घर में कोई भी कार्य किया जाता, उसकी राय से ही किया जाता। तीनों की पत्नियां भी आपस में प्यार रखतीं क्योंकि वह जानती थीं कि इकट्ठे रहने से ही गांव तथा रिश्तेदारों में उनका दबदबा है। हरदेव सभी राजनीतिक पार्टियों को खुश रखता। एक बार उसे सर्व सम्पति से सरपंच बना दिया गया। पाँच वर्ष उसने जैसे-तैसे काट लिए, फिर हाथ जोड़ दिए क्योंकि सभी को तो ईश्वर भी खुश नहीं कर सकता। दूसरी बात बी.डी.ओ. तथा अन्य अधिकारी उसे अपने जैसा बनाना चाहते कि वह भी गाँव को मिली ग्रांटों में धोखाधड़ी करे। जब उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया तो अधिकारियों से लड़ाई-झगड़ा। पाँच वर्षों में उसने गाँव का स्कूल प्राईमरी से मिडल तक करवाया। डिस्पैंसरी खुलवाई तथा गरीब वर्ग के लिए धर्मशाला बनवाई। गांव के लोग तो उसे फिर से सरपंच बनाने के लिए दबाव डालते रहे, परन्तु उसने हाथ जोड़कर पल्लू छुड़वाया। कहने लगा, ''मैं पूरे गाँव का नौकर। आधी रात में भी यदि आवाज़ दोगे तो हमारा पूरा परिवार आपकी सेवा के लिए चिराग के जिन्न की तरह हाज़िर हो जायेगा।... वैसे यह सरपंच की पदवी मुझे रास नहीं आई।''
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरदेव कहता, ''यदि एम.एल.ए. की पदवी दोनों पार्टियां मुझे प्लेट में परोस कर भी दें, तब भी मैं नहीं लेता। ...आज की राजनीति तो वेश्याओं के धंधे से भी बदतर है।''

पर हरदेव के व्यक्तिगत जीवन में शांति अथवा चैन नहीं था। बेशक वह बाहरी तौर पर हँसता रहता, हँसाता रहता, परन्तु मन में जैसे कैंसर जैसी बीमारी लिए जीता। उसकी पत्नी नेक-शरीफ सती-सावित्री थी। उसे हरदेव के विषय में सारी जानकारी थी। उसने कई बार हरदेव को रोका भी परन्तु वह अपनी हरकतों से बाज़ न आया। हरदेव ने अपने किसी गहरे मित्र को बताया था कि उसकी पत्नी पिछले पन्द्रह वर्षों से उसके बेड पर एक बार भी नहीं सोई। जट्टी ने निडर होकर बोल दिया था, ''जहां दिल चाहे, जा गूंह (बिष्ठा खा) खा। परन्तु मुझे जिस दिन हाथ लगाया, अगली सुबह मेरी लाश लेकर शमशानघाट को तू जायेगा। मेरी लाश को न ही हाथ लगाना तथा न ही कन्धा देना।''

हरदेव की पत्नी ने उसे दो बच्चे दिए। एक बेटा व एक बेटी। बेटा बड़ा था उसने एम.एस.सी. एग्रीकल्चर की तथा एक खत्री लड़की से लव-मैरिज कर ली। दोनों विश्वविद्यालय में ही लैक्चरार लग गये तथा अधिकतर समय कैंपस में ही गुजारते। हरदेव का परिवार इस शादी के लिए रजामंद नहीं था, परन्तु जिद्द के कारण अनुमति देनी पड़ी। बेटी को पाँच वर्ष की आयु में ही पोलियो हो गया। बेचारी वैसाखियों के सहारे ही चलती। हरियाणा से ओ.टी. उत्तीर्ण करके नजदीक के ही एक गाँव के हाई-स्कूल में पंजाबी की अध्यापिका लग गई थी। हरदेव उसके लिए पुस्तकें तथा मैग्ज़ीन खरीद कर ले जाता ताकि बेचारी का दिल लगा रहे। हरदेव की पत्नी इसे भी उसके बुरे कार्यों की सजा बताती। हरदेव घर पर कुछ भी न बोलता और पत्नी की खरी-खोटी सुनकर, चुप्पी साध लेता।

एक दिन उसके साथ बहुत बुरा हुआ। उसका बेटा-बहू कार से गाँव आ रहे थे कि एक ट्रक को ओवर टेक करते समय कार एक वृक्ष से जा टकराई और उसका इकलौता बेटा वहीं दम तोड़ गया, बहू को अस्पताल में जाकर होश आई। उसे दो माह का गर्भ ठहरा हुआ था। भोग की रस्म के पश्चात् उसके मायके वाले उसे अपने साथ ले गये। हरदेव उसकी पत्नी व परिवार के सदस्यों ने उनसे विनती-गुजारिश की कि बहू गांव में ही रहे, परन्तु न तो वह लड़की मानी, न ही उसके मायके वाले। उन्हें भी हरदेव के बारे में बहुत कुछ पता था। लोग बात का बतगंड़ बनाने लगे कि अब

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो ससुर ही संभालेगा बहू को। इसी बदनामी के डर से मायके वाले बेटी को ले गये। दुर्घटना के कारण उसे ब्लीडिंग शुरू हो गई तो डाक्टरों के कहे अनुसार ठहरा हुआ गर्भ साफ करवाना पड़ा। वैसे बहू चाहती थी कि वह अपने पति की अंतिम निशानी संभाल कर रखे। हरदेव की पत्नी यह हादसा बर्दाश्त न कर पाई व पुत्र के भोग के पन्द्रह दिनों बाद ही उसकी आत्मिक शांति के लिए भी भोग डाल दिया गया।

इस दोहरे हादसे ने हरदेव को लगभग पूरी तरह से तोड़ दिया था। पहले जैसे हंसी ठहाकों की जगह फीकी मुस्कान ने ली थी। वह स्वयं ही अपने बुरे रास्तों का त्याग कर चुका था। जिनसे भी उसके अनैतिक संबंध थे, उसने सभी से रिश्ते-नाते तोड़ दिये थे। अब प्रतिदिन प्रात:काल गांव के गुरूद्वारे जाने लगा था। पटियाला दु:ख निवारण गुरूद्वारे जाता तो घंटों तक परिक्रमा में ही बैठा रहता। शराब कभी-कभार ही पीता। परन्तु यदि पीनी शुरू करता तो वह अत्यधिक पी जाता।

एक दिन मुझे जीप में जाते हुए पटियाला में मिल गया। उसकी पत्नी तथा बेटे के भोग पर मैं उसके गांव गया था। मेरे साथ कई बार वह अपने दिल की बात भी कर लेता। कई बार हँसते-हँसते कह देता, "तुम पत्रकार लोगों का भी क्या पता, पता नहीं कब किस पर तवा लगा दो। पत्रकारों से तो बड़े-बड़े डरते हैं, फिर मैं किस खेत की मूली हूँ?"

दो वर्ष पूर्व एक दिन वह मुझे होटल ले गया था। हमने चार-चार पेग पी लिए थे। मैं कुरेदने लगा, "हरदेव, तुम्हें तो सैंचूरी बैटसमैन कहते हैं। कितने रन बनाए हैं?" उसने पहले बताया, "एक सौ सात, फिर बोला, "एक सौ आठ।" इन एक सौ आठ में प्रत्येक जाति-धर्म की, भारत के प्रत्येक प्रांत की तथा उसने पाँच-छ: विदेशी लड़कियों का भी जिक्र किया। अधिकारियों की पत्नियां, कॉल-गर्ल्ज (गश्ती) तवायफें, अध्यापिकाएं, लेखिकाएं, खिलाड़िनें, कालेज की लड़कियां इत्यादि। सोलह से साठ वर्ष तक की। परन्तु उसने दो बातें अवश्य कबूल की। पहली बात कि उनमें से कोई भी कुंआरी नहीं थी और दूसरी बात, उसने कहीं जबरदस्ती नहीं की थी। तीसरी एक और बात जो उसने कबूल की कि उसने किसी भी स्थान पर किसी को मना नहीं किया जहां भी उसे कुछ झुकाव मिलता।

दुर्घटना के पूर्व वह मुझे मिला था। मैंने उसे पूछा, "तेरे बारे में अभी बात उड़ी है कि तुम्हें एड्ज हो गया है तो वह मुस्कुराया तथा उसने सारी सच्चाई बयान

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की। उसने बताया-"सोचा, अरे भद्रपुरुष, अवारागर्दी बहुत कर ली तूने। कल को जब पौत्र-पौत्रियों को मालूम पड़ेगा, तो क्या सोचेंगे। मैंने एक सौ सात के आँकड़े के पश्चात् यह घिनौना काम बन्द कर दिया था। मैं एक दिन अपने कोल्ड स्टोर में बैठा हुआ था, जहां हमने गैस्ट हाऊस बनाया हुआ था। वहां पर अफसर लोग अपने-अपने माल के साथ आते, रात को ऐश करते, प्रातःकाल वापिस चले जाते। मेरी भी कुछ स्त्रियां दोस्त थीं। कभी मैं उन्हें बुला लेता तो कभी वह फोन करके स्वयं आ जातीं। उनमें से एक गुरूद्वारे के भाई जी की पत्नी थी जो अध्यापिका थी तथा एक पुलिस कांस्टेबल की पत्नी थी जो नर्स थी। अकसर वह दोनों इकट्ठी ही आतीं थीं। एक दिन वह दोनों अपने साथ अस्पताल में एक नई नर्स के साथ बिन बताये ही चली आईं। उस समय यह दुकान बन्द किए करीब दो माह बीत चुके थे। मैंने उन्हें बताया कि अब तो मैं साधु बन गया हूँ, जो कुछ करना था, सो कर चुका हूँ, अब अपना फुल-स्टॉप! वह खिसयानी हँसी हँसने लगीं और बोली, "हम तो तुम्हारे लिए नया सेब लेकर आये थीं।" ...बहुत इन्कार किया परन्तु फिर भी वे न टलीं! स्वयं ही फ्रिज में से व्हिस्की की बोतल निकालकर चार पेग बना लिए। दो पेग लगाने के पश्चात् बोलीं, 'नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। अब तुम यह कहो कि तुम तो मरुस्थलीय-दरिया हो। प्रतीत होता है तुम्हारे दाने समाप्त हो गये हैं। ...चल तुम्हें हिजड़ों की मंडली में भर्ती करवा आयें।" उन्होंने मेरे पुरूषत्व को चैलेंज किया...मैं मुस्कुराने लगा क्योंकि मेरा अंदर का पुरुष जाग चुका था। ...परन्तु मैंने इस काम से निजात पाने का मन भी बना लिया था। उस रात्रि मैंने तीनों को प्रसन्न कर दिया व वह धन्य-धन्य हो गईं। प्रातःकाल उठकर लिपस्टिक बिन्दी लगाकर वह सती-सवित्री बनकर बाहर निकलने लगी तो मैंने उन्हें रोका, "मैं आपको एक राज की बात बता रहा हूँ, आगे मत बताना। मुझे एड्ज की शिकायत है और मैं दिल्ली के एक प्रसिद्ध डाक्टर से उपचार करवा रहा हूँ। भगवान भला करे, यह जरूरी नहीं कि तुम्हें भी एड्ज़ हो गई हो। परन्तु फिर भी ध्यान रख लेना।" यह सुनकर उनका रंग एकदम सफेद पड़ गया व कहने लगीं, "तुमने रात्रि में पहले बताना था।" मैं बोला, "तुमने मेरी सुनी ही कब थी? तुम्हारे सिर पर तो मदन देवता सवार था।"

बहुत मुश्किल से वह जीप में बैठीं। ऐसा प्रतीत होता था मानो कई वर्षों से बीमार हों। बस उन्होंने ने यह खबर फैला दी कि मुझे एड्ज़ है। परन्तु वास्तव में मुझे

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कोई एडज़-वेडज़ नहीं हैं।

उसकी पत्नी तथा बेटे के भोग के पश्चात् मैं हरदेव को पहली बार मिला था। हम नजदीक के रेस्टोरैंट में चाय-पीने के लिए चले गये। एक अलग से कोने में बैठ गये। वह उदासी की गहराईयों में डूबा हुआ था। ...यकायक उसने अपना मुँह अपने दोनों हाथों से ढक लिया और स्त्रियों की तरह सुबक-सुबक रोने लगा। मैंने उसे चुप करवाने का प्रयत्न किया और उसके मुँह को पानी का गिलास लगाया। उसने अपना दर्द दबाने का प्रयत्न किया। परन्तु दस मिनट तक रोता ही रहा, अश्रु बहाता ही रहा। हमने चाय पी। फिर मैंने प्रश्न किया, ''हरदेव तू इन घिनौने कार्यों में कैसे पड़ा ?''

हरदेव अपने भूतकाल के विषय में कोई भी बात नहीं करना चाहता था परन्तु उसके अन्दर गुब्बार भरा पड़ा था, वह उसे हल्का अवश्य करना चाहता था। उसने बताया कि वह मात्र सत्रह वर्ष का था, बी.ए. प्रथम भाग का विद्यार्थी। वह अपने ननिहाल गया तथा एक दिन ट्यूब्वैल पर बैठा कोई पुस्तक पढ़ रहा था कि तभी अचानक एक पच्चीस-छब्बीस वर्षीय सुन्दर-सजीली स्त्री उसके समक्ष आकर खड़ी हो गई। मैं हैरान-परेशान। वह बोली, ''भले मानस, एक काम करोगे ?''

''बताओ'' मैंने कहा।

''मेरे कांटा चुभा है। कांटा निकाल दो न।''

मैं घबरा गया और बोला, ''मुझे नहीं आता कांटा-वांटा निकालना।''

''उसने मेरी बहुत मिन्नतें कीं। मुझे कुछ भी समझ न आये। वह मेरे साथ मेरी चारपाई पर, पाँव पकड़कर बैठे रही। उसका ध्यान पाँव की ओर कम और मेरी ओर अधिक था। मैं चारपाई से उठने लगा तो उसने मेरी बाजू पकड़कर मुझे अपने साथ बिठा लिया और कांटा निकालने के लिए दबाव डालने लगी। मुझे पसीने छूटने लगे। कहीं कोई देख न ले। करीब आधा-पौना घंटा वह मेरी मिन्नतें करती रही। परन्तु मैं टस से मस न हुआ। ...अन्नत : वह मुझे नफरत भरी निगाहों से देखती हुई चली गई।'' परन्तु जाते समय वह लंगड़ाकर नहीं चल रही थी।

''मैंने घर पहुँचकर अपने बराबर के मामा के बेटे को सारा किस्सा सुनाया तो वह मुझ पर खूब हँसा व कहने लगा, ''कालेज की पढ़ाई अवश्य कर रहे हो, परन्तु अकल तुम्हें बिल्कुल भी नहीं। वह तो तुमसे आँख-मिचौली चाहती थी। दूसरा कांटा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निकालने को कह रही थी।''

''थोड़ी देर पश्चात् मैं किसी को बताये बिना ट्यूब्वैल की ओर सरपट दौड़ा, परन्तु वह कहीं भी दिखाई न पड़ी। गांव की सभी गलियां छान मारीं कि कहीं दिखाई दे। एक बार कहीं मिल जाये। ...मुझे पढ़ाई-पुस्तकें सभी कुछ भूल गई थीं। दो तीन दिन तो आस-पास के गाँव व ट्यूब्वैल भी छान मारे परन्तु वह उस दिन के पश्चात् कहीं भी न टकराई। प्रतीत होता था कि मानो आकाश से उतरी थी और आकाश में ही वापस चली गई। ...बस उसी की तलाश में सैंचूरी बैट्समैन बन गया। उसकी तलाश तथा भटकन ने मुझे कहीं का न छोड़ा। यदि उसके चक्कर में न फँसा होता तो अवश्य किसी ऊँची पदवी पर पहुँचा होता, घर में भी शांति होती।''

यह कहकर वह गंभीर हो गया, और ख्यालों में खो गया था। वह अन्दर-बाहर से पूर्णतः टूटा हुआ प्रतीत हो रहा था। वह ज़ोर से बोला, ''कल पता चला कि खत्रियां (क्षत्रियां) ने जट्ट की बहू किसी और के साथ विदा कर दी।''

मैंने महसूस किया कि हरदेव के मन-मस्तिष्क में चुभा हुआ कांटा जब निकला तो उसके पास कुछ भी नहीं बचा था।❑

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जुहू बीच पर भटकती आत्मा

उसका वास्तविक नाम केदार नाथ साहनी था यद्यपि फिल्मी और साहित्यक संगठनों में वह देव साहनी के नाम से प्रसिद्ध था। उसका भाई केतन साहनी अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धी का चित्रकार था। देव का परिवार पाकिस्तान से जुड़ा हुआ था। उसका परिवार आर्य समाज की विचारधारा वाला था। उसने लाहौर से बी.ए. की। लम्बा कद, छः फुट से दो-तीन इंच ऊँचा, बादामी रंग, आँखों में एक अजीब सी कशिश। लाहौर के थिएटर की जान। विभाजन के पश्चात् फिल्मों में किस्मत आजमाने के लिए मुंबई चला आया था। वहाँ एक बंगाली निर्देशक को वह भा गया और उसने एक बढ़िया फिल्म में उसे एक चैलेंजिंग रोल दिया, जिस पर वह खरा उतरा। उसके पश्चात् उसने फिर पीछे मुड़कर न देखा। उसने चरित्र-अभिनेता के रूप में काफी नाम कमाया। मुंबई और मद्रास के प्रसिद्ध निर्देशक उसे अपनी फिल्मों में लेने लगे। चंद ही वर्षों में उसने करीब सौ फिल्मों में काम किया। मुंबई में रहकर भी वह पंजाब, पंजाबीयत व पंजाबी भाषा का प्रशंसक एवं शुभचिंतक रहा। वहाँ उसने पंजाबी कलाकारों, लेखकों, निर्देशकों और मशहूर व्यक्तियों की एक संस्था बनाई जो पंजाबी सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़ी रहती और मुंबई में पंजाबीयत को जीवित रखने का प्रयत्न करती। वैसाखी का पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी देव से पहली मुलाकात अमृतसर में हुई जहां वह एक फिल्म की शूटिंग के सिलसिले में आया हुआ था। पंजाब के कुछ प्रसिद्ध लेखकों को उसने व्यक्तिगत आमन्त्रण पर अमृतसर बुलाया था। मैं भी उन्हीं लेखकों में से एक था। मेरे साथ उसकी व सदैव रहने वाली गहरी दोस्ती हो गई थी। मेरे आमन्त्रण पर वह दो बार मेरे गाँव भी आया। वह लहलहाती फसलों, कुएँ पर उगे शीशम के वृक्षों, खेतों को पानी देते रहट व आँखों पर चश्मा नुमा चमड़े के खोपे पहने घंटियां खनखनाते बैलों के संगीत में मस्त हो जाता। बरगद के नीचे बैठे गाँव के बुजुर्गों से मिलकर, बतिया कर बहुत खुश होता। उनके पुराने भूले बिसरे लम्हों की बातें करता। मुंबई में तो उसे बढ़िया से बढ़िया शराब और स्कॉच मिलती परन्तु मेरे गाँव आकर वह घर की निकली मदिरा-ठर्रा का लुत्फ उठाता। परन्तु उसके पीने का ढंग बहुत सहज होता। मैं अकसर पांच-छः पेग लगा लेता परन्तु वह दो से अधिक न लेता। वह हमारे परिवार में ही घुल-मिल जाता। फिल्मी और शहरी अह्म को दूर रखता। वह जब भी हमारे गांव आता तो मक्की की रोटी, सरसों का साग, मक्खन और मटकी की छाछ उसका मनपसंद भोजन होता। वह गोबर से लिपाई-पुताई की गई खुली-हवादार रसोई में मेरी बेबे (माँ) के हाथों से पकी उन चपातियों का मज़ा लेता जो माँ कीकर के कोयलों पर सेंकती। दिन में हम लोग साहित्य के विषय में चर्चा करते रहते। मैं उसे अपनी मौलिक रचनाएं सुनाता और वह मुझे अपनी। वैसे, तो उसकी रचनाएं अंग्रेजी-पत्रों में भी छपती थीं परन्तु उसे अत्यधिक प्रसन्नता तब मिलती जब उसकी कोई रचना पंजाबी के प्रसिद्ध अखबार अथवा प्रसिद्ध मासिक पत्रिका में छपती। उसने मुझे भी कई बार मुंबई बुलाया था। मैं भी चार बार उसके घर मुंबई गया था। उसकी पत्नी निर्मला और उनकी बेटी तन्हा मुझे घर का सदस्य समझने लग गये थे। मैं जब पहली बार मुंबई गया तब तन्हा मात्र पाँच वर्षीय बच्ची थी।

बेशक देव, आर्य-समाजी परिवार से संबंधित था; परन्तु वह प्रगतिशील विचारधारा वाला था। उसने मार्क्स पढ़ा था। टालस्टॉय, गोरकी, चैखोव उसके पसंदीदा लेखक थे तथा रूस व पाकिस्तान उसके मनपसंद देश। वह दो बार पाकिस्तान तथा अनेकों बार रूस जा चुका था। वह मज़दूरों, कृषकों व अनुसूचित-दलित श्रेणी का समर्पित समर्थक था। वह मज़दूर यूनियन के आमन्त्रण पर जाता भी और भाषण भी देता। वह खुले विचारों तथा स्वतन्त्र जीवनशैली का कट्टर समर्थक व प्रचारक था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उसकी सोच मानवतावादी थी।

एक बार उसका फोन आया और मुझे मुंबई जाना पड़ा। उसकी पत्नी निर्मला चल बसी थी। कोई खास बीमारी तो नहीं थी, मात्र उल्टियाँ और दस्त लगे थे। तन्हा सात वर्ष की आयु में ही माँ की ममता से महरूम हो गई थी। देव की आयु उस समय करीब अठ्तीस वर्ष थी। जीवन का लंबा सफर अकेले तय नहीं किया जा सकता था। मित्रों व माता-पिता के समझाने पर वह दूसरी शादी के लिए तैयार हो गया। फिल्मों में उसके साथ काम करने वाली एक सिंधी लड़की को उसके साथ काफी लगाव था। उसका नाम था सुचेता, वह उससे करीब बारह-तेरह वर्ष छोटी थी। देव ने उसके साथ शादी कर ली। शुरू शुरू में तो उसके साथ देव की बहुत पटती थी। वह उसकी चाहत में निर्मला को भूल गया। सुचेता तन्हा को अपनी बेटी की तरह ही रखती। सुचेता के दो बच्चे हुए, एक लड़का व एक लड़की। देव को एहसास होने लगा कि दो बच्चों के जन्म के पश्चात् सुचेता न तो पहले जैसी पत्नी रही थी और न ही तन्हा की पहले वाली माँ। अब उसे निर्मला पहले से भी अधिक याद आने लगी। देव सुचेता में निर्मला को ढूँढने का असफल प्रयत्न करता। उसे एक पाकिस्तानी लेखिका के उपन्यास की याद आती जिसके अंत में निष्कर्ष था कि पुरूष सागर की तरह है जो पुरातन पानियों को कभी भुला नहीं सकता और नये को भी सुस्वागतम् कहता है।

तन्हा ने बीस वर्ष की आयु में बी.एस.सी. मेडिकल पास किया। वह अपने पिता की तरह ही लम्बी-व सुंदर थी। जुहू बीच का बंगला ही देव का घर था। यहां कई फिल्मी हस्तियाँ आतीं। एक दिन एक बड़े फिल्म निर्देशक ने तन्हा के लिए हीरोइन की भूमिका की पेशकश की। देव ने उसे कहा कि वह विचार-विर्मश के पश्चात् बताएगा। देव के बुजुर्ग माता-पिता इस बात के लिए कदाचित् रजामंद नहीं थे कि उनके घर की बेटी पर-पुरुषों के साथ फिल्मों में काम करे। सुचेता भी अपने सास-ससुर की बात से सहमत थी। वह भी नहीं चाहती थी कि तन्हा इतनी बड़ी फिल्म की इतनी बड़ी हीरोइन बने। फिल्म का निर्देशक अठ्ठाईस-उन्नतीस वर्षीय पारसी नौजवान था। उसका नाम था उत्तम उम्रीगर। वह कई बार देव के घर आया था ताकि देव तन्हा को फिल्म में काम करने की अनुमति दे दे। दरअसल वह तन्हा को चाहने लगा था और तन्हा भी उसे प्यार करने लगी थी। इस बात की भनक घरवालों को लग गई और उन्होंने उत्तम उम्रीगर का घर आना-जाना बंद कर दिया। तन्हा और

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उम्रीगर कभी-कभार फोन पर ही एक-दूसरे से बात कर पाते। किसी सहेली को मिलने के बहाने, तन्हा व उम्रीगर एक-दूसरे को मिलते। दोनों ने जीवन-भर साथ निभाने के वायदे किये। जब बात यहां तक पहुँच गई तब तन्हा के परिवार वालों ने तन्हा का घर से निकलना बंद कर दिया। देव, सुचेता व माता-पिता की इच्छा के आगे झुक गया। उसने तन्हा को साफ शब्दों में कहा कि यदि वह उम्रीगर को चुनेगी तो उसके लिए इस घर के द्वार सदा के लिए बंद हो जायेंगे। देव का परिवार-पारसी लोगों को मुसलमानों जैसा ही समझता था। तन्हा का कोई भी हमदर्द न था जिससे वह अपना दर्द बाँट सके। वह बगावत न कर सकी। देव और सुचेता ने उसकी शादी अपने किसी नजदीकी मित्र के लड़के से कर दी जो धंधे में इंजीनियर था। यह परिवार भी पंजाबी था।

शादी के तुरन्त बाद तन्हा के पति व ससुराल वालों का मुखौटा उतर गया। चेहरा साफ दिखाई देने लगा। वे अब एक बढ़िया फ्लैट की माँग करने लगे। देव ने बहुत मुश्किल से उनकी यह माँग पूरी की और अपने खून-पसीने से कमाए पैसों में से पच्चीस लाख रुपये उन्हें दे दिए। इसके बाद तो उनके मुँह और भी खुल गये। देव सभी माँगें कैसे पूरी कर सकता था? तन्हा यह अच्छी तरह जानती थी। तन्हा ने एक बच्ची को जन्म दिया तो उससे भी घर में कलह हो गया कि उसने बेटे को जन्म क्यों नहीं दिया। अब तन्हा का पति बिजनैस के लिए बीस लाख रुपये की और माँग करने लगा। तन्हा ने साफ इन्कार कर दिया कि वह अपने माता-पिता को इसके लिए तंग नहीं करेगी, न ही कोई मांग करेगी। तन्हा का शारीरिक व मानसिक दोनों ही तरह से शोषण बढ़ने लगा। वह सब कुछ सहती रही। उसने अपने पिता को इसके विषय में कुछ भी न बताया। जब तन्हा की बेटी तीन वर्ष की हो गई तब भी उसके ससुराल वालों के बर्ताव में कोई अंतर न आया। एक तरफ तो तन्हा का पति उसे ज़लील करता व दूसरी ओर शराब के नशे में उसकी पिटाई भी करता। इसी के साथ-साथ वह एक आवारा स्त्री के चक्कर में पड़ गया। अब पानी सिर से गुजरने लगा। तन्हा एक बार मायके आई। जब घर के सभी सदस्य सो गये तब तन्हा अपनी बेटी को लेकर रात्रि के करीब दो बजे घर से निकलकर समुद्र की ओर चल पड़ी। जुहू बीच पर काफी समय सोचती रही और फिर समुद्र की लहरों के आगे अपनी बच्ची व स्वयं को समर्पित कर दिया। इस घटना के कारण मुझे भी मुबंई जाना पड़ा। इस घटना से देव

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
का मानसिक संतुलन बिगड़ गया। वह स्वयं को अपराधी-सा महसूस करने लगा था। परन्तु तन्हा ने मरने से पूर्व एक पत्र लिखकर सारा दोष अपने सिर ले लिया था। उसने न तो मायके वालों को और न ही अपने पति या ससुराल वालों को दोषी ठहराया था। मैं प्रयत्न करता कि देव को सांत्वना दूँ कि वह इस घटना को कड़वा स्वप्न समझकर भुला दे। परन्तु वह कई बार रात्रि को जुहू बीच के समुद्री तट पर बने अपने बंगले की गैलरी में आकर समुद्र की लहरों को निहारता रहता। उसे ऐसा प्रतीत होता मानों तन्हा समुद्र की लहरों में अपनी बेटी के साथ प्रकट हो रही हो और उससे पूछ रही हो, ''पापा, अब आप खुश हो ? मैंने अपका कहना माना कि नहीं ?'' मैं देव के परिवार वालों से विचार-विर्मश के पश्चात् देव को कुछ समय के लिए अपने साथ पंजाब ले आया। जब कोई साहित्यक परिचर्चा अथवा कोई उत्सव होता तब मैं उसे अपने साथ ही ले जाता। परन्तु वह रात्रि को हड़बड़ाकर उठ बैठता और कमरे की खिड़की खोलकर बाहर की ओर देखता जैसे समुद्र और जुहू बीच उसके साथ-साथ आ गये हों। जुहू बीच के समुद्र की लहरें उसे दिखाई पड़तीं और उनमें से तन्हा व उसकी बच्ची की शक्लो-सूरत और आवाज़ें प्रगट हो रही हैं।

देव की पत्नी सुचेता ने सोचा कि जुहू बीच वाला बंगला बेच दिया जाये क्योंकि देव उस बंगले की गैलरी में खड़ा होकर ही भावुक हो जाता है। वह बंगला ढाई करोड़ में बेचकर डेढ़ करोड़ में एक फ्लैट ले लिया गया। परन्तु अब भी देव की जब नींद खुलती तब वह पहले की भाँति फ्लैट की गैलरी में खड़ा हो जाता। उसे ऐसा प्रतीत होता जैसे उसके सामने वाले समुद्र की लहरें कलकल करती किनारों से टकरा रही हैं और उन लहरों में तन्हा व उसकी बेटी प्रकट हो रहे हैं। तन्हा मुस्कुराते हुए पूछ रही होती..., ''पापा, मैंने आपका कहना माना या नहीं ? अब आप सभी खुश हो ? मैं दुनिया को अलविदा कहते समय किसी को तंग करके नहीं गई। आपकी बेटी जो हूँ। आप ही की तरह मैंने भी किसी को तंग नहीं किया। हां, अपनी बेटी को साथ ले गई कि कहीं वह किसी पर बोझ न बने। इसका पाप मुझे ही भुगतना पड़ रहा है। परन्तु मैंने यह नहीं चाहा कि आप मेरे कारण कोई कष्ट झेलें। मैं अपनी बच्ची की गुनाहगार हूँ। पापा, आप मेरे कारण क्यों दुःखी होते हो ? आप खुश रहा करो। आप मुझे एक स्वप्न समझकर भुलाने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ? यादें जिन्दगी का सहारा बनें न कि जीवन पर बोझ बनें। मुझे किसी से भी कोई शिकवा-शिकायत नहीं है। मैं

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जा रही हूँ, पापा।'' देव के दिलो-दिमाग पर यह सभी कुछ छाया रहता। तन्हा व उसकी बच्ची को देव ही महसूस करता। घर के अन्य किसी भी सदस्य के विचारों में तन्हा अथवा उसकी बच्ची कभी भी न आते।

अनेकों चिकित्सकों को दिखाया गया। मनोचिकित्सकों से जांच करवाई गई। वह भिन्न-भिन्न प्रकार की नींद की गोलियां देते। देव का एक अन्य मित्र शिमला में रहता था। देव को उसने कुछ दिनों के लिए वहां बुलाया। उसके मित्र ने बताया कि वह वहां पर भी बेचैन रहता था। पहाड़ उसे जुहू बीच के सागर की लहरें प्रतीत होते, तन्हा व उसकी बच्ची उसे वहां भी घूमते दिखाई पड़ते। देव मुंबई वापस चला गया। उसकी पत्नी ने कहा कि देव शायद काम में लगकर काम की व्यवस्ता में यह हादसा भुला दे। देव ने फिल्मों में अदाकारी दुबारा शुरू कर दी। परन्तु दो पेग पीने वाला देव आधी-आधी बोतल पी जाता, फिर भी बहकता नहीं था। उसका एक मनोचिकित्सक मित्र लोनावला रहता था। वह उसे चंद दिनों के लिए वहां ले गया। फिर खंडाला व लोनावला की वादियों में भी तन्हा और उसकी बेटी देव को दिखाई पड़ते। वह कई बार सोचता कि तन्हा बेटी उसकी व सभी की शुभचिंतक है। वह स्वयं को संभालने का प्रयत्न करता। निर्मला को वह याद तो करता लेकिन तन्हा के हादसे के कारणवश उसे भुलाना चाहते हुए भी भुला न पाता। देव कई बार विदेशों में गया परन्तु वह जहां भी जाता, जुहू का किनारा व समुद्र उसके साथ-साथ जाते। एक बार शूटिंग के लिए उसे कैनेडा व अमेरिका जाना पड़ा। नियाग्रा प्रपात देखा तो लरज़ गया। परन्तु दूसरे ही पल नियाग्रा प्रपात जुहू वाले समुद्र तट में तबदील हो गया। देव को उसमें भी तन्हा व उसकी बेटी दिखाई पड़ते। मित्रों की संगत और शूटिंग के दौरान तन्हा व इस घटना जो कुछ-कुछ भूल जाता। परन्तु एकांत में, उसे अकेलापन घेर लेता। अकेलापन अथवा मानसिक अकेलापन ही सभी मानसिक बीमारियों की जड़ है। सुचेता, बच्चे व उसका परिवार भी उसे इस अकेलेपन से निजात न दिला पाते।

देव इस घटना के पश्चात् अधिक समय तक जीवित न रह सका। वह इस घटना को अपने साथ लेकर करीब सात वर्ष ही जी पाया। उसके साथ ही जुहू बीच पर भटकती आत्मा लुप्त हो गई। देव को इस दुनिया से गये पंद्रह वर्षों से भी अधिक हो गया है। परन्तु देव की कहानी मुझे भुलाए नहीं भूलती।❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह बहुत खुश है.....

वह आज खुश है। उसका पति मनोज रवीन्द्रन बेडरूम में सोया हुआ है। सुबह के आठ बज गये हैं परन्तु आज वह अभी भी लेटा हुआ है। अकसर वह सुबह छः बजे उठ जाता है तथा नौ बजे तक उसे दफ्तर पहुँचना होता है। उसकी कंपनी का दफ्तर उसके घर से सताईस किलोमीटर दूर है। यद्यपि उसके पास कंपनी की मरसिडीज़ कार और ड्राईवर है, परन्तु उसे तैयार होने के लिए जल्दबाजी करनी ही पड़ती है। कई बार फोन व मोबाईल फोन भी साथ-साथ सुनने पड़ते हैं। रात्रि को बेशक दस बजें या ग्यारह, परन्तु सुबह उसे नौ बजे दफ्तर पहुँचना ही होता है। परन्तु वह नियत समय से पहले ही पहुँच जाता है। कंपनी में उसकी पदवी काफी ऊँची है और वह लेट-फेट के लिए किसी को उत्तरदायी भी नहीं है। कंपनी को स्वस्थ एवं प्रोफैशनल रास्तों पर चलाने के लिए अनुशासनबद्धता जरूरी है। कंपनी के मालिक के साथ कई बार आठ बजे सुबह पहुँच कर अहम मीटिंग भी करनी पड़ती है और कंपनी के लाभ को कैसे बढ़ाया जाये व कंपनी की अंतर-राष्ट्रीय एवं कार्पोरेट छवि कैसे बेहतर हो, इस पर वह दोनों ही विचार करते हैं।

मनोज ने एक लंबा सफर तय किया था। तेईस वर्ष की आयु में एम.बी.ए.

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करके उसने मार्कीटिंग एग्जिक्यूटिव की छोटी सी नौकरी से काम शुरू करके विश्व प्रसिद्ध कंपनी के सीनीयर वाईस प्रैज़ीडैंट की सम्मानित पदवी पर पहुँचा था। शीघ्र ही उसे प्रैजीडैंट कम.एम.डी. बनने की संभावना थी। कंपनी के मालिक की नौ और कंपनियां थीं परन्तु मनोज रवीन्द्रन वाली कंपनी की छवि सबसे ऊँची है और इसका लाभ भी सबसे अधिक। रवीन्द्रन की मेहनत के कारण ही कंपनी को अब कंप्यूटर इंटरनेशनल मार्किट में आठवाँ स्थान हासिल है। मनोज का वार्षिक पैकेज नब्बे लाख रुपये है। अर्थात् साढ़े सात लाख रुपये महीना, इन्कम टैक्स कंपनी को देना होता है। साथ ही कंपनी के शुद्ध लाभ में से एक प्रतिशत जो बढ़कर अब दो प्रतिशत होने की संभावना है, यदि वह एम.डी. बन जाता है। उसके मातहित बारह जनरल मैनेजर हैं जो अलग-अलग विभागों के कार्य के लिए जिम्मेदार एवं उत्तरदाई हैं। मैनेजर तो सौ के लगभग हैं जिन्हें वह कभी-कभी ही संबोधन कर पाता है। रवीन्द्रन के पास सेल, मार्कीटिंग, कार्पोरेट इमेज, फाइनांस, इंटरनैशनल ट्रेड विभागों के अतिरिक्त मैन्यूफैक्चरिंग और प्रोडक्ट डेव्लपमैंट के विभाग भी हैं। उसे एडवर्टाइजिंग की ओर भी ध्यान देना पड़ता है।

कई बार तो मनोज रवीन्द्रन यह महसूस करता है कि वह इस कप्यूटर कंपनी के सॉफ्टवेयर का ही एक भाग है। हाड़-मास का निर्जिव कंप्यूटर पार्ट जिसकी अपनी भावनाएँ, ज़ज्बात तो कब के अलोप हो चुके हैं। रवीन्द्रन को कभी-कभी यह भी महसूस होता कि उसका जन्म अपने परिवार या अपने स्वयं के लिए नहीं हुआ बल्कि कंपनी के लिए ही हुआ है और उसे कंपनी के लिए ही जीना है।

रवीन्द्रन इस कंपनी में पिछले सोलह वर्षों से है और इससे पहले वह दो अन्य कंपनियों में कार्य कर चुका था। मार्कीटिंग व सेल्ज़ का तजुर्बा लगभग सताईस वर्ष का है। पचास वर्ष की आयु में उसे ऐसा प्रतीत होता जैसे वह नब्बे वर्ष का हो गया हो। बंगलौर की इस कंपनी में वह ऐसा गुम हुआ कि चेन्नई, अपने पैतृक शहर को भूलकर सदा के लिए बंगलौर का हो कर ही रह गया। बंगलौर के सबसे अधिक सम्पन्न इलाके कोरमंगलम में उसकी कोठी है जो उसने ढाई करोड़ रुपये में बनी बनाई खरीदी थी। अकसर बैंक में भी पच्चीस-तीस लाख का डिपॉजिट तो रहता ही है, पहचतर-अस्सी लाख रुपये के भिन्न-भिन्न कंपनियों के शेयर उसके पास हैं। [illegible] करोड़ों में है।
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह जब भी कभी किसी महफिल में बैठता तो एक चुटकला अपने बिजनैस से संबंधित अकसर सुनाया करता है-''एक बार किसी पिता ने अपनी नौजवान बेटी की खातिर दो लड़के देखे-एक आर्मी में कैप्टन व दूसरा अंतर-राष्ट्रीय कंपनी में मार्कीटिंग मैनेजर। लड़की से पूछा गया तो उसने आर्मी के कैप्टन को महत्व दिया और कारण बताया, 'आर्मी वाले को वर्ष में दो माह की छुट्टी निश्चित तो होती है। मार्कीटिंग वाले का क्या पता? बेड पर साथ लेटे हुए ही कभी भी फोन आ सकता है कि सुबह प्लेन से फलां शहर में नौ बजे मीटिंग के लिये पहुंचो।'

मनोज स्वयं तो मद्रासी है परन्तु वह पंजाबियों के साथ अधिक लगाव रखता है क्योंकि उसकी पत्नी दिव्या अरोड़ा पंजाबी परिवार से है। परन्तु दिव्या पंजाबी मात्र समझ लेती है बोलना नहीं जानती। उसकी परवरिश मुंबई में हुई थी। रवीन्द्रन सरदारों की इज्जत पंजाबी होने के नाते ही करता है और दूसरी बात वह पंजाबियों को हर क्षेत्र में साहसी भी मानता है।

दो बेटियां और दोनों बंगलौर के सबसे बढ़िया स्कूल में पढ़कर, एक अहमदाबाद में आई.आई.टी. में पढ़ रही थी तो दूसरी बंगलौर में ही एम.बी.बी.एस.। ...परन्तु तीसरे बच्चे, बेटे ने उन्हें सदा के लिए चिन्ता व टैंशन की खाई में ही धकेल दिया है। वह जन्म से ही मानसिक विकलांगता का शिकार है। खाने बैठता है तो खाता ही रहता है, सोता तो दस-दस, बारह-बारह घंटे सोया ही रहता है। हँसता तो हँसता ही रहता है। यदि रोता तो उसे चुप करवाने में ही घंटों लग जाते हैं। इस बारह वर्षीय बेटे के कारण उनके जीवन में अथाह बेचैनी सी है।

मनोज ने तेईस वर्ष की आयु में काम आरम्भ किया था और अब पचास वर्ष की आयु में वह थका-थका, टूटा-फूटा महसूस करने लग गया है। प्रतिदिन पंद्रह-पंद्रह चाय के कप दिन भर पीने से उसे ब्लड-शुगर हो गई है। अभी पेशाब में नहीं आई थी, इसी कारण वह अब फीकी चाय पीता है, तली हुई व मीठी चीजों से परहेज़ करता है। कंपनी के काम की व्यस्तता के कारण अकसर उसका ब्लड प्रैशर भी बढ़ा रहता है। नीचे वाला नब्बे से सौ तक व ऊपर वाला एक सौ पचास-साठ के करीब। इसे नार्मल करने के लिए उसने वाटर-थैरेपी व योगा का सहारा लेना शुरू किया है। जवानी में खाने पीने पर कंट्रोल न होने के कारण उसका कोलेस्ट्राल भी बढ़ा हुआ है। यूरिक एसिड को कंट्रोल करने के लिए उस ने मास, अंडा, मछली, दालें आदि सभी

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कुछ खाना छोड़ दिया था। लगभग शाकाहारी, हाँ कभी-कभी वह एक या दो पेग स्कॉच के जरूर लेता है। परिवार को वह पिछले दस वर्षों में एक बार भी घुमाने के लिए बाहर नहीं ले जा सका था। कारण कंपनी की व्यस्तता व दूसरा कभी-कभार बच्चों की जिम्मेदारियां। बेटा होने से पहले वह अपनी दोनों बेटियों व पत्नी के साथ एक बार श्रीनगर, शिमला, कुल्लू-मनाली, अमृतसर, वैष्णों देवी, नैनीताल, मसूरी इत्यादि उत्तरी भारत में एक माह बिताकर आया था। परन्तु उसके पश्चात् तो वह मशीन से बढ़कर कंप्यूटर जैसी जिंदगी जी रहा है।

आज उसकी पत्नी दिव्या रवीन्द्रन बहुत खुश है और वह अपने बेडरूम में लेटा हुआ है। कभी नींद खुल जाती है तो कभी सो जाता है।

दिव्या ने दूसरे कमरे में देखा उसका बेटा वरूण सोया हुआ है। उसे देखकर उसने ठंडी आह भरी है। फिर सिर को झटकने का प्रयत्न किया जैसे वह जीवन की व प्रकृति की भूल को भूल जाना चाहती हो। दोनों बेटियाँ होस्टल में हैं।

दिव्या रवीन्द्रन आज फिर भी खुश थी कि उसका पति घर पर है, बेशक सोया हुआ है। वह उसे डिस्टर्ब नहीं करना चाहती। बेटे को देखकर वह सोचना आरंभ कर देती है कि वह शादी से पहले पंजाबी अरोड़ा परिवार से संबंध रखती थी। उसके पिता मुंबई में थे व वह एक कंपनी में कार्यरत थी। वहीं पर मनोज उसके संपर्क में आया और प्यार हो गया व फिर शादी। माता-पिता ने मात्र इतना ही कहा था, ''वेख लै साऊथ इंडियन नाल जिंदगी कट सकेंगी ?'' तो उसने कहा था, ''मैं इस विषय में आपको कभी शिकायत नहीं करूँगी।'' दो बेटियाँ हुईं, दोनों के साऊथ इंडियन फीचर व पंजाबियों जैसा भरवाँ एवमं सुडोल शरीर, गेहूँआ रंग। मनोज व दिव्या दोनों एक-दूसरे को पाकर स्वयं को धन्य समझते। दोनों बेटियाँ सुंदर- सजीली व बौद्धिक सुंदरता से परिपूर्ण भी। दिव्या की माँ पंजाबी थी। जब भी मिलती तो कहती, '' अजे तुसीं किहड़े बुद्ढे हो गये हो। ईक मुंडा जरूर होना चाहीदै।'' मनोज और दिव्या तीसरी संतान नहीं चाहते थे। दिव्या की माँ ने मनोज की माँ को भी अपने पक्ष में कर लिया था और वह भी कहने लगी, ''अई अई ओ, एक लड़का जरूर मांगता। हमने बाला जी के मंदिर में प्रार्थना किया जी...।'' दिव्या की सास मुंबई में काफी समय रहने के कारण कुछ-कुछ मुंबईया हिंदी बोलने लग पड़ी थी। दोनों [illegible] कुछ उन्हें झेलना पड़ रहा था। दिव्या
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सोचती है कि वरुण के जन्म का कारण यह दोनों ही बनी। बाद में तो दोनों सास स्वयं को कुछ-कुछ अपराधी महसूस करतीं। ...परन्तु, दिव्या व मनोज की जिंदगी के दूध में वरूण के आगमन से कांजी सी घुल गई थी। अनेक लोगों ने मश्वरा दिया कि उसे मुंबई में मानसिक कमजोरी वाले बच्चों के बोर्डिंग स्कूल में डाल दो। परन्तु दोनों महसूस करते कि वरुण को जो माँ की ममता व पिता का प्यार यहां मिलता था, क्या बोर्डिंग में मिल पाएगा? दोनों तर्कपूर्ण बातें करते। कभी दोनों सोचते कि यदि बचपन में ही उसे वहां डाल दें तो शायद घुल-मिल जाये। पिछले दिनों किसी के मश्वरे पर उन्होंने उसका होमियोपैथी उपचार शुरू करवाया है, वह चल भी रहा है व एक-दो प्रतिशत कुछ-कुछ असर भी हो रहा था। इसी वजह से वह कुछ आशावादी भी है।

दिव्या रवीन्द्रन आज बहुत खुश महसूस कर रही थी कि उसका पति व बेटा दोनों घर पर हैं। बेशक दोनों सोये हुए थे। दोनों बेटियों ने भी शाम को घर आ जाना है। इस बात पर भी वह बहुत खुश है। पिछले दस वर्षों में परिवार के पांचों सदस्यों ने दो चार सप्ताह पहली बार इकट्ठे रहना है। दिव्या सोचती है कि दोनों बेटियां, वरुण और वह तो कई बार इकट्ठे समय व्यतीत कर लेते थे, परन्तु मनोज को परिवार के लिए फुर्सत ही नहीं मिलती थी। कई बार तो वह चिढ़ भी जाती व इसका गुस्सा कभी नौकरानी, कभी माली व कभी बच्चों पर निकालती। वह मनोज की मजबूरी को बेहतर समझती है, इसलिए वह उसके सामने जब भी जाती है तो सदैव मुस्कुराता चेहरा लेकर। उसे मनोज के प्यार पर भी गर्व था क्योंकि मनोज कंपनी का काम छोड़कर और किसी तरफ ध्यान नहीं देता था। मनोज ने बयालीस देशों का भ्रमण किया, हिन्दुस्तान के सभी मैट्रो व बड़े शहरों के अतिरिक्त सभी प्रदेश एवं प्रदेशों की सभी राजधानियां देखी थीं। परन्तु कभी भी फ्लर्ट गेम नहीं खेली थी व न ही उसे उसमें कोई रूचि थी। यद्यपि कई देशों व कई स्थानों पर उसे अति सुन्दर स्त्रियां मिली जो उसके साथ रात बिताने के लिए तैयार हो सकती थीं।

दिव्या कभी रसोई में जाती है, कभी ड्राईंग रूम में व अब कभी लॉन में, फिर कभी कपड़े संभालने शुरू करती है। साथ-साथ हिंदी की सदाबहार फिल्मों के स्मरणीय गीत गुनगुनाती है-"धीरे-धीरे मचल...या कहीं कोई मिल गया था...या नीले गगन के तले...या कभी-कभी मेरे दिल....।"

दिव्या मनोज के कमरे की ओर चक्कर लगाती कि कहीं वह जाग तो नहीं
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गया। उसका मन चाय पीने को हो रहा है। ...परन्तु आज वह अकेले चाय नहीं पीना चाहती। वह सोचती है कि जब मनोज उठेगा तो उसके साथ बैठकर चाय पिएगी और साथ-साथ कुछ बातें अपने बारे में, कुछ युवा हो रही बेटियों के बारे में, जिंदगी के बारे में...कुछ गुजरे-जवानी के दिनों के बारे में, कुछ लरजते लम्हों के बारे में करेगी।

दिव्या कुछ पलों के लिए उदास भी हो जाती है। क्योंकि डाक्टर ने मनोज को कम से कम चालीस दिन, यदि हो सके तो तीन महीने के लिए बेॅड-रैस्ट बताया है। जब पिछले सप्ताह उसका चैकअप हुआ तो पहले ई.सी.जी. में कुछ दोष नजर आया। फिर टी.एम.टी. करवाया तो डाक्टर ने चेतावनी दी कि यदि कॉलेस्ट्रॉल इत्यादि बढ़ने पर ध्यान न रखा तो हार्ट प्रॉब्लम हो सकती है। काम के बोझ, व्यस्तता, खाने-पीने व आराम में अनुशासनहीनता के कारण ही कॉलेस्ट्रॉल, यूरिक एसिड व ब्लड शुगर बढ़े थे। उबला हुआ शाकाहारी भोजन, बिन चीनी की चाय, कम कैलोरी वाला भोजन, मक्खन-घी नाममात्र व सबसे बढ़कर तनाव मुक्त दिमाग। डॉक्टर ने कुछ टॉनिक व मानसिक आराम के लिए सिडेटिव्ज़ (नींद की गोलियां) लिख दी थीं। ब्लड प्रैशर दिन में दो बार चैंक करवाने के लिए कहा है।

दिव्या खुश है कि अब मनोज परिवार के साथ ही है। उसके साथ चालीस दिन पूरे के पूरे व्यतीत करेगा। कंपनी के बॉस ने भी उसकी योग्यता व मेहनत को देखते हुए उसे तीन माह स्विटज़रलैंड में बिताने के लिए कहा है तथा सारा खर्च कंपनी ने ही करना है।

मनोज ने कहा था कि पहले वह परिवार के साथ दो सप्ताह बितायेगा फिर एक माह परिवार के साथ स्विटज़रलैंड में बिताने के बारे में सोचेगा। मनोज के दोनों मोबाईल कंपनी ने जान-बूझकर अपने पास रखवा लिए हैं। उसके घर के तीनों पुराने फोन नंबर करीब तीन महीनों के लिए बंद करवा दिये गये हैं और मात्र एक नया टैलीफोन नंबर घर में रखा गया है।

दिव्या आज इसलिए भी खुश है कि घर में अब बार-बार टैलीफोन का कानों में खलल पैदा करने वाला शोर लगभग बंद सा है। उसने टी.वी. ऑन किया और स्क्रीन पर मात्र फोटो ही चलने दी, आवाज़ बिल्कुल बंद रखी। दिव्या को लग रहा था कि आज उसका घर ईडन लॉज न होकर ईडन गार्डन है। उसका ऐडम उसके [illegible] है, बेशक सोया हुआ है। उसे बैडरूम में
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
से एक अजीब सी महक आ रही है जो सोलह वर्षीये लड़की को हम-उम्र लड़के से आती है।

दिव्या डॉक्टर के द्वारा दिये निर्देश वाले कागज को देखती है। नौ बज रहे हैं। मनोज को एक कैप्सूल देने का समय है। वह इससे पहले चाय के दो कप बनाती है। बिना शक्कर की चाय उसे बिल्कुल पसंद नहीं परन्तु वह आज मनोज के साथ बैठकर बिना शक्कर की चाय पीने का मन बना लेती है। साथ में ब्रिटेनिया कैलोरी मुक्त मैरी गोल्ड बिस्किट प्लेट में रखती है। नौकरानी को आज उसने देर से आने को कह दिया था। बिना शक्कर की चाय के दो कप व बिस्किट लेकर वह मनोज के बेडरूम में पहुँचती है। मनोज उठकर डबलबेड के साथ सहारा लगाकर सुस्ता रहा है। उसके चेहरे पर रौनक है। 'गुड मार्निंग बेब, कैसे हो?' दिव्या चाय की ट्रे साईड-टेबल पर रखते हुए कहती है। ''आई एम ओ.के. स्वीट हार्ट'' मनोज दिव्या को अपने पास बिठा लेता है और अपनी दाहिनी बाजू उसकी गर्दन के पीछे से घूमाकर, कंधे को थपथपा कर, अपने साथ सटा लेता है और दिव्या उसके होंठों पर एक ऐसा चुम्बन देती है जैसे कोई माँ बीमारी से ठीक हुए अपने बच्चे को देती है। मनोज कुछ भावुक सा होने का प्रयत्न करता है परन्तु वह कहती है, ''डॉक्टर सेज़ मिनिमम फॉटी डेज़ कंप्लीट रैस्ट। ओनली पलोटोनिक रोमांस एंड नॉट कंजुगल वन।'' (सिर्फ आत्मिक प्यार, शारीरिक नहीं)

मनोज को लगता है कि आज वह पच्चीस वर्ष पहले वाली दिव्या को मिल रहा है व दिव्या उसके चेहरे को ऐसे निहार रही है जैसे उसने पच्चीस वर्ष पूर्व सुहागरात बिताने के पश्चात् अगली सुबह रवीन्द्रन ने उसके चेहरे को निहारा था। दिव्या आज बहुत खुश है, चाहे उसका पति बीमार है।❑

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पापा का बेटा

धूरी जंक्शन के प्लेटफार्म पर काफी व्यक्ति खड़े थे। मुझे दिल्ली जाना था इसलिए मैं भी प्लेटफार्म पर सुबह सवा छः बजे के करीब पहुँच गया था। धूरी (पंजाब का शहर) छोटा सा शहर होने के कारण लगभग सभी व्यक्ति एक-दूसरे को जानते- पहचानते थे। अचानक किसी व्यक्ति ने मेरे कंधे को थपथपाया तो मैंने मुड़कर देखा, इंद्र खड़ा था। वह दरअसल मेरे छोटे भाई का सहपाठी रहा था व मुझसे लगभग तीन वर्ष छोटा था। हृष्ट-पुष्ट, सुंदर-सजीला व मुझ से लंबे कद वाला था। वह एफ.सी.आई. में इंस्पैक्टर लगा हुआ था। मैं वापस मुड़ा और हँसते हुए उसका स्वागत किया। हम दोनों ने हाथ मिलाये व फिर इधर-उधर की हांकने लगे। मेरा ध्यान आने वाली इंटरसिटी ट्रेन की ओर था जो कि बठिंडा से आनी थी। परन्तु इंद्र का ध्यान किसी दूसरी तरफ था। वह कभी पीछे देखता, कभी बायीं ओर तो कभी दायीं ओर। दो बच्चों का पिता इंद्र कुछ परेशान सा दिखाई पड़ रहा था। मेरे पास एयर-कंडीशन रेल के डिब्बे की टिकट थी और इंद्र के पास भी। उस ट्रेन में धूरी का कोटा ए.सी. डिब्बे का मात्र तीन सीटों का था और तीसरी सीट किसी बाहर से आये व्यक्ति ने बुक करवा रखी थी।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे ही इंटरसिटी ट्रेन प्लेटफार्म पहुँची तो हम दोनों ने अपना-अपना सामान अंदर रखा। वह मुझे सामान संभालकर बाहर चला गया। फिर शीघ्र ही वापस अंदर आ गया। मैंने उससे परेशानी का कारण पूछा तो वह कहने लगा , "कोई खास बात नहीं। मेरे दोस्त की पत्नी साथ वाले कंपार्टमैंट में बैठी है। मैं चाहता था कि उसे यहीं सीट मिल जाती। उसे भी दिल्ली जाना है। उसके मायके दिल्ली में हैं।" उसने टी.टी. से एक सीट के लिए विनती की परन्तु टी.टी. ने हाथ खड़े कर दिए क्योंकि मौसम गर्मी का था व गर्मियों में ए.सी. कंपार्टमैंट की सीट बहुत मुश्किल से मिलती है। उसने टी.टी. को दो सौ रुपये अधिक देने का लालच दिया। टी.टी. ने फिर भी न में सिर हिला दिया। "पटियाला टी.टी. बदलना है और पटियाला का कोटा भी बहुत है। शायद वहां पर काम बन जाये," टी.टी. ने हौंसला दिया। इंद्र को कुछ राहत मिली। नाभा स्टेशन आया व ट्रेन रूकी। वह फिर उतरकर साथ वाले डिब्बे में चला गया और शीघ्र ही वापिस आ गया।

करीब सवा आठ बजे ट्रेन पटियाला पहुँची, उसने छलाँग लगाई व नये टी.टी. को जाकर घेर लिया। मैं खिड़की के शीशे में से झांक रहा था कि उसने अढाई सौ रुपये के नये नोट टी.टी. की जेब में डाल दिये ताकि उसे एक सीट जरूर मिल जाये। टी.टी. मुस्कुराया व उसने उसे सीट का नंबर इशारे से समझा दिया।

इंद्र ट्रेन के दूसरे डिब्बे में गया और करीब तीस वर्षीय एक सुंदर स्त्री को अंदर ले आया जिसकी गोद में तीन-साढ़े तीन वर्ष का एक बच्चा था। इंद्र ने उसका सामान उठाया हुआ था। उसने मुझसे विनती की, "भाई साहब, आप पिछली सीट ले लो। बुरा मत मानना।" मैं मन ही मन मुस्कुराया और पिछली सीट पर जा बैठा। अब इंद्र के चेहरे पर परेशानी नहीं झलक रही थी। इंद्र जब अंदर आया था तब चार फ्रूटियाँ भी ले आया था-एकदम ठंडी। एक फ्रूटी पैक उसने मुझे दिया तो मैं धन्यवाद करने के बाद पीने लगा। इंद्र ने बायीं ओर बैठी मित्र की पत्नी को एक फ्रूटी व दूसरी उसके बच्चे को दी और तीसरी स्वयं ले ली थी।

मैं फ्रूटी पीकर कुछ सैकेंड बाहर की ओर शीशे में से झांकता रहा। इसके उपरान्त मैंने जान-बूझ कर अपनी पलकें बंद कर लीं व ऐसे दिखाया जैसे कि मैं सो रहा हूँ। इंद्र ने पीछे मुड़कर जरा सा मेरी ओर देखा व मुझे सोया हुआ समझ वह बेफिक्र सा हो गया। मैं आगे वाली सीटों के सुराख में से झांक रहा था उसने अपनी

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बायीं कोहनी साथ बैठी स्त्री की कमर में गाड़ दी थी। बच्चे ने फ्रूटी में कोई अधिक दिलचस्पी न दिखाई और शीघ्र ही वह माँ की गोद में सो गया था।

इंद्र का पूरा नाम इंद्रजीत सेठी था। वह गाता भी बहुत बढ़िया था और अपने समय कालेज का हीरो था। उसकी पत्नी स्कूल में अध्यापिका लगी हुई थी, उसकी तरह ही लम्बी। मैं उसकी पत्नी को इस वजह से भी अच्छी तरह जानता था क्योंकि वह मेरी बेटी की ट्यूटर थी और नाम था उसका सुमन सेठी। सुमन और मेरी छोटी भाभी दोनों करनाल की थीं। कभी कभार वह हमारे घर भी आ आती थी। इंद्र और सुमन के दो बच्चे थे-एक लड़का करीब आठ वर्ष का व लड़की करीब पांच वर्ष की। हँसता-हँसाता यह परिवार जिस पर आस-पड़ोस वाले ईर्ष्या करते थे। पति-पत्नी दोनों में काफी बनती थी। इंद्र प्रतिदिन अपनी पत्नी व बच्चों को स्कूल छोड़कर, दफ्तर चला जाता। इंद्र का वेतन भी अच्छा था व अन्य आढ़ती और शैलर वाले उसका हिस्सा स्वयं उसके घर पहुँचा जाते थे। उसकी पत्नी का वेतन भी अच्छा था। खुशहाल जिंदगी व संतुष्टि के लिए मजबूत आर्थिक स्थिति आजकल की जिंदगी में जरूरी है। इंद्र के साथ बैठी स्त्री को मैं नहीं जानता था। लगता था कि वो उनके पड़ोस में ही रहती होगी।

इंद्र उसे शशि के नाम से बुला रहा था। इंद्र और शशि कभी पार्टी की बातें कर रहे होते तो कभी शादी विवाह के समारोह की। उनकी बातें खत्म ही नहीं हो रही थीं। वह कई बार धीरे-धीरे बातें करते तो मुझे समझने में मुश्किल होती थी। मैं थोड़ा और नजदीक हो गया और अपना सिर कोहनी को सीधा कर अपने हाथ पर रख लिया। शशि कह रही थी, "आपने उस दिन अच्छा नहीं किया। आपने उनको बहुत अधिक पिला दी। उन्हें तो कोई होश ही नहीं रही थी। फिर आपने उस रात ना आगे देखा ना पीछे, मुझ पर टूट पड़े। यदि कोई देख लेता ? यदि उनकी नींद खुल जाती ?" इंद्र यह सुनकर कोई शर्मिन्दा न हुआ बल्कि उसने अपना सीना गर्व से फुला लिया। इंद्र उसके कान में कह रहा था, "जिस दिन सुमन मायके गई हुई थी और तुम अचानक ही रात को साढ़े आठ बजे हमारे घर आ गई थी...वह एक घंटा नहीं भुला सका आज तक।" शशि के चेहरे पर कुछ सैकेंड के लिए शर्म की लाली आई और फिर अलोप हो गई। लगता था उनके छिप-छिपकर मिलने का सिलसिला काफी देर से चल रहा था और वे दोनों समाज की अमान्य कीमतों के समर्थक थे। इस दौरान
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शशि का बेटा जाग गया था। अब शशि इंद्र की बातों की ओर अधिक ध्यान नहीं दे रही थी। वह बच्चे को दूध या बिस्किट खिलाने का प्रयत्न कर रही थी। बच्चे ने दूध न पिया। उसने एक-दो बिस्किट हाथ में पकड़े व धीरे-धीरे खाने लगा। इंद्र ने बच्चे के गाल को प्यार से थपथपाना चाहा, परन्तु बच्चे ने उसका हाथ झटक कर दूर कर दिया। बच्चे ने अपनी माँ की जाँघ पर रखे इंद्र के हाथ को भी झटक दिया। उसने घूरकर इंद्र की ओर देखा। बच्चा फिर मायूस हो गया व कुछ घुटन सी महसूस करने लगा, ''पापा कहां हैं ?'' इससे पहले कि शशि कुछ कह पाती, इंद्र ने कहा, ''बेटे मैं भी तो तेरा पापा ही हूँ।'' बच्चे ने मुँह में चबाया हुआ बिस्किट इंद्र पर थूक दिया और इंद्र की कमीज़ खराब हो गई। इंद्र को कुछ क्षणों के लिए गुस्सा आया परन्तु फिर उसने स्वयं को संभाला। बच्चे ने गुस्सा माँ पर भी निकाला व दोनों हाथों से उसके गाल नोच लिए और उसके बाल खींचने लगा। शशि ने थोड़ा सा गुस्सा दिखाया, ''यू सिली जेंट।'' इसके पश्चात् वो कुछ सोच में गुम हो गई थी। इंद्र दाहिनी ओर खिड़की में से आसमान को घूरने लग पड़ा था और शशि बच्चे को खुश करने का प्रयत्न कर रही थी। इंद्र का दिल किया कि वह बच्चे को उठाकर चलती ट्रेन में से बाहर फेंक दे। परन्तु बच्चा जैसे बेचैन सा हो रहा था। उसे ए.सी. कंपार्टमैंट में कुछ अजीब सा लग रहा था। शशि ने कोशिश की कि वह सीट से उतर कर थोड़ा बहुत घूमे। परन्तु वह माँ की गोद में से उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था।

शशि बच्चे के साथ बातें करने लगी, उसके पापा के बारे में, उसकी नानी के बारे में। उसकी दीदी, उसकी बुआ, फिर मामा-मामियों के बारे में। बच्चा बड़े ध्यान से सुन रहा था व मुस्करा रहा था। फिर उसके स्कूल की मैडम के बारे में, जब शशि ने बच्चे के साथ उसकी सहपाठिनी प्रियंका के बारे में बातें की तो वह बहुत खुश लग रहा था। कुछ समय बाद शशि के थपथपाने से बच्चा फिर से सो गया था।

शशि को कालेज के वो दिन याद आने लगे जब वो नाटकों में बढ़-चढ़कर भाग लिया करती थी। गिद्धे में (लड़कियों का पंजाबी नाच) तो वह सब से आगे थी। इंद्र कह रहा था, ''अपनी दोस्ती रोटरी क्लब के एक प्रोग्राम के समय ही हुई थी जब तुमने स्मरणीय डांस किया था और मैंने गीत सुनाकर, हम दोनों ने सभी की वाह-वाह लूटी थी।'' खालसा कालेज में शशि ने बी.ए. किया था। आप्रेशन ब्लूस्टार के बाद, उसके माता-पिता दसूहा से दिल्ली जा बसे थे।
-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इंद्र को फिर बातें करने का वक्त मिल गया। वह दोनों फिर बातों में गुम से हो गये। शशि बता रही थी, "इन्हें न कला के साथ कोई लगाव है, न संगीत के साथ व न ही थिएटर के साथ। और तो और फिल्मों में भी कोई रूचि नहीं है। बस शैलर, आढ़त की दुकान। पैसा ही पैसा, काम ही काम, सुबह के नौ बजे घर से निकलेंगे, रात के ग्यारह-बारह बजे से पहले तो वापस आना नहीं। टी.वी. सीरीयल कभी-कभी बहुत मुश्किल से मेरे कहने पर देख लेंगे, वह भी आधे-अधूरे मन से। संगीत के विषय में उन्हें कुछ भी नहीं पता कि कौन सी कैसेट, कौन सा गायक बढ़िया है।

"बस कहेंगे तुम स्वयं ही ले आना या मुझे लिखकर दे देना।" इंद्र बच्चे की ओर देखकर मुँह में ही बुड़बुड़ाया-'बास्टर्ड।'

इंद्र और शशि कुछ देर फिल्मों व आधुनिक गीत-संगीत की बातें करते रहे। परन्तु शीघ्र ही वो अपने व्यक्तिगत जीवन की चर्चा में गुम हो जाते। एक बार वह बच्चे को बाथरूम करवाने के बहाने, कैबिन से बाहर ले गये और बाथरूम के निकट ही काफी देर बातें करते रहे। बच्चे को परेशानी सी हो रही थी। वह रोता हुआ कभी माँ का दुपट्टा खींचता, कभी सलवार तो कभी कमीज़। इंद्र का दिल चाहता कि वह एक चाँटा उसकी गाल पर जड़ दे या उसे उठाकर बाहर फेंक दे।

अंबाला कैंट पहुंचकर शशि ने नाश्ते का डिब्बा निकाला, दोनों ने नाश्ता किया। मैंने पलकें बंद ही रखीं। जब ट्रेन करनाल पहुँची तो इंद्र चार पैप्सी की बोतलें ले आया था। परन्तु मैंने पैप्सी पीने से इंकार कर दिया और फिर अपना सिर सीट पर टिका दिया।

ट्रेन करनाल से चली तो बच्चा फिर जाग गया। इंद्र बच्चे को फुसलाने का प्रयत्न कर रहा था, परन्तु बच्चा उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा था। पानीपत स्टेशन से गाड़ी आगे निकली। उनकी बातें खत्म ही नहीं हो रही थीं। उनकी बातों से मुझे पता चला कि शशि ने सब्जी मंडी स्टेशन पर उतरना था। इंद्र ने भी कहा कि वह भी सब्जी मंडी स्टेशन पर उतर जायेगा। परन्तु शशि न उसे ऐसा करने से मना किया क्योंकि स्टेशन पर उसे उसके भइया-भाभी लेने आ रहे थे। इंद्र बहकता जा रहा था व शशि की ओर अधिक निकट होने का प्रयत्न कर रहा था। शशि का बेटा चिढ़ रहा था। जब इंद्र ने दुबारा अपने हाथ से बच्चे के गाल थपथपाने का प्रयत्न किया तो बच्चे ने उसके हाथ पर अपने दांत गाड़ दिए। इंद्र की चीख मुश्किल से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
निकलते-निकलते रह गई थी। वह अपने हाथ को सहला रहा था व शशि मंद-मंद मुस्कुरा रही थी। जब सब्जी मंडी स्टेशन नजदीक आने लगा तो इंद्र ने कहा, ''मैं तुम्हारे फोन का इंतजार करूँगा। मात्र दो घंटे मेरे होटल में...।'' शशि ने कोई भरपूर हामी न दी। जब इंद्र ने दुबारा से फोन करने पर ज़ोर दिया तो शशि ने कहा-''वह कैसे आ सकती है ? वह समय व मौका देखेगी।'' अचानक इंद्र ने कहा-''जब भी आना, इस पापा के बेटे को साथ लेकर न आना।''

शशि को लगा जैसे उसका पति उसके साथ सफर कर रहा था और वह सिर से लेकर पाँव तक कंपकपा गई थी। शशि ने इंद्र को बताया, ''यह तो बहुत शैतान है। यदि कहीं इसके पापा मेरे साथ बैठ जायें तो हमारे बीच आकर खड़ा हो जायेगा और कहेगा, ''पापा, आप दूर हट कर बैठो।''❑

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने कब चाहा था?

रमेश कुमारी के मायके लुधियाना में थे परन्तु शादी उसकी पटियाला हुई थी। जैसे वह स्वयं खुबसूरत थी, वैसे ही उसका पति कृष्ण कुमार कौशिक भी पुरुषोचित सुंदरता से लबा लब भरा हुआ था। वह छब्बीस-सताईस वर्षीय गेहुँएं रंग का नौजवान था जिस में एक अजीब सी चुंबकीय कशिश थी। जब कौशिक, रमेश को देखने आया था तब रमेश के दिल ने चाहा कि वह बिना फेरों के ही उठकर उसके संग चल दे। वह गोरे रंग की लम्बी, छरहरी युवती थी। कई लोग उसे मिस. लुधियाना कहकर भी पुकारते थे। यद्यपि उसने बी.ए., बी.एड की हुई थी परन्तु उसे नौकरी जे.बी.टी. अध्यापिका की ही मिली थी। कृष्ण ने रमेश का तबादला पटियाला के नजदीक के गांव रामपुर में करवा लिया। रामपुर पटियाला से तीन-चार किलोमीटर ही दूर था। शहर में अभी कोई आसामी खाली नहीं थी। रमेश कृष्ण को पाकर अत्यंत खुश थी। वह कई बार सोचती यदि उसका नाम राधा होता तो कितना अच्छा होता। परन्तु वह स्वयं को कृष्ण कौशिक की राधा ही बनाकर रखती। कृष्ण कुमार को कमिश्नर साहब के साथ टूर पर भी जाना पड़ता। कई बार वह सप्ताह में दो-तीन दिन बाहर ही रहता। कृष्ण के माता पिता [illegible] रखते थे। परन्तु वह दो-तीन बार [illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पश्चात् नव-विवाहित पुत्रवधु एवं पुत्र के पास आकर ठहर जाते। विवाह के करीब डेढ़ वर्ष पश्चात् रमेश ने अंग्रेजों जैसी गोल-मटोल गोरी-चिट्टी बेटी को जन्म दिया। हंसों की यह जोड़ी खुशी से चहचहाती रहती व नये मेहमान के आगमन से यह छोटा सा परिवार खुशियों के समुद्र में गोते लगाता रहता।

रमेश को अपने पति पर अत्यधिक गर्व व विश्वास था। यदि कभी उसे कोई कहता कि कृष्ण कुमार आज अन्य किसी लड़की के साथ कैंटीन में चाय पी रहा था अथवा फलां सिनेमा के पास किसी लड़की से बातें कर रहा था, या किसी स्त्री के साथ होटल में लंच कर रहा था तो वह उसे मात्र मज़ाक या जिह्वा-रस समझ हंस देती। उसे पूर्ण विश्वास था कि कृष्ण सिर्फ उसका है और वह कृष्ण की ही है।

गाँव रामपुर पटियाला के बहुत निकट था इसलिए रमेश को आने-जाने में कोई मुश्किल पेश नहीं आती थी। उस गाँव का सरपंच एक भद्र-पुरूष, सुशील सरदार बलदेव सिंह था जो पैंसठ वर्ष से अधिक आयु का था। एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। वैसे तो अगले चुनाव में भी उसे ही सरपंच चुने जाना था। परन्तु ईश्वर को यह मंजूर न था। गांव वालों ने उसके पढ़े-लिखे बेटे गुरतेज सिंह को सरपंच चुन लिया था। गुरतेज सिंह बी.ए.एल.एल.बी. था। कुछ समय उसने पटियाला कोर्ट में प्रैक्टिस भी की थी। परन्तु जमीन और खेती-बाड़ी के कार्य की अधिकता के कारणवश उसने प्रैक्टिस लगभग छोड़ ही दी थी व कृषि के कार्य की देख-रेख स्वयं ही करता। वैसे पटियाला कोर्ट में उसके नाम की तख्ती व कुर्सी अभी भी कायम थी। कभी-कभी कोर्ट में बैठने आ जाता। वह सुढौल, गेहुँए रंग का पैंतीस वर्षीय दर्शनीय सिक्ख नौजवान था। गाता भी अच्छा था। कुछ लोग उसे दलेर मेहंदी भी कहते। उसके पास मारूति एस्टीम कार थी। अक्सर उसके शहर में दो-तीन चक्कर हर रोज़ लग ही जाते। वह भी अपने पिता की तरह सीधा-सादा, सुशील व गुणवान व्यक्ति था। जब वह सरपंच बना तब रमेश कुमारी अपने स्कूल की अन्य अध्यापिकाओं को साथ लेकर उसे बधाई देने गई थी। एक बार सरपंच गुरतेज सिंह पटियाला से गाँव आ रहा था तो तेज वर्षा शुरू हो गई। रमेश मोपेड पर थी। वह एक वृक्ष के नीचे खड़ी हो गई। सरपंच ने उसे जब अकेली वृक्ष के नीचे खड़ी देखा तो उसने कार रोकी और उसे स्कूल तक छोड़ने का प्रस्ताव रखा। रमेश भी अंधेरी व वर्षा से परेशान थी। मोपेड को ताला लगाकर वहीं पर छोड़ दिया गया। गुरतेज सिंह ने कहा वह मोपेड
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौकर को भेजकर मंगवा देगा। रमेश कुछ झिझकती, डरती, उसकी कार में बैठ गई। गुरतेज ने स्कूल पहुंचने तक उसके साथ कोई बात न की। जब कार स्कूल के निकट पहुंची तो गुरतेज ने कार की खिड़की खोली और स्कूल की ओर संकेत किया। रमेश ने धन्यवाद किया व स्कूल चली गई। करीब डेढ़ घंटे के पश्चात् उसकी मोपेड भी वहां आ गई थी। इसी प्रकार जब एक बार ज़िला शिक्षा अधिकारी वहां आए तो सरपंच साहब को बुलाया गया था। गांव की यह परम्परा थी कि स्कूल की अध्यापिकाओं व अफसरों के लिए चाय-दूध सरपंच के घर से ही बनकर आता था। दो-तीन बार मिलने के पश्चात् रमेश सरपंच गुरतेज सिंह के साथ कुछ-कुछ घुल-मिल गई व अब उससे बातचीत के दौरान वह सहमती या घबराती नहीं थी। पहले-पहल तो वह सरपंच को आवारा व चरित्रहीन समझती थी। परन्तु बाद में वह उसके गुणों से प्रभावित हो गई थी। क्योंकि उसमें गांव वाली खुलदिली, सादगी, शालीनता व शहरी लोगों जैसा शिष्टाचार था। सरपंच मौसम के अनुसार कभी गन्ने, कभी सरसों का साग तो कभी हरे चने की होलें भेज देता। कभी कभी वह स्कूल में भी रमेश व दूसरी अध्यापिकाओं का हाल-चाल मालूम करने पहुंच जाता। एक बार रमेश स्कूल में अकेली थी उसके साथ वाली तीनों अध्यापिकाएं नहीं आई थीं। सरपंच वहां पहुँच गया, बेशक बच्चे बैठे थे, परन्तु एक पल के लिए तो रमेश का दिल दहल गया था। सरपंच ने मात्र यही पूछा था, ''रमेश जी, सब ठीक-ठाक चल रहा है ना ? कोई काम हो तो बताना। झिझकना मत।''

गर्मियों के दिन थे। छुट्टी हुई तो रमेश ने अपनी मोपेड बाहर निकाली। वह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि पिछला टायर तो पंक्चर था। पंक्चर वहां नहीं लग सकता था। वह स्कूल के गेट पर अकेली खड़ी थी। अकस्मात सरपंच गुरतेज सिंह वहां से गुजरा तो रमेश को परेशान देखकर रूक गया। उसने लूना का पिछला टायर खोला व कार में रख लिया। फिर उसने रमेश को कार में बैठने को कहा। रमेश अब पहले से कम सहमी व कुछ कम घबराई। वह रमेश को घर छोड़ आया व दो घंटे के पश्चात् रमेश की लूना, सरपंच का नौकर रमेश के घर छोड़ गया।

इस प्रकार रमेश के दिल में सरपंच के लिए पूर्ण विश्वास व मान-सम्मान का स्थान बन चुका था। वह कभी कभी स्वयं को कमजोर महसूस करती। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वयं ही धीरे-धीरे सरपंच की ओर आकर्षित क्यों हो रही थी।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परन्तु वह तो कृष्ण की राधा थी, कृष्ण कौशिक की रमेश कुमारी थी। उस पर किसी अन्य का हक न था। सरपंच भी दो-तीन दिनों के पश्चात् ही स्कूल में आकर बैठ जाता। वास्तव में वह भी रमेश की ओर आकर्षित हो गया था। उसके दो बच्चे उसी स्कूल में पढ़ते थे। वह अकसर बच्चों की पढ़ाई पूछने के बहाने भी वहां आ जाता। एक बार उसे रमेश पटियाला में माल रोड पर मिली। उसने कार रोक कर रमेश को होटल में चाय या कॉफी पीने के लिए आमन्त्रित किया। परन्तु रमेश ने ''नो थैंक्स'' कह कर अपनी विवशता जताई। एक बार तो वह सरपंच के साथ ग्रीन होटल में ठंडा पीने के लिए चली ही गई। घर पहुँचकर रमेश स्वयं को कोसने लगी कि उसने यह अच्छा नहीं किया। उसे स्वयं अपने दिल को अपने काबू में रखना चाहिए था। उस पर मात्र कृष्ण का ही अधिकार है। वैसे उसका पति कृष्ण बड़े दिल वाला व मज़ाकिया स्वभाव वाला व्यक्ति था। वह शक्की स्वभाव वाला नहीं था। एक दिन उसने हँसते-हँसते रमेश से पूछा, ''सरपंच की बहुत तारीफ करती हो। कहीं कोई चक्कर तो नहीं।'' और साथ ही मुस्कुराने लगा। रमेश ने माथे पर त्यौरियां डालते हुए कहा, ''यदि ऐसी ही बात है तो मैं सरपंच से कभी भी बात नहीं करूँगी।'' कृष्ण ने हँसते हुए कहा, ''पगली कहीं की, इंसान का दिल साफ होना चाहिए।'' रमेश को उसी गाँव के स्कूल में लगे हुए चार वर्ष से अधिक समय हो चुका था। उसका दिल गांव में इतना लगा हुआ था कि वह तबादला ही नहीं करवाना चाहती थी। जब रमेश की स्कूल से छुट्टियां पड़तीं तो कृष्ण भी कुछ दिनों की छुट्टी लेकर उसे बाहर घुमाने ले जाता था।

जब रमेश अपने पति के साथ बाहर घूमकर वापस आती तो अपने साथ वाली स्कूल की सभी अध्यापिकाओं को अपने प्यार व रोमांस के किस्से बे-धड़क व बे-झिझक होकर सुनाती। उसकी बातें सुनकर उसके साथ वाली सभी अध्यापिकाएं उससे थोड़ी-बहुत ईर्ष्या करतीं। रमेश बहुत बिंदास थी वह अपने पति के साथ बिताये जिस्मानी संबंधों की आप बीती अपनी सहेलियों को सुना देती। जब इस बार वह मंसूरी से वापस लौटे तो रमेश गर्भवती थी। अब वह दूसरे बच्चे को जन्म देने वाली थी। जब एक दिन सरपंच वहां आया तो रमेश की साथी अध्यापिकाओं ने शरारती अंदाज से सरपंच को बताया, ''रमेश मंसूरी से तोहफा लेकर आई है, परन्तु आपके लिए नहीं, अपने लिए।'' सरपंच की समझ में जब बात आई तो उसने हँसते
© Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हुए कहा... "तोहफों के तो हम भी ढेर लगा दें यदि हमारे साथ कोई चले।" रमेश मन ही मन में मुस्कुरा रही थी परन्तु मन के भाव चेहरे पर झलकने नहीं दिए। एक दो बार रमेश को सरपंच ने घर पर अकेले ही आमन्त्रित किया था, परन्तु वह नहीं गई। आमन्त्रण का उत्तर वह मात्र मुस्कुराहट में ही देती व हँसते-हँसते 'नहीं' में गर्दन हिला देती। सरपंच गुरतेज सिंह शांत प्रवृत्ति व सहज प्रकृति वाला नौजवान था। इसी कारणवश रमेश उसे दिल ही दिल में कुछ कुछ चाहने लगी थी। परन्तु जब सामाजिक रीति-रिवाजों के विषय में सोचती तो अपने इन सोचे नाजायज संबंधों के विषय में स्वयं को कोसती।

आठ-नौ माह पश्चात् रमेश ने तीन माह की मैटरनिटी लीव ले ली थी। पहली बेटी करीब चार वर्ष की हो चली थी। उसके पति ने शहर के प्रसिद्ध नर्सिंग होम में एक अलग कमरा रमेश के लिए लिया था। जब उसे प्रसूति-पीड़ा आरम्भ हुई तो उसका पति वहीं था। अन्य कोई न आ सका था। सांयकाल पांच बजे उसने एक गोल- मटोल व गुलगुले से बेटे को जन्म दिया। उसका भार आठ पौंड से भी अधिक था। उसके पति ने खुशी में नर्सों को सौ-सौ के नोट बाँटे। इसी खुशी में उसने दो-चार पेग भी पी लिए थे। रमेश ने हँसते हुए पूछा कि नर्सों को तो सौ-सौ के नोट बाँट रहे हो, परन्तु मेरे लिए? कृष्ण कौशिक ने भरा-पूरा पर्स रमेश के हवाले कर दिया जिसमें पांच-पांच सौ के बाईस नोट थे। फिर कहने लगा, "जो तुम्हारी इच्छा हो, वही करो।"

कृष्ण अपनी बेटी को अपने मित्र के घर पर छोड़कर आया था। उसे रात्रि में अस्पताल में ही सोना था।

रमेश का अंग-अंग हिला हुआ था। शरीर दर्द कर रहा था परन्तु बेटा होने की खुशी में दर्द का एहसास कम था। डाक्टर ने उसे चंद दवाएं दीं और वह बेटे को साथ में सटाकर सो गई थी। उसका पति उसी कमरे में दूसरी दीवार से सटे दूसरे बेड पर लेटा हुआ था। वह रात्रि दस बजे तक जागता रहा। एक शोख़ हसीन नर्स अंदर आई व उसने रमेश का हाल-चाल पूछा। रमेश को गहरी निद्रा में देखकर जब वह जाने लगी तो कृष्ण ने शरारती ढंग में कहा, "हमारा हाल तो पूछ लो।" नर्स का नाम हरजीत था, वह मुस्कुराते हुए बोली, "आपका हाल-चाल भी अभी पूछती हूँ।" कहकर वह चली गई। करीब ग्यारह बजे वह नर्स दुबारा अपनी डयूटी अनुसार रमेश
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को देखने आई। रमेश के चेहरे पर थकान थी और वह गहरी निद्रा में सोई पड़ी थी। कृष्ण अभी भी जाग रहा था। उसने कहा, ''सोये हुए का बहुत ध्यान रखते हो, जाग रहे की भी नब्ज देख लो।'' बेटा होने की खुशी में इस नर्स को कृष्ण ने सौ रुपये दिये थे। हरजीत कृष्ण के बेड के पास में खड़ी हो गई और बोली, ''बहुत कंजूस हो, एक सौ के नोट से ही काम चला लिया।'' कृष्ण उसका इशारा समझ गया, उसने पैंट की जेब में से पाँच-पाँच सौ के दो नोट निकाले और नर्स की ओर कर दिए। नर्स ने दोनों नोट लेकर अपने ब्लाऊज में डाल लिए। जब नर्स जाने लगी तो कृष्ण ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया। नर्स ने भी इंकार न किया। कृष्ण ने उठकर दरवाजे की चिटकनी लगा ली। रमेश गहरी निद्रा में थी व साथ ही उसका बेटा। कृष्ण को कुछ तो शराब की मदहोशी व कुछ-कुछ शारीरिक थकावट हो गई थी। दोनों को अर्ध-नग्न अवस्था में ही निद्रा ने आ घेरा।

अकस्मात् बच्चे के हिलने से रमेश की नींद खुल गई। जब उसने अपने पति व नर्स को अर्ध-नग्न अवस्था में देखा तो उसकी सांस फूलने लगी। परन्तु उसने शोर मचाना उचित न समझा। उसने बच्चे को दूध पिलाया, पलकें बंद करके वह सोचने लगी, ''मैंने कभी स्वप्न में भी कृष्ण के बारे में ऐसा नहीं सोचा था। लोग तरह-तरह की बातें करते। इसका मतलब यह पहले भी अन्य स्थानों पर ऐसा कुछ करता होगा।'' उसने स्वयं पर काबू रखा व प्रातःकाल चार बजे तक जागती रही। करीब उसी समय नर्स की नींद खुली, उसने अपनी ड्रैस ठीक की। फिर रमेश की ओर देखा। उसने सोचा कि रमेश अभी भी सोयी हुई है। वह निश्चिंत होकर बाहर चली गई। प्रातः छः बजे रमेश का पति उठा और उसके लिए चाय व टोस्ट ले आया। उसने रमेश को जगाया व मुस्कुराते हुए 'गुड-मार्निंग' कहा। रमेश ने रात्रि की घटना के बारे में कृष्ण को बिल्कुल भी एहसास न होने दिया।

कुछ दिनों पश्चात् बेटे की छटी की गई, दोस्त-मित्र और रिश्तेदार बुलाये गये। रमेश के कहने पर सरपंच गुरतेज सिंह को भी आमन्त्रित किया गया। सरपंच रमेश के बेटे के लिए तीन-चार हजार रुपये के खिलौने लेकर आया। रमेश ने सरपंच को अपने बेडरूम में बुलाकर उसका विशेष स्वागत किया। कृष्ण अपने मित्रों में मशगूल था। रमेश ने सरपंच से कहा कि वह पुरूषों की पार्टी में शामिल हो सकता है। व्हिस्की की पार्टी चल रही थी। परन्तु उसने बहाना बनाया कि उसने कुछ समय
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए [illegible] करना चाहता था।

जब बेटा करीब तीन माह का हो गया तो रमेश पहली बार अपने स्कूल पहुंची। वह अपनी सहेलियों की खातिर मिठाईयों के डिब्बे ले गई थी। परन्तु सरपंच गुरतेज के लिए मिठाई के चार विशेष डिब्बे उसने तैयार करवाये थे। रमेश ने सरपंच के बच्चों से सरपंच के विषय में पूछना चाहा, परन्तु उस दिन सरपंच के दोनों बच्चे स्कूल पढ़ने नहीं आये थे। इसी कारण रमेश ने सरपंच के घर स्वयं जाकर मिठाई देने का निर्णय लिया ओर साथ की अध्यापिकाओं को कहा कि वह अभी आई। वह अकेली ही लूना पर सवार होकर सरपंच के घर की ओर चल पड़ी।

जब रमेश ने सरपंच के घर में कदम रखा तो सरपंच ने उसका स्वागत किया। वह उसे सुसज्जित ड्राईंगरूम में ले गया। उसका ड्राईंगरूम शहर के किसी रईस के ड्राईंगरूम से कम नहीं था। रमेश ने उसे मिठाई के डिब्बे दिये व सोफे के एक कोने पर बैठ गई। जब रमेश ने बच्चों और सरपंच की पत्नी के विषय में पूछा तो उसने उत्तर दिया कि, "वह कल ही ननिहाल गये हैं।" नौकर भी खेत गये हुए थे। इसी कारण सरपंच स्वयं ही रमेश के लिए दूध में पत्ती डालकर ले आया था। रमेश बातों में इस तरह उलझी कि स्कूल जाना ही भूल गई। रमेश ने पूछा, "आपने बेटे की छटी पर व्हिस्की क्यों नहीं पी।" सरपंच हँसा और बोला, "काके के जन्म की खुशी आज मना लेते हैं।" रंमेश मुस्कुराई जिससे सरपंच को यह एहसास हो गया कि उसे कोई एतराज नहीं था। सरपंच ने फ्रिज में से अपने लिए व्हिस्की निकाली और रमेश के लिए ड्राई-फ्रूट। पेग लगाने के पश्चात् सरपंच कुर्सी से उठकर रमेश के साथ आकर बैठ गया। रमेश ने कोई एतराज न किया, अपितु मुस्कुराने लगी। उसने स्वयं को सरपंच के आगे ऐसे पेश कर दिया जैसे नर्स ने स्वयं को कृष्ण कौशिक को समर्पित कर दिया था। एक घंटे के पश्चात् रमेश ने स्वयं को संभाला व बिखरे बालों को ड्रेसिंग टेबल के समक्ष खड़े होकर ठीक किया। परफ्यूम छिड़की, पर्स में से लिपस्टिक निकालकर होंठ ठीक किए और बिना किसी मानसिक तनाव के वह बाहर आ गई थी। रमेश को लगा कि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। उसकी अंतरात्मा इस सभी के लिए स्वयं को दोषी मानने को तैयार नहीं थी।❑

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पौना आदमी

मैं पंजाबी की एक साधारण व गुमनाम सी कहानीकार हूँ। मेरी चार कहानियां छप चुकी हैं जो मैंने शादी से पहले लिखीं थीं। शादी के पूर्व मैं एक साधारण व मध्यम श्रेणी वाले जिमींदार परिवार से संबंध रखती थी। मेरी माँ का देहांत तब हो गया था जब मैं तीन वर्ष की थी और मेरा भाई उस समय पांच वर्ष का था। पिता जी को दूसरी शादी करनी पड़ी अथवा करवानी पड़ी। पंजाबी जाटों अथवा जट्ट-समाज के विषय पर ही मैंने ये कहानियां लिखी क्योंकि मैं जट्ट-परिवार में जन्मी और बड़ी हुई। तीन कहानियों का संबंध तो हमारे निकटवर्ती रिश्तेदारों से था व चौथी कहानी मेरे स्वयं के जीवन से संबंधित थी। प्रथम कहानी एक कम्यूनिस्ट जिमींदार नेता की थी जो स्वयं को प्रगतिशील व आधुनिक कहलवाता है, परन्तु जब उसकी अपनी प्रोफेसर बेटी एक छोटी जाति (छींबे) के प्रोफेसर को अपना जीवन साथी बनाने का फैसला करती है तो वह किसी अन्य व्यक्ति के हाथों उन दोनों की हत्या करवा देता है और उस समय स्वयं विदेश चला जाता है। द्वितीय कहानी भी पंजाबी जाटों से जुड़ी हुई है जिसमें एक जट्ट परिवार की सहनशीलता की सीमा उस समय खत्म हो जाती है जब उनकी अपनी बेटी एक आई.ए.एस. रामदासीये (चमार) सिक्ख

) Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अफसर के साथ शादी रचा लेती है। लड़की के भाई पहले तो गुस्सा पी जाते हैं परन्तु अवसर मिलने पर बाद में अपना गुस्सा अपने बहनोई को मार कर निकालते हैं व उनकी बहन भी स्वयं पिस्तौल से आत्महत्या कर लेती है। तृतीय कहानी एक जट्ट परिवार की ज़िद्दी लड़की की है जो अपने विजातीय प्रेमी के लिए आत्महत्या कर लेती है परन्तु अपने माता-पिता द्वारा चुने गये वर को स्वीकार नहीं करती। चौथी कहानी मेरी स्वयं की जिंदगी से जुड़ी हुई है। जब मैंने बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया तो मुझे खत्री जाति के एक सिक्ख लड़के से बे-इन्तहा मुहब्बत हो गई। वह हमारे पड़ोस में ही रहता था और अंग्रेज़ी के प्रोफेसर का बेटा था। खत्री सिक्खों को मालवा में अकसर भापे कहा जाता है। परन्तु मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह बी.एस.सी. कर रहा था। हम छिपते-छिपाते अपने-अपने प्यार का इज़हार कर चुके थे। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। उसकी माँ स्कूल में साईंस की अध्यापिका थी। एक दिन उसने मुझे घर पर बुलाया व बताया कि आज वह अकेला है। मैं उसके लिए कुछ भी करने को तैयार थी। मैं मानसिक व शारीरिक तौर पर उसे अपना सर्वस्व समर्पित करने को तैयार हो कर वहां गई थी। उसके घर पहुंची और पन्द्रह मिनट के पश्चात् ही उसकी माँ निश्चित समय से दो घंटे पहले आ धमकी और शेरनी की तरह उस पर टूट पड़ी। मैं घर वापिस आ गई। अगली रोज़ उसे उसके चाचा के पास चंडीगढ़ भेज दिया गया। उसके माता-पिता भी अपना तबादला करवाकर वह कस्बा छोड़ गये। उसने मुझे एक बार भी फोन न किया और न ही मेरा हाल पूछा। इसी कारणवश मुझे गैर-जट्ट लोगों से नफरत सी हो गई है। विशेषत: खत्री सिक्खों के साथ। मैं उन्हें डरपोक व बुज़दिल समझने लगी। फिर कभी-कभी सोचती कि शायद उन्होंने ऐसा इसलिए किया चूंकि वे जट्ट लोगों से किसी भी प्रकार का झगड़ा मोल नहीं लेना चाहते थे और दूसरी बात वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी।... पिछले दिनों किसी ने बताया कि वह प्रोफेसर का बेटा चंडीगढ़ में आई.ए.एस. अफसर बन गया है। परन्तु मुझे उससे आज भी नफरत है और उम्र भर रहेगी। स्त्री प्यार करती है अथवा नफरत, इसके बीच का रास्ता नहीं चुनती।

यह उपरोक्त चारों कहानियां छपीं व मुझे इनकी तारीफ में कई पत्र भी मिले। परन्तु बी.ए. करने के पश्चात् मेरी शादी कर दी गई। अब मैं ऐसे परिवार में शामिल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हूँ जहां लिखने पढ़ने का कभी ध्यान ही नहीं रहता। मैं ये पाँचवी कहानी किस लिए लिख रही हूँ ? क्योंकि शायद मैं अपने दिल का गुब्बार किसी के सामने नहीं निकाल सकती। माँ सौतेली है, भाभी को भी मुझसे कोई खास लगाव नहीं है। एक-दो अंतरंग-सहेलियाँ थीं। उनकी भी शादी काफी दूर हो चुकी है। बहन कोई मेरी थी ही नहीं। पाँचवी कहानी लिखकर मैं अपने मन का बोझ हल्का करना चाहती हूँ। हां, परन्तु यह कहानी छपवाने हेतु नहीं, मात्र स्वयं के पढ़ने के लिए है। शायद मेरी मृत्यु के पश्चात् भी यह कहानी न छप पाये। वैसे मैंने इस कहानी के पात्रों के नाम बदल दिये हैं।

मेरे पहले प्यार की असफलता के पश्चात् मेरे दिल ने सदा के लिए नो-एंट्री का बोर्ड लगा दिया। बी.ए. में मैं अच्छे अंकों से कालेज में प्रथम रही। मैं आई.ए.एस., पी.सी.एस. अथवा जज बनने के ख्वाब संजोने लगी।

एकाएक मुझे मेरी सौतेली मां, मेरे पिता, मेरे मामा व उनके दामाद ने आ घेरा। मेरे लिए बहुत बड़े घर से रिश्ता लेकर आए थे। साढ़े सात सौ बीघे ज़मीन के मालिक, एक सिनेमा, शहर में एक कोल्ड स्टोर, एक फार्म हाऊस, दो कोठियाँ एक साथ, एक मार्किट जिसमें तीस दुकानें। मैं सुनकर आश्चर्यचकित रह गई कि वह रिश्ता हमारे आर्थिक स्तर से काफी ऊँचा था। फिर मुझे बताया गया कि सरदार साहब चालीस बयालीस वर्षीय हैं, दुहाजू। पहली पत्नी ने चार बेटियों को जन्म दिया। परन्तु उनमें से एक भी न बच पाई। मुझसे आयु में बीस वर्ष बड़े। जट्ट जिमींदार लोग रिश्ता करते समय ज़मीन-जायदाद देखते हैं, न ही कोई मेल व न ही स्वास्थ्य अथवा कुछ और। मेरी एक सुन्दर-सुशील सहेली की शादी एक लंगड़ाकर चलने वाले तीस वर्षीय वर से कर दी गई क्योंकि उसके हिस्से तीन सौ बीघा ज़मीन आती थी। मेरी मर्जी की किसे चिन्ता थी, यह तो मात्र औपचारिकता थी। मुझे बिना बताये ही मेरे होने वाले पति को मैं दिखा दी गई। उनकी ओर से 'हां' हो गई। मेरी सौतेली माँ मुझे भाग्यशाली बता रही थी, ''अरी दीपे, तूने तो पूर्व जन्म में मोती दान किए होंगे जो घर बैठे-बिठाये इतना सम्मानीय व खाता-पीता घराना मिल रहा है।'' भाई मुझसे दो वर्ष बड़ा था, परन्तु वह बहुत समझदार न था। शेष लोगों की तो बात ही छोड़ो, मेरी जिह्वा तो जैसे तालू के साथ ही चिपक गई थी। न ही हाँ कह सकी और न ही ना। फिर मेरे भाई ने सवाल उठाया, ''यदि उसकी पहली पत्नी ने कानून का दरवाज़ा खटखटाया

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो हम सभी अंदर होंगे।"

"बेटा तू अभी बच्चा है। हमने कच्ची गोलियां नहीं खेलीं। सरदार ने अपनी पहली पत्नी से मंजूरी लिए हुए अस्टाम पेपर हमें दिखाये हैं। उसके साले भी उससे रजामंद है," मेरे दूर के बहनोई ने बताया था।

बस, फिर क्या था शादी की तैयारियां शुरू हो गईं। सौतेली माँ खुश कि शादी पर अधिक खर्च नहीं करना पड़ेगा क्योंकि मेरे होने वाले पति ने बिचोले को बता दिया था कि लड़की मात्र तीन कपड़ों में ही लानी है और रिसैप्शन चंडीगढ़ के फाइव स्टार होटल माऊंटव्यू में रखी गई थी जिस पर सारा खर्च मेरे होने वाले पति की ओर से था। मैंने एक बार अपनी माँ को स्मरण किया, "बेबे, यदि तू आज ज़िंदा होती तो अपने मन का गुब्बार तेरे सामने ज़रूर निकाल लेती।" मैं न हँसी न ही रोई। बस शादी के अवसर पर ग्रामोफोन पर बजते विवाह के रिकार्ड सुनने पड़े। लोगों के समझाने पर चंडीगढ़ की रिसैप्शन में पति के संग बैठी बिस्कुटी मुस्कुराहट बिखेरती रही। मुझे हीरे-जवाहरात से लाद दिया गया। मेरी सौतन ने भरी आहों से दरवाजे पर तेल बिखेर कर हमारा स्वागत किया। वह चालीस वर्ष की आयु में पचास से अधिक की लग रही थी। मुझे उससे कोई ईर्ष्या नहीं थी अपितु सहानुभूति थी। मैंने सोचा कि यदि वह कोई वारिस पैदा कर देती तो यह सब कुछ तो होना ही नहीं था।

निहालसिंहवाला से जगराओं का सफर-मायके घर से ससुराल घर का सफट था। न कोई कशिश, न चाव, न उमंग, न ख्वाहिश। मेरे जगराओं पहुंचने से पूर्व साथ में ही दूसरी कोठी बना दी गई थी। जीवन के सारे ऐशो-आराम, वहां मौजूद थे जिनकी मैंने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी। प्रत्येक कमरे में ए.सी., बड़े रंगीन टी.वी., फ्रिज, मखमली सोफे, कीमती डबल-बेड, कश्मीरी गलीचे। बाथरूम ऐसे कि उन्हें गन्दा करने को दिल न चाहे। चंडीगढ़ की रिसैप्शन के पश्चात् सभी रिश्तेदार धीरे-धीरे अपने-अपने घरों को विदा होने लगे। मुझे प्रथम तोहफा उनसे तब मिला, जब मेरे बेरोजगार भाई को पुलिस में एस.एच.ओ. की पक्की नौकरी दिलवा दी गई। लगभग सात दिनों के पश्चात् मैं नहाकर बाल सुखाने हेतु ड्राइंग रूम के बाहर वाले बरामदे में आकर खड़ी हो गई। हमारा माली यू.पी. का भइया था-करीब साठ वर्ष का। कोठी में ही रहने का स्थान मिला हुआ था। उसका बीस वर्षीय भानजा आया हुआ था। वह टिकटिकी बांधे मुझे देखने लगा। मेरे काले, लम्बे व घने बाल

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे कूल्हों से भी नीचे तक झरने के माफिक लटके हुए थे व विदेशी शैंपू और जवानी की खुशबू शायद उस तक पहुंच गई थी। मेरे पति हरवंत सिंह पता नहीं कब मेरे पीछे आकर खड़े हो गये। मुझे तब पता चला जब बंदूक में से गोली चली व माली के भानजे के सिर के ऊपर से गुजरती गई व एक कबूतरी उसके पैरों में आ कर गिर गई। माली के भानजे का रंग एकदम सफेद व चेहरा पीला पड़ गया, जैसे उसमें श्वास ही न रहे हों। एक पल के लिये तो मैं भी डर गई, परन्तु दूसरे ही पल फिल्मी मुस्कुराहट से पतिदेव का अभिनंदन किया। वह जख्मी और तड़पती कबूतरी अभी भी मेरे दिमाग में से नहीं निकलती। माली के भानजे ने तो उसी रात वापसी की गाड़ी पकड़ ली। शायद उसने दिल्ली पार करने के बाद ही पानी पिया होगा।

सरदार हरवंत सिंह शेरपुरी मुझे हनीमून पर नैनीताल, मंसूरी, शिमला, फिर गोवा, कन्याकुमारी, ऊटी, कोडेकनाल, बंगलौर, मुंबई इत्यादि ले गये। वहां पर मुझे साड़ी बांधनी व जींन पहनना सिखा दिया गया। प्रतिदिन नया सूट, नई ड्रैस। रात्रि में नई नाईट-ड्रैस। जो सूट एक बार पहनना, उसकी बारी तीन-चार माह पश्चात् आनी थी। कभी-कभी सोचती, कोई बुरी बात नहीं। प्यार करते समय भी पतिदेव कोई कमी न छोड़ते। शरीर का एक-एक अंग उनको पहचानने लगा था। प्रतीत होता सेज संतुष्टि का उन्हें काफी तजुर्बा है। वह सेज-संतुष्टि देने का प्रयत्न आवश्यकता से अधिक ही करते। वी.सी.आर. पर उन्होंने मुझे ऐसी-ऐसी अंग्रेजी फिल्में दिखाईं कि कई बार तो मैं शर्म से पानी-पानी हो जाती व कंबल में मुंह छिपा लेती।

हम एक महीने से अधिक हनीमून पर रहे। ज़मीन को तीन फार्म हाऊस में बांटा गया था व तीनों पर तजुर्बेकार व पढ़े-लिखे मैनेजर व स्टाफ था। सत्रह एकड़ के किन्नू व अंगूरों के बाग थे, सब्जियों की बहुतायत रहती। खेत में काम करने वाले तीतर व बटेर मारकर दे जाते अथवा सरदार साहब स्वयं शिकार करके ले आते। उनकी निशानेबाजी तो मैंने शादी के एक सप्ताह पश्चात् ही देख ली थी। जख्मी कबूतरी मेरे दिमाग के किसी कोने में पड़ी बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले रही थी।

शुरू-शुरू में तो मुझे तीतर, बटेर का मीट न भाता, परन्तु फिर आदी सी हो गई। जब वह कभी खेतों पर जाते अथवा बिजनैस के सिलसिले में बाहर जाते तो मैं अपनी सौतन सुखविन्दर कौर को बुला लेती। मैं उन्हें बहन जी कहकर बुलाती व

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उन्हें एहसास हो चुका था कि मेरे दिल में उनके प्रति कोई द्वेष की भावना नहीं थी। वह भी मुझे अपनी छोटी बहन समझने लगी थी। मैंने उन्हें बताया कि शादी के पश्चात् मात्र एक बार माहवारी आई है व अब दिन चढ़े हुए हैं। यह भेद मैंने सर्वप्रथम बहन जी को ही बताया। वह बहुत प्रसन्न हुए व मारे खुशी के उनकी आँखों से आँसू छलकने लगे। उन्होंने मुझे कस कर बाहों के घेरे में ले लिया व खुशखबरी सरदार जी को उन्होंने स्वयं ही सुनाई।

यह खुशखबरी सुनकर मेरे पतिदेव मारे खुशी के झूमने लगे। स्कॉच, व्हिस्की की बोतलें खुल गईं। ब्रायलरों व तीतर-बटेरों की तो शामत सी आ गई। दूर-दूर से दोस्त-मित्र व रिश्तेदार बधाई देने के लिए आने लगे। इसी खुशी में सरदार जी ने मुझे दो लाख रुपये का नैकलस लाकर दिया। वह वारिस की प्रतीक्षा करने लगे। मुझे गर्भ ठहरने के चालीस दिनों के पश्चात् उन्होंने शराब, माँस-मीट, अंडा सभी कुछ त्याग दिया। शायद किसी बुजुर्ग अथवा ज्योतिषी ने बताया था कि वह बच्चा होने तक शराब, मांस-मीट अथवा अंडे से परहेज करें। मेरे स्वास्थ्य का भी पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता। गायनी विशेषज्ञ डाक्टर प्रति सप्ताह आती। आवश्यक दवाओं, व्यायाम व डाइट के विषय में बताकर जाती। किसी ने मश्वरा दिया कि टैस्ट करवा लो। परन्तु सरदार जी बोले जो भी होगा, उसका स्वागत है।

काफी इंतजार के पश्चात् मुझे लुधियाना के डी.एम.सी. में दाखिल करवा दिया गया। आठ-पौंड की गोरी चिट्टी बेटी ने जन्म लिया। मिठाईयाँ बांटी गई। परन्तु इसके पश्चात् सरदार जी कभी-कभी उदास-गमगीन से दिखाई पड़ते। जब बच्ची दो वर्ष की हो गई तो उन्हें कुछ राहत मिली। क्योंकि बड़े बहन जी के चार बेटियाँ हुई थीं व चारों में से एक भी एक वर्ष से अधिक समय तक जीवित न रही थी। कोई दो माह की कोई छः माह व किसी ने आठ-नौ माह मुश्किल से गुजारे थे। कहते हैं कि बहन जी को कुछ बीमारी थी। बच्चे बचते ही नहीं थे। बहुत उपचार करवाने के पश्चात् बच्चेदानी निकलवानी पड़ी। तब ही उनकी जान बच पाई। इसी वजह से वह सरदार जी की दूसरी शादी के लिए रज़ामंद हुई थी।

बेटी सरनदीप जब दो वर्षीय हो गई तब सरदार जी ने राहत की साँस ली व वह मेरे नज़दीक आने लगे। इन दो वर्षों में कभी भी यह ध्यान ही न दिया कि पति की क्या आवश्यकताएं हैं। बस, सरनदीप की देखभाल में ही व्यस्त रहती। यदि कभी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह समीप आए भी तो उस समय बच्ची का स्वास्थ्य ठीक न होता अथवा माहवारी आई होती। कभी बच्ची को संभालने में व्यस्त रहना, कभी कोई धार्मिक पुस्तक अथवा मैगज़ीन पढ़ने बैठ जाना अथवा समाचार पत्र। घायल कबूतरी हर समय मेरे मस्तिष्क में रहती। मायके जाने का मन न करता। भइया स्वयं ही जीप चलाकर मिलने चले आते। छः महीने पूर्व उसकी शादी पर अवश्य हम सभी गये थे।

हाँ, तो मैं बता रही थी कि सरनदीप के दो-वर्ष की होने के पश्चात् सरदार जी ने दुबारा मेरा हाल-चाल पूछना शुरू किया। सरनदीप बहन जी के साथ काफी घुल-मिल गई थी। बड़े बहन जी अकसर उसे अपने साथ अपने कमरे में ले जाते व वहीं पर सुला लेते। उसकी मालिश, फीड, कपड़ों इत्यादि का भी ध्यान रखते। सरदार जी फिर से रोमांटिक होने लगे। मैं स्वयं को ग्रामोफोन की प्लेट के माफिक समझने लगी, ज्यों सुई रखी त्यों ही गाना-बजना शुरू। सुई हटाई तो प्लेट की ही तरह एक डिब्बे में बंद। सरनदीप के तीन वर्ष पूरे होने पर मैं फिर से गर्भवती हो गई। न ही अत्यधिक प्रसन्नता व न ही परेशानी। फिर तो मैंने सरदार जी को वारिस देने की ठान ली। सरदार जी ने मन्नतें मान-मान कर मुश्किल से नौ माह काटे। दूसरी बार सरनदीप की बहन मनदीप आ गई। इस बार कोई भी जश्न न हुआ। सरदार जी अब अत्यन्त उदास रहने लगे थे। मुझे उन से सहानुभूति सी होनी शुरू हो गई, मुहब्बत तो कभी हुई नहीं थी। बस, किसी समझौते के तहत जिंदगी गुज़र रही थी।

सरनदीप को चार वर्ष की आयु में बड़ू साहब अकाल अकादमी हिमाचल में डाल दिया गया। मनदीप दो वर्ष की हो गई थी। अब भी सरदार जी घर आते, कुछ सोच-विचारों में, गिनतियों-मिनतियों में मग्न होते। पैसे की कोई कमी नहीं थी, मन पर कोई बोझ सा लेकर घूमते रहते। मैंने एक-दो बार पूछने का प्रयत्न किया। रोमांटिक होने का भी नाटक किया। परन्तु वह रोमांटिक होने को तैयार ही न होते। जब कभी समीप आये तो देखा वह कंडोम का उपयोग कर रहे हैं हालांकि मनदीप अब ढाई वर्षीय हो गई थी। मैं इसकी वजह पूछते-पूछते रह जाती। मस्तिष्क में ज़ख्मी कबूतरी मुझे रोक देती। कोठी में ग्रामोफोन ही बजता प्रतीत होता।

मनदीप तीन वर्ष की हो चली थी व सरनदीप लगभग छः की हो गई थी। एक दिन सरदार जी कुछ विचारों में मग्न लगे। मैंने कारण पूछा कि किसी वस्तु की कमी है। वाहेगुरु के घर देर है परन्तु अंधेर नहीं। परन्तु वह अपने विचारों में ही मग्न

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रहते। कुछ दिनों पश्चात् उन्होंने आकर मुझे बताया, "कुलदीप, हमने चंडीगढ़ एक कोठी ली है-डेढ करोड़ की। क्यों न हम वहां पर जाकर रहें। फिर सरनदीप भी निकट हो जायेगी।" मैंने कहा, "मुझे तो कोई एतराज नहीं। फिर बहन जी अकेले रह जायेंगे।"

"यहां पर नौकर-चाकर तो हैं ही। फिर मैंने मोगे वाली बुआ जी को भी कह दिया है, वह उनके पास आकर रहेंगे।"

जब बहन जी को बताया गया तो वह बोले, "जैसे तुम्हारा दिल चाहे। यदि मनदीप यहीं पर पढ़ती रहे तो मेरा दिल लगा रहेगा।"

सरदार जी को जैसे बहन जी पर दया सी आ गई और वह मनदीप को जगराओं छोड़ने के लिए तैयार हो गये। मैंने थोड़ा सा मना किया तो बोले, "चंडीगढ़ यहां से कितनी दूर है; मात्र दो घंटे तो लगते हैं। मरसिडी गाड़ी हमारे पास है। सुखो (बहन जी का नाम) के पास कुआलीज़ रहेगी। जब दिल चाहेगा तब मनदीप को साथ लेकर आ जाएगी।"

मेरा क्या था, मैं ग्रामोफोन के रिकार्ड की भांति वही गाना गाने के लिए तैयार थी जो सरदार जी को पसन्द हो।

चंडीगढ़ की कोठी देखकर आँखें खुली सी ही रह गई। कमाल की कोठी। खुले-खुले लॉन, पाँच बेडरूम, दो किचन, छः बाथरूम-कम-टॉयलट, दो-दो टॉयलट शावर वाले। एक शेडिड स्विमिंग पूल व एक बड़ा सा ड्राईंग-रूम, एक गैस्ट-रूम। मेरे आने से पहले ही सरदार जी ने सारी ऐशो-आराम की वस्तुएं इकट्ठी कर रखी थीं। कश्मीरी गलीचे, महंगी पेंटिग्ज़, विदेशी परफ्यूम। इंटीरियर डैकोरेशन लाजबाव, किसी विशेष माहिर से करवाई हुई प्रतीत होती थी।

परन्तु दोनों बेटियों के न होने के कारण खाली-खाली सा लगता। सरदार जी कुछ रोमांटिक होने का नाटक करते दिखाई पड़े, परन्तु वह दिलो-दिमाग पर कोई बोझ सा ढोते लगते। सोचा, शायद तुम्हें यहां पर इसलिए लाये हैं कि उन्हें तुम से एक वारिस ही मिल जाये, कुछ नई जगह, नया माहौल। बंदूक व रिवाल्वर अंदर वाले स्टोर में रख दिये गये। एक बुजुर्ग नेपाली कुक व एक बुजुर्ग माली पहले से ही सेवा में हाज़िर। साफ-सफाई के लिए दो नौकरानियां प्रातःकाल आतीं व सायंकाल चली जातीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरदार जी ने चंडीगढ़ आकर सबसे पहला काम किया कि उन्होंने बीस लाख रुपए खर्च करके दो क्लबों की मैम्बरशिप ली। गोल्फ क्लब की मैम्बरशिप के लिए पन्द्रह लाख अलग से खर्च किए। मेरे लिए दो लाख रुपए में एक वुमैन क्लब की मैम्बरशिप ली। सप्ताह में दो बार किट्टी पार्टियां। लगभग प्रतिदिन क्लबों में आना-जाना लगा रहता। सप्ताह में शनिवार सांयकाल बड़े-बड़े अफसरों, जजों, व्यापारियों, ज़मींदारों की पार्टी, कभी अपने घर तो कभी किसी और के। परन्तु चंडीगढ़ आकर सरदार जी जब भी कभी रोमांटिक होते तो कंडोम का ही प्रयोग करते। एक दिन मैंने तंग आकर गुस्से से बोल ही दिया, ''ये किस लिए?'' वह थोड़ा सा मुस्कुराए व कहने लगे, ''फिर कभी बताऊँगा।''

चंडीगढ़ आकर पहले मुझे वाईहन (लेडीज़ शराब) की आदत डाल दी गई क्योंकि क्लब की लगभग सभी स्त्रियां शराब पीतीं थी। पहले-पहले तो मैंने मना किया परन्तु कहने लगे, ''यदि तुम नहीं लोगी तो तुम्हें सभी अनकल्चरड समझेंगे।'' घर में फिर धीरे-धीरे वाईहन की जगह स्कॉच का पेग देने लग पड़े।

एक दिन उन्होंने पाँच-छः स्कॉच पेग लगा लिए व मुझे भी दो पेग पिला दिए। नेपाली को सोने के लिए कह दिया। फिर मुझे अपने सामने बिठा कर बोलना शुरू किया, ''मुझे तुमसे इस जमीन-जायदाद का वारिस लड़का चाहिए व वह भी जट्ट लड़का। वह तुम्हें मुझसे नहीं मिल सकता। मैं नौ लड़कियों को जन्म दे चुका हूँ।''

मैंने अपने दिमाग पर दबाव डालते हुए पूछा, ''नौ कैसे?''

''चार सुक्खो की जो गुज़र चुकी हैं व दो अपनी...।''

कुछ देर रूकने के पश्चात् लड़खड़ाती ज़ुबां में बोले, ''एक...एक सूखे दरिया समान मेजर की पत्नी को...व दूसरी एक लेडी डॉक्टर को जिसके डाक्टर पति के वीर्य में बच्चे पैदा करने के सपर्म नहीं थे। तीसरी एक बुढ्ढे खड़ूस एम.एल.ए. की नौजवान पत्नी। यह सभी कुछ हमारी शादी से पहले...।''

कुछ पलों के लिए मैं खामोश रही। सरदार जी ने मेरे लिए आधा पेग और बना दिया और मैं गटक गई।

''...परन्तु... यदि आपको वारिस चाहिए तो क्या, प्रतिदिन ये खेल क्या खेलते हो...गुब्बारे का।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
"तुम्हें बताया ना, तुम्हें मुझसे बेटियां ही मिल सकती हैं...मेरे...वीर्य में बेटे के सपर्म नहीं हैं।"

"यह आपका भ्रम है...मैं यह नहीं मानती। ...आपको वारिस अवश्य मिलेगा...अवश्य मिलेगा व वह भी आप ही से", मुझे भी कुछ कुछ चढ़ गई थी।

"नहीं कुलदीप, नहीं...मैं तुम्हें बेटा नहीं दे सकता। ...बेटा तुम्हें ही मैनेज करना पड़ेगा व वह भी जट्ट पुत्तर हो...। मैं तुम्हें इसलिए चंडीगढ़ लेकर आया हूँ। यह भेद तुम्हारे व मेरे बीच में ही रहे...। नहीं तो...तुम जानती हो...मुझे कबूतरी मारनी आती है...मेरी निशानेबाजी भी बहुत पक्की है।"

मैं घबरा गई...व मेरे दिमाग में ज़ख्मी कबूतरी वापिस जाग गई। ...मैंने सोचा यह जान-बूझ कर मेरी परीक्षा ले रहे हैं। वह मेरी परख करना चाहते हैं...मेरे चरित्र की परीक्षा ले रहे हैं।...कोई भी व्यक्ति ऐसा सहन नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी किसी अन्य का वीर्य लेकर उसके घर में बच्चे खिलाये...।

...परन्तु छः-सात पेग लगाने के पश्चात् भी वह पूरे-होशो-हवास में बातें करते हुए लगते। ...रात्रि में हम दोनों के मध्य कंडोम फिर से दीवार बन गया। मैंने उस दीवार को तोड़ने की बहुत कोशिश की, परन्तु नाकामयाब रही।

...तीन माह बीत गये...लगभग हर दूसरी-तीसरी रात उनका वही नाटक शुरू। 'मुझे वारिस चाहिए...इतना बड़ा शहर है...इतने क्लब...तुम्हें पूर्ण आज़ादी है...परन्तु...तुम उसे यह कोठी नहीं दिखाओगी...पैसा जितना चाहो खर्च करो...दिन के समय कहीं भी रहो...परन्तु रात्रि में आठ-नौ बजे घर अवश्य वापिस आना है।...मेरे बारे में किसी को कुछ भी मालूम नहीं होना चाहिये...समझी।'

मैं एक सप्ताह तक तो कोठी से बाहर ही न निकली। अपने स्वास्थ्य की गड़बड़ी का बहाना, लगाया...रात-दिन पूरा सप्ताह सोचती रही। ...कैसे करूँ? ...कहीं मेरी परीक्षा न ले रहे हों? ...नहीं-नहीं...यह आदमी अड़ गया है कि तुम किसी और से इसके लिए बेटे का वीर्य लेकर आओ...मुझे ऐसा लगा कि मैं ग्रामोफोन के रिकार्ड से बढ़कर कुछ भी नहीं रह गई थी।

अगले सप्ताह जब मैं क्लब जाने लगी यह जान बूझकर मुझे अकेले छोड़ देते व स्वयं किसी अन्य स्त्री अथवा पुरूष से बातें करने में लग जाते। मेरी मित्रता
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
शुगरफैड के डिप्टी एम.डी. के साथ हो गई जो लगभग चालीस वर्ष का था। इन्हें

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कोई एतराज़ नहीं था अपितु खुश थे कि मैं उन्हीं के कहे अनुसार चल रही थी। इन्हें पूर्ण तसल्ली थी कि वह जट्ट था। छः माह तक हम एक दूसरे से मिलते रहे, कभी किसी होटल में तो कभी किसी कोठी में।

मैं जब भी शाम को वापिस आती तो सरदार जी की नज़र सदैव मेरे पेट पर ही रहती। छः माह तक पराए पुरूष के साथ गुजारने के पश्चात् एक दिन मैंने पुरूष-मित्र से पूछा, ''क्या आपके पास कुछ भी नहीं है?'' मैंने अपने पेट की ओर इशारा किया।

''अच्छा...तो यह बात है। पर मैंने तो दो साल से आपरेशन करवा रखा है,'' वह हंसा और मुझे अपनी बाहों में कस लिया।

''छोड़ दो।...मुझे तो आपसे बच्चा चाहिए था...मैं अपने पति की इच्छा से ही यहां आई हूँ...हाँ परन्तु ये मत पूछना कि मेरा पति कौन है?''

''तो फिर इसका कोई प्रबंध कर देता हूँ।''

अगले दिन होटल में उसने अपने से छोटी आयु के एक पुरूष से मेरी जान-पहचान करवाई। मैंने पूछा, ''आपका नाम?''

'जे.पी. सिंह गिल।'

''गिल-असली या नकली।''

''यदि आप कहें तो पूरा पुश्तैनी ब्यौरा हरिद्वार से ले आऊँ।''

मैं ज़रा सा मुस्कुराई व बोली, ''अच्छा, तो फिर परसों यहीं पर मिलेंगे।''

तीन दिन में मैंने सारी छान बीन करवा ली थी कि वह असली गिल जट्ट था।

सभी खर्चे मैं स्वयं ही करती। होटल का बिल मैं देती। गिफ्ट अलग से लेकर जाती और क्या चाहिए था। ''मज़े भी और इनाम भी'', गिल साहब सोचते होंगे।

दो माह गिल साहब के साथ बिताये...फिर मुझे महसूस होने लगा कि मेरे पेट में हलचल सी होने लगी थी। परन्तु मैं पन्द्रह दिन और उस के साथ जाती रही। फिर मैंने सरदार जी को बताया-''लगता है, आपका कार्य पूरा हो चुका है। बाकी आपका भाग्य।''

चार माह पश्चात् अल्ट्रा साऊंड करवाया, ''दो बच्चे इकट्ठे एक लड़का व एक लड़की।''
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरदार जी तो खुश हो गये। वह मुझे अपने शहर वापिस ले आये। डेढ़ करोड़ रुपये की कोठी सवा करोड़ में बेच डाली। समय पर दोनों बच्चे स्वस्थ हुए। घर में इतनी खुशी मनाई गई कि शब्दों में ब्यान नहीं की जा सकती।

लगभग तीन माह पश्चात् गिल साहब हमारे शहर में पहुंचे व कोठी पहुंचकर डोर बैल की। सुरमई शाम ढल रही थी। अंधेरा छा रहा था। सरदार जी भी वहीं पर थे...। रात्रि का घोर अन्धेरा होने को था। मैंने उसे पहचान लिया। सरदार जी ने मुझसे पहले ही उसे पहचान लिया था। मुझे तो पता ही नहीं लगा कि वह कब से मेरी सी.आई.डी. करते रहे। उन्होंने बंदूक निकाली–निशाना दाग दिया व गिल की लाश सभी सबूतों के साथ नहर में बहा दी गई..., दस वर्ष पूर्व ज़ख्मी हुई कबूतरी मेरे दिमाग में फिर से जाग गई थी।

सरदार जी अगले दिन बंदूक साफ करते हुए बोले, ''साला तुख़मबाज़। इधर कोई नज़र उठाकर तो देखे।''

मुझे ऐसा लगा कि सरदार जी पौने आदमी से पूरा आदमी होने का प्रयत्न कर रहे थे। पौने आदमी की केंचुली उतार दी गई थी। कुछ माह पश्चात् जुड़वा में से बेटी को आलोप कर दिया गया था। रखा गया अथवा संभाला गया तो मात्र बेटा वारिस।

मुझे हमेशा एहसास सा होता रहता है कि कोठी के अन्दर ग्रामोफोन बज रहा है व गेट पर कबूतरी मरी पड़ी है।❑

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फाइव स्टार के बाहर खड़ा संतरी

यदि आपको भारत के मैट्रो शहर मुंबई के कोलाबा इलाके में जाने का अवसर मिले तो वहां जाकर थ्री स्टार, फोर स्टार, फाइव स्टार, सैवन स्टार होटलों की ओर जाओ तो आपको होटल के गेट पर पगड़ी बाँधे संतरी मिलेंगे जो बड़े अदब से आपके कार से उतरते ही, आपका अभिवादन करेंगे, आपकी कार की खिड़की खोलेंगे और सैल्यूट मारेंगे, फिर अदब से झुककर आपको होटल के अंदर जाने के लिए कहेंगे। वह ऐसे झुकेंगे जैसे एअर-इंडिया के पोस्टर का महाराजा 'झुक' रहा होता है। जब आप होटल से बाहर आने लगोगे तब फिर होटल का गेट खोलेंगे व झुक कर आपको आपकी कार तक ले जायेंगे और कार की खिड़की को आदर व सलीके से खोलेंगे। आपको ऐसा अभिनन्दन मिलेगा कि आप स्वयं को वी.वी.आई.पी. या मंत्री अथवा राजा-महाराजा समझने लगोगे और फिर आपका हाथ अपने आप आपकी जेब में से आपका पर्स ढूँढेगा। बीस रुपये से लेकर पांच सौ रुपये तक के नोट आपके पर्स से निकलेंगे जो आपकी समाजिक पोजीशन को जाहिर करेंगे। यदि आप कुछ नहीं दोगे तो यह स्वागतकर्ता संतरी मन ही मन में बड़बड़ाऐंगे, 'कंगला, कहाँ से आ गया ?' या फिर मुँह के अन्दर ही बड़बड़ाऐंगे 'घटिया जात का होगा।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन होटलों के मालिक या प्रबंधक इन स्वागतकर्ता संतरियों का चुनाव बहुत सूझ-बूझ से करते हैं। अधिकतर इनमें से फौज के रिटायर्ड फौजी होते हैं। कद कम से कम पाँच फुट सात या आठ इंच या फिर इससे भी अधिक। हँसता-खिलखिलाता चेहरा और आँखों में चुम्बकीय कशिश होनी चाहिए। यह स्वागतकर्ता संतरी या गार्ड अकसर सिर पर पगड़ी बांधते हैं, कोई-कोई हैट भी। इसलिए होटल प्रबंधकों की इच्छा होती है कि यह गार्ड सिक्ख-स्वरूप रूप वाले हों अथवा फौज में से रिटायर्ड फौजी सिक्ख।

बम्बई जिसे आजकल मुंबई कहते हैं, मैं पिछले इक्कीस वर्षों से जा रहा हूँ। कोई घूमने-फिरने के इरादे से नहीं बल्कि प्रबंधकीय जिम्मेदारियों के अंतर्गत। वैसे मुझे करीब दो बार फाइव-स्टार में ठहरने का अवसर भी मिला है, परन्तु मैं अकसर साधारण होटल में ही ठहरता हूँ जहां मेरी कंपनी का बजट मुझे अनुमति देता है। मुझे एक दिन के लिए होटल, टैक्सी व खान-पान के लिए पच्चीस सौ रुपये मिलते हैं। इसलिए मैं बारह सौ से पंद्रह सौ रुपये प्रतिदिन टैरिफ वाला होटल चुनता हूँ। मैं अकसर गेट वे ऑफ इंडिया के समीप समुद्र के सामने सी-रॉक अथवा स्ट्रैंड होटल में ठहरता हूँ। इन होटलों में वो कमरा लेता हूँ जिस के छज्जे पर खड़े होकर समुद्री लहरों और समुद्र में घूमते-फिरते समुद्री जहाजों, किश्तियों और स्टीम बोट देखने का आनन्द ले सकूँ। यदि वर्षा हो रही हो और आप अपने कमरे में बैठकर यह नज़ारा देखें तो एक अलग तरह का लुत्फ उठा सकते हैं।

हमारे होटल के बाहर भी सदैव एक संतरी या गार्ड तैनात रहता है। परन्तु वह अकसर गोरखा होता है, हैट वाला।

मुझे प्रातःकाल उठकर सैर करने की आदत है और समुद्र के साथ बनी सड़क पर सैर करने का अलग ही मज़ा आता है। होटलों वाली सड़क के किनारे आपको वृक्ष झूमते दिखाई देंगे और दूसरे किनारे समुद्र की ओर से ठंडी-ठंडी हवा मंद-मंद आ रही होगी। आपको वहां अंग्रेज, प्रवासी-भारतीय, स्त्री-पुरुष और बच्चे भी सैर करते मिलेंगे। गेट वे आफ इंडिया के सामने एक सुन्दर पार्क है जहाँ लोक-नायक शिवा जी का बुत्त लगा हुआ है। यहां पर स्त्री-पुरूष स्वयं को हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए तेज़ चलते, दौड़ते व कसरत करते मिलेंगे। नजदीक ही आपको नारियल पानी मिल सकता है जो कुछ लोग सैर करने के पश्चात् पीते दिखाई देंगे। साइकिलों

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर स्टील की टैंकियों वाले आपको गर्म चाय या कॉफी भी पेश कर सकते हैं। कुछ व्यक्ति कबूतरों को दाना खरीद कर, भूने हुए चने या ज्वार डालते नज़र आएंगे। गेट वे आफ इंडिया के सामने ताज होटल है जहाँ आपको सदैव चार-पाँच संतरी या गार्ड सफेद वस्त्रों व लाल-हरी धारियों वाली पगड़ी पहने दिखाई देंगे। उनमें से अधिकतर सिक्ख-सरदार होते हैं जो कभी-कभी मुझे सत् श्री अकाल कहते हैं, किसी लालचवश नहीं अपितु सिक्ख-भाईचारे के कारण। ताज होटल में अधिकतर विदेशी ठहरते हैं।

इस क्षेत्र को कोलाबा कहते हैं। यहां आपको होटल ही होटल दिखाई देंगे या फिर यात्रियों की ज़रूरत की खाने की वस्तुएं, रैस्टोरैंट, फलों की रेहड़ियां, भारतीय इतिहास के साथ जुड़ी प्राचीन कलाओं का भ्रम डालती वस्तुएं, गहने, सिले-सिलाये कपड़े, जूतों की दुकानें, सजे-धजे रथ भी जिसमें बैठकर आप राजा-महाराजा महसूस करेंगे। शाम को ताज होटल के पिछली ओर आपको 'गर्म-गोश्त' के दलाल घूमते-फिरते टहलते मिल जाते हैं जो आपको 'गर्म-गोश्त' उपलब्ध करवा सकते हैं। यदि आप ध्यानपूर्वक नहीं चलोगे तो इस 'गर्म-गोश्त' के साथ ऐडज़ आपको फ्री गिफ्ट में मिल सकती है।

मैं आपको बता रहा था कि मुझे प्रात:काल सैर करने की आदत है और शाम को भी मैं डिनर के उपरान्त हल्की फुल्की सैर अवश्य करता हूँ। प्रात:काल सैर करते समय मैं काफी दूर तक निकल जाता हूँ। समुद्र के समीप होटल ही होटल होते हैं। ताज के करीब डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर एक होटल है-सन एंड सी। जब भी मैं वहां से गुजरता तो हमेशा मुझे छ: फुट लम्बा, स्वस्थ और आकर्षक दिखने वाला दर्शनीय सिक्ख संतरी मिल जाता। वह किसी खास अपनेपन में झुककर मुझे सत् श्री अकाल कहता और मैं भी सत् श्री अकाल में ही उत्तर देता। दो वर्षों तक यूँ ही चलता रहा। मुंबई एक वर्ष में मेरे लगभग आठ-दस चक्कर लग ही जाते हैं।

एक दिन शाम को जब मैं दफ्तरों का काम निपटाकर अपने होटल की ओर आ रहा था, तब काली पैंट व सफेद शर्ट वाला मैरून पगड़ी बाँधे करीब चालीस वर्षीय एक दर्शनीय सिक्ख मुझे मिला। उसने मुस्कुराते हुए मुझे सत् श्री अकाल बुलाई। मुझे कुछ सैकेंड उसे पहचानने में लगे कि यह तो वही सिक्ख-सरदार है जो सन एंड सी होटल के बाहर खड़ा होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

मेरे पास कुछ फुर्सत के पल थे इसलिए मैं उसे अपने होटल के कमरे में ले

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आया। मैंने चाय मंगवाई और उसने मुझसे पूछा कि मैं पंजाब के कौन से क्षेत्र का रहने वाला हूँ। मेरे बताने के पश्चात् उसने बताया कि वह दसूहा के निकट के गाँव दसूहीयाँ का दुसांझ जट्ट है। मैंने उस क्षेत्र में जाने-माने प्रसिद्ध प्रगतिशील कृषक का नाम बताया तो उसने बताया कि वह तो उसका चचेरा भाई है। मेरे अतिथि का नाम था हरनेक सिंह। उसका एक भाई कैनेडा में था और दूसरा भाई खेती करता था। उसने बताया कि वह सोलह वर्ष फौज़ में सेवा करने के पश्चात् सूबेदार रिटायर हुआ है। फौज में उस समय उसकी आयु चौंतीस वर्ष थी और उसे मुंबई आये हुए पाँच वर्ष हो गये थे। अब उसकी आयु करीब बायालीस वर्ष थी।

हरनेक ने बताया कि उसके हिस्से आठ बीघे ज़मीन आती थी। कैनेडा वाले भाई ने अपने हिस्से की ज़मीन हम इंडिया में रहते दोनों भाइयों में बराबर बाँट दी। अब बारह-बारह बीघे ज़मीन उनके हिस्से आती है। रिटायरमैंट के पश्चात् उसने तीन वर्षों तक तो कृषि की, डेयरी का धंधा भी साथ-साथ किया। परन्तु मुश्किल से गुज़र-बसर होती थी। कृषि करने से कुछ खास बचता ही नहीं था। कीटनाशक दवाओं, खाद, डीज़ल, बिजली इत्यादि के बिलों का भुगतान ही मुश्किल से होता। फौज में से बाईस सौ रुपये पैंशन के हर माह आते। उससे कुछ राहत मिलती। दोनों बेटे टाट वाले सरकारी स्कूल में दाखिल करवाए। घरवाली पशुओं के साथ पशु बनी काम करती रहती। न चैन के पल और न ही कभी आराम। ऐसा प्रतीत होता जैसे कोई पूर्व जन्म की सज़ा काट रहे हैं। जो स्वप्न देखे, वो पंखेरू बन उड़ते हुए प्रतीत होते।

जालंधर में हमारे मेजर साहब ने एक संस्था खोली और रिटायर्ड फौजियों को नौकरी दिलाने का काम शुरू किया। प्रथम माह की पूरी तनख्वाह व अगले पांच माह पाँच सौ रुपये प्रति महीना फीस। उन्होंने मेरे आगे इस नौकरी का प्रस्ताव रखा। सोच-विचार के उपरान्त साढ़े चार हजार रुपये माह की नौकरी मैंने कबूल कर ली। छोटे भाई को बटाई पर अपने हिस्से की ज़मीन दे दी। करीब तीस हज़ार वह साल भर के दे देता है और करीब इतनी ही पैंशन। यहां पर अब पाँच हजार रुपये माह तनख्वाह है। हरनेक बता रहा था।

मैंने पूछा, ''कैनेडा के लिए प्रयत्न नहीं किया है ?'' उसने बताया कि वहां पहले सात-आठ वर्षों तक अकेले ही धक्के खाने पड़ते, पीछे से परिवार बिखर जाता। पत्नी भी न मानी। उसने घूरते हुए कहा, 'पहले ही सोलह वर्षों में आधी मर
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुकी हूँ और अब यदि कैनेडा गए तो ये तुम्हारे बच्चों की अम्मा पूरी तरह मर जायेगी। चलो मेरी छोड़ो, बच्चों का क्या बनेगा? उनके विषय में सोचो। दो वर्षों में उन्हें भी पंख लग जायेंगे।....

''....मैं अकेली कैसे संभालूंगी इन पतंदरों (मस्त व शरारतियों) को।'' मैंने महसूस किया कि उसकी बातों में दलील थी और गहरा दर्द भी छिपा था।

फिर मैंने पूछा मुंबई जैसे स्थान पर दस हजार भी कम हैं, ''फिर भविष्य की प्लानिंग भी होती है।''

हरनेक बोला, ''बाई जी, यहां पर तनख्वाह से दो-तीन गुणा अधिक तो टिप से कमाई हो जाती है। प्रतिमाह दस-बारह हज़ार रुपये टिप से बन जाते हैं। ताज होटल वाले तो प्रतिमाह बीस-बीस हज़ार रुपये तक बना लेते हैं। पहले-पहल तो हिचकिचाहट महसूस होती थी। टिप लेते हुए बहुत शर्म आती थी। फिर मन में सोचा कि मैं कौन सा अकेला हूँ टिप लेने वाला और दूसरी बात हम कौन सा किसी की जेब में से चुराते हैं, स्वयं अपनी खुशी से देते हैं कस्टमर। विदेशी यदि मेहरबान हो जायें तो पौंड, डालर भी दे जाते हैं।''

हरनेक ने एक समय की बात सुनाई, ''एक अंग्रेज सौ डालर का नोट दे गया। मुझे सैंतालीस सौ रुपये मिल गये। सोचा आज बच्चों को खूब मज़े करवाएंगे। अपनी पत्नी से तैयार होने को कहा। बच्चों को बढ़िया कपड़े पहनाये व पत्नी को जबरदस्ती जीन-टी शर्ट डलवा दी। वह कहने लगी, ''यदि किसी ने देख लिया तो?'' मैंने कहा, ''यहां कौन सा तुम्हारा ताऊ ससुर देखने आ रहा है। यदि संयोग से आ भी जाये वह कौन सा तुम्हें पहचान पाएंगे। हाँ, लेकिन गाँव जाकर यह जरूर कहेंगे-अपना, नेका मेम पटाई घूम रहा था। सारे जैंकी-शैंकी बने हुए थे।'' प्राइवेट कूल-कैब (ए.सी. वाली कार) टैक्सी में बैठकर सभी को ताज होटल ले पहुँचा। वहां मौजूद मेरे ही जैसे संतरी लोगों ने सैल्यूट मारा तो मैं मंद-मंद मुस्कुराया और अफसरों की भांति ही सैल्यूट का उत्तर दिया।

''दोपहर का खाना खाया, बच्चे खुश, बाहर समुद्र की ओर देख रहे थे। बाथरूम में गये तो वहीं जम गये, निकलने का नाम ही न ले रहे थे। पत्नी बोली, 'यहां के बाथरूम तो होटल से भी कहीं अधिक बढ़िया हैं।' मैंने छेड़खानी करते हुए कहा, ''आज की रात यहीं पर बिता लेते हैं।'' उसने आँखें मारते हुए कहा, ''कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तो शर्म करो।"

"बच्चों ने जो भी माँगा, आर्डर दे दिया। दो पेग साधारण विस्की के लिए। उतने पैसों में बाहर डेढ़ बोतल आ जाये। जब वेटर बिल ले कर आया तो पत्नी हैरान रह गयी-एक साँस आये तो एक जाये। बत्तीस सौ पचास रुपये का बिल था। मैंने पाँच सौ रुपये के सात नोट रखे और बाकी ढाई सौ टिप के लिए छोड़ दिये। पत्नी की समझ में कुछ भी न आया और कहने लगी, "ढाई सौ रुपये तो ले लो।"

मैंने कहा, "चलो इन्हें भी ऐश कर लेने दो आज।" बाहर आये फिर संतरी ने सैल्यूट मारा। सौ-सौ के चार नोट निकाले और बाहर खड़े चारों संतरियों को देकर, टैक्सी में बैठ गये। टैक्सी का बिल बना आठ सौ रुपये, दो सौ रुपये ड्राईवर को टिप के दे दिए। हमने अंग्रेज के दिये सौ डॉलर खत्म कर दिए। घर पहुँचने पर पत्नी नाराज हो गई, "मेरे तो पेट में दर्द होने लगा है। खाना बाहर को आने को हो रहा है। आगे से मुझे मत कहना ऐसा खाना खाने के लिए।" फिर मैंने उसे बताया, "कि हमें भी लोग ऐसे ही दे जाते हैं। एक दिन यदि हमने दे दिये तो फिर क्या हो गया। लम्बी आयु हो उस अंग्रेज की जिसने हमें सौ डॉलर का नोट दिया था।"

मैंने हरनेक को एक और प्रश्न किया-'अगर तुम्हारे गांव का कोई व्यक्ति तुम्हें होटल के बाहर खड़ा देख ले तो?'

हरनेक ने कहा, "यदि देखता है तो देखे जाये। कोई अपनी जेब से कुछ नहीं दे जाता किसी को। ...मुझे सब मालूम है कैनेडा और स्टेट्स वालों के बारे में, जहाँ जाकर बड़े-बड़े सरदार टॉयलट साफ करते हैं, गाड़ियां साफ करते हैं, पटरियों पर सामान बेचते हैं, बाल्टियों में बीयर की बोतलें लेकर बेचते हैं लेकिन जब गाँव आते हैं तो सभी आदर-मान करते हैं। एक कहावत है, 'जिसके घर दाने, उसके कमले भी सयाने।' दोनों बच्चे मुंबई में ही अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं। यहां कोई भेदभाव नहीं कि किसका पिता क्या काम करता है। फीस पूरी दी जाती है। दोनों फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते हैं...रविवार को दादर में गुरूद्वारा साहब जाते हैं, लंगर खाते हैं, और फिर अन्य पंजाबी भाइयों से मिल लेते हैं।"

मुझे लगा कि हरनेक सिंह व उसका परिवार यहाँ रहकर अपने आप में पूर्ण रूप से संतुष्ट है। थोड़ा सा शिकवा था पंजाब छोड़ने का। फिर उसने कहा कि गुरुवाणी में कहते हैं।
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''जहाँ दाणे तहाँ खाणे,

नानका सच्च ऐह।''

हरनेक ने एक साखी (धार्मिक कथा) सुनाई जो उसने दादर के गुरूद्वारे में संत मस्कीन जी के मुख से सुनी थी : 'कहते हैं विष्णु जी सब जीवों को जब भोजन बाँटने लगे। तब किसी जीव को आधी मुठ्ठी, किसी को एक मुठ्ठी किसी को दो मुठ्ठी, वह जीवों की झोली में डालते जा रहे थे। जब मनुष्य की बारी आई तो विष्णु जी ने दो मुट्ठियाँ भरीं, मनुष्य ने झोली आगे की। परन्तु विष्णु जी ने वह दो मुठ्ठी अनाज मनुष्य की झोली में डालने की बजाए धरती पर बिखेर दिया और कहा, 'जा भई, स्वयं चुनो और खाओ। जब पूरा चुन लोगे फिर तुम्हें वापस बुलायेंगे।' हरनेक के चेहरे पर चमक थी, कहने लगा, ''हमारे लिए विष्णु भगवान ने हमारी किस्मत के चंद दाने मुंबई में बिखेर दिए, तो उन्हें चुगना ही पड़ेगा न?''

मैंने फिर उसे परखने का प्रयत्न किया, ''कभी किसी के साथ आँख-मट्टका, या ऐश-वेश?'' वह बोला...

''यहां प्रतिदिन बीसियों कॉल गर्ल्ज आती हैं, अमीरों की बाहों में बाहें डाले। मर्द दूसरी औरतों के साथ और औरतें दूसरे मर्दों के साथ। जैसे मर्द कॉल-गर्ल लेते हैं वैसे ही रईस औरतें कालेज के कम-उम्र के छोकरे लेकर आती हैं। बीमारियों का न्यौता...। कंजरखाना, इनसे आज तक किसी को पूर्ण संतुष्टि हुई है? जिन्हें दूसरों की खुरली में मुँह मारने की लत पड़ जाये, उसने तो डण्डे खाने ही खाने हैं और फिर मन को वो चैन कहाँ जो घर में मिलता हैं।'' यह कहते हुए हरनेक उठ खड़ा हुआ। मैंने उससे कहा कि रात का खाना खाकर जाना। कहने लगा, ''बड़े भाई, क्यों छित्तर (जूते) मारते हो? सेवा तो हमें आपकी करनी चाहिए। कभी आप आना, घर का बना दाल फुल्का खाने, हमारे गरीबों के यहां।'' मैंने कहा, ''अगली बार अवश्य चक्कर लगाऊँगा।'' हरनेक तो चला गया परन्तु जीवन का गहन ज्ञान और कड़वी सच्चाई, हँसते-हँसते बयान कर गया था।❑

) Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चक्क बीबीपुर

पतवंत अपने घर के कमरे में अकेली बैठी है। चाय का कप व बिस्किट का डिब्बा सामने पड़ा है। वह प्रतिदिन सुबह साढ़े चार बजे उठ जाती है। चार गिलास पानी पीने के पश्चात् वह घर के लॉन में पच्चीस-तीस चक्कर लगाती है व घर में रखा जर्मन शैफर्ड शैंकी उसके साथ-साथ चलता है। फिर सामने वाली सड़क पर वह एक-दो चक्कर शैंकी को लगवाती है ताकि वह नित्यकर्म से निवृत्त हो सके। फिर स्नान, उसके पश्चात् नित्तनेम, गुरू ग्रन्थ साहब का प्रकाश, पाँच वाणियों का पाठ। फिर रसोई की सफाई, वैसे घर में रखी नौकरानी रानो रात्रि में जाने से पहले सफाई करके जाती है। ...नित्यप्रति चाय का कप वह प्रात: करीब साढ़े छ: बजे लेती और जल्दी-जल्दी इसमें कोई बदलाव नहीं करती।

आज पतवंत अकेली है। मात्र शैंकी बाहर बैठा है। चाय का कप बनाकर दो बिस्किट लिए हैं। फरवरी का महीना है। ठंड अब पहले जैसी नहीं रही। परन्तु चाय के कप में से भाप निकल रही है।

पतवंत के पति प्रकाश सिंह को गुज़रे दो वर्ष हो गये हैं। जवानी में बहुत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज्यादा सिगरेट व शराब पीते रहने से ब्लड कैंसर हो गया था। छोटा बेटा लॉस ऐंजल्स पहुंच गया, हालांकि पहले सिंगापुर व फिर जर्मन गया था। बेटी पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़ में प्रोफैसर है व उसका पति भी। दोनों बौटनी विभाग में हैं। दोनों ने एम.एस.सी. इकट्ठे की, दोनों ने पी.एच.डी. भी इकट्ठे ही की व फिर जिंदगी का सफर भी इकट्ठे तय करने का निश्चय किया। सबसे बड़ा बेटा आजकल गुरदासपुर में ऐ.डी.सी. है। उसकी पत्नी पहले अंग्रेजी की लैक्चरार थी। अब घर में पति, बच्चों का ध्यान रखती है। महीने में करीब दो दिनों के लिए वे सभी मलोट पतवंत को मिलने आ जाते हैं व महीने में दो-तीन दिन पतवंत उनके पास चली जाती है। एक-दो महीने के पश्चात् उसकी बेटी-दामाद भी चक्कर लगाते रहते हैं। मलोट कस्बा छोड़ने को पतवंत का मन ही नहीं करता।

परन्तु पतवंत आज घर में अकेली है। उसके एक हाथ में चाय का कप व दूसरे हाथ की ऊंगलियों में एक बिस्किट है। सामने वाली बुक-शैल्फ पर किताबें हैं। उसकी नज़र पंजाबी के उपन्यास चक्क बीबीपुर पर जाती है तो वह मंद-मंद मुस्कुराती है। यह उपन्यास उसने चौवन बार पढ़ा है। इस उपन्यास की प्राप्ति की अपनी ही कहानी है। पतवंत चाय की चुस्की लेते हुए सोच रही है।

करीब नौ वर्ष पूर्व, वह अपने पति प्रकाश सिंह के साथ हरिमंदिर साहब के दर्शन करके बस में बैठकर वापिस आ रही थी। साथ वाली सीट पर कोई सवारी शायद जल्दबाजी में एक पुस्तक भुल गई थी। कंडक्टर बोला, ''बहन जी, किताब ही तो है ना, पैसों का पर्स तो नहीं। किताब आप ले लो, पर्स होता तो मैं संभाल लेता।'' पतवंत ने उस किताब का शीर्षक पढ़ा-चक्क बीबीपुर (उपन्यास), उपन्यासकार का नाम था-पी.बी.सिंह। पतवंत ने बस में ही उपन्यास पढ़ना प्रारम्भ कर दिया व मलोट पहुंचते-पहुंचते तक, उपन्यास समाप्त करके ही उसने साँस ली। उपन्यास की पिछली ओर उपन्यासकार की तस्वीर व साहित्यक-जीवन की जानकारी थी। पतवंत ने वह भी पढ़ डाली व साथ में ही भूमिका भी। परन्तु भूमिका उपन्यास पढ़ने के पश्चात् ही पढ़ी।

पतवंत सोचती है कि वैसे तो उसने चार-पांच सौ पुस्तकें पढ़ी होंगी परन्तु कोई भी पुस्तक दुबारा नहीं पढ़ी थी। बस एक चक्क बीबीपुर उपन्यास ही चौवन

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बार पढ़ चुकी थी। ज्यों-ज्यों वह उपन्यास बार-बार पढ़ती जाती त्यों-त्यों उसे उपन्यास के पीछे वाली फोटो के साथ संबंध गहन होते प्रतीत होते लगते। उसका दिल चाहता कि वह कभी उस उपन्यासकार को मिले, उसने उपन्यास कब व कैसे लिखा, उसके विषय में विस्तार पूर्वक उससे पूछे। उपन्यास की कहानी के विषय में उससे पूछे। उपन्यासकार का पता उसमें नहीं था। उसने एकाध बार सोचा कि वह क्यों न उपन्यास के पब्लिशर को पत्र लिखकर अथवा फोन करके उपन्यासकार के विषय में पूछे, परन्तु फिर वह स्वयं को ही 'पगली' कहकर यह विचार रद्द कर देती। चाय की एक चुस्की के साथ ही उसने बिस्किट का एक टुकड़ा दांतों में दबा लिया।

पतवंत कमरे में अकेली है व चाय का कप अभी भी उसके हाथ में है। उसका ध्यान उपन्यास से यकायक अपनी बीती जिंदगी पर चला जाता है।

पतवंत को याद आता है कि वह तब मात्र सोलह वर्ष की थी, जब वह उसके गांव आया था। यह गांव राजस्थान के जिला गंगानगर में है। उसकी आयु भी तब लगभग सोलह-सत्रह वर्ष रही होगी। अभी उसके चेहरे पर दाढ़ी नहीं आई थी, मात्र मूंछें इस तरह उसके नाक के नीचे आई थीं, जैसे किसी चित्रकार ने कच्ची पैंसिल से लाइनें खींच दी हों। वह अपने किसी रिश्तेदार के साथ हिसार से आया था। उस समय हिसार पंजाब का ही हिस्सा था। उसकी मौसी के बेटे की शादी थी। उस समय पंजाब का नाम सुनते ही, पतवंत अपने शरीर व मन में सरसराहट सी महसूस करती। उसकी मौसी का परिवार कृषि से जुड़ा हुआ था व पाकिस्तान से आकर उन्हें जमीन मिली थी। बिल्कुल हमारे घर के सामने घरों के मध्य एक खुली चौड़ी सी गली। उसकी मौसी के घर के दूसरी ओर खाली खुला मैदान होता था। वह शादी से करीब दस दिन पहले आ गया था। एक बार वह पानी का मटका सिर पर लिये आ रही थी और वह ऊँट पर बैठने लगा। शायद वह पहली बार ऊँट पर बैठने का प्रयत्न कर रहा था। जब ऊँट उठा तो एक बार पहले पिछली टाँगे उठाकर वह आगे की ओर झुका फिर दूसरी बार आगे की टाँगे उठाई। शायद उसने ऊँट को कसकर नहीं पकड़ा था। जब ऊँट आगे वाली टाँगों को उठाने लगा तब वह ऊँट की पिछली टाँगों से लुढ़कता हुआ ज़मीन पर आ गिरा था। उसकी पगड़ी कहीं ओर वह स्वयं कहीं ओर।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

सभी हँस-हँसकर लोट-पोट हो गए थे। परन्तु मुझे उसके मासूम चेहरे से सहानुभूति

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हो गई थी। ...मेरा चेहरा गंभीर देखकर उसे थोड़ा चैन आया लगता था। उसने अपने कपड़े साफ किए। पगड़ी संभालता हुआ वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। मैं तब पानी का मटका सिर पर रखे अपने घर में प्रवेश कर रही थी, तो मेरा ध्यान उस ओर ही था। वह भी पगड़ी संभालता हुआ, नीची निगाह से मेरी ओर देख रहा था। मेरी छोटी बहन ने दरवाजा बन्द कर दिया था। मैं मटका रख कर दरवाजे की झिरखी में से उसे देखती रही व उसका ध्यान भी हमारे घर के बन्द दरवाजे की ओर ही था। मेरे दिल ने दरवाजा खोलना चाहा, परन्तु मैं दरवाजा खोल न पायी क्योंकि उसकी मौसी का घर सामने ही था व हमारे भी कुछ रिश्तेदार पड़ोस में ही रहते थे।

पतवंत चाय की तीसरी चुस्की लेती है। उसके पश्चात् उसे स्मरण होता है कि वह ऊँट की सवारी करना सीख गया था। कद करीब साढ़े पांच फुट, गेहुँए रंग में कुछ-कुछ सांवलापन झलकता। शहतूत की छड़ी की भांति दुर्बल व फुर्तीला शरीर। मुझे बताया गया था कि वह पढ़ाई में बहुत होशियार था। दसवीं में वह अपने स्कूल में प्रथम स्थान पर रहा था व अब ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा देकर वह हमारे गांव आया था। मुझे मेरे घरवालों ने आठवीं कक्षा उतीर्ण करने के पश्चात् आगे की पढ़ाई नहीं करवाई थी क्योंकि आगे की पढ़ाई के लिए एक तो दूसरे कस्बे जाना पड़ता था, दूसरे वहां लड़कियों के लिए अलग से कोई स्कूल न था। पिता जी तो चाहते थे कि मैं आगे पढ़ूँ, परन्तु मेरी माँ व मेरे बड़े भाई गांव से दूर कस्बे में पढ़ने के लिए भेजने के हक में नहीं थे।

पतवंत चाय की चौथी चुस्की लेती है। उसकी स्मृत्ति घूम-फिर कर एक फिल्म सी चलती जा रही है। रविवार का दिन था। गाँव के गुरुद्वारे में बहुत लोग एकत्रित होते थे। वह भी वहां पर आया हुआ था। पिता जी व हमारे परिवार के समस्त सदस्य (माँ को छोड़कर) नियमित रुप से 'पाठ' करते थे। माँ को कोई भी लिपि पढ़नी नहीं आती थी। मात्र जपुजी पांच-पउड़ीयों का पाठ याद था व वह वही बार-बार दोहराती रहती थी। पिता जी की तरह हम तीनों बहने पांच वाणियों का पाठ प्रातःकाल व सांयकाल 'रहिरास साहब' व 'कीर्तन सोहले' का पाठ बिना नागा किया करते। भाई साहब कभी-कभार छोड़ भी देते। पिता जी व माँ अमृतधारी थे। परन्तु हमने अभी अमृत पान नहीं किया था। पिता जी कहते "तुम शादी के पश्चात्

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

धारण करना।'' मालूम नहीं किस ने बताया कि वह कविता बहुत अच्छी सुनाता है। Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu स्टेज सचिव ने उसका नाम लिया व उसने 'खालसा' नाम की कविता सुनाई। श्रोताओं में से अनेकों ने प्रसन्न होकर पुरस्कार देने शुरू किए। उस सस्ते जमाने में पच्चीस-छब्बीस रुपये हो गये। उसने वह पुरस्कार सिर झुकाकर कबूल किया परन्तु साथ ही दरबार साहब के सामने पड़ी गोलक में डालकर माथा टेका। गुरुद्वारे भाई जी ने उसके नाम का जैकारा छोड़ा, 'जो बोले सो निहाल।' परन्तु उस जयकारे के उत्तर में सबसे अधिक ऊंची आवाज मेरी गूंज गई थी। उसने यह महसूस करके सिर झुका लिया था, परन्तु चंद पलों के लिए उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिल उठा था। मेरे बड़े भइया के माथे पर त्योरियां पड़ गईं थी। मेरे पिता जी ने दूसरा ज़यकारा लगाया। परन्तु भइया की तिरछी नज़र देखकर जयकारे का उत्तर देने की जगह मैं चुप ही रही परन्तु मन में जयकारे की आवाज़ पहले से भी अधिक गूँजती प्रतीत हो रही थी। बंद दरवाजे के सुराख से देखती कि वह कई बार अपनी मौसी के घर में से बाहर खड़ा हमारे दरवाजे की ओर देख रहा होता।

दरअसल वह हमारे दूर के रिश्ते में था। मेरी माँ ने बताया था वह उनकी दूर की बहन की ननद का बेटा है। उन दिनों खाना खिलाने का रिवाज था। मेरी मां ने आकर बताया कि मेरी बहन की ननद का बेटा यहां आया हुआ है। आज मैं उसकी मौसी के यहां से उसका खाना छुड़वा कर आई हूँ। वह कल दोपहर व रात्रि का खाना हमारे पास ही खायेगा। माँ की यह बात सुनकर मैं तो बावरी सी हो गई थी। मेरा दिल चाहता कि माँ बार-बार यही बात कहती रहे व मैं बस यूँ ही सुनती रहूँ। रात्रि में मुझे नींद ही न आई। बस चारपाई पर लेटी, तारों को निहारती रही। करवटें बदलती रही। माँ ने देखा तो पूछा, ''क्या बात है ? नींद नहीं आ रही क्या ? करवटें बदली जा रही हो।'' उसके पश्चात् मैंने करवटें लेनी तो बंद कर दीं व ख्वाबों में गुम हो गई। प्रात:काल मुर्गे की बांग के साथ ही उठ बैठी। घर का कोना-कोना साफ किया और तो और दीवारों पर झाड़ू से सफाई की। खिड़कियों-रोशनदान की जालियों की भी अच्छे से सफाई की। पुरानी चादरें उठाकर स्टोर में रख दीं, नए गिलाफ, नई चादरें, बर्तन भी अच्छी तरह रगड़ रगड़ कर चमका दिए। अन्य बातें छोडो, यहां तक कि घर में बंधी गाय व बछड़े के मुँह भी धो दिये व उनकी आँखों में से गीड भी साफ कर

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दी। माँ यह सब देखकर आश्चर्य चकित थी। पिता जी व भाई साहब को शहर में काम के सिलसिले में जाना पड़ गया था। दोनों छोटी बहनें स्कूल चली गईं थीं। घर में माँ व मैं अकेले। मैंने मैले-कुचेलै, कपड़े पहने हुए थे अथवा यह कह लीजिए कि काम करते हुए हो गये थे। प्रात:काल चार बजे से जो सफाई करने में जुटी हुई थी। माँ ने घूर कर कहा, ''पगली, कपड़े तो बदल ले। कैसे पगली सी बनी घूम रही है।''

मैंने माँ से पूछा, ''कौन से कपड़े पहनूं?'' माँ ने मेरी ओर शरारती निगाहों से घूरकर देखा। फिर स्वयं ही ट्रंक में से बारीक बिंदियों वाला सूट निकाल लाई (जो मुझे बहुत पसंद था)। सफेद सूट पर काले रंग की बिंदियां थीं। मैं नहाकर नया सूट पहनकर शीशे के सामने खड़ी हुई तो मुझे लगा कि मैं इतनी खूबसूरत नहीं जितना मुझे आज होना चाहिए था। उन दिनों न तो लिपस्टिक होती थी न ही आई ब्रो बनवाई जाती व न ही पाऊडर होता था। हाँ प्रात:काल उठकर काम के साथ-साथ दंदासा (रंगली दातुन) मुँह में डाल रखी थी। इससे होंठ कुछ अधिक लाली पर हो गये थे, जिन्हें मैंने बार-बार कुल्ली करके लाली कम करने का प्रयत्न भी किया था। थोड़ा सा काजल मैंने अवश्य डिबिया से ले आंखों में डाल लिया था। सुबह से ही मेरे भीतर कभी आंधी सी चलती, कभी तूफान सा उठता व कभी-कभी हवा का ठंडा सा झोंका मुझे कंपकंपा जाता। मेरे भीतर का मौसम कई रंग बदलता। दोपहर के समय माँ उसे बुलाने चली गई। वह अकेले ही आया था, क्योंकि शेष सभी शादी की तैयारियों में जुटे हुए थे। माँ के कहने पर टिण्डों की सब्जी, दूसरी बेसन की सब्जी व सूजी का किशमिश व नारियल वाला हलवा बनाया था। मैंने प्याज व ककड़ी काटकर अलग से रख छोड़े थे। डिग्गी से लाये गये पानी में फिटकरी डालकर साफ पानी को नितारकर कोरे मटके में रख लिया था ताकि वह ठंडा हो जाये। उस मटकी के इर्द-गिर्द मैंने टाट की बोरी डाल दी थी व बोरी पर हर पन्द्रह मिनट के पश्चात् पानी छिड़कती थी। दूसरी मटकी में लस्सी बिलोकर रख ली थी। दोनों मटकियां बालू रेत में आधी से अधिक दबा रखी थीं। मैं पानी बोरी पर भी छिड़कती व बालू रेत पर भी। उन दिनों यही फ्रिज होता था। न तो हमारे घर में फ्रिज था न ही पंखा। न रेडियो, न ही टेप-रिकार्डर, टी.वी. की तो बात ही अलग है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-0
पहले माँ ने दरवाजा खटखटाया। मैंने दरवाजे की सांकल खोल दी व

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रसोईघर में जा छिपी। माँ उसे कमरे के भीतर ले गई...और माँ ने उसे पंखी से हवा करनी शुरू की। परन्तु उसने माँ के हाथों से पंखी ले ली व स्वयं ही हवा करनी शुरू की और बोला, ''मौसी जी, आप बैठो।''

एक आश्चर्यचकित करने वाली बात। जब भी कोई नवयुवक हमारे घर आता तब मां अकसर यही कहती, ''भइया को ये दो, भइया को वो दो।'' परन्तु इस बार माँ ने मात्र इतना ही कहा, ''पतवंत, बलबीर के लिए पानी तो लाना।'' मैं पानी लेकर आई तो उसके सामने वाली मेज पर रखकर रसोईघर में वापिस चली गई। माँ कुछ देर उससे हाल-चाल पूछती रही। उसकी माँ वीर कौर व परिवार के विषय में। माँ बता रही थी कि वे दोनों पाकिस्तान में इकट्ठे खेला करती थीं। वह आवश्यकतानुसार उत्तर देता रहा। उसने माँ से कहा, ''मौसी जी, कभी आप भी हमारे वहां आओ।'' माँ मुस्कुराकर बोली, ''देखो, यदि दाना-पानी वहां का लिखा होगा, तो अवश्य आऊंगी।'' माँ ने मुझे भोजन लाने को कहा परन्तु वह हाथ धोने के लिए गिलास उठाकर बरामदे में चला गया व सब्जी की क्यारी के पास में खड़े होकर हाथ धोने लगा। मैं थाली लेकर अंदर गई व उसके सामने रख दी। उसने माँ से पूछा, ''मैं क्या अकेले खाना खाऊंगा?'' यह पूछते समय उसकी निगाहें मेरी ओर थीं व मेरी पलकें झुकी हुई थीं, ''कोई बात नहीं बेटा, शाम को तेरे मौसा जी व पतवंत का भाई सभी इकट्ठे खाएंगे तुम्हारे साथ।''

पतवंत ने चाय की एक और चुस्की ली व कप उसके हाथ में ही रह गया। उसे याद आया कि जब मैंने उसके सामने थाली रखी तो माँ को कोई कार्य याद आ गया था अथवा जान-बूझ कर चली गई थी व जाते समय कह गई, ''मैं अभी आई'' बाहर डियोढ़ी का दरवाजा बंदकर, उसने बाहर से कुंडी लगा दी थी। मैं शर्मसार हो रही थी और वह पलकें झुकाए खाना खा रहा था। मैंने साहस बटोरा व दो चपातियां लेकर अंदर गई। उसने मना किया, परन्तु मैं जब एक फुलका उसकी थाली में रखने लगी तो मेरी दो ऊंगलियां उसके हाथ को स्पर्श कर गईं। मेरे शरीर में, बिजली का करंट सा दौड़ गया। मैं दूसरी चपाती प्लेट में लेकर, दुपट्टा ठीक करते हुए दरवाजे के पास ही खड़ी हो गई। अंदर धूप आ रही थी। उसने मात्र इतना ही कहा, ''बस, मुझे
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra
और नहीं लेना।'' दरअसल वह इतना ही कहना चाहता था कि मैं धूप में न खड़ी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रहूँ। तत्पश्चात् मैंने छाछ का जग व खाली गिलास लाकर मेज पर रखे। दिल चाहता था कि छाछ स्वयं गिलास में डालकर उसे दूँ। लेकिन मन में डर था कि कहीं माँ न आ जाये अथवा कोई अन्य पड़ोसी न आ जायें। उसने छाछ पी। उसके कहने पर मैं थाली व छाछ वाला गिलास लेकर रसोई में रख आई। उसने एक ग्रास रोटी व गिलास में करीब दो-तीन घूँट छाछ छोड़ दी थी। मैं सूजी का हलवा देने गई। वह मना करने लगा। मैं बोली, ''बेबे क्या कहेगी ?'' तो उसने कटोरी में हलवा ले लिया। उसमें से भी उसने दो-तीन चम्मच के करीब फिर छोड़ दिए। इतने में माँ भी आ चुकी थी। मैं उसकी हलवे वाली झूठी कटोरी भी रसोई में ले गई। माँ उससे बातें कर रही थी। मैंने उसका झूठा छोड़ा हुआ चपाती का टुकड़ा व हलवा एक कटोरी में छुपा कर रख लिये था व उसके गिलास में बची हुई छाछ एक-एक बूंद करके चूस ली थी। माँ ने मुझे पानी लेकर आने को कहा और बोली, ''देख क्या रही है, बलबीर के हाथ धुलवा।'' मैंने मेज पर खुला बर्तन आगे कर दिया। उसने हाथ आगे किए व मैं धीरे-धीरे पानी डालती रही। उसने हाथ धोकर, मुँह में पानी लिया व कुल्ला करने हेतु बाहर बरामदे में चला गया।

...फिर जब उसने जाने की अनुमति मांगी तो माँ उसे उसकी मौसी के घर तक छोड़ने चली गई। मैं दोनों को दरवाजे के सुराख में से देखती रही व तब तक दरवाजे पर ही खड़ी रही जब तक कि वह अंदर न चले गये। माँ साथ थी, उसने भी एक बार मुड़कर बंद दरवाजे की ओर ज़रूर देखा था।

पतवंत ने ज्यों ही चाय की चौथी चुस्की ली त्यों ही उसे छाछ वाला झूठा गिलास स्मरण हुआ। वह छाछ वाला गिलास जो उसने लगभग अट्तीस वर्ष पूर्व बूंद-बूंद चूसा था। जब पतवंत की माँ बलबीर को उसकी मौसी के घर छोड़ने चली गई तो उसने फिर से छाछ वाला झूठा गिलास मुँह से लगा लिया था व उस गिलास की एक भी बची व चिपकी बूंद को वह व्यर्थ नहीं जाने देना चाहती थी। तत्पश्चात् उसने ऊँगलियों से उस गिलास को साफ कर दिया था। फिर उसे स्मरण हुआ कि उसने रोटी का झूठा टुकड़ा व सूजी का हलवा भी रखा हुआ है। माँ के वापिस आने से पहले उसने वे दोनों चीजें भी जल्दी-जल्दी डकार ली थी, ये सोचकर कि कहीं माँ देख न ले।
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ जब वापिस आई तो बोली, ''चलो हम खाना खा लें'' तो मैंने माँ को खाना लाकर दे दिया व बोली, ''बेबे, मुझे अभी भूख नहीं है।'' उसके पश्चात् किसने खाना था। उसके छोड़े रोटी के टुकड़े व हलवे ने तो जैसे वर्षों की भूख पूरी कर दी थी।

पतवंत ने चाय की अंतिम घूंट पी वह उसके मुँह में ही रह गई। वह सोचने लगी, ''उस दिन माँ के कहने पर कुछ देर आराम किया, फिर सांयकाल की तैयारी में लग गई थी। रसोई की अच्छे से सफाई की व दुबारा से बैठक की भी। सांयकाल के लिए नई चादरें व नये गिलाफ। माँ से छिपाकर गाय के गले में घुंघरू वाला पटा डाल दिया था। जब वह सिर हिलाती तो ऐसा प्रतीत होता जैसे मेरे पांव के घुंघरू बज रहे हैं। सांयकाल छः बजे पिता जी व भाई साहब शहर से वापिस आये तो भिंडी व आम लेकर आये थे। उन दिनों मेहमानों के लिए विशेषतौर पर भिंडी व प्याज की सब्जी बनाई जाती थी। चने व उड़द की दाल तंदूर में पकने के लिए पहले ही रख दी गई थी। मटकी में दाल रिझती रही।

सांयकाल पिता जी ने भाई साहब से कहा कि वह उसे बुलाकर ले आवें। भाई साहब बुलाने चले गये व उसकी मौसी के बेटे जिसकी शादी थी, उसको भी साथ ले आये थे। जब दरवाजा खुला तो गाय ने गर्दन हिलाई, उसके गले के घुँघरू बजने लगे तो साथ ही मेरे मन में भी घुंघरू बज उठे। पिता जी, भइया, उसकी मौसी का बेटा व वह पहले आपस में बातें करते रहे। पहले खेतों के देसी खरबूजे काटकर रखे गये। फिर खाना, तत्पश्चात् आम। रात्रि में माँ ने उसकी थाली अन्य थालियों में ही मिलाकर रख दी। इसका मुझे बहुत अफसोस हुआ। फिर पिता जी बोले, ''बेटा, वह 'खालसा' कविता फिर से सुनाना।'' तो उसने कहा, ''वह पुरानी हो गई है। एक अन्य सुनो'', कहकर उसने, 'मोहन सिंह' की कविता 'सिक्खी दा बूटा' सुनाई। पिता जी अत्यंत प्रसन्न थे। पिता जी बार-बार उसकी पीठ थपथपा रहे थे व शाबाशी दे रहे थे। पिता जी ने चाय बनाने के लिए कहा और माँ ने मुझे चाय देने के लिए अंदर भेज दिया। भइया कुछ चिड़चिड़े से प्रतीत हुए।

रात्रि के दस बज गये। भइया उसे व उसकी मौसी के बेटे को छोड़ने के लिए चले गये परन्तु इससे पहले पिता जी ने दो रुपए का नोट उसे पकड़ाया तो वह

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मना करने लगा। वह बोले, ''बेटा, यह आवश्यक होता है।'' यह उस समय की बात है जब वर की रोक एक रुपये से हुआ करती थी।

अगले दिन मैं और मेरी बहन दो चारपाईयां उसकी मौसी के घर छोड़कर आये क्योंकि शादी वाले घर में मेहमानों ने आना था। जब हम चारपाईयां लेकर पहुंचे तो वह सामने ही खड़ा था। यद्यपि उसने हमें पहचान लिया था, लेकिन चारपाई सिर होने के कारणवश वह हमारे चेहरे अच्छी तरह से नहीं देख पाया था। मेरे अंतर मन में एक आह सी दबकर रह गई थी। गीतों पर मैं, मेरी बहनें व माँ हम सभी गये। मुझे उसकी पीठ ही दिखाई पड़ी।

शादी के तीसरे दिन जाने की तैयारी हो गई। मुझे मालूम हुआ कि अगले दिन सांयकाल उसे चले जाना है। मैंने उसे एक रेशमी रूमाल देने को सोचा। परंतु कैसे, किस के द्वारा भेजूँ, इन्हीं ख्यालों में उधेड़-बुन करती रही। जिस दिन सांयकाल को मेहमानों ने गाड़ी पकड़नी होती, गांव के सभी स्त्री-पुरूष मेहमानों को विदाई देने हेतु अकसर स्टेशन पर जाया करते। मैं भी उसकी मौसी की बेटी के साथ स्टेशन पर चली गई। रूमाल मेरे पास था। ...परन्तु मैं यह रहस्य किसी से भी बाँटने को तैयार न थी। ट्रेन आई, वह पहले अपनी मौसी, मौसा के चरण स्पर्श कर तत्पश्चात् मेरी माँ व मेरे पिता जी के चरण स्पर्श कर ट्रेन के अंदर जाकर अपनी सीट पर जा बैठा। उसने अन्य बुजुर्गों के भी चरण स्पर्श किए। वह मुझसे नजरें चुराने की कोशिश कर रहा था कि कहीं किसी को शक न हो जाये। जब ट्रेन चली तो मेरे हाथ स्वयं ही जुड़ गये, उसके हाथ जुड़कर, उसके होंठों की हरकत को छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे। मेरी आँखों की नमी मैंने छिपा ली थी और वह अपनी आंखों का सैलाब छिपाने का प्रयत्न कर रहा था और उसके लिए लिया गया रूमाल आज भी मैंने संभालकर रखा हुआ है।

पतवंत को यह बात याद आ रही थी तब चाय का अंतिम घूँट उसके मुंह में था जो उसने बूंद-बूंद कर निगल ली। कप उसने मेज़ पर रख दिया व बिस्किट का एक टुकड़ा अभी भी उसके हाथ में था। वह उसे धीरे-धीरे चबा रही थी कि नौकरानी रानो भीतर आई और उसने 'सत् श्री अकाल' कहा। रानो को पतवंत के चेहरे पर निकलते सूर्य की लाली जैसी चमक दिखाई पड़ी। उसने रानो के हाथ का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एक और कप बनाने के लिए कहा व स्वयं बिस्किट के टुकड़े को थोड़ा-थोड़ा करके चबाती रही।

चाय का दूसरा कप पतवंत प्रात:काल कभी नहीं लेती है। परन्तु आज वह चाय का दूसरा कप पी रही है। पतवंत को याद आया कि उसके माता-पिता ने आपस में विचार-विमर्श किया और लगभग दो माह पश्चात् उसकी मौसी के बड़े बेटे को बुलाया गया तथा मेरे व उसके रिश्ते के विषय में बात करनी चाही। तब वह कहने लगा, "बात तो मैं कर लूँगा, परन्तु लड़का कालेज में पढ़ाई कर रहा है तथा पढ़कर बड़ा अधिकारी बनना चाहता है।" पिता जी बोले, "यदि वह मान जायें तो हम रोक कर देंगे व शादी के लिए चार-पांच वर्ष इंतजार कर लेंगे।" उसकी मौसी का बेटा करीब तीन माह पश्चात् उनसे बात करके आया तथा बताया कि उसके पिता जी तो तैयार हैं, माँ भी, परन्तु लड़के की शर्त है कि वह एम.एस.सी. करने के पश्चात् ही शादी करवाएगा। भाई साहब कहने लगे, "कल को वह अफसर बन कर, क्या पतवंत को कबूल करेगा? बड़े घर का रिश्ता ढूंढ़ेगा। पतवंत तो अभी है भी आठवीं पास।"

मुझे भाई साहब के शब्द कुछ चुभे परन्तु उनमें सत्य भी महसूस हुआ। मैंने माँ से सलाह करके मैट्रिक कक्षा प्राइवेट करने की सोची। उसकी मौसी की बेटी मैट्रिक नियमित स्कूल में कर रही थी। उसकी पुस्तकों व उसी की कोचिंग से मैंने पढ़ाई शुरू की। दो माह मुझे ट्यूशन रखवा दी गई। जब रिजल्ट आया तो सभी आश्चर्यचकित रह गये। मेरी प्रथम डिवीजन व साथ ही पूरे क्षेत्र में प्रथम स्थान। तीन वर्ष और गुज़र गये। मालूम हुआ कि वह बी.एस.सी. उत्तीर्ण करने के पश्चात् आई.ए.एस. की तैयारी कर रहा है। इसी दौरान पिता जी की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। मैं सबसे अधिक रोई, माँ से भी अधिक, क्योंकि पिता जी मेरे दिल की बात मां से भी अत्यधिक जानते व समझते थे।

पिता जी की मृत्यु के पश्चात् भाई साहब ने माँ से कहा, "अब इतनी बड़ी हो गई है। कब तक घर में बिठाकर रखेगी। लोग तरह-तरह की बातें करने लग पड़े हैं। जिसके लिए आप लोग बैठे हो, उसने तो एक दिन कोरा-कपरा जवाब दे देना है। फिर उससे कौन सा कोई शगुन किया है। मेरे मित्र के मामा का बेटा है मलोट में।
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जनरल स्टोर बढ़िया चलता है। हां, परन्तु मोना है। अच्छा सिक्ख लड़का मिले ना, शादी करो ना.....। वैसे तो वे सभी गुरूद्वारे को मानते हैं।'' भाई साहब ने हमारी कोई रजामंदी ना मांगी। एक दिन उन्होंने अपना फैसला सुना डाला-''लड़के की माँ पतवंत को देख गई है, और वह परसों को शगुन लेकर आ रहे हैं।'' मेरा दिल किया कि मैं गाड़ी पकड़कर अकेली ही हिसार चली जाऊँ तथा उससे जाकर कहूँ, 'तेरे संग ही जीना है, तेरे संग ही मरना है।' परन्तु फिर सोचा, 'पगली, तुझे न तो घर-बार का पता है न ही किसी अन्य बात का। कौन कबूल करेगा तुम्हें वहां ? न कभी चिठ्ठी-पत्र, न ही कोई फोन....। मात्र चार दिन के मिलाप में ही जन्मों के बंधन के तुमने स्वप्न संजो लिए हैं ?' दो माह पश्चात् मेरी शादी तय कर दी गई। उसकी मौसी के बड़े बेटे ने भाई साहब से कहा भी था, ''मैं एक बार जाकर पूछ आऊँ ?'' वह मुझसे सहानुभूति रखता था।

भाई साहब ने झट से मना कर दिया और कहा, ''मैंने भी गांव में रहना है समाज को उत्तर देना है। यह विदेश नहीं है।''

डोली से एक रात्रि पहले उसकी मौसी का बड़ा बेटा आया तथा कहने लगा, ''पतवंत! सभी कुछ ईश्वर के हाथ में है। परन्तु मेरी इच्छा थी कि तुम्हारी शादी बलबीर से होती।'' मेरी आंखों में छाई काली घटाओं को मैंने नियन्त्रित किया। परन्तु डोली की विदाई के समय में इतना तो मैं भाई साहब के गले लिपटकर भी न रोई जितना कि उसकी मौसी के बड़े बेटे के गले लगकर। वह भी बहुत रोया था। बेइन्तहा रोया था। शादी हो गई और मैं मलोट पहुँच गई। चाय का जो कप मंगवाया गया है, वह ठंडा हो चुका है, पतवंत ने एक घूँट पी, ''कड़वी चाय'' का एक धुंट पीने के पश्चात् उसने चाय वाला कप दूर रख दिया। पतवंत याद करती है कि मलोट पहुंचकर वह आश्चर्यचकित हो गई कि उसका पति प्रकाश चंद शराबी भी और चेन स्मोकर भी था। वह कई बार सिगरेट के धुंए के छल्ले बनाकर उसके मुँह पर मारता। धुंआ उसके गले में उतरता तो वह खांसती रह जाती। यदि वह प्रात:काल उठकर पाठ करने लगती तो गालियाँ। सांयकाल शराब रोज़ पीकर आता तो मुसीबत। यदि ससुराल में पतवंत को किसी का थोड़ा-बहुत सहारा था अपनी सास का। उसकी सास के पीहर वाले भी सिक्ख थे। उसकी सास प्रतिदिन पाठ करती व गुरुद्वारे जाती।
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परन्तु प्रतिदिन के झगड़ों ने पतवंत का जीना दुश्वार कर दिया था। शादी के छः माह पश्चात् उसने स्वयं को खत्म कर लेने का मन बनाया। परन्तु उससे पूर्व एक घटना घटी। एक रात प्रकाश चंद शराब के नशे में धुत्त घर पहुंचा। सास-बहु गुरूद्वारे गई हुई थीं। जब लौटीं तो माँ को भी गालियां, पतवंत को भी और वाहेगुरु को भी। पतवंत इतना ही बोली थी, "आप मुझे जितनी चाहें गालियां निकालें परन्तु माँ जी को क्यों? फिर सच्चे पातशाह (ईश्वर) को क्यों?" प्रकाश चंद ने शराब के नशे में निकट पड़ा सोटा उठाया व पतवंत के सिर पर जोर से दे मारा। पतवंत वहीं पर चित्त, बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। फर्श खून से लथपथ। सारी शराब उतर गई। सास-ससुर चिंता में सिर पकड़कर बैठ गये। पड़ोस वाले आये व पतवंत को उठाकर अस्पताल एमरजैंसी ले गये। किसी अन्य पड़ोसी की शिकायत पर पुलिस आ पहुँची। पुलिस वाले ने कहा, "पतवंत के बयान पर ही निर्भर करता है। छब्बीस की धारा का केस तो बनेगा ही। यदि मृत्यु हो गई तो सारे परिवार को सज़ा होगी।" पतवंत की सास ने उसे बताया था-"सभी दुआएं कर रहे थे कि मैं ठीक हो जाऊं।" परन्तु फिर डरने लगे कि कहीं ठीक होने के पश्चात् बयान विपरीत न दे दूँ। जब मुझे होश आई तो अस्पताल में ही थी सभी के चेहरों के रंग उड़े हुए प्रतीत हुए। जब थानेदार ने बयान देने को कहा तो मैंने कह दिया, "किसी का कोई कसूर नहीं। मेरा अपना ही पांव अंधेरे में फिसल गया व पत्थर से जा टकराई।" उस दिन से प्रकाश की शराब ऐसी उतरी कि उसने दोबारा सिगरेट, शराब को हाथ तक न लगाया। अगले तीन महीनों में सबसे पहले पाठ करना सीखा, फिर केस रख लिए। फिर छः माह पश्चात् तलवंडी साबो जाकर अमृत पान कर प्रकाश सिंह बन गया। पतवंत ने भी उसके साथ ही अमृत धारण कर लिया था।

बिस्किट का टुकड़ा खाकर उसने चाय की कड़वाहट को कुछ कम किया। चाय का खाली कप सामने पड़ा है। प्रकाश चंद के प्रकाश सिंह बनने के पश्चात् उसके तीन बच्चों-दो बेटों व एक बेटी ने जन्म लिया। पतवंत ने इस दौरान, सात-आठ वर्षों में ज्ञानी उत्तीर्ण करके बी.ए. (स्नातक) दो वर्षों में उत्तीर्ण कर ली थी। प्रकाश सिंह दुकान पर परिश्रम करता व पतवंत गृहस्थी संभालती। तीनों बच्चे होनहार निकले। बड़ा बेटा पी.सी.एस. अधिकारी, बेटी प्रोफैसर व सबसे छोटा बेटा
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कंप्यूटर इंजीनियर। तीनों पाठ भी करते व कीर्तन भी कर लेते। प्रकाश सिंह, स्वयं को धन्य समझता। एक बेटे व एक बेटी की शादी पतवंत व प्रकाश सिंह ने मिलकर की। परन्तु छोटा बेटा अमेरिका पहुँच गया है और उसकी शादी करना अभी शेष है, पतवंत सोचती है।

रानो घर की सफाई कर रही है और पतवंत दीवान पर लेट जाती है। यकायक उसका ध्यान उस उपन्यास की ओर जाता है जो उसने चौवन बार पढ़ा है। वह उपन्यास शैल्फ से उठाकर फिर पढ़ना आरम्भ करती है। अचानक बाहर घंटी बजती है। वह उठकर देखती है कि उसकी ननद तेजवंत बाहर खड़ी है जो उससे लगभग दस वर्ष छोटी है, उसकी शादी भी उसने अपने हाथों से की। वह भाग कर दरवाजा खोलकर उसे गले से लगा लेती है और वे दोनों उसी कमरे में आती है जहां पतवंत पहले बैठी थी। रानो को नाश्ता तैयार करने के लिए कहा जाता है। नाश्ता करते समय तेजवंत की नज़र उल्टा कर रखे हुए उपन्यास पर जाती है। लेखक की तस्वीर देखकर तेजवंत बताती है कि यह लेखक तो केन्द्रीय-सरकार का बहुत बड़ा अधिकारी है, पेट्रोलियम मंत्रालय में सेक्रेटरी। नाश्ता समाप्त करके तेजवंत दीवान पर लेट जाती है व पतवंत आराम-कुर्सी पर सहज होती है। तेजवंत बताती है, "कल मैंने बठिंडा जाना है। वहां मुख्यमंत्री, उपन्यास का लेखक व राज्य के कई अह्म अधिकारी व मंत्री पहुँच रहे हैं। मेरी ड्यूटी एक मंत्री के साथ लगी है जिसकी मैं स्टैनो हूँ।"

पतवंत काफी समय चुप रहती है। परन्तु दोपहर को वह तेजवंत को बताती है कि वह यह उपन्यास चौवन बार पढ़ चुकी है तथा अब पचपनवीं बार पढ़ना शुरू किया है। वह तेजवंत को बताती है, "मेरी इच्छा है कि मैं एक बार इस उपन्यास के लेखक को मिलूँ।" तेजवंत बताती है कि वह इसके लिए बठिंडा पहुंचने के पश्चात् ही प्रयत्न कर सकती है। तेजवंत उस गैस्ट-हाऊस का फोन नंबर पतवंत को देती है जहां कल सवेरे मीटिंग होनी है।

अगली सुबह तेजवंत बठिंडा चली जाती है। पतवंत पचपनवीं बार उस उपन्यास को समाप्त करती है। तभी तेजवंत का फोन आता है कि उसने उपन्यास के लेखक से बात की है कि एक पाठिका आपसे मिलने की इच्छा रखती है।

© Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आपका उपन्यास चौवन बार पढ़ा है। पतवंत की उसकी ननद ने बताया कि उसने कहा कि वह मंगलवार सांयकाल चार बजे लेखक से मिल सकती है।

पतवंत मंगलवार ड्राइवर को साथ लेकर साढ़े तीन बजे निश्चित गैस्ट-हाऊस पहुंच जाती है। लेखक ने पहले ही अपने पी.ए. को बता दिया था कि उसके उपन्यास की पाठिका को आदर से बिठाना व चाय पानी इत्यादि पूछना। वह चार बजे पहुँच जायेगा। गैस्ट हाऊस के शानदार कमरे में पतवंत उसकी प्रतीक्षा करती है। पांच बजते हैं, फिर छः बजते हैं। दो मिनट के लिए वह लेखक अफसर आता है और कहता है कि, ''मीटिंग अभी भी चल रही है। केन्द्रीय मंत्री व मुख्यमंत्री अह्म फैसला ले रहे हैं। क्षमा करना, आपको प्रतीक्षा करनी पड़ रही है। यदि आप एक घंटा और प्रतीक्षा कर सकें तो आभारी होऊँगा।''

वह थोड़ा सा मुस्कुराती है और कहती है, ''मैं एक-डेढ घंटा और प्रतीक्षा कर सकती हूँ।''

लेखक अफसर चला जाता है। परन्तु जाते समय अपना कार्ड दे जाता है। दिल्ली का पता फोन नम्बर, घर का भी व दफ्तर का भी। कार्ड पर लिखा हुआ है, ''पी.बी. सिंह, सैक्रेटरी पेट्रोलियम भारत सरकार।''

पतवंत दो घंटे और प्रतीक्षा करती है। परन्तु जब मीटिंग समाप्त नहीं होती प्रतीत होती तो वह कार में बैठकर वापिस मलोट के लिए चल पड़ती है। इससे पहले सैक्रेटरी का सहायक दो बार क्षमा-याचना करता है और उन्हें अपना फोन नंबर देने को कहता है। पतवंत कहती है, ''कोई बात नहीं, मैं स्वयं ही फोन कर लूँगी।''

पतवंत रास्ते में ही रहिरास साहिब व कीर्तन सोहिला का पाठ करती। परन्तु आज उसका मन पाठ में नहीं लग रहा है।

घर पहुंचकर एक बार फिर वह बठिंडा फोन करती है तो बताया जाता है कि साहब को मुख्यमंत्री व केन्द्रीय मंत्री के साथ चंडीगढ़ जाना पड़ा और वहीं से दिल्ली चले जायेंगे। बड़े अफसरों की बड़ी बातें। वह सोचती है। पतवंत तीन दिनों के पश्चात् फिर दिल्ली फोन करती है; पता चलता है कि वह सिंगापुर चले गये हैं और और वहीं से न्यूयार्क चले जायेंगे। दस दिन पश्चात् वापिस आएंगे।
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
पतवंत चंद दिनों के लिए बेटी के पास व कुछ दिन बड़े बेटे के पास रहती

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। लगभग पन्द्रह दिनों के पश्चात् जब वह घर वापिस आती है तो शैल्फ पर पड़ा उपन्यास उसे लेखक को फोन करने की याद दिलाता है।

रविवार का दिन है। सुबह के दस बज रहे हैं। वह फोन करती है तो नौकर बात करता है तथा साहब को बताता है, "साहेब, पंजाब से फोन। कोई मलोट से हैं।" अफसर फोन लेता है व पूछता है, "आप कौन?"

पतवंत उत्तर देती है, "मलोट से, आपकी एक पाठिका।"

दोनों ओर से सत् श्री अकाल होती है। लेखक अफसर क्षमा माँगता है कि वह समय न निकाल सका व बताता है कि हम अफसर लोग अधिकतर ज़ंजीरों में बंधे होते हैं।

पतवंत पूछती है, "इतनी व्यस्तता के बावजूद भी आप लिखने के लिए समय कैसे निकाल पाते हो?"

उत्तर मिलता है, 'ऐसे सोचो, जीवित रहने के लिए मेरे लिए लिखना पढ़ना आवश्यक सा हो गया है।'

"आपका धन्यवाद! आपने मेरा उपन्यास चौवन बार पढ़ा। इतनी बार तो मैंने भी दोहराया न होगा।"

"अब पचपन बार कहें", दूसरी ओर से आवाज़-दिल्ली पहुँचती है।

"परन्तु आपको इसमें ऐसी कौन सी बात ने इतना इंप्रैस किया? कहानी अथवा पात्र-चित्रण।"

"सभी कुछ.....विशेष तौर पर प्रोतिमा व ब्रिजमोहन के पात्र तथा उनका नि:कष्ट निश्छल प्रेम।"

"धन्यवाद! आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

"क्या इस कहानी में आपका स्वयं भी शामिल है?" मलोट से एक प्रश्न।

"स्वयं को सभी का बनाना ही लेखक की कला है। मैंने थोड़ा सा लेखक बनने का प्रयत्न किया है।"

"सच, आपका पूरा नाम पूछने की गुस्ताखी कर सकती हूँ।"

"वैसे मेरा नाम बलबीर सिंह है। 'पी' तो मैंने ऐसे ही आगे लगाया हुआ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
"आपने स्कूल कालेज की शिक्षा कहां से ली ?" पतवंत की सांस फूलती प्रतीत होती है।

"कोई विशेष बात ?"

"नहीं वैसे ही।"

"हिसार से।"

"आपके पिता जी का नाम सरदार सोहन सिंह है ?" पतवंत की आवाज़।

"आपने कैसे अनुमान लगाया ? कहीं ज्योतिषी तो नहीं ? वैसे मैं ज्योतिष में विश्वास नहीं करता।"

"....आपने, अपने नाम के आगे 'पी' अपनी इच्छा से लगाया अथवा किसी से पूछकर अथवा बताकर ?"

"....और आपका शुभ नाम ?" लेखक अफसर की आवाज़।

"मेरा नाम पतवंत है।".....एक लम्बी-ठंडी आह ने मलोट से दिल्ली तक का सफर तय किया। पन्द्रह-बीस सैकिंड के लिए दोनों के रिसीवर कोई भी शब्द ग्रहण नहीं करते। "अपने नाम के साथ 'पी' जोड़ने के लिए धन्यवाद।....धन्यवाद अनेकों बार....बार-बार।"

"....ओह ! कैसे हैं कुदरत के रंग। ....आप चक्क बीबीपुर वाली पतवंत बोल रही हो, सरदार किशन सिंह की बेटी।"

"...हाँ, लगती तो वही हूँ...कुछ-कुछ याद आ रहा है। ...और यह उपन्यास आपकी अपनी जीवनी ही है।....परन्तु कई जगह की गई कल्पना भी बहुत कमाल की है। ...परन्तु अब आप, आपका...परिवार ?"

"लगभग अकेला ही हूँ। एक आई.ए.एस. अफसर के साथ मैंने मात्र दो सप्ताह के लिए शादी करवाई थी, पैंतीस वर्ष की आयु में और दोनों पिछले बीस वर्षों से अलग-अलग कोठी में रह रहे हैं। कानून की नजर में हम अभी भी पति-पत्नी हैं। कानूनी तौर पर न तो उसने तलाक दिया व न ही मैंने कोई विशेष प्रयत्न किया। ...यदि दिलों में ही प्यार न हो तो शारीरिक प्यार व्यर्थ व मशीनी प्रतीत होता है।"

"उफ!" ...पतवंत ने गहरी साँस ली, "मैं प्रयत्न करूँगी ...दोनों को मिलाने का।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बीस वर्ष की गहरी खाई अब नहीं भर सकती तथा न ही मैं मिलना चाहूँगा। अंह् ने इस खाई को अपूर्णीय बना दिया है। ...और आप ?"

"मैं खुश हूँ अपने आपसे....अपने परिवार के साथ। एक बेटा स्टेटस में है, दूसरा पी.सी.एस. अफसर व बेटी प्रोफैसर। मेरे साहब, दो वर्ष पूर्व हमें सदा के लिए छोड़कर चल बसे। पोत्र, पौत्री, दोहते दोहती वाली हूँ। मैं एक लम्बी कहानी हूँ जिसका कुछ भाग आपने बयान किया है।"

"यदि मैं बचपन व बठिंडा की भूल सुधारना चाहूँ तो ?"

"जब तक दाने साबुत होते है तभी तक अंकुरित हो सकते हैं। परन्तु भुने दाने कभी नहीं उगते।"

"नहीं मेरा भाव वो नहीं था जो आप समझ रही हो। मैं तो आपसे मिलकर उपन्यास पूर्ण करना चाहता हूँ जो मुझे अभी आधा-अधूरा सा प्रतीत होता है।"

"...परन्तु मैं आपके उपन्यास की प्रोतिमा नहीं....मैं पतवंत हूँ...जिसने कभी कुंवारी आहें भरी थीं, जिंदगी की कड़वाहट को शिवजी की तरह पी लिया था, विष को अमृत जानकर। ...विष को दोबारा से पी लूं ?"

लेखक अफसर आश्चर्यचकित था कि दसवीं पास पतवंत कैसे दार्शनिकों की भांति बोल रही थी। उसे मालूम न था कि वह बी.ए. कर चुकी है तथा सबसे बड़ी बात सच्चे प्यार की सबसे बड़ी डिग्री उसके पास है।

"नहीं.....नहीं.....मैं यह कभी नहीं चाहूँगा...हां एक विनती है, एक विनम्र निवेदन है कि शेष बची जिंदगी में से दो-चार पल मेरे लिए निकाल सको तो अग्रणी सात जन्मों तक आपका ऋणी रहूंगा।" इतना बड़ा अधिकारी एक अपराधी की तरह गिड़गिड़ा रहा था।

"मैं तो एक जन्म में ही थक गई हूँ...आप मुझे अगले सात जन्मों तक थकाने के बारे में सोच रहे हो ? ...मैं आपके अगले उपन्यास की प्रतीक्षा करूँगी।"

पतवंत ने यह कह कर फोन रख दिया। पतवंत ने फोन इसलिए रख दिया था कि वह भावुक होकर, अपनी कमजोरी कहीं ज़ाहिर न कर बैठे। ...लेखक चाहते हुए भी पतवंत से उसका फोन नंबर न मांग सका। उसने दो-तीन बार हैलो-हैलो की, तत्पश्चात् रिसीवर रख दिया। उसे अहसास हो गया था कि अब पतवंत का फोन नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आएगा।...परन्तु अब वह सागर की भांति शान्त थी जिसमें ज्वार-भाटा अनेकों बार आते और फिर चले जाते हैं। उसे अपने सिर से भारी बोझ उतरा महसूस हुआ। रिसीवर रखकर पतवंत एक बार तो बच्चों की तरह बहुत रोई, फिर एकदम से चुप हो गई। पतवंत को ऐसा महसूस हुआ जैसे तेज़ तूफान के बाद आकाश एकदम निर्मल व साफ दिखाई पड़ रहा था। बठिंडा में जब वह एक दो मिनट के लिए मिले थे तो एक-दूसरे को पहचान भी न पाये थे। अठतीस वर्ष के लम्बे अंतराल ने उनके चेहरों पर भिन्न-भिन्न इबारतें लिख दी थीं, वह एक-दूसरे को न जान सके न ही पहचान सके। दिल्ली तथा मलोट में भिन्न-भिन्न स्थान व भिन्न-भिन्न मोड़ पर बैठे दोनों के मन प्यार के सच्चे जज्बातों की यादों से लबालब भरे हुए थे। समय ने दोनों के चेहरों पर इबारतें अवश्य लिख दी थीं। परन्तु अठतीस वर्षों की पुरानी यादें अभी भी ताजा व अमिट थीं-जिंदगी का अनमोल, अमिट व अपूरक खजाना, दोनों शिद्दत से महसूस कर रहे थे।❑

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

...कुछ शब्द बी.एस.बीर की कहानियों के बारे में

बी.एस.बीर

कथा एवं कविता को जब भी किसी बंधन में बांधने का प्रयास हुआ, तो दोनों का बलात्कार ही हुआ। बंधन की सीमाएं, मौलिकता व नवीनता से मैत्री सदैव नहीं निभा पातीं।

बी.एस.बीर की कहानियां किसी तकनीकी चौखटे में बंध कर नहीं रहतीं। कभी वह नानी मां या दादी मां की तरह अपने पाठकों को कहानी सुनाते लगता है तो कभी कुशल प्राध्यापक के माफिक बौद्धिक ढंग से। उसे तो कहानी कहनी है-चाहे स्पष्ट संवाद से हो, चाहे चेतना-प्रवाह तकनीक से और चाहे उत्तम पुरूष के रूप में। उसकी कहानियों के पात्र आपको अड़ोस-पड़ोस में या आस-पास विचरण करते दिखाई पड़ेंगे और यह सभी पात्र आपको घनिष्ठ जान पहचान वाले लगेंगे।

बीर जीवन के यथार्थ को सहज रूप में व सहज ढंग से अपनी कहानियों में चित्रता है। कुछ पात्र तो आपको जीवन की ऐतिहासिकता संभाले हुए मिलेंगे। कुछ कहानियों में कथा-रस व कविता का संगम आपको दिखाई पड़ेगा।

बी.एस.बीर के लिये हिन्दी एवं पंजाबी एक समान हैं। वह जिस स्पष्टता व सहजता से पंजाबी में लिखता है, वहीं यह स्पष्टता एवं सहजता आपको उसकी हिन्दी में भी दिखाई पड़ेगी।

हां, कुछ कहानियों में आंचलिकता अवश्य नज़र आयेगी। पर सभी कहानियों का विवेक मानवीय है। कई कथाओं में मानवीय भावनाओं का मार्मिक चित्रण है।

'पापा जी', बीर का हिन्दी में दूसरा कथा-संग्रह है। 'ये जन्म तुम्हारे लेखे' कथा संग्रह से वह अपने आपको हिन्दी पाठकों, लेखकों से पहले ही अवगत करवा चुका है। अभी हिन्दी के आलोचकों की पैनी नज़र उसकी कहानियों पर पड़नी शेष है। उसकी कुछ कहानियां पंजाबी के अतिरिक्त गुजराती एवं मराठी में अनुवाद हो कर छप चुकी हैं। बंगला एवं अंग्रेजी में उसकी कुछ कहानियां छपने हेतु हैं।

आशा है हिन्दी के पाठक, लेखक एवं आलोचक इस कथा-संग्रह को उसका बनता सम्मान अवश्य देंगे और कथाकार को अपनी राय से भी अवगत अवश्य करवायेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

- नरेन्द्र पाल बाली (मुंबई)

£2.5 • $5 • 50/-